हिन्दी विद्यापीठ ग्रन्थ-वीथिका

[इस ग्रन्थ-वीथिका में अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थ तथा
अप्राप्य ग्रन्थ प्रकाशित किये जाते हैं]

आगरा विश्वविद्यालय, हिन्दी विद्यापीठ प्रकाशन, आगरा

विषय सूची

जाहरपीर

[गायक लोहबन के मट्टानाथ]



मट्टा नाप

जाहरपीर की कथा का विश्लेषण

[illegible]

[illegible] —

1. जाहरपीर की जन्म-कथा।
2. जाहरपीर की विवाह-कथा।
3. जाहरपीर की युद्ध-कथा।
4. जाहरपीर की तिरोधान-कथा।
5. सिरियल की [illegible]-कथा।

पहली कथा में निम्न अभिप्राय हैं :

१. राजा रानी संतानाभाव में पीड़ित——

लोक-कथाकार ने इसमें कई अभिप्रायों को जोड़ कर इस संतानाभाव की स्थिति को [illegible] किया है :

इसमें
१. संतान की आवश्यकता दिखाई है।
२. ज्योतिषियों पंडितों से दिखवाई [illegible] है।
३. बाग लगवाया है।
४. बाग के फल फूल राजा के देखने से कुम्हिलाते हैं। रानी उन्हें बासी बताकर समाधान करती है।
५. बाग में राजा जाता है तो बाग सूख जाता है।
६. उसका माली, उसे अपने बगीचे में नहीं आने देता।

(३–६ के साथ हाशिये में: इन तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजा ही भाग्यहीन है।)

७. राजा राजपाट छोड़ कर चल देता है, बाछल साथ जाती है।
८. अन्ततः राजा लौटता है।

२. संतान-प्राप्ति के लिए जोगी-सेवा——

१. गोरखनाथ के आने से बाग हरा हो जाता है।
२. बाछल गोरख की सेवा करती है।
३. पहली सेवा का फल न मिलने पर फिर सेवा करती है।

३. जोगी से फल प्राप्ति——

१. बाछल की पहली सेवा का फल धोखा देकर उसकी बहिन काछल ले जाती है।

२. काछल को बाछल समझ गुरु उसे दो फल देते हैं।
३. बाछल को दूसरी सेवा पर एक जौ या गूगुल मिलता है।

४. फल का उपयोग—

१. काछल दोनों फलों को अकेली खाती है।
२. बाछल गूगुल या जौ को पांच व्यक्तियों में बांट देती है। वे पांच हैं:
   १. वह स्वयं।
   २. घोड़ी।
   ३. चमारिन।
   ४. महतरानी।
   ५. ब्राह्मणी।

५. बाछल पर लांछन—

१. बाछल गर्भवती।
२. ननद से बिगाड़।
३. ननद द्वारा बाछल के चरित्र पर लांछन।

६. बाछल का निष्कासन—

१. जेवर बाछल को मारने का प्रयत्न करता है पर तलवार नहीं चलती।
२. निष्कासन।

७. मार्ग में बाधा—

१. बाछल के बैल को सर्प काटता है।
   यह सर्प स्वयं गर्भ स्थित जाहरपीर की चेष्टा से आया है।
२. पिता और ससुर लेने आये:
   जाहर ने दोनों को करामात दिखायी, जिससे दोनों बाछल को लेने आये।

८. गृह प्रतिवर्तन—

बाछल सासुरे आई।

९. संतान प्राप्ति—

बाछल के जाहरपीर हुआ अन्य
चारों के भी संतानें हुईं ये पंच पीर कहलाये।

इस कथांश में ७वें अभिप्रायः को छोड़ कर शेष सभी सामान्य लोक-कथाओं के तत्व हैं जो अन्य प्रसिद्ध कथाओं में भी मिल जाते हैं। संतानाभाव का अभिप्राय राम के पिता-माता से भी संबंधित है। वहाँ योगी नहीं ऋषि आया है। ऋषि यज्ञ कराता है उससे यज्ञ पुरुष ने निकल कर खीर दी है। जिस प्रकार खीर तीन रानियों में बाँटी गयी है, उसी प्रकार यहाँ गूगल पांच में बांटा गया है। ननद की शिकायत का तत्व लोक प्रचलित सीता बनवास

की कथा में भी है। यह लांछन की बात और लांछित को मारने या निकालने की बात सीता वनवास में भी है और राजा नल की माता मंझा से तो एक दम बहुत मिलती है। निष्कासन के उपरांत का तत्व जाहरपीर में अनोखा है। पीर का गर्भ में से जाकर वासुकि को विवश करना, अपने नाना और बाबा को विवश करना। ये इस कथा के अनोखे तत्व हैं।

दूसरे कथांश के अभिप्राय ये हैं--

१. स्वप्न में सिरिअल के दर्शन और आधी भावरें।
२. सिरियल की खोज में अकेले प्रस्थान।
३. गुरु गोरखनाथ से सिरिअल का पता।
४. घोड़े पर चढ़ कर समुद्र तट पर वैमाता को जूड़ी बाँधते देखना।
५. घोड़े ने सिरिअल के देश में पहुँचाया।
६. सिरिअल के बाग में सिरिअल की शैया पर शयन।
७. सिरिअल का आना, मिलन, सार-पाँसे।
८. सिरिअल के पिता ने विवाह का प्रस्ताव ठुकराया।
९. जाहर का बन में जाकर बंशी बजाना, नागों तक को मुग्ध करना।
१०. बासुकि ने तातिग नाग को सहायता के लिए भेजा।
११. तातिग ने सिरिअल को स्नानोपरान्त डसा।
१२. तातिग संपेरा बन राजा से बचन लेकर कि सिरिअल का विवाह जाहर से होगा, सिरिअल को ठीक कर देता है।
१३. एक अन्य दूलह का भी आगमन और जाहर का भी।
१४. दोनों बरातों का युद्ध।
१५. दैवी हस्तक्षेप।
१६. सिरिअल से विवाह।

इस समस्त कथांश में कुछ भी असामान्य तत्व नहीं, सभी अभिप्राय अत्यंत प्रचलित लोक-प्रेम-कथाओं में मिल जाते हैं।

तीसरे कथांश में ये अभिप्राय हैं--

१. बाछल की बहिन के लड़कों ने राज्य में से हिस्सा मांगा।
२. बाछल हिस्सा देने को तैयार।
३. जाहरपीर ने अस्वीकार कर दिया।
४. क्रुद्ध भाई मुसलमानी शासक को चढ़ा लाये।
५. सिरिअल का हठ पूर्वक झूलने जाना और अपमानित होना।
६. सिरिअल ने ही जाहर से साक्षात्कार की विधि बतलायी।
७. सेना ने गायें घेर लीं।
८. जाहर ने गायें छुड़ाने के लिए युद्ध किया और दोनों भाइयों के सिर काट लिये।

गायों के लिए युद्ध ऐसा तत्व है जो अत्यंत लौकिक हो गया है, विशेषतः राजस्थान

में। पाबूजी ने भी गायों के लिए युद्ध किया है। मुसलमानी शासकों को चढ़ा लाने का भी अभिप्राय इतिहास तथा लोकतत्व दोनों से संबद्ध है।

चौथे कथांश के अभिप्राय हैं—

१. जाहर मां को सूचना देता है कि उसने दोनों भाइयों को मार डाला।
२. मां का क्रुद्ध हो आदेश देना कि वह भ्रातृ-हन्ता उसे मुंह न दिखाये।
३. जाहर का पृथ्वी में समा जाने की इच्छा।
४. मुसलमानियत स्वीकार की।
५. तब पृथ्वी में वह घोड़े सहित समा गया।

चौथा अभिप्राय जाहरपीर के किसी किसी संस्करण में ही है। यह कथांश संपूर्ण ही अनोखा है। साधारणतः लोक में प्रचलित नहीं।

पांचवें कथांश में—

१. सिरियल के वियोग में जाहर प्रेत रूप में ही प्रकट होता है।
२. प्रति रात्रि जब मां सो जाती है तो सिरियल के पास आता है।
३. सिरियल से वचन कि मां से नहीं कहेगी?
४. सिरियल गर्भवती होती है अथवा उसकी सासु उसे सौभाग्य चिह्न धारण किये देखकर संदेह करती है।
५. सिरियल मां से भेद खोल देती है और मां को दिखा देने का वचन देती है।
६. जाहर को पता चल जाता है। नहीं आता।
७. मां का उलाहना।
८. सिरियल काग से संदेश भेजती है। देवी से चौपर खेलता मिलता है जाहर।
९. जाहर सिरियल का निमन्त्रण मान लेता है।
१०. सिरियल से मिलता है चलने लगता है तभी सिरियल मां को जाते हुए जाहर को दिखाती है।
११. मां आवाज देती है तभी जाहर सिरियल के साथ अन्तिम रूप से भूमि में समा जाता है।

यह अन्तिम कथांश पुनरुज्जीवन अथवा प्रेत-प्राप्ति का है।

इस विश्लेषण से स्पष्ट विदित होता है कि समस्त कथा में वास्तविक ढांचा प्रेम-गाथा का है।

पहला कथांश प्रायः सभी लोकप्रिय प्रेमगाथाओं में मिलता है। नल-दयमन्ती संबंधी लोक-कथा में भी नल के पिता पिरथम निपुत्री हैं। उन्हें पुत्र की बहुत कामना है। अन्य अनेक लोक-कथाओं में ऐसा ही उल्लेख है। प्रेम-कथा का नायक असाधारण प्रकार से ही उत्पन्न होता है। जन्म से ही उसे सिद्ध या देवी देवता का पोषण मिलता है।

दूसरा कथांश शुद्ध प्रेम-कथा है। स्वप्न में सिरियल को देखना उसे पाने के लिए चल पड़ना। बाधाएँ, उनका शमन। योगी होना या योगी गोरख की कृपा पाना। देवी

देवताओं की कृपा होना और प्रेमिका की प्राप्ति। इसी को जाहर की इस कथा में विशेष रूप में रख दिया गया है।

तीसरा कथांश प्रेमकथा या प्रेमगाथा के मिलनोपरान्त की बाधाओं से संबंध रखता है। पद्मावत में जिस स्थान पर अलाउद्दीन से युद्ध आता है प्रायः उसी स्थान पर गोगा का शाही सेना से युद्ध आता है। पद्मावत में भी अलाउद्दीन को चढ़ा लाने वाला घर का भेदी है, जाहरपीर में भी ऐसा ही है, जाहर के मौसेरे भाई।

चौथा कथांश प्रेमगाथा के नायक की मृत्यु का एक रूपान्तर ही है। साधारण प्रेमगाथा में नायक मारा जाता है। यहां जाहर ने शत्रु को पछाड़ा है, फिर स्वयं पृथ्वी में समाये हैं। यह ऐसे ही है जैसे जायसी ने अलाउद्दीन के हाथ से बचा कर एक अन्य राजा से लड़ते लड़ते रत्नसेन का मरना दिखाया हो।

पांचवां कथांश प्रेमिका के चितारोहण के समान है परन्तु पीर की प्रेत-लीला दिखाकर इन प्रेमी प्रेमिका को इस कथाकार ने साथ साथ पृथ्वी में समाते दिखाया है।

अतः मूलतः जाहरपीर की कथा प्रेम कथा है जैसे राम कथा मूलतः प्रेम कथा है। पर, उसको एक विशेष धार्मिक ढाल में ढाल दिया है। प्रेम कथाएँ प्रेम की पीर पैदा करने के लिये लिखी जाती थीं। अथवा किसी प्रकार की शिक्षा देने या मनोरंजन के लिए। जाहरपीर की कथा इनमें से किसी अभिप्राय से नहीं लिखी गयी। एक और अभिप्राय भी कथाओं का हुआ करता था, वह था उनका माहात्म्य। शब्द-वृक्ष-मंत्र और फल के अनिवार्य संबंधों के कारण अथवा तांत्रिक प्रभाव के कारण अथवा तांत्रिकता के दूषित प्रभाव को रोकने के लिए कथाओं के साथ माहात्म्य की बात जुड़ी। इन कथाओं को पढ़ने या सुनने से ही विशेष फल मिलने की बात पर विश्वास किया गया। पुत्रों के कल्याण के लिए अहोई आठें की कथा, पति के कल्याण के लिए करवा चौथ की कहानी, भाई के कल्याण के लिये भैया दूज की कहानी, सर्प से रक्षा के लिए नाग पंचमी की कहानी। कलंक से मुक्ति स्वयमंतक मणि की कथा दिलाती है। समस्त विघ्नों का नाश गणेश कथा से होता है। सब प्रकार की समृद्धि आती है सत्य नारायण की कथा सुनने से। इसी प्रकार यह विश्वास प्रचलित है कि रामकथा के सुन्दरकाण्ड का पाठ करने से रोग दोष नष्ट होते हैं। यही कारण है कि अकेले सुन्दरकाण्ड की हस्तलिखित प्रतियां बहुत मिलती हैं। तिजारी रोकने के लिए उषा कथा का महत्व है। जाहरपीर की कथा ऐसी ही माहात्म्य कथा है।

जाहरपीर

गुरू गैला[1] गुर वावरा[1] करैं गुरुन की सेवा है
गुरू ते चेला अति वड़ा[2] तौउ करैं गुरू की सेवा है
महरी[3] पैं वादर श्रोलर्यौ वरसैं कौढार है
रानी कौ भीजैं कांचुश्रो[4], जाहर मिरगुल[5] पाग है

---

१. ये दोनों नाथ गुरुश्रों के नाम प्रतीत होते हैं : गैलानाथ तथा वावरानाथ ।

२. गुरु से चेला वड़ा माना गया है । इसमें एक सिद्धान्त तो यह विदित होता है कि चेला गुरु का ज्ञान तो प्राप्त कर ही लेता है, श्रपनी सिद्धि से उसे श्रौर श्रागे वढ़ाता है, गुरु गोरखनाथ श्रौर मत्स्येद्रनाथ की शक्तियों श्रौर सिद्धियों पर जव ध्यान जाता है तो विदित होता है कि गुरु गोरखनाथ श्रपने गुरु मत्स्येद्रनाथ से वढ़े-चढ़े थे । उन्होंने गुरु का 'त्रिया-देश' में से उद्धार भी किया था । यह कथन साम्प्रदायिक भावना से भी कहा गया होगा । नाथ-संप्रदाय के प्रवर्त्तक गोरखनाथ हुए । गोरख-संप्रदाय के श्रनुयायी श्रपने गोरखनाथ को सवसे वड़ा मानेंगे ही । श्रतः श्रपने गुरु को सब से बड़ा मानकर श्रपनी भक्ति की सार्यकता प्रकट की श्रौर उनका गुरु सव से वड़ा होते हुए भी श्रपने गुरु की सेवा करता है, इस कथन से गुरु का शील भी प्रकट किया।

३. 'महरी' को जगदीशसिंह गहलौत ने गोगाजी का गाँव माना है। पर गोगा जी का गाँव 'ददेरा' है। महरी तो वह स्थान है जो गोगा मेरी या गोगा मेंढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है। गोगा का गांव नोहर तहसील में वीकानेर में है । वहीं गोगा मेरो या मेंढ़ी हैं । इस मेरी या मेंढ़ी का शुद्ध रूप 'महरी' हो सकता है। 'महल सुखाइ देउ कांचुश्रो महरी' मरद की पाग, में महरी का श्रर्थ गायक ने हो मंदिर वताया था जो ठीक प्रतोत होता है। मंदिर श्रर्थात् पूजा का स्थान । यह संस्कृत 'मह' शब्द से बना है। (H. H. Wilson) विलसन महोदय ने श्रपने कोष में लिखा है : मह–r. 1st and 10th cls. (महति महयति) To revere, to worship, to adore (ह) मह m (–हः) 1. A festival, 2. Light, Lustre, 3. A buffalo 4. Sacrifice oblation. f. (हा) 1. A Cow. 2. A plant 'मह' धातु के जितने भी श्रर्थ ऊपर बताये गये हैं प्रायः 'गोगा महरी' स्थान पर सभी का समावेश मिलता है। यह पूजा का स्थान है। मेला लगता है, बलि से संवंध है, गोगा श्रौर गोगानो का 'गाय' से संवंध है, पशुश्रों का मेला लगता है, जिनमें गाय का बाहुल्य होता है । गोरखनाथ की समाधि भी गोरख मेढ़ी, गोरख मेंढ़ी, गोरख मंडी कही जाती है जो 'महरी का ही रूपान्तर है।

४. चीर

५. पाग

कहा सुकाइयें कांगुओ, कहाँ मरव तेरी पाग
महल सुखाइ देउ कांगुओ महरी[1] मरव की पाग
जाहर के बाजार में सौनौं गढ़ै सुनार
घोड़ै कू गढ़ला घागुका, रानी सिरियल की सिंगार
जाहर की गैल में स्यापु लहरिया लेइ[1]
पापी घेला डसि लए दाता ऐ दर्सन देइ।
राना हे
सोवै नाग अगै भगिनियां, तू बालक किस आयौ
नागिनि नाग जगाइ दै अपनौ मैं बाइ जौवन आयौ
मारयौ टोल गैंद गई दह में, गैंद के संग ई धायौ।
मारी फुसकार स्यांप भयौ कारौ, गौरे ते है गयौ कारौ।
ठाडी जसोदा अर्ज करैं मेरौ नागू छोड़िवै कारी।[2]
मानसी गंगा राधा मान नैं खुदाई
जाके बीच में गिरवर धार्‌यौ

---

६. मन्दिर

१ जाहरपीर और गुरु गुग्गा को एक माना जाता है, टैम्पल महोदय ने 'दी लीजैण्डस आव पंजाब' में संख्या (६) के आरम्भ में लिखा है, गुग्गा की समस्त कहानी महान् अंधकार में पड़ी हुई है, आजकल वह प्रधान मुसलमान फकीरों में हैं अथवा सब प्रकार की नीच जातियों का पूजा पात्र है और जाहरपीर के नाम से भी विख्यात है। श्री जगदीशसिंह गहलौत ने लिखा है गोगा जी...यह जिला हरियाना के गाँव महरी के चौहान राजपूत थे। सं० ११२३ में दिल्ली के बादशाह द्वितीय के सेनापति अबुवक्र से युद्ध कर ये वीर गति को प्राप्त हुए। हिन्दू इन्हें देवता तुल्य मानकर भादों बदी ९ को इनकी जयन्ती मनाते हैं। मुसलमान इन्हें जाहरपीर के उपनाम से पूजते हैं।

२ बंगाल में पट-गीतों में से एक गीत का अंश यों है:

कालीदहेर कूले छिल केलि कदम्बेर गाछ
ताते चड़े कृष्णचन्द्र दिये छिलेन झाँप।
कालीनाग आज आहार बले सकले घेरिल
भागवती दुइटी कन्या उपस्थित हइल।
नागेर माथाय पद दिये, देखूना, ठाकुर नाचित लागिल।
"बाङ्लार लोक साहित्य पृ० १२४"

इस से यह अनुमान किया जा सकता है कि जाहर के गीत में कृष्ण का यह वर्णन पटवों के पुराने अभ्यास के कारण आ गया है। पहले ये कृष्णचन्द्र के पट दिखाते होंगे, बाद में जाहर का दिखाने लगे। और पुराने कृष्ण गीत का अंश स्तुति के रूप में रह गया।

सिंगमरमर कौ बन्यौ मुकरबा[3] हरदम द्वारा न्यारा
काली दह में गाय चरावै कंबर ओढ़ै कारा,
गज और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त लड़त गज हारे
गज की टेर द्वारिका लागी नंगे ई पैरन धाए।
जौ भरि सूंड रही जल ऊपर जब हरि नाम पुकारे
गोविन्दौ हरि आप बनायौ
एकसे एक लगैं बिसकरमा रोजु एक नाइ आयौ
भिलनी के बेर सुदामा के तन्दुल, रुचि रुचि भोग लगायौ
नाग नाथु रेती में डार्यौ नगरु तमासे आयौ
पंचबीर[४] पंचों में भाई, धुर मक्के में जात लगाई
धरथरी[१] का भरथरी
[२]अलील का बन्द
जोगी खेलैं नौऊ खंड
मांगू भिच्छा तारू गाम
अलख पुर्स का सुमिरूं नाम
दे ताका भी भला न दे ताका भी भला
बंकी महरी बनी पीर तेरी गचकीली और कलई सेत
चारौ खूंट की आवैं मेदिनी कादिम[3] लैंत पीर तेरी भैंट
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐं तोय चारों देस
नाथन की करवाई मान्ता[४] राखी लाज भेस की टेक।
मानसरोवर राजा मान की जा घरु कुमरि लियौ औतारु
एक बरस की है गई दूजी लागनहार
द्वै ई बरस की रानी बाछिला जाकौ निकरयौ बाछल नाँउ
तीन बरस की रानी बाछिला चौथी में पगु धार्यौ ऐ
पांच बरस की रानी है गई, छैई बरसु में पगु धार्यौ है
सात बरस की रानी है गई, आठँई में पगु धार्यौ है
नौ बरस की रानी है गई, दसईं में पगु धार्यौ है
ग्यारह बरस की रानी है गई, बारही में पगु धार्यौ है[५]

---

३ चबूतरा।
४ जाहर।

१. धरथरी—धारानगरी।
२. कपर।
३. मुसलमान सेवक—(खादिम से व्युत्पन्न)
४. इस पंक्ति से विदित होता है कि जाहरपीर के कारण नाथों की मानता हुई।
५. लोक गीतों की यह शैली दृष्टव्य है। समय के व्यतीत होने का ज्ञान कराने की यह विधि मनोविज्ञान के अनुकूल है।

घर को बोल्यौ नाई बामना है।
घर दूडन हम आय हैं
पांच सुपाड़ी इक नारियल से जिरमा झोली डारे हैं
चले चले ग्वा गए, पहुँचे सागर देस हैं
बैठ्यौ ई पायौ राजा उम्मर तखत पै
कहाँ ते आये कहाँ जाउ मुख के वचन सुनाओ है
ग्वा घर बेटी जनमी राजा मान कें
ग्वा के भेजे आए हैं
तौ घर देवराय लालु है, करन सगाई आए हैं
सहर दलेला भारी राव कौ, ग्वा घर देवराय लालु है
बैठ्यौ ई पायौ राजा बंगला उमक ग्वाको नाम है
बुरी करी तौ है, नाऊ बामना, बैरोन घर करि आए काजु है
इकदसिया की मावयो, द्वादस निरमल कन्या को ब्याहु है
राजा नें लगुन लई लिखवाइ
नेगी सए बुलाइकें आनें नेगोम् दई गहाइ
तुम तौ मेरे महाराज भी तुम ते कछू न बस्याइ
नाऊ हों तौ तौ ब्याह देंतो मरवाइ
लै नेगी न्यातें चले पहुँचे सैर[1] दलेले आइ
बैठ्यौ पायौ राजा उमक तखत पै बौहोत भये खुसहाल
तौमर ने हमारी लई तौमर करत बिचार
इतनी बात कही उम्मर ने जाते समामन्त भए पिरोत महाराज
इतनी बात म्यों मति कहियो राजा तोइ जिम ते डारूं मारि
चयो कुमर की तेलु रहवि हरदी चढ़वाई
रोरो मरघटि पूरे बैठि कें कजर लगायौ
पुत्रो नाऊ फिरें नगर में देंठ बुलाए
भूप चलौ ज्यौनार पाति कू सबुई बुलाए
भूप चले ज्यौनारि जोरि पंगति बैठारी
या के दौनां पत्तरि फिरें हाथ गगरो और पानी
सुवई, पूरी, मगद, कचौरी
बूरौ, दही पाँति दई गहरी।
सो ऐसी पाँति दई ग्वा राजा ने सो दासा मेरे
नगर में होति बड़ाई सो भूको न्यातें ना फिरें।
सुरसुती भाट बुलाइ तुरोन की जाति निकारी
मोज की मादा और दसल किसोरा। ऊँचे परवत मांझी
ताजी तुरकी सजि गए बंदा। तुरस बगात मारि में गंदा।

---

१ शहर।

ऊंट परवती सजे तुरकी ऐराकी
रथबहली सजि गई धरी हाथिन अम्बारी
कँसोंड़े के चारि नगर परिकम्मा दींनी
लसकर फिरैं नकीब देर काए कूं कीनी
सो उड़ि उड़ि धूरि लगी अम्मर में दादा मेरे
सो भानु गर्द में अटि गयौ।
म्वांते उमरू चल्यौ सुरति जानें बिरज की लगाई
नाऊ नेगी नांहि गैल हमें कौन बताई
म्वांते राजा चलि दीयौ और मानसरोवरि आय
मानसरोवरि आइकें राजा मान के घटाए मान
वामन राजा ते पिरोत ते मेरी कछू न बस्याइ
सो हात जोरि तेरे करूं निहोरे दादा मेरे
मेरी कछु न बस्याइ, सो सादी कुमरि की है गई।
नेगी लीनों बोलि भूप प्याऊ करवाई
तुम राजा के पास जाउ, नेग करवाऔ
नेगु कछू मति लइयों, नेगु चहियतु नाँय,
वेटी की भांमरि डारि कें तुम कुमरि ऐ लै जाउ
चमरा लीनों बोलि घास दानों मंगवायौ
मेख दई गड़वाइ।
अरे राजा ऐसी बात चौं करतु ऐ सो मेरे आए नौहुक हजार
करीं तैयारी वरैनुआं मंगवाऔ
जौ ढाकरौ[1] लावै वरौनियां तौ हमारी न्याई रुपैगी रारि
उम्मरु गयौ दहलाय पुरोत अपनौ वुलवायौ
तुम लै जाऔ वरैनुंआ महाराज।
मान राजा के मान, मति घटाऔ, सो हम लेंइ कुमरि ऐ व्याहि।
लै बरैनुआं पिरोत गयौ राजा भयौ खुस्याल
सो जल्दी करौ भामरि तुम डारौ सो दादा मेरे
सो मैं भोर हौंत बिदा न्यांते करि दऊं।
दै वरैनुआं म्वांते आये, उम्मर नें जव वचन उचारे
कहौ महाराज राजा नें क्या वचन उचारे
पांति फांति की कहा चली राजा लीजौ भांमरि डारि
ऐसी जग्गि करी तैंने म्वांई, ऐसी न्यां मिलिवे की नांहि
नाऊ दीजौ भेजि भामरिन कौ सामान मँगाऔ
मति करौ अवार जल्दी भांमरि गिरवाऊँ
सो पांति के भरोसें तुम मति रहियौ दादा मेरे

---

१. ठाकुर।

नंगर ते दिगे निकारि, करम लिखी होगी सो हम भुगतिगे।
सीनों कुमक चौक बैठार्यौ, बेदी पंडित नें रचवाई।
सखियां गाइ रहीं मंगलचार
सो मुहुरी बांधले या कुमरि कें सो बैरीन घर है गो काज।
रोसमन्त है गयौ मान नें बादर फारे
सखियां देति बिरहैन
मोसौ राजा कैसें जीवैंगी बैरीन घर कर दो काजु।
भांमरि दीनीं गेरि खुसी भयौ उम्मद राजा।
बेटी चढ़ियत नाइ।
बेटी ऐ तुम अपने घर राखौ अपने लाला कौ करि लूंगो दूसरौ ब्याहु
हाथ जोरि मान भयौ ठाड़ौ
तुम बेटी लै जाउ दमाद हमारौ दिवला ई लागै
तीज सनूने की सो कहा चली मेरें नित आमौ नित जाउ
बेटी तो मेरी बहुत ऐ प्यारी, दमाद के लूंगी आदर माव
पौफाटी पिपरा भयौ, भयो ऐ सकारौ हां।
रानी बाछलि सपत रसोई है हां
आ मेरी बांदी आ मेरी बांदी राजें बोलिला
अरे सिरकार क मेरी हो
चिरम लकुट लई हाथ में राजा ऐ बोलन चाइ
सार खिमसे सारिया राजा तोइ कैसी सार सुहाइ
महल दुलाए ढोला पदमिनी राजा जी चली राउ जी हमारे साथ।
सार कढ़ाई लई, ठं करी, फांसे धरतु सम्हारि
गल माला रदराख जी राजा मुख तै राम जपाइ
मामत देखें बालमा, रानी पलिका देति नवाइ
राजा कू तो पलिका नवायौ
ढिग बैठि गई मूढ़ा डारि
मोरछलीन कौ बीजना, रानी राजा कौ ढोरति ब्यारि
ठंडे पानी गरम धरावे जल सियरे लेति समोइ
चंदन चौकी डारि कें रानी राजा ऐ उमटि न्हवावै।
पीताम्बर करौ ओढ़तो राजा सूरज ध्यान लगावै
हुलसे[1] पे चंदनु घिस्यौ राजा मरछौनी खौरि चढ़ावै
सवा पहर सुमिरिन करयौ राजा जौजू डेढ़ पहर दिन आवै
न्हायो धोयो सापरे राजा सुफि चौका में आये
काए के थार में भोजन परोसे रानी काए कटोरा में दूध
सोने के थार में भोजन परोसे राजा चाँदी कटोरा दूध
पहलौ गिरास धरयौ धर्यौ राजा दूजौ गाइ गिराइ

१. मर्कटिया।

तीजौकौर मुख में दीयौ राजा जाके गिरी नैन ते धार ऐ
जौरे ठाड़ी गौरै गंगा भमानी पूछै राजा से वात ऐ
कै वलमा मेरे भोजन बिगरे खाली परी ऐ सिकार ऐ
कै काऊ बैरी नें बोल बोले राजा, कै काऊ ने आय दाबी सीम ।
कै तेरौ घोड़ा हट्यौ कै रन लोटी तरवारि
नां चातुर तेरे भोजन बिगरे ना खाली परी ए सिकार
नां काऊ नें बोल बोले रानी ना काऊ नें दाबी सीमऐं
ना चातुरि मेरौ घोड़ा हट्यौ ना लौंटी तरवारि
अन्न बिछना जग बग सूना, बस्तर सूनी काया ।
[हे रानी यह लाख खानू है
तोपन पै तोरा, बह के गीत, मंगल चार कौन कै गवि रहे ऐं
'आपकी बस्ती में एक साहूकारु ऐ श्रीमहाराज उसके नांती पैदा भयौ ऐ, हुन्ब के गीत उसके गवि रहे हैं, रानी धन्नि हमारी परालबदि ता दिनां ब्याहि कै लाये ऐसी मौज कबऊँ न भयो] ।
नींम दैकै जनमु जाहरपीर कौ होइ
पन सारदा सुनै बोलौ बागर के बीर की मदद ।
काऊ कै पुन्न परताप ते सभा जुरी आय
आपु नई उठि जाइयै गाय बजाय रिझाय
खरिया ओढ़ि बुलाए राजा नें गोला कौ दह्यौ लगाय
साडीमान बुलाए राजा नें कासी कूं दए खंदाइ
कासी सहर ते बिरमा बुलाइ लए कथा दई बैठाय
देस देस के पंडित आये कथा रहे वे बांचि
बिरमा बांचै बेद कूं राजा ऐ गाय सुनावें
एकु बिरामनु न्यौं उठि बोल्यौ सुनि राजा मेरी बात ऐ
बेटा की तौ कहा चली राजा करमन में तौ बेटी नांऐं
इतनी बात सुनी राजा ने मारयौ गादी तै हातु ऐं
जमदर काढ़ि म्यान ते लीयौ हियरा कूं लायौ राजा हात ऐ
काए कूं जननी मैं तैं जन्यौ बिसु दै डारयौ न मारि
ए बिरामनु न्यौं उठि बोल्यौ सुनि राजा मेरी वातऐ

वार्ता--

काऊ के परताप तै सभा जुरी आय
आपु ई उठि जाइये गाय बजाय रिझाय
खरिया ओढ़ि बुलाए राजा नें गोला कौ दह्यौ लगायौ
खोदत खोदत गए पातालै जाकौ अमिरुत पानी पायौ ।
बेलदार राजा नें बुलवाए बागन की रौस डराई
घुर काबुल ते पौधि मंगाई, धरवायौ लखेरा वागु ।
वाग बीच एक बारहद्वारी, फूला माली कीयौ रखवारौ ।

गरमी की मेवा फालसे लगाये राजा जाड़े की मेवा दाख ऐ
मामरे मामनि जामिन जम्हीरी फरीसो कलन्दरी गहर सूं गमीरी
सेंतूत वाला किलौंदे न बरमी मासले फालसे बहुत जामें सिरमी
मए नारियल दाख कारी चिरौंजी कंजा जु रीठा कैवोर पान हो मगद बहुत मीठा
मगदि बेरि मीठी मौज गोजा
सेंभनो कचनार सीसों मकोजा
रही मांस मेंहकाय चन्दन चमेली
गुलगुरू गुलीम गुलीन गुलंगा
नौरंग चमेली खूब रंगा
कमल लैन रही दौना जु मरुमो मिर्च लाल लंडी
चैरा जु चौपरी गुलकेज सोरा
सूरजमुखी फिरति नारि मोरा
लौंग रे इलायची की सदै क्यारी
झुके मद चरें जाय बारी
कीकडि करीला छए बांस गूवर
रैंमजा छौंकरा चीन चौरी
हीसिया पीलुआ केरि मोरी
हीसिया हंसंडा बारि के बीस गंगा
परी पापरी सेंगर सिहोरे हयाविनि हतेक रूख ओरे
मलू मरलू पसेंदू कचम कुंड बिराजें
मायुरी मतान ज्यां सबन में बिराजें
ज्यां साल तेंदू
नपट नाग दौंनी
मामिन्न पनमिन्न सोंदी
रौसन बबूरा सुदारम सरदं
हुसायन बबायन बड़ी बेलि पाई
घरि बेलि गूलम परि जोरि महुआ रायन लमेडो गोंदी न गड़या
आकुमर झाड़ झाड़ू करौंदा न करेरे
खट्टा जु मिट्ठा निबुआ घनेरे
देखे बादाम देरे जो चमूरा
कीकरि बड़ीला छए बांस बारी
केतकी न केवा केवड़ो नवीना
कंतन के पेड़ लगे जो बांमी न छौंकरा
सन्नारि के पेड़ देखे बहुत ई मलूक जामें बामनी के पेड़ बहुत ई दौना
रामन जमामन बर के पौधा
रमासिनि भाई यां सीमनाई पाई
घड़े बड़े पेड़ ज्यां पीपर के भाई

नीव की निबोरी लगी, अम्मारतीन के फूल झरे
वनकाट की लकड़ी रौस पै ठाड़ी ऐ
फेरि आए फुलवारी की बहाल तौ देखि रहे
मरूए की छबि न्यारी है
मरूए की छबि न्यारी गोल के नीचें ढारी ए ।
मोरछली के पेड़ राजानें फुलवारी के बीच धरे
गुमटी दुरंटा की भारी ऐ ।
एकु पेड़ पसेंदू कौ आयौ छबि जाकी न्यारी
ढरवारि भाइ जाइ, बेला कौ तमासौ एक फुलवारी न्यारी ऐ
फूलन के हजार देखे फुलवारी एक
हजारा गैंदा कौ भारी ऐ ।
खसबोई तौ आमति न्यारी न्यारी
झूंटी साखि बमूर नें डारी ऐ
भौंतु तौ सुहामनों फूल एकु देख्यौ
गोरखमुंडी एक खेतन में न्यारी ऐ
अरे जारे माली के एक गोरख मुंडी न लाए
सैंति मैंति की एक किसानू फुलवारी ऐ

वार्ता--

बांस की डाली केरा के पत्ता फूल लए फल चारि
लै डाली म्हांतै चल्यौ राजा की कचहरी आया
डाली धरी उतारि मालीनें नबि नबि कें मुजरा कीया
मैं तोइ पूछूं हीरामनि माली मेवा कहांते लाया
जो राजा तुमनें बाग लगायौ मेवा राम बाग ते लाया
खुसी भयौ रे देसापति राजा माली कूं दैंतु इनामु ऐं
चढनौ तौ जानें घोड़ा दीयौ, उड़नो बाजु ऐ

वार्ता--

जादिन बागु ब्याहिबे कूं आमें तेरी राजी करि आमें
फूला माली बिदा करि दीयौ फुलवारी डाली पै आई राजा की आंखें
फिरि राजा नें माली बुलवायौ बेटा वासी मेवा लायौ
अरे राजा परि सिगमरमर की बनी कचहरी पानों से बंगला छाया
परि लागी भभैंक मेवा कुम्हलानी मैं फूल कालि के लाया
धनि धनि रे माली के बेटा तैंनें राख्यौ सभा में मानु ऐं
लै डाली म्वां तें चल्यौ आया बाग के बीच ऐ

वार्ता--

लै डाली मालिनि चली रानी के रावर आई
परि डाली धरी उतारि मालिनी मुरि मुरि पैरों लागी

मैं तोइ पूंछू भर की मालिनि जा वासी में कहा लाई
तुमनें रानी बागु लगायौ मेवा राम बाग ते लाई।
खुसी भई देसापति रानी मालिनि कू देति इनामु ऐ
परि दखिन का चीर, मुल्तान की मांगी मालिनि कूं दीनि गहाइ ऐ।
परि मुहर रूपयों से भरी छबरिया मालिनी विदा हो भाई
परि आ दिन बाग ब्याहिबे आमें तेरी राजी करि आमें
परि सांझ भई दिन गयौ मुंदल कू राजा रावलि भायौ
लै मेवा आगें धरी आ खाइ लेउ राज कुमार ऐ
परि खाइ लेउ पीलेउ बिलसि लेउ राजा करि लेउ जिय की सार ऐ
करद निकारी फौलाद की फल पै धरतु जमाइ ऐ
राजा नें तौ करद जमाई रानी नें पकर्‌यौ हातु ऐ
परि ब्यारे बाग की मेवा न खागें ब्याहु करें जब खामें
हौले में खायौ नांइ राजा पहरयौ नांइ पुल्हालु पे
मरघट दिगे बोलना सूम उतार्‌यौ खाइ ऐ
माया दीनी सूम कू ना बिलसै ना खाइ ऐ।
मरे राजा सरग हमारौ झौंपड़ा ब्यां तौ भाषा पार ऐ
जैसें बढा थांइ कौ दियौ मुछोका जाइ ऐ
कल्लि करै सो अब्ब करि राजा काल्हि करै सो हाल
अरे तू कल्लि तौ ऐसी आवै दोळन कौ है आइ कालु ऐ
बोलौ वागर के पीर की मदद।
रातिं जगावै जोरें चिरागी
जनम सुनें ब्याकी धरि कैं कान
रिद्धि सिद्धि देता बहुतेरी कमी न आवैं खिसकें हानि
गोधन के माली नें पायौ गुरुका बचन हुआ परमान
हीरालाल बनिया ने पायौ पुतमें राजा भिज कर राम
अपनों ई घोड़ा है अरे सजबाइ लै
मारू देस के हीरा हो उम्मर को हाथी सजवाइ
रानी की डोला सजवाइ, जाते बाइस लागें रे कहार
पाछें ते जाकी बांदी ऊ जाइ
दगरे दगरे जाको फौज हूंकिगी, जाको लसकर भूमतु जाय
अरे बागन में राजा पहुंच्यौ जाइ
बागन में जै जै ई जै जै होय
राजा नें तंबू दिये तो डरवाय
जाको गठि गई पक्की मेख
राजा की खिंचि गई रेसम डोरि
अरे जाते जरदी लागीं लाल कनात

राजा नें भट्टी दई खुदवाइ
जानें खांड दई गरवाइ
जानें नेगी लिए बुलवाइ
हरी हरी गिलम बिछी दरियाई, मुरबन जू ठसकत पांय
सोभा पातुरि राजा नें बुलवाई, ठनवायौ वागन में नांचु
छोटे छोटे छोरा नाचैं ब्रजबासीन के चुटकीन में उड़ाइ रहे तान ऐ
डोला में ते रानी बोली करि लोजौ बाग कौ व्याहु ऐ
काए काए में राजा मेरौ सींग रे मढ़ावै
काए में खुरी मढवावै
सोने में राजा मेरौ सींग रे मढावै
रूपे में खुरी रे मढावै
अगिनि कुंड राजा नें खुदवायौ हुतिवे कूं नागर पान ऐ
हुती ऐ लोंग समद चंदन की और नागर पान ऐ
सुर गायन के घीअ मंगाये राजा ज्योंई देंतु ऐ ढरकाइ ऐ
एक झर तौ पाताल जायगी वासुकि देवता मगन है जाय
धनि धनि रे देवराय से राजा तेरैं होंइ वेटन औतार ऐ
एक झर तौ आगासैं जाइगी इंदुर देवता मगन है जाइ ऐ
वेटोन की तौ कहा चली राजा लाल तौ रोजु ई हुंगे
अरे राजा काए काए की तौ भामरि लेगौ
काए की परिकम्मा देगौ
गोला ते भामरि लेगौ तुलसी की परिकम्मा देगौ
परि वागु व्याहु ठाड़ौ भयौ राजा विरपन कूं देंतु इनामु ऐं
परि विरपन कूं तौ गैया दीनी, भाटन कड़े पहिराये
डोमन कूं तौ चीरा दीनें मीरासीन गाम इनाम ऐं
इक तखता में विरामन जैमैं दूजै में भैया वन्द ऐं
इक तखता में अभ्यागत जैमें चौथे में और भिकरौंड़ि ऐ
परि सवकूं पांति जुगत तैं परसौ मति करौ पांति में दुभांति ऐ
एकु एकु रुपया एकु एकु लडुआ विरफन कूं देंतु गहाइ ऐ
हुकमु करैं तौ गौरैं गंगा भमानी करि जाऊं वाग की सैर ऐ
एकु विरामनु ज्यों उठि वोल्यौ मति जइयौ वाग की सैल ऐ
चारि घरी तोपैं मूल कौ निछुत्तर मति जइयौ वाग की सैल ऐ
तुम तौ राजा नित नित आओ कव जावैं राजकुमारि ऐ
अस्त्री पुरुख कौ संगु मिल्यौ ऐ जुरि मिलि कें करि लेंइ सैल ऐ
कौन के हाथ रे गड़ुअरा सोहै कौन के कुस की डार ऐ
रानी के हाथ गड़ुअरा सोहे राजा के कुस की डार ऐ
परि दिवराइ राजा हेरूं हांकैगौ झोरी वांधति राजकुमारि ऐ
परि मुहरन कै तौ कूंड लगावैं मोतीन के जइया चारि ऐ

परि बिरपन को कहनों नाइ मान्यो झुकि आयो बाग के बीच ए
आगें आगें देखें तमासो पाछें तें पतझर होइ ऐ
बोलो बागर कै पोर को मदद,
नाम की खातरि रानी ब्याही सांहिम में राखी बाँधि ऐ
परि नाम की खातरि बागु लगायो मेरो सूक्यो लाखा बागु ऐ
परि तेगा काढि म्यान से लीयो हियरा कू लायो हातु ऐ
और ठाढी गोरैं गंगा भमानी राजा को पकरति हातु ऐ
काए कू जननी तें मैं जन्यो बिसु दै डार्यो न मारि
नाम की खातरि मैंने रानी ब्याही करता नें राखि दई बाँधि ऐ
नाम की खातरि मैंने बागु लगायो, मेरो सोऊ सूक्यो बागु ऐ
पहलें बलमा मोइ माड़ारो, फिरि करियों अपघातु ऐ
तोइ ना मारें, हम ना मरिंगे, तजि जांगे तेरा देस ऐ
परि देवै पीठि जेट में रोवें वै मारें रीसन से मूंड़ ऐ।
मेरो सूक्यो ऐ नौलखा बागु राम तेनें कछू न करी
अरे दौना सूक्यो मरुओ सूक्यो रायवेल चमेली
सबरे पेड़ नारियल सूखे सूखि गई ऐ बनराय, सूखी तो चंपे की डरी ॥ मेरो०
अरे परि तिरिया नें मति हरी राजा रे साड़ू के बगला आयो
परि आमतु देख्यो देसापति राजा फाटिकु दयो लगाय ऐ
परि मेरी कचहरी मति आवें राजा सोने के खम्म टहलांइ
खम्मु गिरैं छज्जो गिरैं कवि अरे मचेरी को सोगु ऐ
पहलो दोसु तोइ को लग्यो पतिभरता रहि गई बांस ऐ
अरे साड़ू मति बोली मारें, साला बोली मति मारें
बिन दिन कू भूलि गयो ऐ, रौतिक ते माग्यो आयो।
अरे पामन में पन्हई नाईं, तेरे सिर पै पगड़ी नाईं।
अरे चढिबे कूं घोड़ा नांमो, चढिबे कूं घोड़ा दीयो।
अरे तोइ आयो राजु दीयो, अरे रहन कूं महल दीनें।
अरे बरम्बरि को भैया कीओ, अरे साड़ू मति बोली मारें।
अरे मसहर कूं फोरि गई ऐ, अरे पिंजर कूं तोरि गई ऐ।
अरे गोली को घाव भला ऐ।
अरे गोली ते सलामतु रहता, अरे गोली ते ठौर रहता ॥ रे गो०
साड़ू मति बोली मारे
साड़ू मारे बोलना भए करेजा सालु ऐ
परि उलटी घोड़ी फेरि कें राजा आया महल के बीच ऐ
घोड़ी पै ते क्यों गिरैं राजा गिरहू कबूतर गाय
घोड़ी पै ते क्यो गिर्यो रानी नें पकर्यो हातु ऐ
रानी नें तो राजा पकर्यो लै गयो महल के बीच पै
अरो हम तो चले बनवास कू रानी तू आगे तेरो धामु ऐ

बोलौ बांगर के बीर की मदद ।
बाछलि को पूत बांजन कूं भूत, परचै की खातरि धाया ई ऐ
अजी हिन्दू मुसलमान दोनों दीन धामें, बादशाह नहीं आया ई ऐ ।
गुसा भया बागर कोई राना, जब घोड़ा सजवाया ई ऐ
घोड़ा मारि गयौ डिल्ली कूं बास्याइ जाइ जगाया ई ऐ
अजी लाल पलंक पै सोवै बास्याइ पलके ते औंधा मारा ई ऐ
अजी दौरी आई बास्याई तेरी अम्मा कौनें मरद सताया ई ऐ
पांच मौर और एक नारियल पीरजी कौ पंजौ उठाया ई ऐ
जब मेरौ मालिकु महरि करै, सबु कुनबा जारति आया ई ऐ
महलन में राजा देवराय निरपु दुख्याइ
भली सी रानी किसिमिति में ई फलु नांइ
जोगी जती सेऐ मैंने इन पै मैंने डार्यौ सुवाल
रानी और संकलपी गाय, रानी किसिमित में तो फलु नांइ
अरे भली सी रानी०
रानी माल परगनों बहुत ऐ बैठी भूंजौ राजु
राजा माइ बिना कैसौ माइकौ, पिय बिन कैसौ सिंगार
घन बिनु नांइ धनेसुरी राजा ऋतु बिन नाइ मल्हार
महलन में रानी ज्यों रहो ए समझाय ।
अरे संग सहेली बोलि कै करि आमें गाइ बजाइ
पिया पनारे पौरि जूं धनि ठाड़ी पकरि किबार ए ।
अरे बांह छुड़ाऐ जांतु ऐ निबल जानि के मोय ऐ
परि हिरदे में ते जाइगौ राजा मरद बदूंगी तोय ऐ
जो तेरी मनसा जोग पै काए कूं कीयौ ब्याहु ऐ
परि नौ सै घोड़ी ले चढ़्यो बाबुल जी की पौरि ऐ
बनजारे की आगि ज्यों गयी सिलगती छोड़ि
अरे मेरे राजा जौ तेरी मनसा जोग पै तपौ हमारे द्वार ऐ
मढ़ी छवाइ दऊं काच की मढ़वाइ दऊं हीरा लाल ऐ
परि गंगा मंगाऊं हरद्वार की नित उठि करौ असनान ऐ
भूखे तो भोजन करूं हारे दाबूं पांइ ऐ
ज्यों जोगु बनै रानी ज्यों बनिबे कौ नांइ ऐ
परि ऐसे जोग नां बनें रहे भोग का भोग ऐ
अरे राजा साधू जन थमते भले जौ मति के पूरे होंइ
अरे राजा बंदा पानी निरमला जो जल गहरा होइ
साधू जन थमते भले मति के पूरे होंइ
अरी रानी बंदा पानी गांदला बहता निरमल होइ
साधू जन रमते भले जाते दागु न लागै कोइ
अरे राजा गलखासा जामा बोरि कैं किया भगम्मर भेस ऐ

अरे खाना किया मगम्मर बाना अरे रानी गांवन में गेरू पुरवावे
अरे अपनी चादरि मगवाई, जानें छिटी चादरि बोरी ।
रानी माला हात गही ऐ
तुलसी की माला हात विराजै गोरख कूं रही मनाइ ऐ
अभी जोजूं बलमा दीखते अब ठाढ़ी पकरि किवार ऐ
अब बलमा दीसे नाँई जे उलटी खाति पछारि ऐ
अरे चौपड़िया के मीवरा तोड़ डारे कटवाइ ऐ
परि तोसर बलमा पीछते में मिलती सौ सौ बार ऐ
राजा की सीसी सुलमें थान पै पिंजरा में गंगारामु ऐ
राजा नें बंगला बंगला बैठक छोडी और गैंदा फुलवारि ऐ
समझावें नगर के लोग मात मेरी काए कू रोवे
थोरे से जीतव के कारें चों नेनन कूं खोवे
अरे टाप वे धरती से मारें
दै वे मूंह में सू डि चौरि प हाथी चिघारें
अरी मात तोइ खबर चोट लायो
तेरो राजा जोगी भयो करो जानें बनोवास त्यारी
आगें आगें दिवराय राजा पीछें राजकुमारि ऐ
एक बन नाक्यो, दोसरो, तीजे बन है गई सांझ ऐ
फिरि पाछे कूं देखतु ऐ राजा जि आमति राजकुमारि ऐ
गाम गैल दीखति नाइ राजा कहा करें गुजरान ऐ
गाम गैल दीखत नांइ रानी कहाँ करे गुजरान ऐ
पात बिछामो बनफल खामो रानी पातन में गुजरान ऐ
कहां रहे सौरि निहालिया कहां रहे राते पलंग
कहां रहे राजा मूंढ़ा बैठना, कहां रही राजकुमारि ऐ
घर रहे सौरि निहालिया रानी घर रहे राते पलंग ऐ
घर रहे मूंढ़ा बैठने रानी घर रही राजकुमारि ऐ
हां लकड़ी कंडी जोरि कें राजा मेरे बैठी आंच बराइ ऐ
अरी सोइ जा राजकुमारि अरे तेरो पहरो दूंगो
अजी मैं ना सोऊं महाराज पत्यारो तिहारो नांइ
अब सोऊंगी महाराज दुपट्टा वे छोर सौं गहाइ दै
हाथ की उंगरिया मेरे मुहड़े में लगाइ दे
पॉट ऐ सिरहाने लगाइदें
सोइ गई राजकुमारि बिपति की मारी
जि काए कूं तैल पली ऐ
जाके पॉव धारि कांटे लागें
मेरे राजाजी को हंसु उड़यौ ऐ

जे सहर दलेले में आयौ
खासे के घोड़ा जाके फाके में वंधे ऐं
मकुना हाथी जाकी ज्योंई घूमतु ऐ
नंगर की प्रजा जाकी रोवै, ऐसौ राजा फेरि न मिलैंगौ
अजी कौन के हाथी कौन के घोड़ा अपनी जानि मरदौ फाके में परी ऐ
अरे भोर भयौ ऐ परभात, रानी वाछिल जागं
वोलो वागर के पीर की मदद ।

६. देवी सोइ गई भमन में नौरंग पलंग नवाई
अरी नौरंग पलंग नवाइ
आइंत पांड़त गेंदुवा टाड़ौ वालम ढोरैं व्यारि ऐ
धूर उडी व्रजराज की अजी जिन गलियन की धूरि ऐ
अजी जिन गलियन की धूरि अंग लागी लिपिटि नहीं
जम भाजे जांत ऐं दूर ऐ ।

वार्ता--

अरे चलि मेरे वेटा डिगरि चलौ हतिनापुर मनुआ ढारया
कैतौ रे गुरू गंगाजी न्हवाइ दे नातौ छोड़यौ जोगु ऐ
तो पै तै गुरू जांउ न्हाइ लेंउ गोरख सी गंगा
अरे मैं मिलू कुटम में जाइ वाजरौ वै लु्ंगी वंगा
तम्मू मेख उखारि मेसे चेला कसना लियौ वनाइ ऐ
मजल्यौ मजल्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ ऐं आसन माड़्यौ
आसन मांड़ि भगम्मर तान्यो वावा वैठ्यौ जल थल पूरि ऐ
अजमति के गुर तम्मू तनाऐ अनहद के वाजे नाद ऐ
विन खूंटी विन डोरि मेरे वावा अधर भगम्मर तान्या
परि सोमत जागे पांचौ पंडा छठी कमंता माइ ऐ
अरी ए कैरी टिडोरी[1] कै वंजारी कै कौरों दल आये
कै सिपाई कै रंगीलौ कै जरजोधन आयौ
अरे वेटा ना सिपाई नां रंगीलौ ना जरजोधन आयौ
परि न टिडौरी ना वनजारी ना कौरों दल आये
परि कजरी वन का गोरख जोगी[2] परभी न्हाइवे आयौ
अरी माता जा जोगी से वादु करूंगौ मेरी भुमि नाद वजायौ
भाई जोगी जती से वादु न करना रहना दोऊ कर जोरैं
परि घुटी दवाई मुडिया जोगी जे तो अपरंपार ऐ
जोगी जती से वाद न करना रहना दोउ कर जोरै
सेर चून दे पांइ पूजना जे जोगिन का वादु ऐ

१. टिडोरी से अभिप्राय टिड्डी दल से प्रतीत होता है ।
२. गोरख नाथ को कजली वन का जोगी वताया गया है ।

७. कमर मुलक्का गल में सेली, अंग मभूति लगी अलबेली
नागर पान चबाइ रह्यौ बीरा, सुघड़ नाथ रखवारे नैंमा
जाके छोटी छोटी बावरी, जाके कंधा झोरी कावरी
पांइ पदम झलकें झाला, जाके गुदो परी मैजंती माला
पांइ पदम्म झलकें मारो, सदा नाम को माझाकारी
चापे मखमल की गूदरी, धरे सौमेठ की मूंदरी
सो हीरा लाल लगे नग सांचे ग्या गुदरो में
सो कामरि ओढी स्याम कारी जि परमी कृष्नु जांतु ऐ
अरे लै पत्तुर औघरिया[1] चल्यौ
गामु नगर पूछत फिरयौ
गंगा दगरौ कितमें गयौ
अरे राजन की ड्यौढ़ी पैं गयौ
राजन कें परदन की रीति
तुम मति घुसौ महल के बीच
जब आइ सुरति जोग की भाई
हमकूं परदा कैसो रे भाई
सन्तनाम लै अलख जगायौ
भिच्छाचारी आइ कहूं न पायौ
तुही तुहो करि बोल्यौ बानी
चौंकि परी कौंता पटरानी
मोती मूंगा मुकता माल
भरि लाई सौने के थार
भरि लाई सौने कौं थारी, पें आइ गई ड्यौढ़ीन पें ठाड़ी
नेंम धरम कूं कौंता करो, दे परिकम्मा पांइनु परी
सो भूखे औ तौ भोजन जें लेउ, प्यासे औ तौ पानी पी लेउ
ए बाबा जी, रहि जाइगी मामना[2] तिहारी
सो दै या जोगेसुर मोइ आसिका[3]
अरी माता कांकर पाथर क्या दिखलावै

---

१. औघरिया—औघड़ नाथ
२. मामना—मत्त।
३. आसिका—(आसिखा (फा)—आशीष, आर्शीर्वाद।

मोइ परभी को वखतु वतावै
एसा वात माइ ना सूझै परभी जाइ पंडवनु वूझै
अरी कहां खेलें तेरे पांचो वीर अरजुन, भीमा सहदेव भीम
सो गचकोली को वन्यो ऐ चौंतरा ए वावाजी
सो गचकोली को वन्यो ऐ चौंतरा ए वावाजी
देखि सीतल पेड़ु रो मल्हारी
म्वा खेलें पांचो पंडवा
मातु कमंता भेदु वतायो, जव औघड पंडन ढिग आयो
भीमसैन भीयो कीनो, अव सहदेव नें दानु दीयो
गाड़ि कचैरी पांड नादु फूंकि दीयो
अरे राजा वैठे न्यावु चुकावें, इंदर वैठे जलु वरसावै
वैठे जंगल चरती हिरनो।
हम जोगी कूं वैठें ना वनें, नवै कंठ पदमिनी फिरती, सिध गोरख जागै
अरे वेटा उड़ता तीतुर उड़ता वाज, उड़ती जंग हिवाई
हम जोगी से उड़ता ना वनै पांचो जनों से टक्कर खाई, सिध गोरख जाग
अरे हम भी मरसी[४] तुम भी मरसी, मरसी कोट अठासी
वेद पढ़ंते विरमा मरिगए, जे परी काल की फांसी, सिध गोरख जागै
अरे काको गुरू तू काको चेला, कहा तो तिहारो नामु ऐ
अरे चेला गोरखनाथ को औघड़िया मेरो नांमु ऐ
अरे वेटा कजरी वन मेरो स्थान, गुरू हमारे विद्यामान
हम आए तेरी परभी न्हान
तेरी कवै परैगी परभी पंडा वेद को वताइ
अरे परभी पूजै सेठ साहूकार दुनिया और राजा
भैनि भांनजी न्योंति जिमावै, जोरा औरू तीहरि पहरावै
जे करै गऊन के दान सौने में सींग मढ़ावै
सो सिर पै टोपी, गांडि लंगोटी, वूझन आए ए वावाजी
तुम दान तो करौगे परमाधारी
सो कहा गंगा में तुम जो ववो
गरव की वोली जी मति मारो पंडवा, वचन करौगे यादि ऐ
जा वोली को म्यानों दुंगो वेटा, असलि गुरू को चेला
परि छिमा खाइ औघरिया चाल्यो आयो गुरून के पास ऐ
जै लै वावा झोरी पत्तुर नांइ सधै तेरो जोगु ऐ
परि जोग नांइ जोंहर भयो वावा विन खांडे सगरामु ऐ
वेटा के पंडन्नें मार्यो, छेड़्यो के पंडनु दई गारीं

४. 'मरसी' शव्द का रूप राजस्थानी मारवाड़ी प्रतीत होता है।

अरे बाबा नां पंडनु ने मार्‌यौ छोड़्‌यौ ना पंडनु दई गारी
अरे सबद की मार दई पंडन्नें लोया करैया काढ़ि ऐं
बोलौ बागर के पीर की मदद

८. *मैं सई स्याम सरनि यमुना की तेरे चरन सिर नाग्या ध्यान*
अब जोगी जती सती संन्यासी मगन होंत धरि तेरा ध्यान
चारयौ पहर भजनों में रहवे प्रात होत गंगा अस्नान
तीनि लोक ते न्यारी न्यारी मथुरा वेदन गाई ऐ
चौबीस घाट की कहा कहूं महिमा विष विसरांति बनाई ऐ
उज्जलि कुल चौबे गुजराती अपनी देह पुजाई ऐ
भूतेसुर कुतवाल सहर में केसवदेव ठकुराई ऐ
अलख निरंजन तेरो जस गामैं
मथुरा जी की पश्चम लटम में वह चली जमुना माई ऐ
अरे बेटा कै पंडन के अगिनि लगाइ दई कै कोढ़ी करि डारौ
अगिन न देता, कोढ़ी न करता बड़ा लगै अपराध ऐ
बड़ी जामें गंगा माई की हरिलै गंगा माइ ऐ
अरे सबरे चेला भरजौ करौ लै चीपी झोली में धरी
तुम पंडन के मारौ मान, गंगाजी हरौ,
अरे बेटा सब तीरथ हरि लाओ, मान पंडन के मारौ जी
लै पत्थर भौधरिया चल्यौ, गाम नगर पूछतु फिरयौ
गंगा दगरौ कितमें गयौ अजी गाय चहरि बूढ़ा पीपरो
बाबाजी न्या गंगा कौ मारगु चल्यौ
जाकी नजरि परी माराजी करके पै ठाड़ो भयौ
अरे हाथ जोरि गंगा खड़ी
आयसे दीनदयाल महरि माथ नें करी
असलि गुरू के चेला हरिलें मोइ पत्थर बीच
अरी हटि हटि गंगा बावरी, हाथ मेरे फावरी
जिमा वस्तु धन तोमें न्हाइ, कोढ़ी न्हाइ कलकी न्हाइ
हत्यारी न्हाइ मरयारी न्हाइ, अब माउम न्हाइ गनिया न्हाइ
अरे मेरे हुकमु गुरून की नांइ, गंगाजी तोमें बोरूं न पाइ
अरी कि माता तेरी जम पारायन नांइ, हम तेरे जम में कबऊ न न्हांइ
जोगी मिर्त लोक से छूटी धार, सिवसंकर में ओटयो भार
श्रीकृष्न के चरन रही, मैं महादेव के सीस रही
मोइ करि सेवा भागीरथु लायो
अरे के बाबा चोरें में लाइ डारो, मंज लोक पाइ डारी
दुनियां न्हाति मोय पाप की भरी

अरे ज्या पत्तुर में कबऊ न आऊं बाबा घर घर मांगी भीक ऐ
झोरी हमारी कामधेनु, संसार हमारी बारी
अरे जल की छोइया करैं जुवाब, सुनि री गंगा मेरी बात।
वया लगायौ जोगी ते बादु, तुम ऐसी लहरि बहौ पटरानी
जोगी और जोगी को तौमरा, काऊ लोक कूं बहि जाइ
बैठि मगरु खार के बीच, जाइ काकरी सौ खाइ
अरी माता आइजा पत्तुर, है जा पवित्तुर, गुरू करें निस्तारा
बाबा नें पहला पत्तुर बोरा दरयाइ में पहला समंद समाना
दूजा पत्तुर बोरा दरयाइ में दूजा समंद समाना
तीजा पत्तुर बोरा दरयाइ में तीजा समंद समाना
चौथा पत्तुर बोरा दरयाय में चौथा समंद समाना
पांचा पत्तुर बोरा दरयाय में पांचा समंद समाना
छठवां पत्तुर बोरा दरयाय में छठवां समंद समाना
सतवां पत्तुर बोरा दरयाय में सतवां समंद समाना
सातौ समंद आठई गंगा नौसैं नदी नवाडा
ताल पोखरा सबुई समाइ गए पत्तुर भरि एैं नांइ ऐं हां हां।

९. मूंगानाथ गामें, गुरू गोरख उस्ताद कूं मनावें
सुन्दरनाथ अर्थामें छवि महरी की न्यारी ऐ
चोआ चंदन और अरगज़ा आमे महक भारी ऐ
भीतर परसि कें आए पीर, भीतर ऊते आए
छवि डूंगरऊ की न्यारी ऐ
डूंगर की छवि न्यारी, डोरी नाथ नें उतारी
डोरी तौ उतारी जाकी सोभा बरनी न्यारी ऐ
ऐरापति हाती सजवाए, लख चौरासी घंट लगाऐ
नकुल कुमर हौदा बैठारे।
गुनु झाऊन में उड़ति दिखी रेती
चलौ रे बेटा परभी सौंमोती परी
गैयन के से छूटे झुंड रीते पाए राधाकुंड
ददबल कुंड, सकल बल तीरथ गंगा में जलु नाऐं
हम परभी काए में न्हामें।
बारू रेत के जमि रहे खासे
लैकैं बेद सहदेव बाँचें
माइ कमंता पूछौ एक पोथी वा पै धरी
माता बाचि रही असलोक, कै गंगाजी भई अलोप
कै सिवसंकर संग गई
मोइ ब्वाई को भरमु समानों, गंगाजी मेरी ब्वाई नें हरी
अरी माता सबरी पौहमि पै ढूंढ़ि ढूंढ़ि मारूं मेरी गंगा कहां लै जायगौ

अरे गंगा में जल् नाएँ मेरे बेटा समद करो असनान एँ
गंगा ते चले समद पै आए समंदुर में जल् हतु नाएँ
समंदर में जल नाएँ मेरे बेटा कूआ करो असनान एँ
समंद चले गोला पै आए, गोला में जल् न पायौ
अरी गोला में जल् नाएँ मेरी माता कहाँ करें असनान एँ
गोला में जल् नाएँ मेरे बेटा महल करो असनान एँ
गोला चले महल में आए, महलन् में जल् नाएँ
मँक टिको मेरे अर्जुन बेटा, ठाकुर पूजा जाऊँ
चली चली मंदिर में आई, जल की बदिया नाई ।
परि मन चंगा कठौटी में गंगा, परभी लई ऐ साधि ऐ,
राजाबाबू उंगरी कूं बोरें बहुतेरे स्थान लोटें ।
अरे बेटा के बारी के बैंगन तोरे कै पनवारी के पान एँ
कै तौ प्यासी गाय हटाई कै भौते बामन ललकारे
कै कोई जोगी कै कोई जंगम कै कोई सिद्ध सतायौ
अरी माता ना बारी के बैंगन तोरे ना पनवारी के पान एँ
ना तौ प्यासी गाय हटाई ना बामन ललकारे
ना कोई जोगी न कोई जंगम ना कोई सिद्ध सतायौ
परि भूरंगा सौ एक जोगना परभी पूजन आयौ
परि परभी नाई बताई मेरी माता न्योंई दियौ बहकाय एँ
परि जानि गई पहिचानि गई बे आइ गए गोरखनाथ एँ
व्याकौ रे औघरिया चेला हरि लै गयौ गंगा माइ ऐ
गंगा ढूंढन निकरे हाँ, कौंती के पाँचों हाँ ।
भटकत विकट उजार है हाँ ।
अजौ कंधा गजा भीम ने धरी, माइ नर्मदा संग लई
वे गंगा ढूंढन चले, कै पंडा परबत पै चढ़े
अबी आमस देखें पाँचौ पंडा, पारबती न्यां घोटें भंग
वै मदम देखि हँसे, कि माया गुफा में धंसि,
भीम— अरे जोगी अब कहाँ जातु ऐ बदन दुराई
तू दै जा मेरी गंगा माई
परबत की करि डारूं छार
मेरी गंगा भी हरि लाए, अब को ही दामनगीर
कुंती— सरग दुमकाइ सोर में परी, हाथ जोरि पामन तर परी ।
शिव— अरे बेटा एक गंगाजी भागीरथ लै गयौ राजा सगर की नाती
राजा सगर को नाती बेटा दिलीप को, राजा
लै गंगा भी ज्याते भस्यो दाने[1] में लई ए उड़ाइ ऐ

१. पुराण के जगह 'दाने' हो गये हैं ।

जब दाने की जाँघ चीरी गंगा ने लीयौ परभाइ[२] ऐ

वार्ता—

गोरख— मेरे पास भभूत कौ गोला जल में दुंगो डारि ऐ
जल में दुंगो डारि पंडवा सूखौ लेउ निकारि ऐ
सूखौ लेउ निकारि मेरे बेटा घिसि घिसि अंग लगाऊं
सकल बरन ते कपड़ा उतारे कूदि परे जल बीच ऐ
परि पहली डूबक मारी पंडवा सौने के जौ लाए
परि दूसरी डूबक मारी पंडवा चाँदी के जौ लाए
परि तोसरी डूबक मारें पंडवा तांबे के जौ लाए
चौथी डूबक मारें पंडवा लोहे के जौ लाए
परि पांचई डूबक मारें पंडवा पाँडौ माटी लाए

कुंती—अर बाबा सैर दलेले की रानी बांझ, रोवति ऐ सबेरे सांझ
बुन की कोखि हरी करै बाबा तेरी जब जानूं करामाति

बाछ०—अरी मैना तेरे ऐ तीरथ कौ धाम, जोगी जती करें असनान
कोई पूरौ सिद्ध आवै बेलो बांगर भेजि री

गो०—अरी हतिनापुर की रानी, तैनें बात कहीए स्यानी
मेरे हिरदैं बीच समानी
तोइ गंगा दीनी कौल की, तोइ परी का और की
तुम लंबी कूंच करौ, क बेली बागर कूं चलौ
बोलोई बागर कौ पीर मदद ।

१०. चलि मेरे बेटा चलि मेरे बेटा
डिगरि चलौ औघरिया चेला हां
चलि मेरे बेटा डिगरि चलौ नगरी कौ लोगु दुख्याना
तम्बू मेख उखारि मेरे चेला कसना लीयौ बनाय
देसु भलो रे पच्छिम की धरती और मिठ बोला लोगु ऐ
पानी मांगे दूध रे पिलामें देसु भलौ हरिआना ।
घर घर गोरी हांसिलो मिरगा नैनी नारि
पानी मांगैं दूध रे पिआमें देसु भलौ हरिआना
देसु भलौ हरिआना बेटा दही दूध कौ खाना
अजी काम जाम हांकि दीए, लंबे ऊं कूंच कीए
जाते बौलैं गोरखनाथ बेटा देस कौन रे

औ०—बोबाजी चलतूं अगारी, बागर छोड़ि दई पिछारी
सैर कामरू धना
आसनु करौ बनाइ, तम्बू नाथकौ तना
हाती पीलमा लाए, तम्बू ठाड़े करवाए

---

२. प्रवाह का रूप 'परभाइ' हुआ है

तनि गईं तम्बून की कनात, जुरि गई जोगीन की जमाति ।
जिननें आसनु करयो जमाइ, कि तम्बू भौंरे पै तनो ।
पायो भूमरिया चेला, दीयो धोबिन कें डेरा
धोबिन आदर भाव कीयो, आनें मूढ़ा डारि दीयो ।
आनें पढ़ि पढ़ि सरसों मारी, नाथ की चकसि गुम्म करि डारो
आनें कबरा गधा बनायो, हाँकि घूरें पै दीयो
पायो काली का चेला, दीयो धीमरि कें डेरा
धीमरि आदर भाव कीयो, आनें मूढ़ा डारि दीयो ।
आनें पढ़ि पढ़ि सरसों मारी, नाथ की चकसि गुम्म करि डारो
आनें बकरा करि बिरमायो, बाँधि खूँटा से दीयो ।
बैठा बस्ती बड़ी लम्बी परकोटा, सबु बस्ती को एकु लपेटा
तुम छोड़ो कुंडी पटको सोटा
तुम नाथ भूमति में आओ चेला बेगि जाउ रे
कामरू की नारी, भजी विद्यामान भारी
छोड़ि बरिताम छोड़ी कालिका भमानी,
मेंढ़ा और बकरा कोए जोगीन के बासरा
चौपड़नाथ गए तेली कें मुंडा बैलु बनायो हाँकि घानि में दीयो
भजी दम्मक दम्मा पानी भेरें, तेलिनि हाथु सबेरी फेरें
धुनी धोकसे बेनई लाइ, भजी पीना में मुंह मारें, प्यास तेलिनियो करै
हाथु झोरी में डारयो, चेला मोहननाथु काढ़यो
कर जोरि भयो ठाढ़ो
मैं हुकमु नाथ पाऊं, गढ़ कामरू चेताऊं
गुरू ने पंजो धरि दीयो, मीरू मोहि सबु लीयो
दुनिया ध्यान ही भरी
जब जेहरि धरि गई नीम नारि पानी कूं चली
नैनी मृगनैनी ओढ़ें प्रेम पीताम्बर नारी
भागी गात न सम्हारी
चालि मधुर सी चली
जेहरि धरी उतारि नारि नाथ की धरी
गोरखनाथ पारो, विद्यामान एं पे भारी
इननें विद्या परखायी, विद्या बाँधि सबु गई
जब नपई करि कें मारि हाँकि गाम में दई
कामरू देस की नवरी महरिलो सबु नपई करि डारी
धरि महलों रहनी पान चबाती कहुं धूलि करि डारी
एक बार में करी लुगाई रोटीन की बैठी देनें
बोलो डोंगर में चोर की नदर

वार्ता--

११. चलि मेरे बेटा डिगरि चलौ हरिश्राने कूं करौ कूंचु ऐ
उखरी तम्मू श्रौर कनात, चलि दई जोगीन की जमात
जाते बोले गोरखनाथ
बेटा हरिश्राने कूं चलौ
मजल्यौ मजल्यौ जोगी चाल्यौ मजल्यौ पै श्रासन माडयौ
श्रासनु माँड़ि भगम्मरू तान्यौ बैठ्यौ जलु थलु पूरि ऐ
हरिश्राने की सीम में बाबा नें बजाइ दयौ नांउ ऐ
हरिश्राने को रानी बोली, जे श्राइ गए भीलानाथ ऐं
श्ररे जा मेरे बेटा डिगरि चलौ दूध के भोजन लाइदै
श्रन्न के भोजन नां मैं जेंऊं बेटा दूध के भोजन लाइ दै
श्रजी लै पत्तुर श्रौघरिया चल्यौ
श्रोघड करी नाद में घोर, जब चौंकें जंगल के मोर
हाजुर ऐ सौ भेजि माता
बाबा दूधाहारी ऐ
श्रन्न के भोजन नांइ लेइ माता बाबा दूधाधारी
कै तो माता दूध री पिलाइ दै नां तौ श्रोटि सरापु ऐ
नाद में नाऐं, गोद में नाऐं दूध कहां ते लाऊं
पार के नाऐं परौसी कै नाऐं दूध कहाँ ते लाऊ
गाम में नाँऐं परगने में नाएं मैं दूध कहां ते लाऊं
श्ररी कै तौ माता दूध री पिलाइदै ना तौ श्रोटि सरापु ऐ
श्ररे न्हाइ धोइ कुमरि चौकी भई ठाड़ी, सुरति करताते लगाइ लई
बाबाजी मेरे ख्याल परयां ऐ
बेटा जसरत के उदई के नातीं, मेरी तुमई ते डोरि लगी ऐ
जाकी छूटी कुचा ते धार धार पत्तुर में श्राइ गई
जानें पत्तुर भरयौ ऐ झकोरि दुश्रा मेरे गुरू की श्राइ गई
श्ररे क्या तुम देऊ भोलानाथ कहा मेरें हतु नाऐं
श्रजी जे तुमनें माग्यौ नाथ दूध मेरें हतु नाऐं
श्ररी माता नौ कोठी मारवाड़ में
छप्पन कोट हरिश्रानों
बारह पालि मेवाति ऐ
श्रन्न चाल परि जांय
पानी के जवाल परि जांइ
परि दूध घनेरा होइगा
वोलौ बागर ई पीर की मदद ।

१२. किए कूंच पै कूंच संग सबु चेला लै लीये
राजा उम्मर के बाग नाथ ने डेरा दै दीये

सूखे बाग में मति रहै बाबा काऊ हरियल में चलि रहना
सूखौ से तो हर्‌यौ है जाइगो बाबा बाग गुजरान ऐ
नगरी ते कूरी बटोरिसा बेटा बामें दै दै आगि ऐ
धूनी दई धूमां धुमड़ानौ मोर रही बनराय ऐ
परि हरी डारि पै हरियल बोल्यौ मुनिया लाल सिंगारे
परि लालामी थोपरिया मार्‌यौ गिर्‌यौ खोडिगौ केसा
अरे बाबा गलगली बोलि गलगला बोल्यौं
स्यांपु सिंगारयौ कलजुग की चिड़ैया बोली
मू'सौ डूकनु आयो
परि सुपरभात करन की ऐ पहरौ नगर उमाले आयौ
परि धनि धनि रे कलि गोरख जोगी हर्‌यौ कियौ तैनें बागु ऐ
अरे बेटा भूक प्यास की कोई नांइ बूझें दौलत के ढेर ऐ
अरे प्यास लग्यौ थोपड़िया चेला घूंटक पानी प्याइ दै
परि बाबा औरें बाग में गोला हों तौ बागु सूखि चौं जातौ
अरे बेटा जा राजा में बागु लगायौ पहलें खुदायौ होगौ कूआ।
पीर की मदद
१४. अरे लै लई लोमा डोरि
भागु गोला पै आयौ
कूआ पै जी पाए चौकीदार अरे तौ जमु जहर बतायौ
जल मत पीवें नाथ अरे पीवत मरि जाइगौ
राजा नें रखवारी बैठारे
मारें दहसति के मारे
मैंने जी दूढ़े तीनों लोक जहर मोइ कहूं नांइ पायौ
मैं धाइ गयौ सागर देस जहर कूआ में पाइगयौ
चेला के जी मन में पाप नाथ की टोपी मूंगो
लंगोटी मूंगो
बाबाजी की चमचम चटुआ मूंगो
पांइ खड़ाऊं हाथीदांत की बैजंती माला मूंगो
बाबा की सोहरी सुमिरिनी हात की ऐ लै मुगो
मुंगेरी सोटा लै मुगो
जाको मोलन घोड़ा मुगो
मचरौ मउ धउबाब नाथ कूं ठोकि खड़िया दूगौ
इतनों पापु बिचारि नाथ नें लोमा फांस्यौ
लोमा दीयौ फांसि नाथ ऐ जमु मांइ नायौ
देखे बाबरी लाल नाथ गद्‌गदि कै रोयौ
राजा की मोइ दोसु दास अपने करमन कौ
जो दुख लिखौ है लिलार नाथ गाई भुगत्यौ चाहिये

मन में बड़ौ घबड़ानों
अरे आयौ गुरू जी कौ नामु गोला तौ मुंहड़े जूं उमग्यौ
पानी पाछे भमारियौ, मरूए ते लाग्यौ
अरे ड़ोंड़ा चलि बाज्यौ फुलवारी में लाग्यौ
अरे तौमां भर्‌यौ ऐ झकोरि नाथ के आसन आइ गयौ
अजी तौमा धरयौ ऐ अगार सरकि पीछें भयौ ठाड़ौ
बरकिगे भोलानाथ चेला तौ मेरौ कहां गयौ ऐ
बाबाजी मैं पाछैं ठाड़ौ
अरे बेटा नेंक आगें आइजा, कुल्ला करवाइजा
अरे नैंक थोरौ सौ पीलै पानी
पानी के बंदा जौरें न जाइगौ
बाबा सुनि आयौ में पानी कौ बतायौ
जहरु ऐ पानी, पीएं ते है जाउगे नाथ गुरमानी
अरे बाबाजी पीवै तौ पीलै नाथ अरे नँई लुढकाइदै
अरे नंई उल्ले तै पल्ले ऐ प्याइ दै
अजी आकनाथ, ढाकनाथ पत्थरनाथ
नंई सबु चेलनें प्याइदें
पानी के जौरैं न जांगौ

वार्ता--

रंगी चंगी बौ भौनारी, खोटी भौंह मुलम्मे डारी ।
घिसि घिसि एड़ी धौबै नारि, उनके गोरख द्वार न जाइ
बाती खेंचि चूल्हि में देई. हौलें हौलें मेरी चन्दो मगरे लेइ
झंगा बिछावै सोवै नारि, पार परोसिन जौरें न जांइ
हींसतई ब्वाइ छोड़ौ कंठ, सोमत ई व्वाके देखौ दंत
रोमति पीसैं, सिनकित पवै, सदां दिलद्दर उनकें रहै
तिल भौरी मांथे मसौ
और कनफुटी लीक, भाजनों होइ तौ भाजि कंता नइं बेगि मंगावै भीक ।
अरे बनि ठन औघडनाथ बस्ती में आइगयौ
मांगत जी मांगत नाथ पल्ली होर कूं निकरि गयौ
नाऊन के मांउ
जाते कोई माई मुखना बोलै, औघड़ गलियन में डोलै
कुअटा पै चवैया, गलियन में गैरा
एक सखी ज्यों कहै राज कौ ऐ बेटा
जाके गुरू नें खंदायौ जे तौ मांगि न जानै भीख
जाके घर में नारि करकसा
जाकें मारी वोली, जाई ते भैंना है गयो जोगी

गुजर पार्वती मारि अरे ससनाएं खिलावें
अरे पसना में झुलावें
अरे तुम कहां गये भोलानाथ अरे मोइ न बतावें
मैया री मेरी में मांगन आयो भीख मेरे गृह में संदायो
भिम देखि राजकुमार क मेरो तौमा रीतो
जा नंगर को पापी राजा रैयति संगयो डांड़ि ऐ
राजा में सब परजा डांड़ी काळ में बासति भाएं
अरी मोइ भीख न डारें
भलो रे नगर, धरमातमा राजा, बाबाजी तुम भमाये डोलौ
ऊंची पौरी बक दुवारी एक दवा झूमें द्वार
रानी बाधिल नगर दुहाई जब रैयति पर पावें
बुनकेंते से भावें रे बाबा जब रैयति पर पावें
गोई ग्वेई महल बताइदं ठकुरानी माथ निवाजें तोइ
माथ निवाजें सब दुख भाजें
जो तुम करौ सोई सुमें छाजें
रानो बाधिल की पौरि पै औघड़ को बाग्यो नादु ऐ
पीर की मदद ।
१४. चीर उतारि धरयो री रानी में सिर ते सोटा डारयौ
एक हात ते सोटा डारें दूजें तं मोड़ें पीठि ऐं
सुनिलै री रुकमा दें बांदी बाबा कें डारि आ भीक ऐ
भीक सै तो भीक दैंया नहीं बातन में बिरमाइलै
थार भरे री यजमानिक मोती थार बांधी भरी भिच्छा लावें
सैंतु ऐ तो तू सै बजमारे मारूं अकेला भारि ऐ
परि बांदी ते बांदी कही तब मन में है गई भागि ऐ
पकरि पांय चौखटि से मारूं डाड़ दांत जाइ टूटि ऐं ।
डाड़ दांति जाइ टूटि बजमारे करि करि हमुसा खाइ ऐ
परि बांदी गारी दै गई सतगुर कौ चीतय भाएं
परि भागें आ मैया भागें भा तेरे लऊं हाथ की भीक ऐ
परि भागें लई बुलाइ बाबनें त्वाफौ दई बिछाइ ऐ
पहलौ सोटा ऐसो मारयो गयो हाथ ते थारू ऐ
दूजो सोटा ऐसो मारयो भयो चुरीनु को ढेर ऐ
तीजी सोटा ऐसो मारयो डारयो कमफटो फोरि ऐ
डारि फोरिया तिबिरि गया जब बग करि बस करिहोइ ऐ
परि आपनु रानी न्हवन संजोवें जोगीन पै पिटवावें
बे बाबा ते घर घर डोलें बे बराऊ मा मारें
तुम बाबा ते कुबचन बोली बाबा में गजा लगाई
परि खाल कढ़ाऊं तेरो, भुम मरिवाइ दऊं बाबाजी ऐ साह दें बोमि ऐ

अरे रानी जहां भेजैं म्वां जाऊं मेरी रानी बाबा मांऊ अब न जाऊंगी
परि भकर भकर बाकी आंखि बरैं सोटन की मार लगावै
अरी महल चढ़ी तोइ बोलै कमंता सुनि बाबाजी बात ऐ
पीर की मदद ।

१५. पतिभरता के द्वार नाथ नें नादु बजाइ दयौ
थार भरे गजमानिक मोती रानी भिच्छा लावै
लीजौ रे परदेसी बाबा जोगी आस्या लागी तेरी
तेरे हात की भिच्छा न लुंगौ माता बालातन की बांझ ऐ
बांदी आई मेरी मारि कें बिड़ारी मोइ का ऐबु लगावै
नांती हमारे पलना में झूलें बाबा बेटा गए रे सिकार ऐ
पांच चारि तौ घर आंगन खेलें द्वै भैंसिन पै ग्वार ऐं
जो मैया तेरें लालु घनेरे एक फलु माग्यौ देना
तीरथ बरत करावें बहुतेरे तेरा तोइ मिलायें
सुनियों री मेरी पार री परौसिन जा बाबा के बोल ऐं
मैं आई बाबा पै मांगन बाबा बेटा मागैं
तुम रे गुरू मैंने सेए घनेरे पूरी मेरी काऊनें न पारी
हां जो सेओ जो निगुरौ सेओ सतगुरू भेंट्यौ नांइ ऐ
जाइ नांइ सेवै माता मेरे गुरू ऐ हरयौ री कीयौ तेरौ बागु ऐ
नामु सुन्यौ रे जानें हरे रे बाग कौ सीतल भयौ रे सरीरू ऐ
कौन गुरू रे तुम का के चेला कहा तिहारौ नामु ऐ
चेला गोरखनाथ कौ औघड़िया मेरौ नामु ऐ
नामु सुन्यौं गोरख जोगी कौ जाकौ सीतल भयौ सरीरू ऐ
हां बाबाजी बैठि जा गुरू कह देउ मन की बात ऐ
चारि घरी रे बातन बिरमायौ तौजूं भोजन है गए त्यार ऐ
आ बाला जी बैठिजा गुरू बैठि कें देंउ जिमाइ ऐ
लै पत्तुर आगे धरयौ जाइ भरि दै राजकुमारि ऐ
दाबि भरूं तेरौ पत्तुर फुटै बहि में भोजन छीजैं
छोटौ पत्तुर मुकति घनेरी कहौ नाथ क्या कीजै
सैंज ई लैंन सहन ई दैना सहज करौ ठकुरानी
सहज ई सहज करौ ठकुरानी पत्तुर सब की करै सम्बाई
अरे बाबा बारह भैंगी पकमान समाइ गए दस बूरे के मांट ऐ
परि सोलह कलस जामें घी के समाइगए पत्तुर भरिऐ नांइ
उभकि उभकि पति भरता देखै भरै न रीतौ होइ ऐ
पत्तुर पूजि छत्तरू पूजि कालकंट भाजैं दूरि
जा भंडार ते आवै सदा भरपूर
अलहदास करते की बानी
क्या करंते कूं क्या करें

रीते मंदिर फेरि भी मरें
जो माता महूरि करें।
भागें भागें ग्रौघड़ चेला वाके पीछें राजकुमारि ऐं
अवई बाग किनारे आई सतगुर की सुमिरि गई तारो
में बावरिया नगर बसायौ बेटा घरबारी बनि आयौ
कैरे ठगी ठगें गई माई कैरे ठग्यौ घरबारी
नांइ ठगी गई माई नांइ ठग्यौ घर बारी
सवा लाख बागर की रानी सेवा करन तेरी आई
सेवा करन तेरी आई लटधारी बाबा भोजन भौतिक लाई
जा मैया पै सेवा न होइगी बेटा जा घर राजू रिस्याइ ऐं
जोगी नाव परी मझधार पार मोइ करवा रे जोगी
मामना बाबा रहि जाइगी तेरी
मो घर कोई न रिसाइ पिया परदेस गयौ मेरी
आसरौ बाबा आइकें लियौ ऐ तेरौ
परि जे कंचन सी देह खाक में लगाइ सऊं तन में
सेवा की बाबा लागि रही मन में।
अरी माता तिहारो तौ रहूमों महरी मन्दिर न्यां जगत की आशा
अरे बाबा तुम तौ रहियों महरी मन्दिर में न्याई करूं गुजरान ऐ
अरी माता तिहारो तौ खानी पानु मिठाई, हमारो आक धतूरो
अरे बाबा तुम तौ खइयों पानु मिठाई आक धतूरौ खाऊं
परि दाब[1] काटि करि सीयौ बिछोना आसन भौति बनाइ ऐ
परि चौदहसौ धूनी रोजु लगावें चौदह संतु डारि डारि आवें
परि मू ड खबरिया हात बुहरिया केसन के पग झारें
परि एक हात ते सूमा पढ़ावें दाए ते चौरधि ज्यारि ऐ
परि सूमा पढ़ामति गनिका टरि गई बाघमि तिरि गई गोरख ते
चारि महीना पड़े अड़कारे जाड़ेन के जमि गए पारे
चारि महीना परी चौपरी रमि गयौ बोलन हारी
परि बोलन हारी रमि गयौ मोटी रही निषान ऐ
पश्छिम दिसा की आंधी आई बाघिस की बंध्यौ मटूला
चारि महीना घोरि घोरि बरस्यो ऊपर घासु हरियानी
थानों में पखी अड़ा धरि गए सिकुआ है उड़ि जाना
परि बाघमि बमई है गई सरप रहे लिपटाइ
बारह वर्ष में तीनि दिन बाकी जागे गोरखनाथ ऐ
परि सुमिरें रे औघड़िया चेला बो माई कहां गई ऐ
परि कुइ अराइ दई आगि एवरि मोइ नांइ रही ऐ

1. दाब—दाम, दूर्वा।

परि जोगी उठियौ लहराइ हात लई पावरी
सीसु बचायौ नाथ पिंजरा झारि डारयौ
परि सिर पै धरि दीयौ हातु भमानी करि डारी ऐ
तू अपने घर जाउ तपस्या पूरन भई
मैं सोइ गई भोलानाथ तपस्या नांइ भई
अरी ऐसे भोजन लाउ व्वा दिन लाई री
हुकम देउ तौ जांउ बे हुकमें नां जाइबे को।
अज्ञा मांगि भोरी माइ महल पग धारै
पीर की मदद।
१६. सब पीरों में पीर औलिया जाहरपीर दिमाना है
दोनों जोरूआ मारि गिराए कीया राज अमाना ऐ
डिल्ली के आलमसाह बास्याइ बिदरगाह बनाई ऐ
हेम सहाय ने कलस चढ़ाए, दुनिया झारत[1] आई ऐ
मकुवा हाती जरद अम्बारी जिही तुमारे काम का
नवल नाथ सांची करि गायें वासी बिन्दाबन धाम का जी
ठगन बिरानी आस ठगिनी आमति ऐ
मैना मिलि लै कंठ मिलाइ मौतु दिन बिछुड़ी जी
अरी जोगी का दोसु सरीरू तुजाइ लौ री
गुर गारी मति देइ कोढ़िन है जाइगी
गुरुन के पूजों पाइ गुरु नौंति जिमाइ लै री
गुरु मेरे भोलानाथ भैंनि मति कोसै री
कासी सहर ते पंडित आए री पुस्तक लै आए री
पुस्तक लाए मेरी भैंनि भौतु समझाई री
अजी आजु नगर में तीज मैना कपड़ा मोइ दे री
जे कपड़ा ना देंउ और लै जइयौ री
अरी गुन में दे दे आगि पुराने भैंना मोइ दे री
अरी दुहरे तिहरे थान रेसमी जोरा री
कम्मर के लै जाओ जामें बड़े बड़े झब्बा री
नैनूं की चादरि लैजा जामें जरद किनारी री
मिसरू की चादरि लैजा जामें गोटा लगि रहयौ जी
अरी ऐसे मति बोलै बोल करूंगी हत्यारी
बगुदा लै लीओ हात बुरज पै चढ़ि गई री
सुनौ बस्ती के लोग याइ हत्या दै देंउ री
तेरे पिछवारें नदी जाई में बहि जाऊंगी री
तेरे अंगना में कुइया भड़कि मरि जाऊंगी री

---

१ ज्यारत।

अरी छै पसेरी बिनु खांड टका भरि सोन बेंठ री
पौनी ते फारई पेटु सरवा में झू झू रो
अरी ना कपड़ा देइ माइ मुख ते बोलै री
कलिकी असलि ममानी आनें बगदि बुलाइ लई री
कपड़ा दिए उतारि अबै मन फूली री
फूली अंगना समाइ कुठीला रानी ह्वै गई री
अरे सेरक चामर रांधि नाथ पै आवै री
भोजन धरे ऐं अगार सरकि पीछेंई ठाड़ो री
अरे भोजन भोग लगाइ महरि करि मोपै री
बाबाजी भोजन भोग लगाइ महरि करि मोपैरे
अजी बरकिगे भोलानाथ बेटा बे माई मांए रे
अजी भोभरु भरि गयो साधि भोर ना आवै रे
बो माई पिमरी पिमरी ब्याइ बोलै बोलु न आवै रे
बेटा बो माई हति नांइ हलमुष्टी कहति आई री
बेटा बो माई हति नांइ बेटा जीभ घनेरी लाई री
अरे बेटा तुही ऐ गाई गुई है मार्ई सा बटुआ धरिमाई
अजी बटुआ में डारयो हातु आस ह्वै जो पाए री
अरी संत के सौ लै आइ फलै भोर फूलै री
अरी बै सत के संभाइ होंठ भरि जाइगी री
अजी डाढ़ी में दै दऊ आगि नाथ मति कोसै रे
पीर की मदद ।

७ अरी मैंना जोगी छिगरैं जाइ रोड सैनें सेप री
अरे भरि पहगीनु में मालु बाग पगु धारे री
ठाड़ी रहो जोगी छनक तुम ठाड़े बाबाजी
गाइ दुहाई मैंने खीरि रंधाइ लई जोगी जी
गाइ दुहाई मैंने खीरि रंधाई सो मन कीमी लपसी
ए तेरे कारजें मैंने गूदरी सिमाइ लई तेरे भेसन कूं टोपी
मैंनें तौ जानी सतगुरु मिल्यौ अरे बाबा भिकरथी ऐ असलि फरीसु
बाबाजी बिरफल ह्वै गई ग्यास जी
ए पति पै खेली नीऊ ग्योरवा
अरे बाबा संपति पै उजई ग्यास जी
अरी ऐसी फाबरी मारि बेटा ठगिनी आवै री
ऐसी फाबरी मारि बेटा हतमें न आवै री
सुन्यौ फाबरी बो मांउ मैया पहभरि रोवै री
ठाड़ी रहि बीरा रे बाट बटोहिया मेरे मा के जाए होजी
अरे तैनें कहूं देखे गोरखनाथ जी
अरी पूनी न मेंटें भोरा कयो अरी माता क्या पूछति ऐ मोइ

अरे जिन धूनी में भोंरो जरि मरीछु अरी मैं फूल पहुँचाऊं बाके गंगाजी
बाबाजी पेड़ जी बए बमूर के मैं आम कहां ते खांउ ऐ
मैया परि तेरी सूरति तेरी मूरति तेरे नगर कोई औरु ऐ
बाबाजी मेरी सूरति मेरी मूरति मां की जाई बहना
मेरी सूरति मेरे कपड़ा मांकी जाई बहना।
परि महलन में तौ मोइ ठगि लाई भांग प्याइ गई तोइ ऐ
मैया व्वा ठगिनी ऐ ठगि लै जानदे माता ग्वाइ ठगे भगमानु ऐ
परि सेवा मारी गई मैया औरु करै फलु पावै
बाबाजी अब सेवा कैसें करूं जोगी डिगबिग डोलै नारि ऐ
परि अब सेवा कैसें करूं माता धौरे परि गए बार ऐ
बाबाजी अब सेवा कैसें करूं बाबा हालन लागे दांत ऐ
बाबा परि मौति बुढ़ापा आपता सबु काऊ कूं होइ ऐ
पीर की मदद।

१८. अरे दाब काटिकरि लीयौ बिछौना आसन लेति बनाइ ऐ
अरे खलका छोड़िकें गोरख चाले ठाकुर पै कीनी फिरादि ऐ
ठाकुर ज्ञानी ज्यों उठि बोल्यौ चौं आयौ मारे लोकों में
रानी बाछलि करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कूं
परि नांद में नांऐ, बेद में नांऐ, फलु नाऐ चारौ जुग में
गोरख चाले ठाकुर चाले जब आए सिवसंकर पै
महादेव जोगी न्यों उठि बोल्यौ चों आयौ म्हारे लोकों में
अजो बाबा पति भरता ने करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कूं
ठाड़ी गवरिया गुदरी हलावै फलु न पायौ गुदरी में
अरे जोगी नांद में बेद में नांइ फलु ना पायौ गुदरी में
परि गुदरी में फलु नांइ चारों जुग में
परि तीनों मिलिकें म्वातें चालें तब आए व्वा जोटों में
अरी बरती जोति में गोरख समाने भभूति लाए मांस भरि
अंगु मैलया मथि मल्या गूगर की डरी बनाई
परि निरंकाल की करी खोखला अन्तर के भीतर लाया
परि जा गूगुर कूं लैजा माता होइगा गूंगा पीरू ऐ
बावाजी हाल की आई तोते व्दै फलु लै गई
मोह गूंगा गैरा दीयौ
अरी गूंगा नांए बाबरा नांऐ सच्चा जाहर पीरू ऐ
अरी जोरन की ना पैंदि करै बांगर कौ भंजे राजु ऐ
अरी जोरन की नापैंदि
पीर की मदद।

अरी मैं पसेरी बिसु खांडं टका भरि छोड़ देऊं री
पौनी ते फाड़ूं पेट् सरवा में डूबूं री
अरी ना कपड़ा देइ माइ मुख ते बोलै री
कसिकी असनि अमानी जानें अगदि बुलाइ लई री
कपड़ा दिए उतारि जबै मन फूली री
फूली अंगना समाइ कुठोला रानी है गई री
अरे सेरक चामर रांधि थाप पै धावै री
भोजन धरे ऐं अगार सरकि पोसेंई ठाड़ी री
अरे भोजन भोग लगाइ महरि करि भोपै री
बाबाजी भोजन भोग लगाइ महरि करि भोपैरे
अजी बरकिगे भोलानाथ बेटा पै माई नाएं रे
अजी भोभड़ भरि गयौ छाकि भोख मा आवै रे
बौ माई पिभरी पिभरी ब्याइ बोलै बोलु न आवै रे
बेटा बौ माई हवि नांइ हलमुष्टी कहति आई री
बेटा बौ माई हवि नांइ बेटा जीभ धनेरी माई री
अरे बेटा तुही ऐ गाई गुई है माई ना बटुआ दरिआई
अजी बटुआ में डारयौ हातु जाल है जो पाए री
अरी संत के सौ सं धाइ फसै पीव फूलै री
अरी बै सत के संजाइ होंठ मरि जाइगी री
अजी डाढ़ी में दै दऊं आगि माथ मति कोसै रे
पीर की मदद ।

[illegible]. अरी मैना जोगी डिगरं थाइ राड़ तैनें सेए री
अरे मरि बंहगीनु में मासु बाग धगु धारै री
ठाढ़ी रही जोगी सनक सुम ठाड़े बाबाजी
गाइ दुहाई मैंने खीरि रंधाइ लई जोमी जी
गाइ दुहाई मैंने खीरि रंधाई सो मन कीनी भपसी
ए तेरे काजें मैंने गूदरी सिमाइ लई तेरे चेलम कूं टोपी
मैंने तो जानी सतगुरु मिल्यौ अरे बाबा निकरयौ ऐं असनि फरीसु
बाबाजी बिरफल है गई ग्यास जी
ए पति पै खेसी मौऊ म्योरता
अरे बाबा संपति पै उजई ग्यास जी
अरी ऐसी फाबरी मारि बेटा ठगिनी आवै री
ऐसी फाबरी मारि बेटा हरमें न आवै री
सुन्यौ फाबरी कौ मोउ मैया महमरि रोवै री
ठाढ़ी रहि बीरा रे बाट बटोहिया मेरे मा के जाए होजी
अरे तैनें कहूं देखे गोरखनाथ जी
अरी पूनी न मेंठे मौरा बन्यौ अरी माता बया पूछति ऐ मोइ

अरे जिन धूनी में भोंरो जरि मरौछु अरी मैं फूल पहुँचाऊं वाके गंगाजी
बाबाजी पेड़ जौ बए बमूर के मैं आम कहां ते खांउ ऐ
मैया परि तेरी सूरति तेरी मूरति तेरे नगर कोई और ऐ
बाबाजी मेरी सूरति मेरी मूरति मां की जाई बहना
मेरी सूरति मेरे कपड़ा मांकी जाई बहना ।
परि महलन में तौ मोइ ठगि लाई भांग प्याइ गई तोइ ऐ
मैया व्वा ठगिनी ऐ ठगि लै जानदे माता ग्वाइ ठगे भगमान् ऐ
परि सेवा मारी गई मैया और करै फलु पावै
बाबाजी अब सेवा कैसें करूं जोगी डिगबिग डोलै नारि ऐ
परि अब सेवा कैसें करूं माता धौरे परि गए बार ऐ
बावाजी अब सेवा कैसें करूं बाबा हालन लागे दांत ऐ
बाबा परि मौति बुढ़ापा आपता सबु काऊ कूं होइ ऐ
पीर की मदद ।

१८. अरे दाब काटिकरि लीयौ बिछौना आसन लेति बनाइ ऐ
अरे खलका छोड़िकें गोरख चाले ठाकुर पै कीनी फिरादि ऐ
ठाकुर ज्ञानी ज्यों उठि बोल्यौ चौं आयौ मारे लोकों में
रानी बाछलि करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कूं
परि नांद में नांऐ, बेद में नांऐ, फलु नाऐ चारौ जुग में
गोरख चाले ठाकुर चाले जब आए सिवसंकर पै
महादेव जोगी त्यों उठि बोल्यौ चों आयौ म्हारे लोकों में
अजी बाबा पति भरता ने करी तपस्या फलु दीजौ पति भरता कूं
ठाड़ी गवरिया गुदरी हलावै फलु न पायौ गुदरी में
अरे जोगी नांद में बेद में नांइ फलु ना पायौ गुदरी में
परि गुदरी में फलु नांइ चारों जुग में
परि तीनों मिलिकें ग्वातें चालें तब आए व्वा जोटों में
अरी वरती जोति में गोरख समाने भभूति लाए मांस भरि
अंगु मैलया मथि मल्या गूगर की डरी बनाई
परि निरंकाल की करी खोखला अन्तर के भीतर लाया
परि जा गूगुर कूं लैंजा माता होइगा गूंगा पीरू ऐ
बावाजी हाल की आई तोते व्दै फलु लै गई
मोह गूंगा गैरा दीयौ
अरी गूंगा नांए बावरा नांऐ सच्चा जाहर पीरू ऐ
अरी जोरन की ना पैंदि करै बांगर कौ भंजे राजु ऐ
अरी जोरन की नापैंदि
पीर की मदद ।

१९. भरे लई ऐ बराती हात रानी बांटें जो बनाये री
भरी खाइ ले मेरी भैनि तेरें नरसिंह होइगो री
होइगो पूत सपूत बड़ी मरदानों री
भरी खाइले बबुआ की मारि तेरें भजुआ होइगो री
भरी होइगो पूत सपूत बड़ो मरदानों री
सीसी बँधी ऐ घुड़सार जाने सबदु सुनायो री
दूध कुड़िया मंगवाइ गूगुर धुरवायो री
भरी खाइलै मेरी बीर तेरें लौला होइगो री
होइगो पूत सपूत बड़ो मरदानों री
भरी गोरखनाथु मनाइ रानी गूगुर खायो री
भरी गोरखनाथ मनाइ रानी घट में डारे री
भरी दोरानी जिठानी भैना जुरि आयो री
भरी दौरानी जिठानी जुरि आयो आंगन भरि आयो री
दौरानी जिठानी बैठि मंगल तुम गाओ री
भरी सब सब के लैरी तुम पैरों लागो, भरी तुमारी होइ ललना भौतार
बड़ी बड़ी रानी भ्याई बैठी तखत पै, खस खस के बंगला हो जी
कुपरी गई ऐ वाकी सुपरी ए भाई, घर कर की कामिनि हो जी
नांदो भी बाड़ी चिरजी जी जीभौजी, मेरो बाखलि मैना हो जो
भरी कि तेरें होइ बेटन भौतार
भरी कि तेरे बँधेगे सातिए द्वार जी
सब सब के तो रानी पैरों लागी, सौलमतिन रानी है जो
भाजु भपनी नंदुलि के लागी हुति नांइ
मेरे मेरे पैरों री तू तो नांइ लगो मेरी भावज प्यारी हो जो।
भरी तोइ भाजु नंगर ते देळनी निकारि हो हो जी
मेरे मेरे पैरों री तोइ तो नंगर ते मैं तो ऐसी निकारि दू जी
मेरी भावज प्यारी हो जी
जैसें दूध मलारी हो जो।
तेरें तेरें पैरो में तो कबऊं न लागू मेरी नंदुलि प्यारी हो जो।
मेरे हुकम् गुरू को नांइ
भरी तू तो री नंदुलि ऐसें बनाई जैसें भगनी की हाई हो जी।
भरी ब्यानें सीया ऊ दई ऐ निकारि*
तेरें करैंगें मैना बघुना होइगो मेरी नंदुलि प्यारो जो

---

* लोक-कवि ने लोक-कथा को ही प्रामाणिक माना है। अति प्रचलित लोक-कथा में 'ननद' ने सीता को बनवास दिलाया था। ननद ने पहले तो सीता से रावन का चित्र बनवाया। फिर स्वयं ही राम को चित्र दिखाकर सीता को घर से निकलवा दिया।

मो पै किरपा करिंगे गोरखनाथ जी
मान हरायौ जे तो, म्वां तै आई ननदुलि छबीलदे अपने बाबुल ते चुगली खाई हो जी
लाज वी घनेरी जी, परदा घनेरे मेरे, गरूऐ से बाबुल होजी
आजु बहूजी नें परदा डारयौ ऐ फारि होजी
सोने की नांदी रेसम की भोरी अरे कि जानें जोगिन कूं दई ऐ गहाइ ऐ
बड़े बड़े लट्ठा जानें धूनी में जराए मेरे गरूऐ से बाबुल हो जी
अरी सबरी दौलति दई लुटाइ जी हां।
हां दौलति लुटाई जानें भली रे करी ऐ मेरे गरूऐ से बाबुल हो जी
बारह बारह बर्ष जे तो बागन रहि आई माधारी राजा हो जी
अजी जै तौ जोगीन कौ गरभु लैकें आई आं होजी
राजा रे बाबू कोई सुनि जौ रे पावै मेरे मेरे गरूऐ से बाबुल जी
मेरे सगाई ब्याह बंद है जांगे जी हां।
अपने बीरन को मैं तौ ब्याह करवाऊं मेरे गरूऐ से बाबुल जी
अजी अपनी ननदुलि कौ डोला लैकें जाऊं हो जी हां
बेटा री होंतो में तो व्वाइ समभामतो मेरी बेटी छबील दे हो
अजी कि मेरी बहू जी ते कछू न बस्याइ जी हां
सुघरी गई ऐ जाकी कुघरी जो आई मेरी बेटी छबीलदे हो
अरी क मैंनें बेटा ते प्यारी राखी जी
सेवानु करिकें जाकौ बेटा जो आयौ अरे कि जानें बाबुल ते मुजरा कियौ आयजी
तेरौ तेरौ मुजरा मैं तो कबऊं न लुंगौ मेरे देवराय लाला हे
अजी कि बहू जी नें परदा डारयौ फारि हां।
दूजौ २ मुजरा जानें उम्मर मांऊं कीयौ मारू देस के राजा हां
जानें नीचे कूं नवाइ लई नारि हों।
तीजौ २ मुजरा जानें बाबुल माऊँ कीयौ देवराय लालाजी
अरे कि जे तो मुजरा पै दें तु जुबाबु जी
तेरौ तेरौ मुजरा में तो जबई रे लुंगौ मेरे देवराय लालाजी
आजु तुम बहूजी ऐ जो मारौगे डारि
म्वति चल्यौ मारू देस कौ राजा पहुंच्यौ ऐ महलन जाइ
जुरि आई घर घर की कामिनि जी
जे तो गामें बधाई हां जी
अजी कि जाकौ लौट आयौ राजा जी
ऐब असबाब जाके सबु ढकि जांगे
अरीक जाके धरिंगी सांतिए द्वार हां
रानी तौ जी ठंडे तौ पानी गरम धरावै बेटी सजा की जी
अजी अपने बलमे उबटि न्हवाइ रही जी।
बलम न्हवायौ जाइ दिलु न सुहायौ घर घर की कामिनि हो जी

अजी के मोपै हुगे बाबा सहाइ जी ऐ हां ।
तेरी मेंछलि के मैं तौ पैरों न लागो मेरे घर के मसमा हो जी
अजी क तिहारी मैना में पुगलई बाबुल ते खाइ लई जी
सोने की थारो रे मोजन भाई तुम कें सेऊ राजा हो जी
अजी क तुम तो मोजन जें प्रेत चित्त लगाइ जी हां
जेंमत हो सो हम जैं तौ चुके है मेरी घर भामिनि है
मोह राम जिमावें जब बैठू हो जी
ऐसी तो रानी मोइ फिरि न मिलेगो मेरे करतमकरता हो जी
ऐसी सोने में मिल्यो ऐं सुहागू जी हां ।
ऐसी पति भरता मोइ फिर न मिलेगो मेरे गरुए से बाबुल हो जो
अजी पति भरता ऐं लगाइ रह्यौ दोसु जी हां
बाबुल को तुं मैं तौ कहनौ न मानू मेरे सिरी ठाकुर हो
अजी कि अबई सतजुग पहरौ चलि रह्यौ जो हां ।
एक दिन ऐसी आवे सतजुग जावे कलजुग आवेगी मैं गए से बालम हो जी
अजी क जाकूं बेटा लिये बाबुल ऐ फिटकारि हां जा
मैं तौ तेरी तेरी कहनौ रे मानि तौ रह्यौ ऊं गरुए से बाबुल जी
आजु पतिभरता ऐ डारूंगी मारि जी ए हां ।
तोपै तौ बेटी बावेल मारी न जाइगी जानें कौन से गोत की बेटी हो जी
जा भगनी के पीछें मारूं जी हां ।
साँझ भई ऐ भाई भयौ तौ अंधारयौ मेरे गरुए से बाबुल हो जी
त्वति चलैगो मारू देस कौ राजा देवराम लाला हो जी
अजी क जितौ पहुंच्यौ ऐं महल मझार हां जी
चंदन किवारी मारी खोलि खोलि दीजी मेरी घर की री भामिनि हो जी
अजी क जाने कुची तौ दीनी ऐं खोलि जी हां ।
रानी भी सोई बाकी राजाऊ सोयौ मेरे करतम करता हो जी
अजी क जा राजाए नींद न आवेजो हां
आधी रे निकरि गई जाकी अधर रैनि आई हो जी
अजी क जानें खांड़ौ तौ लीयौ निकारि ए हां
पहलो पहलो खांड़ो जानें रानी मांऊ धोग्यौ हो जो
अजी क जापै हैगये गोरखनाथ सहाइ
दूजो दूजौ खांड़ो जानें धोग्यौ रे देस की राजा ने जी
अजी क जापै दुरगे भई ए सहाइ जो एहां ।
तीजो तीजौ खांड़ो रे जानें मार्ड मांऊ धोग्यौ देस के राजा हो
सीगु बचैगो जाकौ तोटो कटि जाइगो मेरे करतम करता हो

टैम्पल महोदय ने जो स्थान दिया है उसमें इसका नाम शामिर देते हैं :
टैम्पल महोदय के स्थान में यह नाम 'जैवार' है जो देवराय का अपभ्रंश हो सकता है ।

अजी क राजा रोवै जार बेजार हां जी
बारह बारह बर्स तू तौ उघटि न्हवायौ खांड़े दुधारा हो जी
अजी क गांडू तू न भयौ सहाइ जी
अरे क तैनें रानी डारी गांड़ू मारि हां ।
गोरख तुही ।

× × × ×

राजा उम्मरु नें तो जल्लाद बुलाए
रानी वाछल ऐ जंगल में आश्रौ भैया डारि
म्वांते चले ऐं जाके घर के कमेरे
उम्मर कौ कहनौ डार्यौ हतुनाँए ।
म्वांते चले ऐ रे
यह जन आए
फाँटिकु खूल्यौ पायौ नाँहि ।
अवाज दई ऐ तूतौ
सुनि तौ री लीजौ संजा की बेटी
आज तेरे सुसर नें बादर डारे फारि ।
बोल सुन्यौ ऐ जानें हुकमु सुनायौ
मन की तौ कह दै बोरा बात
तेरे सुसर नें री दीयौरी निकासौ
बाछल बहना हाँ
मेरी तौ सुनि लै बहना बात
मान सरोवर रे मान की बेटी
तौ सुनिलैरी भैना बात
इतमें लजायौ री सासुरौ
दोउकुल खोइ दई तैनें लाज
म्वाँते चले ऐं चार्यौ
जल्लाद आए
उम्मर ते करत जुवाब
तैनें कही तौ रे !
मरी तौ जे पावै, जिन्दी तौ पाई बैठी आज ।
"भैया बुही तौ रे गाढ़ा, बुही रामू गड़वारौ
ब्वाई में बैठि घर जाई
"कितनी रे गाढ़ी रे, कितनौ सहाबौ,
कितनी हजारी संग भीर
तेरे वावुल नें तो कूं गाढ़ी दीयौ ।
मेरी वाछल भैना

बुही गड़वारी तेरे साथ।
सोने को लोटा छोड़ूं नहीं तौ री दीनो
बुहो रेसम डोरि वाके हाथ।"
"मैया चंदन रूख कटाइ
रानी रथु बनवायो।
लाद्यो बम्होईनु मालु रानी
पीहर चालें री
वे सुरई के बैल रायगज वारे री।
सात परिकम्मा रानीमें बैरी की दीनी
'सूबस बसियो रे मेरे सहर वरेरे म्हारे सुसर के खेरे
तेरी जर बंधो पाताल
रे हाँकि गाड़ी मेरे, रामू गड़वारे
लाला बुरज पहुँचाइ।
रुदन मचायो वानें मामु जगायो,
जुरिमायो कुटमु परिवार।
रामू गड़वारी वाको तड़कि में बोलयो
'अरी सुनि सीधी भैना बात।
मेरो री बैरो होवों संजाजी को
आजु उम्मरै डारि वो दै तौ मारि।'
बैल जो जोरे रानी रथ बैठारी
मान की बेटी वानें रथ लीनी बैठारी
म्वाँ ते रे गाड़ा जानें ऐसो रे हाँक्यो
दीनो बनी में वानें हाँकि
धरे एक बनी गुजरान
दूजें बन आवें।
दूजो तीजो आइ हर्‌यो बमुनायो।
पायो बरी को पेड़
रानी रथु बिरमायो री।
रथु दीनों बिरमाइ
वानें पलंगु बिछायो री
अरी जेंमति राजकुमारी
जिमायो गड़वारो जी
पीयो जोहड़ को पानी
जाइ निंद्रा आइ गई री
बैल बांधे एँ बरी की डार,
जगायो गड़वारो री।
प्यास लगी एँ बीरा मोइ

नेंक पानी प्याइ दै रे
कूआ नांऐं बाबरी नांएँ
जल कहाँ ते लाऊं री ।
अरे सोइ गई राज कुमारि
सोयौ गड़वारौ री ।
गूंगा गरभ कौ राउ
गरभ में सोचैगा ।
अरे जौ नानी कें लै जाइ
निनुआ मेरौ नामु परै
भाई दिगी बोल हरामी लाई री
नाना मामा कहें टूकन तें पार्यौ ऐ ।
गूंगा गरब का राउ गरभ में सोचैगौ ।
तोरि दूब को पेड़ु इकु सरप बनावैगौ ।
सरपु बनाइ बनाइ बाँवी में डारैगौ ।
उठि रे बासुकि राइ, तेरौ बैरी आयौ ऐ ।
बासुकि पूछै बात क कैसौ बैरी ऐ ।
अरे जब लैगौ अवतार पीरु बिसु हरि लेगौ ।
रहेगी जाकी छूंछि लीला घोड़ा ऐ हाँकैगौ ।
धरती के वासुकि राउ इकु बीरा डार्यौ ऐ ।
सबुई गये सिर नाइ बीरा काउ नै न खायौ ऐं ।
कारे को असवार पौनियाँ धायौ ऐ ।
चल्यौ ऐ कारौ नागु बाछिल ढिंग आयौ ऐ ।
पलिका की लगि रही आनि
चढ़ैगौ बैरी कित है कें ।
जाहर सोचै बात जाइ परचौ दिदै रे ।
एक कला ते बाहिर आयौ—
जानें चौटी खोली ऐ ।
लगे गिल गिले बारु बहियन ते जाइ लिपिट्यौ ऐ ।
छाती पै बैठ्यौ जाइ
द्वै जीभ निकारैगौ ।
कहाँ डसूं मोरी माइ तुरत मरि जाइगी री ।
जौ अम्मा ऐ डसि जाइ जनमु कहाँ लुंगो रे ।
मारी गरभ में ते थाप,
गाँडै सरपु खिस्याइ गयौ ।
गयौ ऐ खिस्याइ खिस्याइ
डसे दोऊ नागौड़ी ।
भोर भयौ भरमात रानी वाछल जागैगी ।

उठि रे बीरा गाड़ीयान गाड़ी जोरीये।
मौंगी से लई हात बँस पै मावैंगी।
घरी क्या जोरूं मोरी भैंभि
बधिया तौ दोऊ हक्क भई।
'पीहरिया मरि जाऊँ
रॉड़ में च्यों भाई
भूलि गई माया मासु
भटकत मेरौ जनमु गयौ।
गूँगा गरब को राउ
गरभ में बोलैगा।
कै तू मूत पलीत देव कै वालौ रे।
ना मैं मूत पलीत देव ना वालौ री।
हेयौ गोरखनाथु दुआ को बालकु री।
मिटि जइयौ गोरखनाथ मोइ कहा खवाइ गयौ।
चमक दै गयौ मोइ गरभ में बोल्यौ।
तेरे मरे बिबाह दऊं बैस बगदि घर चालैं री।
लोटा लै लीयौ हात नीर कूँ आवैं री
गोसा की गहि लई गैल हरीसिंगु पाइ गया।
बोलैं राजा बात मेरी सुनैं मेरे भाई रे।
जे लोटा तौ बाचलि कूँ दीयौ
जाइ तू कहाँ ते लायौ रे।
तेरी महलि कूँ दीयौ ऐ निकासौ
गरभु लै आई रे।
कितनी नीर सहायौ लाई रे।
मरे बूही बंधन को ए गाड़
बूही रामू गड़वारी रे।
बूही सुरही के बँस, बूही ऐ गड़वारी रे।
च्याई हटि पंपो मेरे बीर
पिता ते मिलि आऊँ रे।
स्वाति कुमर चल्यौ जाइ
मानसरोवरि आयौ ऐ।
मानु जु मूझैं बात कैसें चित्त उदासी ऐ।
मरे बादर डारे फारि
गरभु लै आई ऐ।
गूँगा गरब को राउ
गरभ में तड़क्यौ ऐ।
मरे पसका ते पींपौ मारि

कहाँ फेरि भड़क्यौ ऐ।
खूननु रकतु वहाइ
परचौ जानें दीयौ ऐ।
गूंगा गरव कौ राउ
वागर में आयौ ऐ
उम्मरु राजा वैठ्यौ तखत पै
तखत ते औंधौ दीयौ मारि।
(दोनों ओर के दल आए) वाछल वोली—वापनें हाथ पकड़ा
'तूतौ हटि जा मेरे धरम के वावुल
गोता गयौ ऐ खाइ
तू वो हटिजा मेरे वावुल प्यारे
तू अपने घर जाउ
'अपनौ सहावौ तू तौ लैकें रे जैयौ
मेरे गरव गुमाने वावुल,
मेरौ सहावौ तौ रे मेरौ गोरखनाथ
सींक समाइ तहाँ जाँउ।
(वाछल ते जाहर ने कही—सवासौ गज का निसान, गैलमा डंका तो पै से लै लुंगो)
भादों आधी राति औलियाँ जनमु लियौ
मथुरा में जनमे कान्ह वागर गूंगा भयौ
हम्बै हम्बै कोयल वोली पापियरा झिगार्‌या
भाई के मैदान में चौहान खेलन आया।
जिन धाया, इन पाया, वागर में सच्चा पीर रे कहाया।

जाहर का विवाह—

सूवसु वसौ ढकपुरा गामु तरै हाथूर सी भाई
हेमनाथ नें कथी जोरि चेता नें गाई
ऊँचा अटा पीर की भारी
विधि रह्यौ पलंगु लगी फुलवारी
सोइ पीर नें कीयौ चैनु
खुलि गये पलकु लैन नापैनु
भोर भये माता पै आयौ
आइ माता कूँ सीसु नवायौ।
सुनि री माता मेरी वात।
कहा कहूं सपनें की वात।
साँची कहूँ समाइ न गात।
सुघड़ नारि सपनेन में देखी।
तिरिया देखी अति परभीन
भामरि लै गई साढ़े तीन।

सो भायौ ब्याह भयौ बंगला में माता मेरी
भाये के कौल सौ करार री
सपनौ देख्यौ रैनि कौ।
२. बेटा सपने में सोयौ कंगाल
धन दौलति ब्याइ पायौ माल
भोर भयौ मल बैठ्यौ भयौ।
न जानूँ धन किल में गयौ।
सुनियौ रे मेरे जाहर बेटा
बात जु कहूँ अनूठी
करम लिखो सो होइगी बेटा
सपने की सब झूठी
माई सगुन न बैठे बतासे
सो जाहर बेटा नाँइ तेरी भई रे सगाई
सब सुपने की झूँठी बात ऐ।
३. मति रोवै मेरी बावलि माइ
भावैं बहू लगैं तेरे पाइ
चौका दे भोर तपै रसोई
नैन नजर भरि देखि महल में नौऐं कोई।
सिरियल गोरी अधिक सलौना।
देह बनी ब्याकी निरमल सौना।
जीभ कमल कौ फूल बनी साँचे में ढारी
ब्याकी नैन आम की सी फाँक, नाक ब्याकी सूवा सारी।
पायजेब बाँकी पहरावै
पाँव धरै जैसे मोहबति बाजै
मैनू की चद्दरि बुक्क तारी मजमलि की फुलरी
गुलीबन्द पचमनियाँ वारौ
सो भायौ ब्याह भयौ बंगला में
भायें के कौल सौ करार ऐ
सो गंगा जो भाड़ीदै गई
४. सात पुष्टि का बैर ऐरे तेरे बाबुल का
सोइ कोई डारै मारि के बारहै पुनो में।
गादी बे आइगी डूबि के रे राजा देवराइ की।
भरी मोर्यै री ब्यापै री सहाय ऐ बाबा गोरखनाथ
से तारी बताइ दैरी, भरी मोइ चोदिसा
भरी गुरु भाई मेरा ब्याम
मेरा री दिल उमड़ा गुजरारि कूँ
री तु बिन नगरी कूँ

मेरा री दिल हरि जौ लै गई
बेटी राजा की।
बिनु व्याहें हे मानू नहीं ऐ बाछिल दे माइ
अच्छा बेटा जी सात सगाई उठो जा देस में
करि देंउ बेटा तेंरे सातौ व्याह
म्वांकी सगाई हम ना करें जी।
डारूं री पजारूँ तेरे व्याहु ने
बुन सातौ नें।
मेरा दिल री हरि जौ लै गई
बेटी संजा की।
द्वै व्याहि दऊँगी गंगा पार की
झरपेटो नारि
द्वै ब्याहि दऊंगी संकल दीप की
चंदवदनी नारि
द्वै व्याहि दऊंगी जा देस की
लड़ि हारी नारि।
इक व्याहि दऊंगी जा विरज की
लड़िहारी नारि।
करि दुंगी रे तेरौ सातौ व्याह
म्वां की सगाई हमना करें वावरिया पीर।
चल्यौ रे पीर भौंरे में आयौ
आइ भौंरे में ठोकर मारी
लीला हंस्यौ थानते भारी
छै महीना ते तिनु ना दयौ
अब लीला तोकूँ कोतल भयौ।
छै महीना ते जल नांइ प्यायौ
कहा कामु लीला ढिग आयौ।
पकरि बकसुआ लै चलि भाई
चाँदनी चौक जाइ ठाड़ौ कीयौ।
पहले न्हवायौ कच्चे दूध
जा पीछें गंगा जल नीर।
पटने से रंगरेजनि आई।
नादन में महंदी घुरवाई।
तुम हरियल महंदी लाओ सुघड़ बांगर की चोखी।
मस्तक गोरख लिखूं लिखूं लीले कें चोटी।
गले लिखूं लीले कें गंडा

लिखि दऊं सूरजभानु लिखूं माथे पै चंदा ।
पहलें लिखूं सुरसती माई
आ पीछें गंगा महारानी
भरत भरत थोड़ी लिखि दीनी
कलि गोरख में पूरी कीनी
कमि गोरख की करूं बड़ाई
भीर परैं जहं होइ सहाई ।
धम्मच धम्मत पेच बन्ध तंग जोरि खिचाए
ऊपर गद्दे खोसि पीर फब्बे सट काए
सास दुसाला डारि पीर भासन बनबाए ।
सोने की जीनु जड़ाऊ कांठी
खूब सज्यौ रे मखतक ताजी ।
घोड़ा सज्यौ पीर कौ भारी
जाकी बजे खुम खुना सोभा न्यारी ।
सजि लीला तैयार भयौ ब्या जाहर कौ
दादा मेरे
इंद्र पखाड़े घोड़ा आई, मचि इंद्रपुरी कूं जातु ऐ ।
५. ठंडे पानी गरमु चार कद्ठों से ताए ।
चंदन चौकी डारि कें मलि जाहर न्हाए ।
दैरु दास कबास चार चुनि चुनि पहराए ।
मोचो की सामा मोच बद जूता गुलजारी ।
अंग अंग पहरी अंगरखी क फूली फुलवारी
जामा पहर्यौ घेर चार जंघा कमिहारी
पगड़ी बांधी डोरिडोरि सोने की तारी ।
नेजा हाथ पचास का कलिंगमगी सुपारी ।
कर में कंकन बांधि नैन में सुरमा सार्यो
पहरि लई पोसाक पीर बम्मा को प्यारो ।
सेंधि कुचा ते धार सिला की धार उकाई
ये जाहर हटने नहीं जिन मेरा पीया वीर
दगा देइ मासूक कूं घोड़े
हो जाऊंगी दामन गीर ।
ठाढ़ी सीला ते कहि रही ।
६. अब सीला में कही मात पों छगुमु बिगारें
पगु धारें पगु भीतरें पगु छोड़ें पति जाइ
जो तेरी जाहर जूझि जाइ तो दानि के दऊंगी पूरे मिलाइ
ठाढ़ो बम्मा ते कहि रह्यो ।
दुम दूध कटोरा भरि धरो रन चाहैं फटि जाइ ।

जौ तेरौ जाहरू जूझिजाइ तौ वांगुर में खबरि पहुंचै आइ।
सो आधौ व्याहु भयौ बंगला में माता मेरी
आधे के कौल रे करारी
सो जाहर व्याहिबे जांतु ऐ ।
७. कमची मारी लीला के गात
लीला उड़्यौ पमन के साथ
हुआ हुस्यार लगी नांइ चोट
फांदि गयौ खाई अरु कोट
म्वां जाहर ने दहसति खाई
मति रोवै जाहर गुरु भाई ।
धरम सुम्म लीला दयौ टेकि ।
जाहर हँसे समद कूं देखि।
समुदर देखि छूटि गई आस ।
जूरी दैंत मिली वहमाता ।
कौन कामु ज्यां उतनु तिहारौ ।
जाई कौ भेदु वताइदै न्यारौ।
सासु वहून है गई लराई।
मनु फटि गयौ डिगरि चौं आई।
वा दुसमन नें वादर फारे ।
तो वुढ़िया कूं दए निकारे।
सुफेद वस्तर धौरे केस ।
वुढ़िया रहंति कौन से देस ।
उज्जलि गात भान कीसी लोइ।
जिया जन्त भकि जांगे तोइ ।
वूढ़ी उमरि कठिन की विरिया ।
चोरे पट पर खाइ जाइ लिरिया ।
न्यां बैठी तू कहा करतिऐ, हमें तू देइ न रे बताई
जंगल में बैठी कहा करै ।
८. जब बुढ़िया नें कही कुमर मैं तोइ समझाऊं
आरे जाहर पीर भेद मैं तोइ बताऊं ।
मेरा नंगरु इंदुरपुर गाम
बहमाता ऐ मेरौ नाम ।
जूरी को बांध्रू संजोग
करनी करै सो पावै भोग ।
मो लिखनी में असुर संहारे
पांचौ पंड हिवारे जारे ।

सिधि दऊ सुरजभानु सिखूं माथे पै धया ।
पहलें सिखूं सुरसती माई
वा पीछें गंगा महारानी
चरत भरत जोड़ी सिधि दीनी
कलि गोरख में पूरी दीनी
कलि गोरख की करूं बड़ाई
भीर परैं जह होइ सहाई ।
मम्मच दम्मस पेच बन्द तग जोरि बिछाए
ऊपर गद्दे खोलि पीर मब्बे मट काए
लाल दुसाला डारि पीर आसन बनवाए ।
सोने की जीनु जड़ाऊ काठी
खूब सज्यो रे अबलक ताजी ।
घोड़ा सज्यौ पीर कौ भारी
जाकौ बर्जे खुम खुना सोभा प्यारी ।
सचि लीला तैयार भयौ ब्या जाहर कौ
बाबा मेरे
इंद्र अखाड़े घोड़ा जाई, मवि इंद्र पुरी कूं जातु ऐ ।
२. ठंडे पानी गरमु चार कट्ठों से लाए ।
चंदन चौकी डारि कें मलि जाहर न्हाए ।
देख दास कपास चार चुनि चुनि पहराए ।
मोची कौ लाया मोच बंद जूता गुलजारी ।
अग अंग पहरी अंगरखी क फूली फुलवारी
जामा पहर्‌यौ घेर चार संधा फनिहारी
पगड़ी बाधी छोरिछोरि सोने की तारी ।
नेजा हाथ पचास का कलिंगलगी सुपारी ।
कर में ककन बांधि नैन में सुरमा सार्‌यौ
पहरि लई पोसाक पीर अम्मा की प्यारो ।
बाँधि कुचा ते चार सिला की चार उड़ाई
जे जाहर हटने नहीं जिन मेरा पीया सीर
वगा देह मासूक कू कोड़े
हो जाऊँगी बामन गीर ।
ठाड़ी लीला ते कहि रही ।
१. जब लीला नें कही भात यों सगुनु बिगारे
पगु आगें पगु मीअरें पगु छोड़ें पति जाइ
जो तेरौ जाहर जूझि जाइ तो यानि कें दर्ळसी
ठाड़ो अम्मा से कहि रही ।
तुम दूध कटोरा भरि धरो रम चाहैं फटि जाइ

निरखत परखत चालें चाह
जाहर पीर देखि लै न्या उ।
सिंगमरमर की पटिया सेत।
मिहीं काम रानी कौ देखि।
बांच्यौ आंकु रही धन क्वारी
फिरति आनि राजा की भारी।
नर बच्चा कोई न्हान न पावैं।
उड़त जिनावर राजा मारैं।
सोने को सिड़ी दूध सौ पानी
कौन रजन की आमें रानी।
गोता लेंतु ताल के बीच
लीला घोड़ा ऐ देंतु असीस।
नीर सीर बाछिल के जाए।
तैंनें घोड़ा ताल न्हवाए।
पहलौ लोटा भर्यौ ढारि अर्जुन लै (धरती) दीयौ
दूंजौ लोटा भर्यौ ध्यान गोरख कौ कीयौ।
तीजौ लोटा भर्यौ जापु सूरज कौ कीयौ।
चौथो लोटा भर्यौ नीरु घोड़ा कूं दीयौ।
हंसत पीर लीला ढिग जाई
लीला घोड़ा रिस है जाई।
दांके दांके फिर्यौ ऐड़ दै खूब भजायौ।
छिन मंतर के बीच पीर मैं तोइ लै आयौ।
तोकूं जरा मोहना आयौ।
आपुन जाइ ताल में न्हायौ
मेरी तेरी टूटी रीति
मेरी सुधि ना विसराई
सो आपन न्हायौ बहू के ताल में।
१०. तुंदिल नगरी जाउ जहां सुसरारि तिहारी।
गुन महलन के बीच प्यारु करै सासु तिहारी।
मोहरौ पट्टौ दिपैं दिपैं माथैं पैं चोटी
सहर दलेले जाँउ कहूं बाछिल ते खोटी
तेरौ जाहर मरचौ जिलौ झंगा अरु टोपी।
दांत तिनूका दै लिए आड़े
हात जोरि जाहर भये ठाड़े
तुही मेरौ भैया बंद तुही मेरी मा कौ जायौ।
परदेसन में मोइ लै आयौ।
अब का लीला मोते रूठे

मेरी तेरौ संग मरैते छूटै।
सो मैं ऊं न्हायौ तूमी न्हाइ लै।
मति करै लोग हंसाई
सो न्हाइलै ब्याई ताल में।

११. बाहर बोल सुन सुना लीयौ
लीला हुलि ताल में दीयौ।
इतकी पैर्‌यौ इतमें आयौ।
धकपक चौक चूणी चूप्पा में न्हा आयौ।
तैं सरवर थुंधि धुंधु मचायौ।
जौ कहूं पीम संज की आवैं
नौकर लेगी बोलि मार तोमें लगवावै
तैंनें लीला करे गजब के टूंक किसे की ईंट ढुवावै।
इतनी सुनि कैं बात ज्याबु लीलानें दीयौ।
आगर वारे पीर तैंनें कब का कौ कीयौ।
क्या सिपाई करै किसी के हाथ न आऊं।
आगास लोक मैं उडूं किसी के हाथ न आऊं।
इतनौं नुकसान कर्‌यौ लीलानें
बाग की सुरति रे भगाई।
नौलक्खा बागु जानें कैसी होइगौ।

१२. न्याते बाहर चले फेरि बागन में आए
बागमान जल्दी बुलवाए।
हुकम् करैं तो बोलूं तारी।
तखता पट्टी बन्यौ बागु साँचे में ढार्‌यौ।
रौस हजारा खिल्यौ फूलु गेंदा की पीरी।
कलंगा करैं बहार केवड़ौ अति घून फूल्यौ।
जौ कहैं पीम संज की आवैं।
नौकर लेगी बोलि, मार मोमें लगवावै
नौकर ब्याई मारि कौरे क्यारी ऐ मारि की
नौकर नांऊ तेरे बाप कौ
सात टका दुंगो गांठि के रे आधी फाटिकु दीजौ खोलि।
नौकर नांऊ तेरे बाप कौरे, नौकर हूँ ब्याई मारि कौ रे
चूह संजा की पीम
बांधि कैं की चौकड़ी कूदि जौ पर्‌यौ लीला घोड़ा रे
इक तखता कौसैर करी दूजे में आयौ
तीज में चौहान पीर कूं भरयौ पायौ।
पोस्त डोरा गांजौ भांग बागन परैं लोटना आम

चार तखता की सैर करी जाहर नें दादा मेरे
फिर बंगला की सुरति लगाई क जानें बंगला कैसौ होइगौ।
म्वांते जाहर चले पीर बंगला में आए
चार्यौ ओर बंगला फिरि आयौ
बंगला कौ दरवज्जौ न पायौ ।
ऊपर कोट नींचे एं खाई ।
जाहर ऐ गैल बंगला की पाई
चार्यौ कौन पींजरा आठ
पढ़वैयन की म्वा बिछि रहीं खाट
कमरि मर्द के बंधी दुलाई
जो पलिका पै झारि बिछाई
तान दुपट्टा जुलमी सौयौ
छैमासी नींद रे सुहाई
दादा मेरे
सोयौ बहू की सेज पै ।
रेसम के रस्सा तोड़ारे ।
अनबोला के बाग उजारे ।
दांतों से नारंगी खाई
भरिगौ पेटु जम्हाई आई
फोरि फुहारौ पानी पीयै ।
लीला नें दुंदु बाग में कीयौ ।
इतनौं नुकसान बाग में कीयौ व्वा
घोड़ा ने दादा मेरे
तो जूं आइ गईं तीज रे हरियाली
सो पिछले पाख की
पिछले रे पाख तीज जब आई
सिरियल नें नांइनि बुलवाई
घर घर नांइनि फिरै नगर में देंति बुलाए ।
तिरियन लगे उमाहु फौज के से बंधे तुलाए ।
तरुनी और नादान सिमिटि भईं सबु इकि ठौरी
बटै सुपारी छाल औरु पानन की ढोली
सिरियल नारि मात ते बोली
मेरौ डोला दै सजवाइ संग चौदह सै डोली ।
पाइजेब बांदी पहिरावै ।
पांउ धरै जैसे नौबति बाजै ।
नैनू की चद्दरि बुक्क खड़ी अजमत की फुलरी ।
नैन आम कीसी फांक, नांक जाकी सुआ सारी ।

मांइनि चतुर सुजान गुही मांथे पै बैनी
क्वारी कें बेंदी कबहुं न लगामें
संग की सहेली पान चबामें।
असगुन असयुन बूधु बनामें।
बागन में कारौ नागु जु भावै।
झूला पै बनि तोइ देखि खावै।
नागर कारौ है देखि जुलमी
हासे मैना देखि गुही बंदावै।
डसि जाइ नागु हात ना आवै।
सात दिना देखि डांक बजावै।
चिरकाचा बबूल पै भरवावै।
मरी रे कुमरि सिरियल देखि ज्यावै।
सो सखि थखि बीच संज की ठाढ़ी
दादा मेरे,
अम्बर में बीजुरी रे चमारी,
छज्जे पै कौंवा लं रही।
१३. सात सै ढोला रानी के आगें चलैरे
सात सै जाके चलें पिछार
कसुमा बीमर क्यौं उठि बोल्यौ।
संजा तैरी बेटी में बजनु गायौ आइ।
फांसे हाय में लैलए
पानें बादर फारे फारि, लाड़िले,
बेटी में बजनु कैसें बढ़ि गयौ।
अरे ढोला धरे एैं तास पै आइ
ढोला में तो ऐसे मिकरी, मैना ज्यों पून्यौं कौ सौ चांदु
म्वांते चलीं तासन पै आई
पानें कौनें मेरी सरवर दीयौ एैं बिगारि।
तुम म्हाभो तो नहाइ लेउ री
मैं म्हाइबे की नांइ।
मोती में बसु ना मिलै, मैना मैं न्हाइबे की नांहि।
चोर सही करि दीजियौ एैं बनिया की धीय।
जेगयौ बागन में,
खोज पकरि ठाढ़ी भई ए चंपा वे धीय
जे गयौ मैना जे गयौ बागन में
म्वांसे ढोला चले फेरि बागन में आए
बागमान जल्दी बुलवाए
चोर लियौ पुकवाइ मार तो में लगवाऊं।
तमें करें गजब के टूंक किले की ईंट बुवाऊं।

बागर बारी तैंनें राख्यौ ।
नैंक अदल बाबुल कौन राख्यौ ।
घोड़ा वारो ग्यातें कहां निकार्यौ ।
इतनी सुनि के बात हींसि घोड़ा नें दोनी
म्वातें रानी वहां गई घोड़ा के पास ।
बीरा तेरा रे चढ़ंता कहां रे गया लीला घोड़ा रे
"मेरा भी चढ़ंता भौजी सोवै तेरी सेज पै"
"क्वारी से तैंनें भौजी चों कहीं दई मारे रे !
बीरा भी कहिकें टेरतऐं हमारी तु'दिल में ।"
"भौजी भी कहिकें टेरतऐं हमारी बागर में ।
मैं जानि गयौ रे जानिगौ धनि सिरियल तेरौ नामु ।
सपने में बात जो तेरी है जो गई जुलमी जाहर ते ।
पाँच-सात कमची सड़-सड़ मारि जो गई लीला घोड़े में ।
"मैं भी तो जानुंगो री आइ गयौ फागुन मासु
हम तुम होरी खेलिलें री ओ संजा की धीअ ।
संग की सहेली रे बोलि फूल उन पै तुरवावै ।
जानें गोदी भरि लई वेगि फूलमाला पहरावै ।
तेरौ पति सोइ रह्यौ बंगला माल व्याकें नहिं डारै ।
जौ सुनि पावै बापु तेरौ हमें माड़ारै ।
तू राजन की धीअ कहा गजबानी फारै ।
तेरौ बाबुल सुनिकें बात हमें माड़ारै ।
तुम ग्याई ठाड़ी रहौ पास बंगला मैं जाऊँ ।
अपने बाल में जाइ जगाऊँ
व्याते रे फाँसे मैं तो खेलूं ।
मैं घोड़ा लु'गी जीति किले की ईंट ढुवाऊँ ।
फूलन ते भरि लीनी गोद ।
रानी रहै कमल कौ फूल ।
तैंनें बाजू हमतें खेली
तैंनें बुलाइ लई संग सहेली
गलमाला अबकें पहराऊँ
अबकें चौपड़ फेरि बिछाऊँ ।
साँची कहूँ बागर वारे गूंगा राना
मानि लीजी बात हमारी
नारि तिहारी मैं है गई ।
१४ संग की सहेली कहें बात सुनि लीजो हमारी
कहा माया तैंनें फैलाई
जिही बात हम पै बनि आई ।

रथ बहली सजिगाईं धरी छाधीन् अम्मारी
ताजी तुरकी सजिगो बंका।
सुरख बनात नारि में गंडा
घोड़ा सजि गए मोर कराई
जब कछवाहन् नें सुरखि लगाई
एक बरन के सजौरे सिपाइ
डुम्पिल नगरो की सुरखि लगाई
नारि में लोरा दुमूरी कठी
सो एक बरन के सजे सिपाही
सो दादा मेरे
सोभा बरनि न जाई
सो दुलहा ताबे (काने) कूं हम कहा करें।
केसौड़ें के चारि नगर परिकम्मा दीनी
लसकर फिरै नकीब बेर काए कूं कीनी।
कटि कटि धूरि उड़ी अम्मर में
दादा मेरे
सूरज में जोति रे छिपाई
सो माम गरद में मटि गयौ।
साहब सैंग नें कही देरकाए कूं कीनी
सुनि लेठ मेरी रे बात लेख नें नींद न बीनी
तुम चलि लेठ मेरे संग
जो कछू होइगी बीतना, मेरी सबरी साहिबी सग।
म्यांतै साहबु चल्यौ सुरति तुंदिस की लीनी
सखियां गामें गीत,
ऐसी कहूं मोह बीलति ऐ दुलहा की फिरि आइगो न पींठि।
म्वारोईं लौट्यावैं तेरौ बरना
धवकें सबदु सुनाइ हर चरना (मातई)
हरचरना सबु कहै बात परि गई अब भारी
चौहानन की मारि कहा है जाइ विहारी।
म्यापै गोरखनाथु सहाय
चौदहसैम की संग जाके चलित जमाति।
संगऊ चलें जमाति, संग लांगुर अगि मानी
नगर कोट की मात बात सुनि लेठ हमारी।
म्याके सबु संग ऐं रनधीर।
बात रे हमारी मानि लै रे भरे म्यां मूंटी चढ़ेंगी पीर।
पीर बंधै का बीर सम्हारै
म्याके कहा सग में देखि भोर

नागर पान मंगाइ बटै राजन कूं बीरा
राम रामु में दै गयौ हीरा
कसि बांधे हथियार कुमर बागीनी कू भाए
करिकें भेंट हौटिगी राजा
दादा मेरे, सिरपु कचैरी जाइ
असवारी जाकी छुटि गई
काइदा से घोड़ा लगवायौ
चौमेखा घोड़ा बंधवायौ
मोलु करै मति देर
बागर वारी बामतु ऐ रे
ब्याके संग साहिबी कितनी भीर
सग साहबी भीर
सांचो करिकें मानिलै रे बरौनिया की करिसै भीर।
ब्यां की ब्यां रहि गई, ब्याते कछु और चलाई
सजि चौहानी चली भीर समदर पै आई।
जाहरपीर बनी में डोलै
देवी जाहर बोलै सार
मीरा गाजी करै जुवाब
हुम तुन्दिल कूं जाउ ब्याहु ब्यां होइ तिहारो
मेरौ मौला घोड़ा कितनी दूरि
घोड़ा बेगि मगाइ दै मैं देखूं तुन्दिल नगरी दूरि
जानें उल्टौ घोड़ा राह लगायौ
ठमु ठमु ताजी नचतो आयौ
जाकी उगिलि परी तरवार, हात ते मार्यौ सटक्यौ
हम तुंदिल कूं जाइ होइ ब्यांतौ रे अटकौ।
जे ब्याहु हति मांइ पीर कूं बहुतई कसकौ
मेरी सुनि लै मौला बात
पलक पलक में लै उड़ौ हम पांचौ भ्राता साथ।
ब्याते घोड़ा चल्यौ फेरि बागर में आयौ।
बाछल माता से करै जुवाब
मरी तू माकइ पर जाऊ बेगि कांकमु लै आउ।
चौरी मचाइ रही भीर
हमतौ ब्याहिबे जात ऐं, सपनें कैसी है गई रीति।
बाछल कहै बात सुनि लीजौ मेरी
मोइ बारह वर्स गई बीति डरो गूगुर की खोली
तुम है गए सिरदार
मरसिंह बीर अगारी चालै, भज्जू ऐ करि लीजौ घोड़ा के पिछार

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] मैं [illegible] ।
[illegible] नरसिंह वीर
[illegible] निठुर कौ [illegible] रे, [illegible] तीर ।
[illegible] घोड़ा उड़यौ, फेरि समदर पै आयौ ।
[illegible] वाला भानजौं खेलत पायौ ।
"मेरी सांची बताइ दै बात
तुम कैसें आमतौ रे, मैं तुमते ऊ चलतु [illegible] ।
तुम मती करौ रे देर नाथु जे चलतु [illegible]
तु दिल नगरी रे नाथु,
चौदहसैन की जमाति परी तु दिल मैं [illegible]
खप्पर वारी परी पिछारी
नगरकोट की मात संग वो [illegible]
तोइ नल कौसौ वरदानु
जहां सुमिरै तहां आमति [illegible]
इतनी सुनिकैं वात ज्वानु [illegible] ।
सुनि लै रे मेरी वात [illegible] ।
नल कौ सौ मोइ [illegible]
संग हमारे रहति [illegible]
मात हमारी [illegible]
जाकैं पीछैं [illegible]
देखि समद [illegible]
करि [illegible]
तुम [illegible] ।
[illegible]
[illegible]

कजरी मन की नायु अगारी आयौ
जादिन ते लीयौ अवतार, मोउ ना लियौ हमारौ ।
चीर परै अब भीर
माथे पै तौ लिखि दई रे वो संजा की धोम ।
म्याँते घोड़ा चल्यौ फेरि कुंचिल में आयौ ।
आइगौ कुंचिल गाम्
संग की सहेली देखिबे रे आईं दुलहाऐ ख़ास ।
संग की सहेली चली देखिबे दूलह आईं ।
जो देखि कुमर कौ रूप मोतु मन में बैसाईं ।
तिरिया रहि गईं सोच परे सरिकनु के टोटे ।
ऐसे पाए कंत करम तेरे सिरियल खोटे ।
कछवाएन कौ कुमर नाम् दुलहा को तारा
नाऊ कौ चतुर सुजान कुमर पै परदा डार्यौ
हंसत सखी सिरियल ढिंग आई
कहा दुलहा की करैं बड़ाई ।
ज्याकौ पेटु मथनिया, चांदि में गंजौ ।
दांत बतूसरि मुख में भारी
ऐसौ जनम्यौ कुमर धन्नि ज्याकी महतारी ।
"क्या सिखियायौ मैना मोइ ।
मेरौ पति चंदा कैसौ मोइ ।
वो ठाली बहमें गढ़्यौ देह छांचे में ढारौ
ज्याके नैन आम कीसी फांक नाक ज्याकी सूआ सारी ।
ज्याईते लगि रही डोरि खबरि मत लेइ हमारी
जल बिन् तेल, तेल बिन् बाती
बलमा मेरे,
तड़पति मारि रे बिहारी
जोमतु होइ तौ खबरि मेरी लीजियौ ।
बहमाता चोरी मूंठी दीनी
मरूंगी जहर बिसु खाइ छनक पानी में डूबूं ।
ऐसे पति के संग कुमरि का सिरियल जीवै ।
"कछवाहन् जोसिकैं करौ बारौठी
दादा मेरे
फिरि मैं ब्याते मूंगो मराई ।
परभात संग पै मैं चढ़ूं ।"
इतनी सुनि कैं बात ज्वाबु जाहर नैं दीयौ
लीला घोड़ा उद तैनें कौन को कीयौ ।
भैया तुम तौ अगारी चलौ, ज्वाबु घोड़ा में दीयौ ।

नरसिंह बीरा लयौ अगार
भज्जू चमरा चलतु पिछार
बाला भानज करै जुवाब
भैया ब्वापै रे बीरन की मार
कोई नरसींगै डारै मारि
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु नरसींग नें दीयौ
अरे वारौठी की कीनो त्यारी ।
संजा नें देखि मानी न्यारी ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु हरीसिंग दीनौ ।
पिछिली तोकूं नाइ खबरि बाग में सिरियल खाई ।
सात दिना गए बीति ताल पै ढाँकु वजाई ।
नाओ भर् यौ बु नाओ खेल्यौ
सबु बाइगी पचि गए तनक ना मुखते बोल्यौ
तिरबाचा तुम पै भरवाई
मरी कुमरि तेरी सिरियल ज्याई
अवकें ताखे फेरि खंदावौ
डसि जाइ नाग हात नांइ आवै ।"
अरे चौं गांडू तू सगुन बिगारै ।
भाई जौ जिंदिगी बचिजाइ तिहारी
मानौ चाचा तुम बात हमारी
एकु कह्यौ तुम मेरौ कीजौ
पीर कौ व्याह्नु सिरियलतें कीजौं ।
मोते ल्हौरी भैनि ब्वाइ कछवाइनु दीजौं ।
मुसक बांधि वो तेरी डारै
सबु दल कूं भज्जू माड़ारै
फेरालेगौ डारि बात वो फेरि बिगारै
राजी ते चौंन फेरा ऊ डारै ।
चौं चाचा मेरी बात बिगारै ।
जवरन रे वो भामरि डारै ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु राजा नें दीनौ
चौं गांडू तू परनु विगारै
हम चौहानन कें करैं न सगाई
हमनें पहले लीनी माँग, उनते करैं लड़ाई
उल्टी सिड्डी बेटा चौंरे चढ़ावै
सो हटि हटि जुज्झु करै तुंदिल में
चाचा मेरे
मानि लीजौ तू वातरे हमारी

तु दिल में साकी होइगी ।
बारौठी कूं कढ़बे आए
म्याते हरीसिंग चल्यौ फेरि जाहर ढिग आयौ
भाई आनें दोनों ठोकि कें पीठि पीर ऐ देंतु बधाई ।
चौं जाहर तैनें देर लगाई ।
जौ बारौठी चढ़ि आइ माँग है आइ बिरानी ।
मञ्जू चमरा करतु जुबाब
भैया चौहानी ऐ कहा लगिजाइ दागु
तू लीला घोड़ा तुरत सजाइ
हम तेरे देखि चलत अगार
म्यां चौदहसै चेलनु की परी अमाति
नगरकोट की आई मात
सुन लै जाहर मेरी रे बात
माई चढ़ि घोड़ा की पीठि फेरि दरवज्जे पै आयौ
बाबा नाथु जाइ ठाड़ौ ई पायौ
बाबा ऐ तू संग ना लायौ ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीनौ
हाथ जोरि जाहर भए ठाड़े
चौदहसै ज्वान ऊ खड़े अगारी
गोबड़ बाते करि रह्यौ बात
सुनि रे जाहर मेरी बात
मरे बीर तात हमारे चलें अगार
नगरकोट की मात अगार
लीला घोड़ा ऐ देंतु बढ़ाइ
मञ्जू चमरा करतु जुबाब
मेरी सुनि लै भैया बात
इतनी सुनि कें बात आपु संभाऐ आयौ ।
भैया पै दीवान ऐ पांच साहिबी कहाते आयौ ।
संभा ठाड़ौ करै जुबाब
मैं फेरा दुंगौ तेरे बारि ।
मोते जाहर लटके नहिं हाथ
कूर मति हमपै बनि आई
है ठीया हमनें करी सगाई ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीयौ
तैनें तौ संभा बरु कौन कौ कीयौ ।
इतमें परि गई खबरि ओर ज्यासिंह दीयौ ।

जौ क्वारी लै जाइ बात डिगि जाइ हमारी
हमने रे संजा कीनी नांही
तैंने बाबा हिरिगिजि मानी नाहीं
सो हटि हटि जुज्झु करौ तुंदिल में
दादा मेरे
होन देउ रे लड़ाई।
बारौठी की कछवेनें कीनी त्यारी
सात लाख की भीर राउ कछवन की भारी
जौ गांडू बनि जाउ बात बिगरि जाइ तिहारी
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु जाहर नें दीयौ
जौ गांडू अगारी परि जाउ तेगना भलै तिहारी
हंसि हंसि बात करै रे जाहर
दादा मेरे
सपने में है गई नारि रे हमार
तुम टरि जाओ अपने गढ़ आयरि देस कूं।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु दुलहा नें दीनौं
जे क्वारौई ना जाँउ बात गहि जाइ हमारी
भज्जू चमरा तेग सम्हारै
सबु कछवाइनु हाल बिड़ारै।
कछवाए लीने घेरि
काने तू चौं न तेग सम्हारै
हमारौ जाहर चल्तु अगारी
तुम बारौठी की कीनी त्यारी
बीरन की ऐ तुम पै मार
कहा चलति ऐ हमारी बार
सो हाथ जोरि तेरे करूँ निहोरे
दादा मेरे
ब्याहि दीजौ सिरियल नारि रे हमारी
जाइ गढ़ आमरि कूँलै जाँय
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीनौं
नरसिंग पाँड़े चलतु अगार
बाला भानज करे जुवाब
सुनिरे मामा मेरी बात
कछवाइन ते खेलौ घात
कुर्सी मूँढ़ा लए मँगाइ
संजा जोरै ठाड़ौ हात
भैया भक्क भक्क बहि चली, जैसे मति बहि चली गंगा।

जेठु जो लागौ मास मानजौ, सुनि लीजौ मेरी पीर
अवाज जु दै दै तू, महल में कूलि भाषो पाँचौ बीर
देति अवाज संजा की धीय रे नरसींघ मेरे पीर।
बागर कूं मोह लेजौ चलौ बागर के जुलमो पीर
दोजूं नरसींग आइ जो गया महलन के बीच
ना रयु हम पै साहिवी, घोड़ा ऐ इकला बोर।
नगरकोट की मात ऐ आइ गई ऐ बागर वारे पीर।
मेरे म्याने में बैठि जो चलौ, संजा की प्यारी धीय।
बामन भैरौं, छप्पन कलुवा आइ जो गए महलन के बीच
डोला जो धरि लयौ बानें भरे महलन के बीच
म्यौं तौ री भैया, मैं ना चलूं, सुनिलै मेरी बीर
दूधा की माती न बाइ लई, मेरे बागर वारे पीर
मातु हमारी तू आइ जो चा, सामलदे माइ।
हम तौ री म्याते अब जात ऐं फिरि आइवे के नांइ
तैंनें ची जोगी लेइए वो जालंधर नाथ
व्याकी दुमाते में तो है जु गई मरी मेरी माइ
गोरखनाथ का पति मेरा चेला कहिऐ बागर का पीर।
व्यानें कठिन तपस्या करी मात बाचल की जायी
ठाड़ी री सासुलि देखै बाट
सात दिना म्दौ बीते री हाल।
अवई रे जुज्झ भए पूरे संगराम।
इतनी सुनि के बात ज्वाबु लीला नें दीयौ।
बागर वारे पीर तैंनें डर कौन को कीयौ।
सो चढ़िलै पीठि पीर तू बागर वारे
देखि हम तौ म्याते करें रे लड़ाई।
एकौ करि कें हम चलें।
पांचौ बीर जु लए चढ़ाइ
लीला घोड़ा अगास उड़ि जाइ
संजा राजा घेर्‌यौ जाइ
संजा सुनि लै मेरी बात
अच्छा है है वातें तू हमते करि चौसें तुंदिस नगरी के राज।
छिपि गी जात भी, जुरि गई मातेवारो हाल
जो जमाई जमु मैं गिनूं लीला घोड़ा रे
पाँच बीर तेरे ऐसा ऐ भज्यू रे चमार
बाईस हौदा व्यानें खाली करि जी दए उम कछवाहन के।
सबु दसु डार्‌यौ काटि

इन्नें तौ चेताइ कें तू जिनमें दीजौ सास तू डारि ।
तैनें दईऐ सवद की मार
तोप गोला चलन नांइ पाए, नाँइ चली पिस्तौल कमान
तैनें दईऐ सबद की मार
सिर इनके कटे हत नाँए, जे पीटि रहे परे परे पाँइ ।
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु हरीसींग नें दीयौ ।
तेरौ कहा विगर्यौ ऐ लाल, लाल तैनें सबके लीये
तैनें सब दीए मरवाइ
मरे मराए कहाँ बगदि आंगे, तैनें दीयौ भेकु कटवाइ
तू तौ भौतु बनामतु ऐ बात
तेरी बात कहाँ रहि जाइगी, तेरी लई चौहाननु काटि नाक ।
हात जोरि देखि कहि रह्यौ बात
मेरी तौ रे कछू नांइ चलती, तैनें मारी सबद की मार
कहां ऐ गोरखनाथु
ब्वानें तौ गूगुर दयौ, जालंदर नें दीनी ऐ भभूती हाल ।
मेरे कौन जनम के पाप, धीश्र नें सिरियल जाई ।
चौहानन की भीर श्राजु चढ़ि तुंदिल पै श्राई ।
तुम बेटी ऐ लै जाउ
बात हमारी बिगरि गई ऐ, नातेदारी जुरैंगी हति नांइ ।
इतनी सुनिकें बात ज्वाबु जाहर नें दीनौं
चौं संजा तू गरूर विचारै
तू इतनी बाँधै हिम्मति बात तू अपनी बिगारै
हम बागर कूँ जात ऐं भाई ।
तेरी धीश्र हम नें सिरियल ब्याही
संजा तू श्रब कें तेग सम्हारै
हरीसींग ऐ बेगि बुलावै ।
घोड़ा पै ताखौ करै जुवाब
श्ररे सुनि रे संजा मेरी बात
खाई तेरी सिरियल नारि
मरि गई ऐ बु हालई हाल ।
तिरवाचा हमनें भरवाई ।
तेरी मरी कुमरि हमनें सिरियल ज्याई ।
सो बात कहैं सुनि बात हमारी
संजा चाचा
तू महलन कूँ चलि भाई
सोवे में कहा तू देइगौ ।
इतनी सुनि कें बात ज्वाबु संजा नें दीनौं

दुबकि चूपकि खाट पायौ परौ नींद तिहारी भाई।
सामुई तौ तुम करौ सफाई
सो साँची कहूँ मानि लै तासे
बेटा मेरे,
मैं तौ फिरि करूँगो लड़ाई
राजी ते बेटी ना दऊं।
कछवाइन को कुमर फेरि को तारा मायौ।
ब्याको क्वारी रहि चल्यौ मौरु कहाँ ऐ बीर हमारी
सो साँची कहूँ मानि लै तासे
बात हमारी
ब्याकी भामरि दऊं डरवाइ
ब्याहि दूं छोटी धीय।
इतनो सुनि कैं बात ज्वानु मरसींग नें दीयौ
संजा मानौ बात हमारी
सहर दलेले के राज हम सिरदार ऐं भारी
सुनि सेठ चाचा बात हमारी
क्वारी ना लै जाइ ब्याहि लई धीम तिहारी
सो चुपका चुपकी संग लंदाइ दै
सो संजा राजा
मानि लीजौ बात रे हमारी
सो सोने को नमूना तुम करौ।
ज्याते रे संजा चल्यौ संग जाहर के भायौ।
संजा जाहर ते करतु चुवाब
तुम देखि फाँसि लीजौ डारि
जिन फेरनु मैं मानतु नाहि
गलमाला लीजौ डरवाइ।
तारा ऐ औरें लै बैठारि।
सो मैं तो बात मीथि की करि राखी
जाहर बेटा
मानि लीजौ बात रे हमारी
तुम ब्याहि दलेले लै पइयौं।
तेगा ते जौरें बैठारें
हम चौहान ऐं बीर
बे गांड़ कछवाए पीर
तुलकी नेंक परिमे म मीर
सो साँची कहूँ बात सुमि लीजौ

संजा राजा, चाचा मेरे
सो सिरु भुट्टा सौ लु'गों तारा कौ काटि कें।
परिकम्मा घोड़ा नें दीनीं
एक ठोकर संजा में दीनी
संजा राजा चलतु अगार
जुलमी घोड़ा करै विचारु
गाँड़ू अब चौं चलतु अगार।
मूंज, बकौटा औरु चमारु
चौंचौ कूटै चौंचों फारु
तो में दई ठोकर की मार
अब गांडू चौं चलतु अगार।
तारे दै अब तू खुलवाइ
फाटिक की रस्ता लै जांइ
अब कछवाइनु लेइ जगाइ
बुनते हमारी तेग चलै फराइ
वे सबरे तुमनें डारे मारि
अमिरितु बूँद हम सबपै डारें
चाचा मेरे
अमरु सवनु करि जाँइ
सो डोला में धीअ अपनी तुम धरौ
माढ़यौ पट्टा गाड़्यौ नांहि
भामरि कैसें लीनी डारि
खयौ पकरि व्वानें लीयौ डारि
महलन में रही रुदन मचाइ
तैनें जवरन लीनी डारि
बाबा गोरख करै जुवाब
तौ जू' आए जलंधर नाथ
सो लै लीनी धीअ गोद में
दादा मेरे
तौ जू' है गए नाथ जौ सहाई
सोवे की त्यारी करि रह्यौ।
वेटा तुम सहर दलेले लै जाउ नारि है गई तिहारी
जूरी हमनें दई मतवारी
ठाड़ौ गोरख जोरै हाथ
सुनि लेउ वावा मेरी वात
एकौ देउ तुमऊ करवाइ
सोवे में लुटिया देंतु गहाइ

दान पानी कछू चहियतु नाए
बाबा मेरे
एक सुट्टिया दीजौ रे दिवाइ
पे राम रमरमी म्वां करैं ।
अबरें से तुमसे ई आउ
दोऊ जोगी भए सहाइ
नगरकोट की माता आइ
गोदी में जे लै आई झाल
डोला में लीनी बैठारि
डोला जाको पचरंगा आइ जु गया दरबाजें के पास
सखियां भी सारी मेरी गाओ जु मंगल चार ।
फगुआ की मैना तुम गाइ जौ लेउ या नंगर की नारि ।
धरि लई धीम डोला में म्यारी
संजा राजा बड़ो पियारो
आंसुन की बंधि रही धार ।
धीम हमारी जाति ऐ करि आमें गाइ-बजाइ ।
करि आमें गाइ बजाइ बात रहि गई तिहारी
म्यांते तुम लै आउ
बचनन की जे बांधी धीम हमारो फेरा लै गई ऐ बाग में जाइ ।
सो धरि लई नारि डोला में जानें
सो बागर देस कूं चलि दियो
जानें घोड़ा तौ खूब उड़ायौ ।
सारद माइ सुरति करि लैके
ज्ञान दिया मोकूं परमेस
पधि मरता घर बालक जनम्यौ
बिकट भूम्मि म्वां बागरदेस
बंकी महरी बनी पोर तेरो गचकोसी और कलई सेत
चार्यौ खूंट की आबें भेंतिनी, क़ायिम सेंत पीर तैरी भेंट
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन धामत ऐं ठोड़ चार्यो देस
भाषन को करबाई भाम्ता रासी लाज मेक की टेक ।

१. जेवर राजा सरग सिधारे
से जाहर गाद्दी बैठारे ।
खेलि शिकार बाहुरे जौरा
डिग मौसी के आमें
जिसे भूम्मि हमकूं दै मौसी पिता को नामु चलामें ।
कूमा और बावरी मौसी सागर ताल खुदामें ।
सहरपना दे बसिकें मौसी म्यारी किसी बिनामें ।

न्यारौ किलौ चिनामें मौसी छोटे छोटे बुर्ज बनामें
छोटे छोटे बुर्ज बनाइकें उनपै तोप धरामें
जबई जांइ गाम अपनें कूं गांठि कछू ना बांधें।
सो हात जोरि तेरे करें निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
थोरौ सौ बिसवा बांटि दै।

२. लाला खेलन गयौ सिकार औलिया ऐ आमतई समझांऊ
ढिग लुंगी बैठारि पोर ते भुम्मि की बात चलाऊं।
मन सन्तोक धरौ रे जौरा, उर्जन सुर्जन
बैहन के बेटा
करि दुंगी तीनिरे तिहाई
सो आवे मेरौ औलिया।

३. माता तेरौ जाहर सिर्री दिमानौ
बागर देस में है रौ रानौ
तेरौं जाहर ऐसौ धींगु
मांगे बिसे दिखावै सींगु
जैसोई जाहर ऐसीई सिरियल
सो हात जोरि तेरे करैं निहोरे
बाछल मौसी
ऐ ठकुरानी
सो जापै तौ लिखवाई।
बाछल रानी कहत कहानी
मैं पतिभरता जगनें जानी
द्वात कलम महलनते लाइदै, जेठनु भुमि की ठानी।
बाला तन ते मैंनें पारे, अन्तर कछू न जानी।
बड़े भए जब बिसे भुम्मि की ठानी
सो बाछल भोरी
समझी थोरी
व्वा मैया नें
द्वात कलम मगवाई
सो संजा की बेटी लाइ दै।

४. सीलमंत संजा की बेटी
तैखानें में आई।
मनते अकलि उपाइ कुमरि नें द्वाति कलम दुबकाई।
सासुलि टूटी क़लम औंधि गई स्याहो

मोह महलन में ना पाई ।
सो हाथ जोरि तेरे करूं निहोरे
सासुलि मेरी
मरसींगें पकराई
सो राखि पुरोहित लै गए ।
१. तोमें सिरयस बड़े गुमान
लै तोरी मौसी को कामि
लै सिरोही बन कूं जाइ
बाहर मारि मल्नु हम जाइ
तैने सिरयस माड़यौ मोड़
तोइ करै महलन में रांड़
मारें पीर करें है टूंक
तोपै घर घर की मंगवाइ दें भीक ।
पाप के बीज गांठि मति बांधै
ऐ संजा की
तेरे नैननु ज्वानी छाई
मौसी से नाहीं मति करे ।
जेठ बड़े मैं सिरियस छोटी
गैल चलत मोइ दैसे गारी
मैंने जाने सूरे पूरे
तुम निकरे मूरे के कूरे
जाउ जेठ उठि जाउ सबारे
जे बागर कहां फारे
मेरी घर की सासुलि बैरिन हैगई भाई में तुम पारे ।
जेठ बड़े मैं सिरियस छोटी
मैंने जाने मरद भये काछन के छोरी
मेरो बारो बलम घर मांइ करी महलन में चोरी
सो सुन्त कंम औरन कूं मारै
सासुलि मेरी
भीमतु छोड़ै हतु नाई
सो मार्वं मेरी भौसिया ।
१. सीसमंत संजा की बेटी महलाने में रोई ।
बागर बारे पीर भौसिया प्रातु पतिगा सोई ।
माता भुम्मि लिखति ऐ तेरी, ध्यान धसें कछु मेरी
मजमति होइ तो प्राउ भौसिया
बागर बारे
गूंगा राना

छिन भुमि हौंति रे पराई
सो ड्ढकरिया बांटें देंति ऐ।
देवी जाहर खेलें सार
मीरा गाजी करें जुवाब
जाहर पीर महलन कूं जाउ
तिहारी बाँगर बांटी जाइ
छोड़्यौ पांसौ पटक्यौ दाउ
लीला घोड़ा तुर्त मंगाइ।
जाहरपीर बड़े परवीन
कसि बांधे घोड़न पै जीन
सुई सुरख सीस पै पगड़ी
हाथ बनी भाले की लकड़ी
उल्टौ घोड़ा राह लगायौ
ठम ठम ताजी नचतौ आयौ।
उगिलिपरी तरवार, हाथ ते भालौ सटक्यौ
फड़कै दांई आंखि, होइ बांगर में खटकौ
मारि घोड़ा महलन कूं आयौ
दादा मेरे सो पौरी पै झुलम्यौ आई
सो जाकौ लीलौ घोड़ा हींसियौ।
७. वजी खमखमी टाप, भये महलन हुंकारे
भाई अजमत धारी पीर, टूटि गए वज्जुर तारे।
अव तौरी सिंहु पौरि पै गाजे, दरवाजे वाजै तरवारि
बेटा समूहीं परिकें करियौं रैलौ।
तुम पहलें बांटी सहर दलेलौ।
जो कहूं बांटै आधें आधु
मति मानौ जाहर की बात
तुम फेंट पकरि डारौ गलवाईं
वांगर वांटौ तीनि तिहाई
ठाड़ी माता अर्जु करति ऐ
उर्जुन सर्जुन
मन में दहसति चौं खाई
समुहीं बेटा ज्वाव करौ।
सुर्जन वात चटपटी कही
वाँह पकरि वाछल लै गई
जो जौरा जिय में दहलाउ
तिहारी राह वनी मोरी में जाउ
जो पाग उतारि कांख में दीनी

सन औरत्नें
दादा मेरी
मोरी की राह रे सिधारे
बाछल मौसी राम् राम् ।
८. दौमों दौमो जौरा निकरि जौ गए गादी रुप के जोरा ।
जाहरपीर महलों में आइ जौ गया बाबा गोरख का चेला ।
घोड़ा लगायौ घुड़सार में लहरी गूंगे में
सिरियल नारि बिछाइ दियौ पलिका ।
बैठि गयौ जाहर नर बंका
पगड़ी में सौने कौ झब्बा
मानि धरे फाफून के डिब्बा
सिरियल नारि सजी अलबेली
आपु सजी और संग सहेली
पीए रे भंग छकाए बत्ती
अब सिरियल नारि खड़ी अलमस्ती
फेंकी कलम पटकि दई हाथि
जा अपने वीर कौ मूंड़ सिरोहीते काटि ।
ठाड़ी ओट थोक बंगला की
जो संजा की बेटी
बोरी दौंथि रे लगाई
बलमा मेरे जाबिले ।
९. मैया देखि देखि कें सूरति अम्मा ढीक फोरिकें रोई ।
बेटा, एकन के ऐं लाख लोग, एकन के ना कोई ।
अम्मा कौनस की तौ लाख लोग और कौनस का ना कोई ।
दजु'न सुजंन कें लाख लोगुए, तेरी जानि अकेली
माता मेरे तौऐं लाख लोग् और मूर्ख कोना कोई
सो मांगें बिसे तमक दू दै दै
जाहर बेटा
ए बाबरिया
भाइक करिगे लड़ाई
बीरो सौ मिसवा काटि दै ।
माता में मानु भूम्मि कौ सीयौ ।
जाहरपीर की अमक्यौ हीयौ ।
सबु बन्द टूटि गए जामा के
रिस में मैंना है गए राते ।
जौ कोई कहतौ इतनी और

बाकूँ मारि डार तौ ठौर
सो तेरी कुक्षा जनमु लियौ ऐ
बाछल मैंश्रा
ए ठकुरानी
तौते मेरी कछू न बस्याई
मर्दन के विसवा न बटें।
१०. मारें मारें रिसके मारें निकरि जो गया बाबा गोरख का चेला
कांसौ बी दैंति लगाइ
संजा की बेटी भोजन लाई तू जैंलें चित्तु लगाइ।
अब कें चलैगी दल में तरवारि
समझि बूझि लैं मेरे बलमा तेरी बरनी रही ऐ खिसाइ।
बादर फारे जा रांड नें
बहनौतऊ लीए पारि।
भौतु करिंगे दिल्ली तक जांगे बास्याइ लामें चढ़ाइ।
हम पै गोरखनाथ सहाइ।
चौदह सै सोटा ऐसे चलैंगौ, व्वाको एक चलै न तरवार।
एक न मानी बाँगर बारे तौ जानें लीयौ जीनु सजाइ
फारिका डार्यौ जानें घोड़ा पै, भालौ लीयौ उतारि।
जाकी धनऊ खांति पछार
म्वाँते चलतौ है आयौ, तौजू है आयौ परभात।
उर्जुन सर्जुन दोनों आए।
मौसी वे रहे बात लगाइ।
बेटा नाओ रिसके मारें पीयौ दूध
काँसौ लाई लगाइ कें
सो भोजन फेंक्यौ दूरि।
मेरे दिल में उठति हिलौर
बाँधन कौ छौना गयौ, बाँगर में नाँइ मेरौ ओरु।
११. म्वाँते सुर्जन चल्यौ पास मोदी के आयौ
सुनि रे मोदी बात मेलु बाबा नें खूब बनायौ
सुनि रे मोदी बात
भोजन करि तैयार बीरन कूँ, हमें लड्डू देइ बताइ।
वजन बताइ देउ ऐ सहजादे
जामें कितनौं देंइ किनकु हम डारि।
१२. सवा पाँन सेर के चार्यौ लड़ूआ
नेंक जामें दीजौ जहरु मिलाइ।
हल्ला मति करियौ बाँगर में, हम पीर ऐ देंइ खवाइ।
म्वाँते घोड़ा दीए हाँकि

गैस गही ऐं क्या बनखड़ की
दोऊ जांत ऐं घोड़न पै बैठे ज्वान ।
बैठे जांत ऐं ज्वान, निधा जाहर की भाई ।
भाई क्या जाहर में सीनें जामि
कमरि मर्द के बंधी बुलाई ।
जो जाहर नें झारि बिछाई ।
कुमरि कसेऊ महलन ते भाए
दादा मेरे
माता नें करी रे लड़ाई
सो लुट्या तन में लगि रही
१२. भैया, सहर वलेसे ते घोड़ा हांके
सगुन भए ऐं बांके
कुमरी माइ जाहर पै बैठी
अपने मुँहड़े मांगे ।
अपने मुँहड़े मांगे—
पहलो लड्डू दयो मरद कूँ, भई ऐ अमिरत की बूटी
गुन जोरान की गाँठि तबै हिरदे की छूटी
दूजौ लड्डू दियौ गहाई
जाहर अमड़ी गयौ चढ़ाई
जो न मरैगो पीर मौति दोऊन की भाई
इक लड़्या में ते द्वै जी करे
लै जोरान के हाथन धरे ।
देखत जोरा पीरे परे
जैसें मानों नाग भुजंगी नें डसे
सो देखत लड़्या पीरे परि गए
दादा मेरी
सरद गरम भई मारी
'सो लड़्या दादा जहर के ।'
१३. जाहर नाम् कमि गोरख जपाए
सेमतु नाग भुजंगी भाए ।
खेंचि जहर सर्फन को लीयौ ।
बिस को प्यासो पीर नें पीयौ ।
पीयौ प्यासौ भायी न लहरि
जाहर पीर फाड़ारयौ कहर ।
सटकि छिरोही मीचें भाई
मारि डारि मौसाइते भाई ।
कूर मंति हम पैं बनि भाई ।

बिसके लड्डू लाए बनाई ।
ठेंठर खोटी जाति जहर लड़उन में दीयौ
तुम मेरे नंगर में रहौ रौरु सुरई न कौ पीयौ
जो जौरन कूँ देइ सहारौ
गधा पै देंउ चढ़ाइ, करूँ जाकौ मुहड़ौ कारौ ।
हम लैन कहत ऐ भुम्मि, उलटि भयौ देस निकारौ ।
बाँधन कूँ मंडील कड़े पहरन कूँ तोरा
बैठन कूँ सुखपाल और हाथी औ घोड़ा ।
सो करत ए ऐंस पराए पीछें
उर्जुन सर्जुन ए मौसाइते
दादा मेरे
खाँतए हम पान रे मिठाई
सो आपुनि जौरा निकरि गये ।
१४. म्वांते सुर्जन कहै वात एक मेरी कीजौ
तुम दिल्ली कूँ चलौ सहारौ ब्वाऊ कौ लीजौं
तुम अच्छे कसि लेउ जीन
दिल्ली ब्यांते दूरि ऐ
संजा जू पहुँचिगें कितनी दूरि
१५. धरि मसक्यौ सुर्जन नें घोड़ा
धरि मसक्यौ वीरनु घोड़ा
घोड़ा पैंते भरतु उसास
एक डोकरी ऐ पूछन लाग्यौ न्यां कौन कौ ऐ राजु
रा राजा की काऊ ऐ मति पूछै
बो सहजादौ लाल ।
बनन में बोह खेलतु ऐ, काऊ पैंते नांइ लेंतु भेजऊ दाम ।
ऊंटन केऊ हलकन वारे ज्वान
जे सवरौ देखि राजुऐ जामें जाहर ऐ सिरदार ।
ऊंचे कूं चाहे नजर परि जाइ
जे मौसाइते दोऊ ऐं ज्वान
मेरी तौ जे हरि फोरि जांगे, मोरे सुनि लेउ घोड़ा वारे ज्वान ।
थोरौ सौ राजु ऐ उर्जन सर्जुन कौ, बे मौसी पै लैंइ लिखवाइ ।
जा डोकरी नें बादर फारे, जाऊते पहलें हम है आए ठोकि वजाइ ।
ब्वाकी एक चली हति नांइ
जहर के लड्डू हम लै गए बनी के बीच में
ब्वापै है गयौ नाथ सहाइ ।
स्यांपन के जहर ते बुनाओ मर्यौ मात ।
हम दिल्ली सहर कूं जननी जांत

हम दिल्ली कूं जांइ, बास्या के जोरें पहुँचें
जौ कहूं धरि से धीर
चाह्यौ दिसान के राजा सामें, बागर की उठाइ दिंगे धूरि।
बेटा मेरी कही तू मानि
अब कें छौ माता ते मिलि प्रास्रो, लेंगी बहू ऐ समझाइ।
मानि कही मेरी उनु लई बीर
धो कहो काऊ की मानति नांइ, बामा की उड़ाइ गयी धूरि
आइर कहता है—
१६ "माता सुत काका कौ होंतौ भैया
करि देतौ ब्याह तीनि तिहैया
सुत फूफी कौ होंतौ बोर
सब फौजन कौ करूं अमीर
जो कहूं होंतौ तेरौ बन्यौ
सब बागर कौ मालिक बन्यौ
मांगे दिसे ठनक माउंगो
बाबल माता
ऐ ठकुरानी
बोलु रही, सिर आई
मरदन के बिसवाना बटें।
१७. जानें घोड़ा लयौ सजाइ
घोड़ा लयौ ऐ सजाइ
दिल्ली सहर कूं जात एँ, बागर मांऊ औरें हाथ
जौ कहूं दिल्ली पकरें बांह
तौ करें गऊन के दान
ब्यांते लाला चले फेरि दिल्ली में आए।
जौरा आए दिल्ली बीच
चमकि रहे लाला के महल
बो तसा सिरदार है,
ब्याके संग लड़ैयो तु बाकी ई ऐ सिरदार
सो एक सिपाही ऐ बूझन लागे
दादा मेरे
कहां होंवि ऐ ऐ बादसाई
सो बादसाई भंडा कहां मिलै।
१८. हरी हरीं सिसम बिछी ऐ दर्याई
प्यासौ पिएँ झुकि रहे एँ सिपाई
सो टूटसि साम थाप तमसन पै
म्यां होंति ऐ बादसाई

वाछ्याई भंडा म्वां मिलें
म्वांते सुर्जन चल्यौ फेरि दरवाजे पै आयौ
पहुंच्यौ ऐ रमनीक
तखत पै पहरे दारुऊ पायौ
पहरेदार कहै मेरे वीर
कैसें औ मन दिल गीर
हम कहा पूछनु बात
व्यास्याइ ते दादा हम मिलें
सो हमें दीजो गैल बताइ
कौन रजन के पूत कहां गढ़-किले तुम्हारे
रौतिक रूप भयो एकु राजा
दिल्ली कौ वास्याइ लागतु चाचा
महम किले पै बज्यौ नगाड़ौ
व्वा दिन पाग राजा रूप ते पलटी ।
सो परि गई लाज पाग पलटे की
दादा मेरे
का होंति ऐ बाछ्याई
बाछ्याई तबला कहां ठुकै
१८. इतनी सुनिलई बात ज्वाब ज्यानन नें दीयौ
भिरयौ राज भयौ मन फूल
चार्यौ दिसान में जाकी राजु रह्यौ चार्यौ खूंट
सो जानि अजाहीं तेरी जाइगी
व्वा चौहानीन में
दादा मेरे
मरिगे जहर विस खाई
सो तेगा हमारे ना फलै ।
१९. "लम्बी की यौ हाथ
सलाम बाछ्याइ ते कीनी
बाछ्या ठाड़ी ऐ करजोरि
कौन रजन के पूत औ तुम भौतु मलूक रखत औ मोइ।"
"रौतिक रूप भयौ एकु राजा
दिल्ली कौ वास्या लागत चाचा
महम किले पै बज्यौ नगाड़ौ
लाख खिची तरवारि पींठि दै व्वा दिन भाज्यौ
मेरे पिता नें झुकाइ दए हाती
व्वा दिन पाग राजा-रूप ते पलटी
सो परि गई लाज पाग पलटे की

चाचा मेरे
सोजो फिरादि रे हमारी
नाते में भतीजे लगत एँ।
२१. "कै कोई जाहर जिन्दु धरे राठौरी राना
ध्वे दिए हात को खांड़ धरें पोहम को दाना।
वु जमीदार अपनी भूम्मि को
ध्या में कितनो जोर।
हुटिया गाडू जोल्ला तैनें कहा मचायौ सोर
सो ठाड़ौ वास्या कहि रह्यौ
जाहरु असवैसो, हां
धाइ रह्यौ भड़ा रेतु
पुड़ीर, कीए असल भिखार, चाकड़े सब माड़ारे
वे संवर वारे कौन बिचारे
वे चाकर है रहे हमारे
सिकरवार, परवार
किए कछवाहे तड़कर
पुड़ीर कीने असलि भिगार
वे परे कैदि में वसैं दार
कैदि किए चार्यों कुमराई
चार्यौ दिसन में फिरति दुहाई
सो इतनो जोरु वयौ चाँ चाचा मेरे
दिल्ली के चावे धरि रह्यौ
२२. चीमतु घोड़े हतुनाएं
बात सुनिलेउ हमारी
तुम वागर की करि देउ त्यारी
हम बात कह रए ठीक
वु मरदानों ऐसो ऐ
सो दिल्ली की उड़ाइ देगौ धूरि
ठोकूं सेमो मारि करै तेरी दिल्ली बस में
तारा गढ़ सौ गढ़ नहीं, नहीं सिगु सौ घोड़ा
मीरा गाजी सौ मरदु नहीं सो जाने तारागढ़ तोरा
बादशाह में लिखवाईं पाती
चारि रुक्कम चारि चिट्ठी डारीं
लै चिट्ठी महदी को चल्यौ
बीच मुकामु कहूं ना कर्‌यौ
मेरठ के दरवज्जे पै गयौ।
मेरठिया पूछैं बात

दल बादर तम्बू तन्यौ खेंचि गड़यौ असमान
लसकर चालै चंद कौ
सो दहलाने गढ़ पाषान
सो कटि कटि धूरि गई अम्बर में
सूरज नें जोति छिपाई
या कौ प्रानु गरब में घटि गयो
बादशाह के जोरू खड़ी
सुनि बलमा मेरो बात
तुम नागर कूं जात औ तिहारी नांइ फबै तरवारि
बांह छुड़ाए जात, ऐ निबल जानि कें मोहि
हिरदै मेंते जाउगे सबसु बदूंगी तोहि ।
निमक हरामी है गई, खिन गई पल्टनि तेरी मोस
ऐसौ चौकतु ऐ मोइ,
धोखो दिगे तोइ
—सो हंस बिनास होंइ नागर में
—बलमा मेरे
—ठाड़ी बादशाहजादी कहि रही
२५. ल्यांते लसकर चल्यौ फेरि हांसी में आयौ ।
जाइ बादस्याह पूछै बात कौन को रे फ़िल्यौ आयौ ?
चाचा मेरे, जो ब्याकौ ऐ नातेदार,
ब्याकौ भानजो जगतु ऐ सुनि लै मेरी बात
डेरा दै दै सोम में सो हम हैं आय ब्याके पास
बादशाह करि रह्यो ध्यानु
तुम हिन्दू बलबीर
कहूँ तुम मिलि मति जइयौ
हमारें कोई नांइ बिगाड़
भेद जोबन की बँधि गई
सो तुम जैयौ चाचा अपने आपु
हांसी छोड़ी गए हिसार
भाई चौफेर की ल्यौ लग्यौ बजार
बादस्याह नें लिखवाई पाती
आइ मिलि भानज मेरी छाती
बड़ी भरोसो बासा मोइ
हुकम करूँ फौज की तोइ
गाम परगने बैठ्यो लाई
जोरम दे सेउ तीनि तिहाई
मांगि जाउ जनि सेउ भराई

ज्यों तौ कोपि चढ़ी वाछ्याई
लै चिट्ठी ग्रहदी कूँ दीनी
दादा मेरे
वाँचिली जौ हुरमरे सवाई
सो परमानौ वास्याके हात कौ ।
२५. लै चिट्ठी ग्रहदी कौ चल्यौ
चल्यौ चल्यौ हाँसी में गयौ
नीचे चाहि नजरि फिरि जाई
जाकी वस्ती वड़ी लग्यौ परकोटा
ग्रव सवु हांसी कौ एकु लपेटा
नीचें चाहि नजरि फिरिजाई
दरवाजे पै तारी पाई
लै तारी जानें तारौ खोल्यौ
वाला के वो जौरें गयौ
जाइ वाला पूछतु वात
कहाँ के तुम सिरदार ग्रौ, कैसें ग्राए हमारे पास ।
कैसे ग्राए पास
सुनौ मेरी वात
ग्रहदी दैरह्यौ ज्वावु खवरि तोइ ग्रवऊ न सूझी
जे दल तो पै ग्राए घूमि
घेरि तेरी हाँसी लीनी
चिट्ठी फेंकि तखत पै दीनी
वो वालानें वांचि हात में लीनी
मसि भीजत रेख उठान
लिख्यौ वास्याइ कौ फार्‌यौ
ग्रहदी मीड़ै हात, कहा गजवानौ फार्‌यौ
सो चनन के भोरें मिरच चवाइगौ
वाला दादा मेरे
करुगौ हलकु भयौ जाई
परवानौ वास्याइ के हात कौ ।
२६. जानें ग्रहदी लीयौ घेरि फेरि गलवाहीं डारीं
ग्रहदी दयौ खम्भ ते बाँधि
जामें दई कुर्रन की बानें मार
मोइ मति मारै दादा मेरे, मोइ मति मारै
जे गजवानौ वाला तू चौं फारै
में ऊ तौ नौंकरु वास्याइ कौ भैया
चिट्ठी लायौ वास्याइ के हात की

तुम परवानौ अपनौ देउ
तुम परवानौ लिखि देउ
सो अहदी ठाड़ौ कहि रह्यौ
भागमल्ल दीवान बैठि पलकी में आयौ
भागमल्ल की कैसी कीजै
हटियौ कैसो होइ, अंग चौरे में लीजै
हटियौ कैसो होइ, जुज्झ सरवरि कौ कीजै ।
बैरी आवै द्वार बैठना बाऊ ऐ दीजै
सो हटि हटि जुज्झ करै हाँसी पै
सो दादा मेरे
बोलि रह्यौ सिरजाई
हाँसी पै साकौ हम करै ।
२७. लै चिट्ठी अहदी को चल्यौ
बीच मुकाम कहूँ ना कर्‌यौ
चल्यौ चल्यौ तम्बू पै गयौ
चोठी फेंकि तखत पै दीनी
बादशाहने बाँचि हाथ में लीनी
देखत चिट्ठी परिगो धूँधा
भोर करूँ हाँसी पै धूँधा
सो चनन के भोरे मिरच चबाइ गयौ
बाबा दादा मेरे
भरगौ हुलकु भयौ बाई
तम्बू में ते बात्या कहि रह्यौ ।
२८. चारि पहर रजनी के बीते
तुम करौ रसौई भोजन की के
बिगुल बज्यौ बात्या बजवावै
सूबेदार अरु फौज सजावै
तुम बाँधि लेउ जुमधार कटारी
धुँडीवार अरु बाँधौ पेच
अब घेरि लेउ बाबा के महल
सो कटि कटि ज्वान गिरै धरती पै
बाबा दादा मेरे
बोल रहे सिरजाई
मैं भाज्या बागर देस कूं
२६. जानें हाँसी लीनी तोरि लूटि दिल्ली पहुँचाई
बाबा बागर भाग्यौ जाइ
बादशाहते जे करै जुवाब

सुनिरी नानी मेरी वात
अव जौरन नें हम डारे री मारि
जौरा आए हांसी खेत
म्वां दीखि रहे ताला के महल
जानें हांसी लीनी तोरि लूटि दिल्ली पहुंचाई
सो ऐसा जुलमु कर्‌यौ ऐ नानी
उर्जुन सुर्जन नें
रूप मंत के
मन में दया नांइ आई
जानें भानज डार्‌यौ मारिकें ।
३०. म्वांते पल्टनि चलो फेरि वागर में आई
सासुलि गढ़ति पड़ापड़ देखि, मेख
धौरा पंडलि सेत, तूतौ भौंहरे ते वाहिर चलि कें देखि ।
नाहक रारि करी जौरान ते
फौजें लै लै आए साजनि भौंहरे ते वाहर चलि कें देखि
अपने वलम कौ मैं तो घोड़ा पाऊं
घोड़ा पाऊं, पाँचौ कपड़ा पाऊं
कपड़ा पाऊं, पाँचौ हतियार पाऊं
लैकें वीकु वास्याइ ते मिलि आऊं
ऐसे वचि जाइगौ सासुलि हेरौ तेरौ वेटा
औरु अव वचिवे कौ सासुलि नांइ
जापै जे दल आए घूमि
गोरख तुही
'अरी मेरी री जाहर नाहर भया ऐ
संजा की वेटी,
जाइकें चौं न देइ जगाइ
अरी वहू आजु देइ चौंन जगाइ
गोरख तुही ।
३१. नासिका में वारी चुन्नी
मोतिन की तोतादार
जापै घांघरौ घुमकदार
टेड़िया हमेल हार
रानी पायल की झनकार
गोरी वलमै जगायन गोरी जाई
सो पिउ की प्यारी वल में जगामन गोरी जाइ ।
थारऊ सजाइ लियौ
चौमुख जराइ लियौ

तुम परवानो अपनो देउ
तुम परवानो लिखि देउ
सो महदी ठाढ़ो कहि रह्यो
भागमल्ल दीवान बैठि पलकी में आयो
भागमल्ल की कैसी कीजै
हटिबौ कैसो होइ, बंग बोरे में लीजै
हटिबौ कैसो होइ, युद्ध सरवरि को कीजै।
बैरी आवै द्वार बैठना माऊ ऐ दीजै
सो हटि हटि युद्ध करे हांसी पै
सो दादा मेरे
बोलि रह्यो सिरदाई
हांसी पै साको हम करें।

२७. लै चिट्ठी महदी को चल्यो
बीच मुकाम कहूं ना कर्‌यौ
चल्यौ चल्यौ तम्बू पै गयो
चीठी फेंकि तखत पै दीनी
बादशाने बांचि हाथ में लीनी
देखत चिट्ठी परिगो धूंआं
भोर करें हांसी पै धूंआ
सो चनन के भोरें मिरच चबाइ गयो
बाला दादा मेरे
अरयौ हलकु भयो भाई
तम्बू में ते बाल्या कहि रह्यो।

२८. चारि पहर रजनी के बीते
तुम करी रसोई भोजन पी के
बिगुल बज्यौ बाल्या बजवावै
सूबेदार ऊ फौज सजावै
तुम बांधि लेउ दुसमाल कटारी
धुंडोदार ऊ बांधो पेच
अब घेरि लेउ बाला के महल
सो कटि कटि ज्वान गिरें धरती पै
बाला दादा मेरे
बोल रहे सिरदाई
तू माज्या बागर देस कूं

२९. आनें हांसी लीनी तोरि लूटि दिल्ली पहुंचाई
बाला बागर भाज्यो जाइ
बादसते जे करे जुवाव

सुनिरी नानी मेरी वात
अव जौरन नें हम डारे री मारि
जौरा आए हांसी खेत
म्वां दीखि रहे ताला के महल
जानें हांसी लीनी तोरि लूटि दिल्लो पहुंचाई
सो ऐसा जुलमु कर्‌यौ ऐ नानी
उर्जुन सुर्जन नें
रूप मंत के
मन में दया नांइ आई
जानें भानज डार्‌यौ मारिकें ।
३०. म्वांते पल्टनि चलो फेरि वागर में आई
सासुलि गढ़ति पड़ापड़ देखि, मेख
धौरा पंडलि सेत, तूतौ भौंहरे ते वाहिर चलि कें देखि ।
नाहक रारि करी जौरान ते
फौजैं लै लै आए साजनि भौहरे ते वाहर चलि कें देखि
अपने वलम कौ मैं तो घोड़ा पाऊं
घोड़ा पाऊं, पाँचौ कपड़ा पाऊं
कपड़ा पाऊं, पाँचौ हतियार पाऊं
लैकें वीकु वास्याइ ते मिलि आऊं
ऐसे वचि जाइगौ सासुलि हेरौ तेरौ वेटा
औरु अव वचिवे कौ सासुलि नांइ
जापै जे दल आए घूमि
गोरख तुही
'अरी मेरौ री जाहर नाहर भया ऐ
संजा की वेटी,
जाइकें चौं न देइ जगाइ
अरी वहू आजु देइ चौंन जगाइ
गोरख तुही ।
३१. नासिका में वारी चुन्नी
मोतिन की तोतादार
जापै घांघरौ घुमकदार
टेड़िया हमेल हार
रानी पायल की झनकार
गोरी वलमै जगायन गोरी जाई
सो पिउ की प्यारी वल में जगामन गोरी जाइ ।
थारऊ सजाइ लियौ
चौमुख जराइ लियौ

गैया सब घेरि लीनी
यम्मुन पै परी भीर
जिनको कौन बचावै धीर
बलमा सोइ रह्यो जिउ दबकाई ।
तैमें माहुक बैठ कर्यौ औरान तें
कोपक चढ़ी बास्याई
सोइ रह्यौ जिउ दबकाई ।
धन सिरहाने, धनि पाइत ध्यावै
ठाढ़ी ठाढ़ी रानी जे बलमै जगावै
कबऊ तौ ठाढ़ी तरवारै सहरावै
मेरे तौ जानें बलमा बागर तेरी घेरीं
जैसें हाँसुलिया में सुखी मेरी घेरी
बसो जम्यौ मलगजं बलो को फूली देही
झपाते किन गई सुन्दर मारि बड़ी मोह तानौ देही
माई टूटे पलंग के लाल महल की खिचि गई रेही (सम्म)
पाटो उड़ि गई फिरच-फिरच टूट्यौ सिरहानौ
सो ठाढ़ी भोट घोक बंगला की
वो संजा को बेटो
बीरो दैति रे लगाई ।
धास्याइ चढ़ि आयौ तेरी सीम में ।"

१२. "मानि लै बचन पूत मेरी
पाँच गाम औरान कू दैदे, आधौ सहर बसैगो तेरौ
सो मानि लै बचन पूत मेरौ ।"
अरो कैसो होंतुएं रांड भूम्मि दैबे
मैं टुकड़े है है लड़ू भूम्मि पै
जे चौहानी खेरी
सो कैसी होंतिऐ रांड भूम्मि दैबी
अरे बाहर ठाढ़ी करै जुबाब
तू नरसींग पांड़े ऐ लैति बुलाइ
आनें नरसींगु मीयौ भुलाइ
जे दस्टमि चढ़ि आई बेटा
बागर घेरीऐ सबरी तेरी धाइ ।
तेरी बागर घेरी धाइ
भज्जू चमरा कोसिकैं तेरी सूत चलै तरवारि
तेरो बाला सोयौ घेरि सूटि हांसी की करवाई
तुम पै मापु सहाइ

फौज हम पै हति नांईं
वे कछवाए भरि रहे जोर
मांगै लायौ व्याहिकें सो वो खूबु दिखामतु जोर
सो सोमत सिंघु भयौ कछवायौ
लड़िबे कूं ठाड़ौ है रह्यौ
सो सुनि ठाड़ी माता कहि रही
इतनो सुनि कें वात ज्वाबु लीलोनें दीयौ
वागर वारे पीर तैनें डरू काकौ कीयौ
मैं तो ऐसी भरूं उड़ान
नौ जोजन मरजादै जाऊंगी फारि
ऊपरते छोड़ी तरवारि
नरसिंगु पांडे देंतु जुवाव
अरी माता कहां लीला वो ऐ सिरदारु
लीला नें तोरि कें रस्सा ऊ लीनौ
वढ़ि कें पासु महल में दीनौ
एक गुरु की पैदाति
नरसिंगु भज्जू और चमारु
हम पै तौ जाहर सिरदारु
भैया देखि चलैंगी गुपत की मार
सोटा वारौ आवै वावाजी
माता रंचादे (घोड़ी)
वुसवनु डारैगौ मारि
तुम कसि वांधौ अव जीन
वोलि लेउ नरसींगु कूं नीर
भज्जू चमरा चलै अगार
जाहर तौ लीले के गात
खूवु फलै वीरन तरवारि
हलकारौ जानें फौजन में वीत्यौ
वे गजवानौ कैसौ वीत्यौ
नौसै नवासी तंगु जौ टूट्यौ
तुम सुरजनै लेउ वुलाइ
राजा पै लायौ काऊ देवता पै
सव की हात में तें छूटि गईं ऐं तरवारि
आजु सवकी छूटि परी ऐं तरवारि
भैया मेरे घोड़ा लेंतु बढ़ाइ, पिछमनौ तू मति करियो
नरसींगु कूदि पर्‌यौ कर जोरि
कछवाए लीये घेरिकें, मारि मारि कें भजाइ दए सवरे और

भज्जू चमरा करि रह्यौ ओर
घेरि जानें नाके लोयें ।
दोऊ मचाइ रहे सोर, घेरि जानें सबरे लीयें ।
कर जोरें सिरदार
उर्जुन सुर्जन लोनों मारिकें
भाई म्हारी नाई फसी सरदारि
जब दल में जानें घोड़ा हुंकार्‌यौ
सोमतु तौ बास्याह जानें बाध्यौ
सबु दलु लीयौ जाको मारि
मरे ठाढ़ौ बास्या जोरें जाके हाथ
बास्याह पै महरो बनवाऊं
प्रब मोह मति मारें बीर
हेमुसहाय बनियां जानें जाते जाते घेर्‌यौ
हेमुसहाय बनियां जामें पकर्‌यौ परतु छोड्‌यौ
बास्याह पैरे महरो बनाबाऊं
बनियां ने कलस चढ़ाए भारो
गोरख तुही
मे कहुं देखे तुमनें उर्जन सुर्जन
अर्जुन सुर्जन दोऊ मौसाइते रे भाई ।
कहां रौतक के वे सिरदार
बास्या में लंबी करि दयौ हातु
दोऊ भैया जात ऐं पकरि लेउ महाराज
हम विहारी महरी बनवायें
कलस चढ़ायें दिनराति
उर्जुन सुर्जन जानें जात जात घेरे
जात जात घेरे दोऊ मौसाइते भाई ।
दोऊन का लीया सीस काटि
दोनों रे सीस बुरजो में धरि लोए
उर्जुन सर्जुन दो मौसाइते भाई
आइकें सलामु अपनी अम्माजीते कीनी
"कै दस हार्‌या बछड़े कै दस जीत्या
कैई दस हार्‌यौ अम्मा कैई दस जीत्यौ
नरसींग पांड़े तेरो जातु जात जूझ्यौ
दूजो अड़ाबौ बास्याई छूट्यौ
भज्जू चमरा तेरौ काम जो आयौ ।
जब दल में घोड़ा हुंकार्‌यौ
तीजौ अड़ाबौ बास्याह कौ आयौ

लीलें घोड़ा के पैर घावु-घावु आयौ
दुपटा री फारि व्वाकौ पैरु मैंनें बांध्यौ
दिल्ली कौ वास्याइ मैंने पैयां परतौ छोड़्यौ
हेमूसाह बनियां मैंनें जांत जांत घेर्यौ
व्वापै तौ महरी बनवाऊँ
बनिया कलस चढ़ावै भारी''
गोरख तुही
''अरे वे कहूं देखे तैंनें उर्जुन सुर्जन
उर्जन सुर्जन दोऊ भैंनि के बेटा
भैंनि के बेटा बेटा बंद रे तिहारे
बेटा उनकी कहौंगे खुसराति
सौने की थारी अम्मा मांजि-मांजि लैंयौ
जौरन की री सौगाति दिखाऊं
थारी लाई मांजि
जाहर के आगें धरी, थारी में धरे ऐं दोऊ सिरदार''
''मैंने तौ पारे बछड़े तैंनें चौं मारे
जिनकी तौ कामिनी बेटा कैसें कैसें जीमें
लंबे लंबे पट्टे इनकी खुली सी बतीसी
जिनकी रे कामिनी बेटा कैसें जीमें
तोइ नेंक तरसु आयौ हतु नांइ
तेरौ रे मुखड़ा बेटा कबऊ न देखूं
तोइ तौ रे दूधु मैंनें बकड़ी कौ प्यायौ
मैंनें दोये आंचर कौ इनकौ दूधु
अपनौ खीरु मैंने इनकूं प्यायौ
बकड़ी कौ दूधु बेटा तोइ जो पिवायौ
नेंक तरसु तोइ इन पै नांइ आयौ।
तेरौरो मुखड़ा मैं तौ कबऊ न देखूं''
''अरी मैया मैं तौ तोइ दिखाइवे कूं नांइ''
घरते चल्यौ ऐ जुलमी
जाकी देखि व्याही खांति पछार
'तुम तौ रे जांतौ, राजा, चेला जोगी के
मेरौ देखि कौन हवाल
आजु बलमा मेरौ कौन हवाल
गोरखजी।
''मन में उदासी तू तौ मति री लावै
अरी व्यांहता नारि
वचन तौ पूरौ मैं तो, व्वाते करूंगो

मेरौ बाछस मैया,
मेरौ धरमु घटि जाय"
दाता तुही ।
"घोड़ा चढ़ायौ आनें सबद सुनायौ
तुम धनि भूंजी बैठी राजु ।"
"वोही न रहेगी बालमा
राज पल्ट है जाय
आजु बलमा राज पल्ट है जाय"
दौरानी जिठानी रे
बोलु जो दिगौ रे बालम प्यारे रे
मोहि घर-अंगना न सुहाइ ।"
गोरख जी
"दिल तौ रो टूटै मवती
बचनन कौ तौ बींध्यौ
अम्मा कौ प्यारौ
आनें खाई ऐ धरकार
आजु राजा खातु जिमी में पधार"
तुम तौरो रानी मोकूं
खानौ बनाइलै रानी
फांसी लगाइ दै
भोजन जैंगो तेरे हात के आज
मारें मारें रिस के मारें जुलमी बिगरिजु गया
चेला जोगी का
आजु आनें रोहियों की देखि गैल
घर में तौ कामिनि आनें रोमसि छोड़ी
गयौ मजुंम से के तौ पास
"तू तौ रे कैहँ मेरे जीरें भायौ
चौहानी ऐ लागि जाइ तेरी बामु
तेरे घर में बैठा सुन्दर कामिनि
माता तौ रोमति छोड़ी आजु
"मोकूं तौ तू तौरो ठौर बू दीजौ,
मजुंम से मैया,
आजु जिमी पै ठौर मोकूं दए मांइ ।"
इतनो रे सुनिकें जाको घोड़ा हींस्यौ
बागर बारे सुनि लै जुबाबु
आजु लाला सुनि लै जुबाबु
झूठी सुनाइ दै अपनी सबदु बताइ दै

लीली के गुरु भाई भैया ज्वान
तुं दिल नगरी मैंने बातजु राखी
व्याहि कें लायौ सिरियल नारि
तोकूं फिरि व्याही ऐ सिरियल नारि
वो तौ री कामिनि तैनें रोमति छोड़ी
छोड़ें तौ जांतु ऐ मोऊ ऐ आजु
"तोइ ना रे छोड़ूं मेरे लीले बछेड़ा
तुही तौ लगावै नैया पार।"
"तोकूं जिमो में बेटा ठौर जु नांइ
चौहानन कूं नांएं दादा ठौरु
अरे मक्के कूं जाना, बेटा
कलमा पढ़ि आना
चेला जोगी के
मौलवी के जैयौ भैया पास।"
घोड़ा तौ रे खोल्यौ जानें करी ऐ सवारी
घोड़ा उड़ावै जुलमी आजु
कारी तौ बदरी में घोड़ा समानौ
उड़ि उड़ि घोड़ा लगतु अगास
मक्के में आयौ याकूं, मौलवी पायौ
जाइ दै रह्यौ घरकार
"हिन्दू धरमु तौरे चौंरे बिगारै
उम्मर के नाती आजु
कहा तौ रे असनौ तोपै आनिकें पर्‌यौ ऐ
चौं आयौ हमारे पास
जाहर चौं तौरे आयौ हमारे पास
"मेरी रे अम्मा नें बोली जो मारी
गु समाइ गई गोरे गात
आज वुही समानी गोरे गात
कलमा सिखाइदै मोकूँ
मक्के पहुँचाइदै
तेरौ जनमु न भूलूँ अहसानु।"
कलमे "पाक कुदर बेली पाक ऐ
पाक सांई तेरौ नाम
पाक सांई केजे कलमा
कलमौं से उतरौगे पार
कुंजी कलम क़ुरान की
कलमा मुख कूं नूर।

मेरौ बाधल मैया,
मेरौ धरमु घटि जाय"
बाता तुही ।
"घोड़ा सडायौ घानें सबद सुनायौ
तुम धनि भूंजी बैठी राजु ।"
"दोही न रहैगी बासमा
राज पस्ट है जाय
घाजु बलमा राज पस्ट है जाय"
दौरानी जिठानी रे
बोलु जो दिगी रे बालम प्यारे रे
मोहि घर-मंगना म सुहाइ ।"
गोरख जी
"चिल तौ री टूटं मचती
धचनन कौ तौ बींध्यौ
मम्मा कौ प्यारौ
घानें बाई ऐ धरकार
घाजु राजा बांधु भिमी में पधार"
तुम तौधी रानी मोकूं
स्वानौ बनाइसं रानी
फांसी लगाइ दे
भोजन पीयो तेरे हात के भाव
मारें मारें रिस के मारें भुमनी बिगरिजु गया
चेला जोगी का
भाजु जानें रोहियों की देखि गैस
घर में तो कामिनि जानें रोमति छोड़ी
गयौ मधुं न मे के ठौ पास
"तू तौ रे कैहें मेरे जौरें मामौ
चौहानी ऐ लाभि आइ तेरी धागु
तेरे घर में बैटा सुन्दर कामिनि
माता तौ रोमति छोड़ी धाजु
"मोकूं तौ तू तौरी ठौर जू दीजौ,
धर्जुन से मैया,
घाजु भिमी पै ठौर मोकूं हुतु नाइ ।"
इतनो रे सुनिकें जाकी घोड़ा हीस्यौ
बागर बारे सुनि सैं जुवाबु
घाजु लाला सुनि लै जुवाबु
तूतौ सुनाइ दै घपनौ सबदु बताइ दै

दिन में री जाऊं संसार लखैगो
दरवाजे पै पावै बाछलि माइ
घोड़ा बी खोल्यौ जानें जीनु निकार्यौ
चेला जोगी के
फरिका लीयौ डारि
कूदतु आवै जाकौ उलल बछेड़ा
मोरतु आवै दादा वाग
म्वांते चल्यौ ऐ सहर दलेले अपने खेरे में आयौ ।
म्वांते उड़ायौ, घोड़ा उड़ायौ
आयौ सहर दलेले अपने गाम
अरी चन्दन किवारी म्हारी खोलि खोलि दीजो
मूंगा दे बांदी,
दरवज्जे पै ठाड़े जाहर बीर जी ।
अजी राजा उम्मर के चौकीदार जगिगे
पहरेदार जगिगे
तुम कूं चोरु चोरु कहिकें डारें मारि
गस्तीमान बी हमारे
चौकीदार बी हमारे
क्या भई ऐ दिमानी खोलौ तुम बजुर किवार
अरे करानी खोलौगी बजर किवार
तू तौरी बांदी हमनें टूकों से पारी
अरे क्या हो गई ऐ दिमानी तू तौ आजु ।
मैं तौ रे राजा तैनें टूकों से पारी
गैल बटोहीरा सुनिलै बात
तू तौ जाहरु ऐ चिरनै बताइदै भैया आजु
जौरे हमारी तूतौ सिर कौ सांई
अरे तुम हौ सिरियल के भरतार
गंगा रे जमुना तेरे ताख विराजैं
जे ही महलन में चिरनै आजु
अजी मैं खोलूं नांइ वजरु किवार जी
और सरापु री कहा तोइ दुंगो
घरकी कमेरी
भोर परै कोड़ों की तोपै मार
गोरख जी ।
भोरु भयौ चिरहीं चौहचानी
भयौ तौ सकारौ अरे हां
सोमत ते जागी संजा की बेटी

पात पास पै लिखि गए
बाबा नबी रसूल ।
पश्छिम सहर माता ईसुरी
पूर पूरव साह मदार
गढ़ मैंटनी का सेरूं औलिया
झगड़े का कमाल खाँ पीर ।
पीरू बिरहुमा बैठियो
हाती रहू्यौ मलू बाइ
सोले बारा आवड़ा सु
धरती में जाइ समाइ ।"
म्वांते चल्यौ ऐ रे
चेला जोगी को मैया माजु
घोड़ा उड़ायो, अर्जुन ले पै आयो
माता ते करतु जुबाब
जोरें रे आयो जानें गुरु जो कारचो
माजु बेटा आइजा धरती के बीच
माजु सोइ दै रही ऐ अर्जुन से ठौर
"ज्यों तो न आऊं मेरी अर्जुन ले मैया
मैं तो मन आवे जहाँ रैहऊं
तो में समांयो कामिनि आऊं
घर नारी ऐ लैकें जांगो समाइ
मरी माता कूं बचन दीयौ माजु ।"
बारह बारह बर्स भई एं गुजिस्ता
माजु बनी के जाकूं बीच
सुधि औरे भाई घर की जाकूं
घोड़ा पलानें आधी राति
"कहा रे मसनी तोपै परयौ ऐ
घोड़ा पलानें आधी राति
घर कूं रो जाऊं कामिनि ते मिलि आऊं
मेरी अर्जुन से मैया
मेरी तू सुमि ले जुबाब्
आधी रैनि जायें मघड़े आधी राति पाछें
आधी राति महलन में कहा कामु जी
राजा उम्मरू के चौकीदार वी जागिगें
चोर चोर कहिकें डारें मारि जी
चौकीदार बी हमारे गस्तीमान बी हमारे
अभी कू मैया जांगो मैं तो आधी राति

दिन में री जाऊं संसार लखैगौ
दरवाजे पै पावै बाछलि माइ
घोड़ा बी खोल्यौ जानें जीनु निकार्यौ
चेला जोगी के
फरिका लीयौ डारि
कूदतु आवै जाकौ उलल बछेड़ा
मोरतु आवै दादा बाग
म्वांते चल्यौ ऐ सहर दलेले अपने खेरे में आयौ ।
म्वांते उड़ायौ, घोड़ा उड़ायौ
आयौ सहर दलेले अपने गाम
अरी चन्दन किवारी म्हारी खोलि खोलि दीजो
मूंगा दे बांदी,
दरवज्जे पै ठाड़े जाहर वीर जी ।
अजी राजा उम्मर के चौकीदार जगिगे
पहरेदार जगिगे
तुम कूं चोरु चोरु कहिकें डारें मारि
गस्तीमान बी हमारे
चौकीदार बी हमारे
क्या भई ऐ दिमानी खोलौ तुम वजुर किवार
अरे करानी खोलौगी वजर किवार
तू तौरी बांदी हमनें टूकों से पारी
अरे क्या हो गई ऐ दिमानी तू तौ आजु ।
मैं तौ रे राजा तैनें टूकों से पारी
गैल वटोहीरा सुनिलै बात
तू तौ जाहरु ऐ चिरने वताइदै भैया आजु
जौरे हमारी तूतौ सिर कौ सांई
अरे तुम हौ सिरियल के भरतार
गंगा रे जमुना तेरे ताख विराजैं
जे ही महलन में चिरने आजु
अजी मैं खोलूं नांइ बजरु किवार जी
और सरापु री कहा तोइ दुंगो
घरकी कमेरी
भोर परै कोड़ों की तोपै मार
गोरख जी ।
भोरु भयौ चिरहीं चौहचानी
भयौ तौ सकारौ अरे हां
सोमत ते जागी संजा की बेटी

अरे बांदी तें करति जुवाब
अरे क जे तो बांदी से करति जुवाब्
'राति रो बांदो मैंनें पीतम् देखो
सिर कौरी बालमु हां।
ख्वाब में देखे मैंने सपने में देख्यौ
झगड़यौ ऐ सारी मोते राति
तुम नें तो रानी ख्वाब में देख्यौ
अरे बेटी संजा की सुनिले मेरी बात
जाहर म्हारे सबरी राति रो, हां।
मोसे कह्यो ऐ री सांकर खोलौ
मैंनें देखि खोली हति नांइ।
अरी कहर किया तैंनें
गजबानो फार्‌यौ
कुमरी गई तौ मेरी बालमु भायो, तैंनें बांदी बादर डारे फारि।
घोड़ा कौ तौ कोड़ा रे
जे मसवावै
बांदी में लगावे देखो मार
अब मति मारै बेटी
घर सामस, बेटी संजा की पू भाबु
राति तौरो भाए वे तौ फिरि बो तो भामें
पिया तौ तेरो भरतार
बनखन में तौ वे तौ ऐसें री घूमें
बाते अर्जुन सें करति जुबाब
घर भायो बेटा बचनन सुनायौ
चेला जोगी के
तेरो अबमति बगत बहार
राति की बात मैया कहान् सुनाऊं
मेरी अर्जुन वे,
बांदी में खोली नांइ बजर किवार
बारह बारह वर्ष तोकूं भई गुजिस्ता
चेला जोगी के
पहरे पै बांदी ऐ हुस्यार
भाजु तौरे आना तुती जोड़ से मिलि आना
माप बादे कौ पसायौ अपनी नाम्।
घोड़ा उड़ायौ जानें
भायो रैनि भानें आके
भायो रैनि पौछें, दरवज्जे पै भाइगो जाहर वीर

अरे चढ़िकें महल पै मैं कूक मचाऊं
सोता नगर रे जगाऊं
का गस्तीमान रे जगाऊं
क्या तू भया था दिमाना
तो में लगवाऊं कुरौं की मार
म्वांते चली ऐ घन सिरियल आई
जाहर ते करैं री जुवाब
मेरे देह को, मेरे रे सिर केरे सांई, चिरनें वताइदै तू आजु
दाईं ओर तेरे देखि लहसनु कहिं ऐं
म्हारे वाप के तू तौ रह्यौ तौ मजूरा
तैनें मैं गोद तो खिलाई
सुनि लै परदेसी जुवाव
बंदीं खोलैं नांइ बजर किवार
जौ तू हमारे सिर कौ सांई
अरे चेला जोगी के
खोलो तुम अपने बजर किवार
घोड़ा उड़ायौ रे, घोड़ा कूदि कें आयौ
जाकौ उलल वछेरा
आयौ महल के बीच जी।
जिन बातन्नें मैं तौ कबहू न मानूं मेरे सिर के सांई
ठोकर ते खोलौ जी किवार
दुनियां ऐ क्या दोसु ऐ
मौपै घर की तिरिया परचौ मांगै
मेरे लीला वछेड़ा
गुरु तौ मनाइलौ जानें आपनौ
ठोकर मारो बांए पाम की, खुलि जांइ वजर किवार लोहे सार की
घोड़ा लगायौ घुड़सार में
हंसि हंसि कें वातें होंइ
नारीरे पुरिख की
भोजन लाओ तुम तौ कहा वतराओ
वेटी संजा की
अपने पीया ऐ देउ न जिमाइ, हां।
आधी रैंनि गई ऐ रे, आधी खसि आई
राजा नांएं भोग विलास जी, हां
अव तौरी जाइ रहे रानी
फिरि तौ आमें
संजा की वेटी

रोवुना थामें तेरे पास भी
याघस—"अरी बहू तैनें अच्छो पगु दीयौ
सहर दलेसे को अरसो दीयौ तैनें आमवई गुल कीयौ
भई ना बेटा की साथी
औरान पीछें पिया निकार्‌यौ, गांसी भौं मारी
अरी रौंड तू कौन को होइगी
राजपाटु गए छोड़ि पीउ भये बनोवास वासी
सिरियल—फेंकि दए घुसा छाप बेड़ा
कजरी बन के माय मिलाइ दै सिरियल को घोड़ा
सासु तू अबलौ हो राजी
जैसें सासु मेरी हरो हरी चुरियां अब लौ हो राजी।
सास बहुरिया दोनों ढूँढन निकसीं
ढूंढिगो बिकट उजार
सबरौरी बनखर सूखो री पायौ
तू डूंगर भैना
कहा गुन हरियल तेरो डार
घोड़ री धारा भी आयौ था सिपाई
सोला सीला घोड़ा
आपे अरव दुसाला
गल में मोतियों की माला
लंबी सी भालौ जाके हात।
खासे को चादरि वो सी मारिकें बिछावै
जपतु भलसजी को तो नामु
आंसू रो टूटि ब्याकी धरसों गिरैगी
बेटी संजा की
मेरी जाई गुन हरियल डार
कै तौरो डूंगर मेरो जोडी कूँ मिलाइ दै
नहीं तुधि दूंगो तोई पै पिरान
अब तौ री जाओ भैना,
फिर को वू आवै, मैं ब्याई से करंगी जुबाब
सासु बहुरिया दोऊ ढूंढति डोलें
तू कहां डुबक्यौ बेटा राति
अब जूं गये तोरो मरो अर्जुन से भैया
अब आइबे के हत नाँइ।
अरज करेंगी बहू सासु तै
मैं अब पीहर है जाऊं
फूलन की बिरियां

न आयौ नाऊ बाम्हन कौ
न आयौ मा जायौ बीर
राजा की बेटी
विगरि बुलाई बहु जाउगी
तेरे न होंइ आदर भाउ
उन महलन में
जो तेरौ भैया कहूँ आमतौ
मैं जाँत न वरजूं तोइ
राजा की बेटी
घर झूलौ री घर पालनौ
महलन में सामनु होइ
संजा की बेटो !
रानी धमकि महल पै चढ़ि गई
खाती कौ लालु बुलाइ
लालु बिसकरमा
अरे बीर कहूं, कै तोते बाढ़ई
तोते देवर कहूं कै जेठु
रे नवल खाती के
एकु पालनरौ गढ़ि लाउ
काइ कौ तेरौ पालनौ
काए के बान मगावैं
राजा को बेटी ।
भैया अगर चंदन कौ पालनौ
वुही लाइ दै रे समबान
सुगढ़ खाती के
गुहि लैयौ लहरिया बान ।
अरी आक-ढाक गढ़ि लांगो
मोपै चंदन पैदा नांइ
धीअ संजा की ।
लाला और बाग मति जइयो
जइयौ ससुर के बाग
व्वा बींजा बन में
लाला आठ कुढ़ारो नौजनें
गहि लई ऐ गैल वा बीझा बन की
भैया रे आमत देख्यौ बिरछ नें
बो विरछा दीयौ रोइ
चंदन कौ पौधा

हम तो आए तेरी आस करि
अब चौं दीयौ ऐ रोइ
चन्दन के बिरवा
चौ तू आयौ भैया आस करि
मेरी मैया गुदिया काटि
नवल खाती के ।
भैया रे हरिया काटें मा बनै
तेरी चलैगी पीढ़ि तें काम
चन्दन के पौधा
खाती पहलौ कुल्हारो मारियौ
जामें निकरी दूध की धार
चन्दन के पौदा
दूजौ तें तीजौ दई
चौथी में दीयौ भुकाइ
चन्दन कौ बिरवा
लाला रे भरि गाड़ी चन्दन चल्यौ जे
लै गयौ सिरियल द्वार
नवल खाती कौ ।
गड़यौ हिंडौरौ बाग में
जे काछल-बाछल और दोऊ भाजु झूलि वे
काछल झूलै बाछला बहू सिरियल लेइ न झुलाइ
राजा की बेटी ।
ब्याति बाँदी चलि दई
तू जाति करेरी ऐ भाजु
संझा की बेटी
मेरी सासु तें क्यौं कही
इक दस दिन मामनु नांइ
धीम संझा को
संग की सहेली कुसामती
जे सिरियल झूलन जाइ
ब्या साला बन में
भैया रे जाइ ठाड़ी भई बाग में
जाते मुख तें बोलति नांइ
धीम संझा की
काछल झूलै बाछला
बहू सिरियल झोटा देइ
राजा की बेटी

भैया नरसींग मार्‌यौ रोरिका
पलरैयन में उरझ्यौ हारु
बहू सिरियल को
टूटि हारु धरती गिर्‌यौ
ऐ मन रोवै पछताइ
रे घर सासू लड़ैगी।
भैया रे झूलि झालि म्वांते चले
दोऊन अधवर परिगो वादु
सासु बहून में
कौन पै पहरी जे चुरी
तैंनें कौन पै कर्‌यौ सिगारु
राजा की बेटी
अरी अपने बलम पै जे चुरी
बलमा पै कर्‌यौ ऐ सिगारु, सासुलि प्यारी
मरि जइयौ री डुकरिया
मेरौ री बेटा मरि गयौ धरती में समान्यौ
रग-जग नें जान्यौ
तैंनें महल कर्‌यौ ऐ भरतार
तू मोइ जाइ न बतावै।
तेरे जानें मरि गयौ
मेरे नित आवै नित जाइ
सासु तेरौ बेटा
जौ तेरें आमतु जांतु ऐ
मोइ इक दिन देइ न वताइ
लाल मेरे कूं।
इतमें लजायौ वहू सासुरौ
तैंनें दोऊ कुल खोइ दई लाज
राजा की वेटी
आजु सकारौ हीन दै
मरवाइ दुंगी ढोल वजाइ
तैंनें कुटमु लजायौ
राजा की वेटी
जौ वेटे की सादिली
तौ इक दिन पहरौ देइ बैठि आंगन में
हाथीदांत की पलिकिया जानें लई मरुए तर डारि
मैया पहरे पै वैठी
इतकौ पहरौ इत गयौ चंहुंगयौ पिछवार

पीर नांह बगदे
बेटा हों तौ भाम तो
घोड़ बगधिये को मांह
ए ब्याते माहीं करि भाई
धाजू सकारी मांग्यौ मिलै
कलस बठाइ धरऊं मासू
कहा ऐ परि पाछें ।
सिरियल आंगन केवड़ौ
डरिया पै बोल्यो कागुरे
भवर रसुनारौ
सोने मढ़ाऊं तेरी चोंचुरी
पामन में पदमु लगाऊं
नेंकु बेंधौ पीर पै
जैसौ रे बलम पै ।
मुख के बचन मानूं नहीं
कोई लिखि लिखि चीठी बांधि
बलम अपने की
कागा, कागद की टोटी परयौ
कलम न में परि गई भामि
बनवासी कागा ।
चीरफारि कागद करयौ
उंघरौन की कलम बनावे
राजा की बेटी
ब्या जाहर ते क्यों कही तेरी धन नाजू न खाइ
मरं के जीवै ।
बोठी रे झुरि-झुरि पिजरा है गई
ब्याके माह जीवे की आस
लकड़िया देगा
और पास मिली मरमी
जाके बीच में जै जै राम
बलम अपने कूं
गोसू मारि कागा उड़यौ
महरी पै बैठ्यो जाइ
ब्या जाहर बैठ्यौ
बोलै तौ कागा कहा करै
तेरी धन नाजू न खाइ
मरै के जीवै ।

भैया झुरि झुरि पिंजरा है गई
व्वाकी नांइ जीबे की आस
लकड़िया दैआ
मरि गई ऐ मरि जान दै
मैं चलत जिवाऊं राजा की बेटी
कागु दियौ ऐ बहकाइ कें
पीरु आप भए असवार
व्वा लीले से बछेड़ा
घोड़ा उड़ायौ जाहर बीर नें
पौरी पै झुलम्यौ आइ
जाकी सिंध पौरि पै ।
रानी सोमति ऐ कै जागत्यै
तुम धन खोलो बजर किबार
जाहर म्वां ठाड़े ।
जाहरु ऐ तौ खोलिलै
नहीं चोरु बगदि घर जाउ
मेरी सासुलि जागै ।
लीला दुनियां ऐ कहा दोसुऐ
घर की तिरिया परचौ मांगै
मेरे लीले से बछेड़ा
ठोकर मारो बांए पाम की
खुलि गई बजर किवार म्वां लोहे तौ सार की ।
घोड़ा लगायौ घुड़सार में
खुटियन पै धरे हथियार
पीर मरदानौ
भैया रे भरि लोटा जलु लै चली
जे धोवै बालम के पांइ
नैननु भरि रोवै ।
रानी और दिन हंसती खेलती
आजु कैसें मैली भेसु कहे चौ न मन की ।
तेरी मैया मोते जारु लगावै
भरतार लगायौ
चुरिया उघटी
मैं सहर करी ऊं बदनाम
तेरी मैया नें, हां
आमन ऐ सो आइ चुके
तेरे अब आइबे के नांइ

तेरे रंग भमन में
माई ठाड़ी ही कर्क दै रही ऐ कुकरिया ऐ मेवु
म्हारे भामन की
तुम सौ भामन ना कहूँ
मेरी भगु कौन हयामू
उसी महाराजा
छयो महीमा गरम की
मैं बिनु कहा सैं जाऊं
सागर के राजा
गुरु मनाइलेउ आपनी
रुमालु फिरायौ, चाबुक दै मार्यौ
तेरे जनम न संपति होइ हाँ रानी
बलिहारी पीर तेरे हात पै
मन भावै जहाँ जाउ
उसी महाराजा ।
घोड़ा पलान्यौ आर्में महलते
सासुलि ते करति जुबाब
संजा की बेटी
सासुलि लीयौ जाइ तौ लीजियौ
मानु बेटा तेरौ जाइ इन महलन ते
बेटा बिहारौ साँई आपनौ
मानु माग्यो जाइ इन महलन ते
चीमू पहरे कापड़े
कोई चारि घरी बतराइ मेरे लाला ते
चारि घरी बिरमाइ लाल मेरे कू
कूमा होइ जाइ पाटिसू
मो प समदु न पाट्यौ जाइ
मेरी सासुलि प्यारी
बालकु होइ जाइ राखिसू
चना मुजाऊं गुरधानी सैं दू
पोरु न बरज्यौ जाइ
धुर सागर भारी
घोड़ा बढ़ाइ दौ महलते
जाके पीछें बाग्रन माइ
जे रोमति जाँति ऐ
तेरी कामें मैंने जोगी सेइयौ
मैं ठाड़ी रही दिन-राति

बांझन के छौना
जोगी सेयौ तैंनें भली करी
करि दुंगों मुलिक में नामु मेरी बाछल माता
मेरे जिय की कहा परी
तेरे लगी महल में आगि
मालु जर्यौ जांतु ऐ
बेटा महलन कौ तौ कहा जरै
सोटि लकड़ियां ककरा पथरा
मेरी लगी ऐ कोखि में आगि
पीरु भाज्यौ जांतु ऐ
अरे मूड़न पै पहुँच्यौ गयौ।
यौं घोड़ा गयौ समाइ
धुर बागर वारौ
रानी तौ रोवै जाकी गोरी रे रोवै
बाछिल खांत पछार
बारह बारह बर्स रे धोई तौ लंगोटी
ठाड़ी तौ रही ऊं दिन-राति
तोइ निरमोही ऐ मोहु न आयौ जी
तैंनें भैया डारे मारि
बेटा बीरन डारे दोऊ मारि
ऐसौ री जुलमी तैंनें जुलमु गुजार्यौ
रोमति छोड़ी तैंनें नारि जी।
रुदन मचावैं रे सासु वहुरियां
आजु अपनी सासुलि ते करैंगी विलाप
रांड़ जौ कीनी तैंनें जुलमु गुजार्यौ
वहनौतनु भूलति वैरिनि नांइ।
जिनके काजें मैंने जोगी सेयौ
मेरी वहुअरि प्यारी
सेवा तौ करिकें व्वाइ लाई मांगि।
नामु जु डूब्यौ रे जांतु सुसर कौ
मैंने जोगी सेए दिन-राति
मेरी सासु नें ऐबु लगायौ
सिरियल वहुअरि री
मेरौ पिया तौ घर नां ओरी
हम तौ निकासे मेरे उम्मर राजा
तोसी तौ वहुअरि जाइ समाइ री
मेरौ री वलमा री आजु तौ समानौ

इन भूड़न में
मैं तो ब्याईं करूंगी गुजराम
गोरख जो ।
दाईं दाईं ग्रोर तो सिरियल सीनो
बाई ग्रोर बाछलि माय
बाछलि रानी बाकी माइ री
सिरियल पै तो रे चूरियाँ चढ़ति एँ
बाछल पै नागर पान
इन भूड़न में
रानी को सिंगार पूरो भयौ
सुनि मेड रानी

मैना-सत

[साधन]

[सम्पादक—श्री अगरचन्द नाहटा]

साधन रचित मैना-सत

(ले० अगरचंद नाहटा)

हिन्दी साहित्य में काव्यों की विविध संज्ञाएँ और उनमें से कइयों की परंपरा भी काफी प्राचीन है। पर राजस्थानी और गुजराती के साहित्य प्रकारों और रचनाओं की विविध संज्ञाओं के संबंध में जितना अच्छा और अधिक प्रकाश डाला गया है, उतना हिन्दी के रचना प्रकारों पर नहीं डाला गया। करीव २५ वर्षों से मेरा इस संबंध में काफी रस रहा है और अनेक रचना प्रकारों के संबंध में प्रकाश डालने का प्रयत्न भी किया है। अभी अभी हिन्दी पत्रों में भी मेरे कई लेख इस संवंध में प्रकाशित हुए हैं, उनमें 'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा भी है, जो करीव दो वर्ष पहल लिखे जाने पर भी अब राष्ट्र भारती में प्रकाशित हुई है। मैं चाहता था कि मेरी यह हिन्दी रचना प्रकारों सम्वन्धी लेखमाला जल्दी ही प्रकाश में आ जाय पर हिन्दी विद्वानों को उसमें अधिक आकर्षण नहीं मालूम होता। गहरे अनुसंधान के वाद एक लेख तैयार किया जाता है और बहुत दिनों तक संपादकों के पास योंही पड़ा रहता है। इससे मालूम होता है कि हिन्दी में अभी शोध के प्रति जैसा उत्साह और आकर्षण होना चाहिये—नहीं हो पाया है।

'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा वाला लेख तव लिखा गया था जबकि 'अवन्तिका' में 'मैनासत' पर डा० माताप्रसाद गुप्त का एक लेख छपा था। आलोचना में प्रकाशनार्थ मेरे उक्त लेख को स्थान नहीं मिला। शायद सम्पादकों ने उसका कोई महत्त्व ही न समझा हो। उसके वाद एक और अच्छे हिन्दी पत्र को भेजा गया, वहाँ से भी वह लेख वापिस आगया। तीसरी वार राष्ट्र भारती को भेजे हुए भी करीब एक वर्ष हो गया, कई बार पत्र लिखने पर 'मई' के अंक में प्रकाशित हुआ।

जहां तक मुझे ज्ञात है 'सत' संज्ञक काव्यों की परंपरा अपभ्रंश से सीधी हिंदी में आई है। पाटन भांडार में २० पद्यों वाली 'सीता सत' नामक एक अपभ्रंश रचना है। यह १३वीं १४वीं शताव्दी की होगी। उसके बाद के जो कई काव्य मिले हैं उनका परिचय मैंने उपरोक्त लेख में दिया है। इस संज्ञावाली वहुत सी रचनाएं हिंदू व जैन कवियों की हैं। जवकि 'मैनासत' एक मुसलमान कवि की एक प्राचीन रचना है। और उसके वाद कविवर जान की रचनाएं भी मिलती हैं। 'मैनासत' का सर्व प्रथम विवरण सन् १९०२ की खोज रिपोर्ट में छपा है। पर उसमें उसका रचयिता अज्ञात लिखा है। वह रिपोर्ट मुझे प्राप्त नहीं हुई। मुझे करीब १० वर्ष पूर्व इसकी एक प्रति मिली थी, जो मुनि विनयसागर जी के संग्रह के गुटके में अन्य रचनाओं के साथ लिखी हुई थी। इसका विवरण मैंने अपने राजस्थान में हस्त लिखित ग्रंथों की खोज भाग दो में प्रकाशित किया था। बीकानेर की सुप्रसिद्ध अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में भी इसकी दो प्रतियां हैं। एक राजस्थानी विभाग के गुटके नं० ७९ में और दूसरी हिंदी विभाग की प्रति नं० ११३ में है। ये तीनों प्रतियां १८वीं शती की लिखी हुई हैं। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी का गुटका नं० ७९ संवत् १७२४

से २७ में लिखे जाने का कई अन्य ग्रंथों के अंत में उल्लेख है। इसके बाद फलोदी के श्री फूलचन्द जी झाबक के संग्रह से मुझे एक गुटका मिला, जो बीसलदेरास की प्राप्त प्रतियों में सबसे पुराना है। इसमें साधन कृत 'मैनासत' बारहमासा सं० १६३३ द्वि जेठ वदी १२ को आगरे में प० सोहा का लिखित प्राप्त हुआ। अभी तक मुझे प्राप्त सम्वतोल्लेख वाली समस्त प्रतियों में 'मैनासत' की सबसे पुरानी प्रति यही है। सन् १९५४ के जुलाई में अवन्तिका में डा० माता प्रसाद गुप्त का साधन का मैनासत लेख छपा है उसमें 'मधुमालती' की दो शाखाओं में मैनासत की कथा एक साखी कथा के रूप में प्राप्त होने का लिखा है। साथ ही एस० एम० अस्करी की प्राप्त प्रति का उद्धरण भी दिया है जो मनेरशरीफ खानकाह्-पुस्तकालय में है। खानकाह् पुस्तकालय वाली प्रति शाहजहाँ कालीन या उससे पुरानी है। मेरा विचार था कि प्राप्त समस्त प्रतियों के पाठान्तर के साथ इसे प्रकाशित किया जाय, पर अग्रवाल जी को कई पत्र दिये उनका कोई उत्तर नहीं मिला। इधर डा० सत्येन्द्र जी का यही विचार रहा कि मैं इसे जल्दी तैयार कर दूँ। मुझे प्राप्त प्रतियों के मिलाने से मालूम हुआ कि इनमें पाठ भेद बहुत ही अधिक है। सं० १६३३ वाली पुरानी प्रति का पाठ कुछ अस्तव्यस्त देख अनूप संस्कृत लाइब्रेरी गुटका नं० ७१ से नकल करवाई गई और महोपाध्याय विनयसागर जी के संग्रह से गुटका मंगवाकर पाठान्तर दिये गये हैं। पाठ भेद कितने अधिक हैं—यह एक प्रति के पाठान्तरों से ही अनुमान लगा सकते हैं। मनेर शरीफ का खानकाह् पुस्तकालय और अनूप संस्कृत लाइब्रेरी की दूसरी प्रति—ये मुसलमानी ढंग की हैं। अतः उनके पाठों का मिलान कर शुद्ध एवं प्राचीन पाठ का निर्णय करना आवश्यक है।

मैनासत के रचयिता मियाँ साधन का समय निश्चित तो नहीं पर प्राप्त प्रतियों के आधार से १६वीं शती माना जा सकता है। उसकी अन्य रचनाएं हों तो उनको भी प्रकाश में लाना चाहिए। डा० माता प्रसाद गुप्त ने सं १५६१ या उससे पहले का ही रचना काल माना है।

हिंदी के बहुत से मुसलमान कवियों ने भारतीय कथानकों और सांस्कृतिक परंपराओं को ग्रहण किया है। मैनासत में उसके पति का नाम 'लोरक' दिया गया है। सतीत्व की रक्षा को ही यहां 'सत' संज्ञा दी गई है। राजस्थान में आज भी यह शब्द इसी अर्थ में प्रचलित है। ऐसी आदर्शनारी-कथाओं का प्रचार स्त्री समाज में अधिकाधिक होना वांछनीय है। नैतिक प्रेरणा देने वाला साहित्य ही मानव के लिये बहुत हितकर है। पर आज कल विकृत प्रेम कथाओं को ही अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है और शृंगारिक साहित्य की ओर झुकाव है वह भी राष्ट्र के लिये अवांछनीय है। आशा है मैनासत का सुसम्पादित संस्करण किसी योग्य विद्वान के द्वारा शीघ्र ही प्रकाश में आयेगा। मेरा यह प्रयत्न तो प्रेरणा देने का प्रयास ही समझना चाहिये।

मैना-सत

।।६०।। श्री सरस्वत्यै नमः—प्रथमहिं[1] गाउं सिरजन हारू।
अलष अगोचर मया भंडारू।
आस तोर मुहि वहुत गुसांई।
तोरे डर कंपों कररिक नाईं।
शत्रु मित्रु सब कहुं सँभारै।
भुगति देइ काहू न विसारै[2]।
अपनैं रंगि आपै[3] राता।
कोई बूझि कहै किछु बाता।
पिलै इह रही जग में फुलवारी।
जो राता सो चल्या संभारी ।।१।।[4]

सोरठा—*जिन[5] कलि विलसी राह। अस दल गज दल दलमले।
साधन भए ते खेह। प्रथमी चीन्हा ना रह्या ।।२।।

चौपाई—जाती देखो यहु संसारू। क्या लोका[6] तुम धरहु पियारू।
पानी जैसा बुदबुदा[7] होई। जो आवा सो रह्या न कोई।
पहलें राय जु दई उपाने। आवत देखे जातन जाने।
इक छत राज निरंजन कीन्हा। प्रथमी रह्या न तिन कर[8] चीन्हा[9]।।३।।

दोहा—धूवां जैसा[10] धौरहर। कोई[11] रह्या न निदान।
साधन रोइ उफानीया। ज्यौं ज्यौं मनह तुलान ।।४।।

सोरठा—कौड़ी कौड़ी जोरि। मूये ते[12] किरपन वापुरे।
गये गड़ंत करोरि। मन पछिताने पापीया ।।५।।

चौपाई—सात न कवर नगर कर धूतू। कपट रूप नारद कर पूतू।
तिहि रतना मालिनि हकराई। मैनासत तुम्ह[13] देहु डुलाई।
दूत वचन जो मालनि पावै।[14] तुह मालनि सिर हत पहराऊं।

---

*सं० १६३३ वाली प्रति में यहीं से प्रारंभ होता है अन्य पाठ भेद भी काफी हैं।

१. विनऊं, २. इसके आगे उक्त प्रति में यह अंश ७/८वीं पंक्ति में इस प्रकार है—
फूलिज रही जगत फुलवारी, जो राता सो चला संभारी ।।१।।

३. आपु रंग राता, बूझै कौनु तुम्हारी वाता। ४. इसके बाद यह दोहरा विशेष है—
बंधन आंखि हमारीयां, एको चरित न सूझि।
सोवत सपनो देखियौ, कोऊ करै कछु बूझि ।।

५. जिहि, ६. का लोगा तुम्ह करो पियारू, ७. बुलबुला, ८. तिहिकर रहा न,
९. इसके आगे ये पंक्तियां हैं—
हम पुनि दिनि इकु चलाचल अहै, मूख आखर समुझो ताकै है ।।

१०. कौसौ, ११. पृथमी कोऊ न रहै निदान, १२. सु, १३. तै, १४. तो मलिनि सिर ते पहिनाऊं।

मालिन पान दूति कर[1] लीन्हे । कपट रूप सब आगें कीन्हे ।
जोहन मोहन चली[2] संभारी टौना टामन पहिरि सिधाकारी[3] ॥६॥

दोहा—कपट रूप दूती चली । गई मैना के द्वारि ।
जिहि बिधि राखें सत सौं । कौन डुलावन हार ॥७॥

सोरठा—जिहु राखे करतार । ताकर[4] बार न बाँकीयें ।
हठि[5] लागे संसार । साधन[6] ध्याहु न चाँपीयें ॥८॥

चौपाई—मालिनि आइ मंदिर महि पैठी ।
मैना जहा सिंहा(स)न बैठी ।
चंपक फूल चौसर हारू ।
दीन्हा भेट मत कीन्ह जुहारू ।
हंसि करि पूछै मैना रानी ।
कहु आवागमनु[7] कौनि जग मानी ।
कहि मालनि सुनि मालिनि[8] मैना ।
धन[9] चीन्है कस बोलहि बैना ।
तोर पिता धाइ हौं कीमी ।
बारपनें[10] तोहि दूधो दीनी ॥९॥

दोहा—मनु न रहै हियरा उठायी[11] आनि भरै[12] तन मोहि ।
सिंवरि सिंवरि दुख उपजै[13] । देखन आई तोहि ॥१०॥

सोरठा—सीस न मैं भुइसाइ । मुखि अंमृत उरि कपटिनी ।
साधन धनप धराइ । जिय पर डूके अहेरीया[14] ॥११॥

चौपाई—मैना बात साधु करि जानी[15] । कुटनी[16] के बोलै पतियानी ।
तबहीं नाइनि बेग बुलाई । कुंकुम मरदन कुटनि न्हवाई ।
घेवर मावर काढ़ि जिमाबा[17] । नेत[18] पटोर आनि पहिराबा ।
रहसी[19] कुट्टनि संग न माई । अब मैना मो पहि कत[20] आई ।
मैल चीर तोरे देखो मैना । सेंदुर आंगि न काजर नैना ॥१२॥

दोहा—बदन जोति तुव[21] धूसरी । कस[22] अबहेरति आपु ।
मांग कूखि तोरी सीयरो । सिरहु अनु तोर बापु ॥१३॥

सोरठा—हीयरा कोठा काठि मूंथि । रोवै नैन हसै ।
दूत सघन इहि धाठि । साधन आपु समारोया[23] ॥१४॥

---

१. के, २. मीन्ह, ३. सभारी, ४. तिहि, ५. भी, ६ सापून ।
७. कहां गवन कीन्हो, ८. मालति, ९. घन, १०. तोहि मैं धारै, ११. जीउ गहमरे,
१२. परी १३. सुमिर मोह चित ऊपज्यो
१४. सीस नवें भैंलागि, मुख रोवै मैननि हसै ।
साधन धम कुघटाइ, ज्यो पर डूकै अहेरीया ॥
१५. कैमानी, १६. दूतो, १७. सवावा, १८. सुरंग चु(न)री, १९. हुलसी मालिनि,
२०. कहां, २१. तोरी धूमरी, २२. कत, २३. यह सोरठा उक्त प्रति में नहीं है.

चौपाई—पिता मोर अनु काहिक राजा ।
पिता राज मोरे कौनें काजा ।
पिय दुखु मोहि परउ[1] है आई ।
अस दुखु सवतनि[2] परि जौ धाई ।
महरे कीधो चांदि गुबारी[3] ।
लै गई मांग सिन्दूर उतारी ।
काकरि[4] मालनि करउ सिंगारा ।
मोहि परहरि गयौ कंतु पियारा ।
करहि न बैर चांद जो कीन्हा[5] ।
बारी[6] वैंसि मोहि दुखु दीन्हा ।।१५।।

दोहा—फिर भाग अदि न भया[7] । मीत कि[8] बैरी होइ ।
बांके दोहा जो करहि[9] । ऐसा करै न कोइ ।।१६।।

सोरठा—तिह सों कीजै नेह । जिह सों उर नीवा हीयैं[10] ।
साधन कौंन सनेह । टूटै काचे सूत ज्यौं ।।१७।।

चौपाई— दूती वचन सुनत गहबरी[11] । कपट रूप रोवै[12] अनुसरी ।
तोरे दुख सुनत मरति हौं मैना । हीये आग झर[13] फूटसि नैना ।
रितु आसाढ वरिषा पैसारा । सब काहू घर वार संभारा ।
दीपग ऐसे आवन हारा । तोर पियने रित देखि उवारा[14] ।
मास आसाढ गए नहिं जाई । भुइ बादर लागे बरसाई[15] ।

सोरठा— बोल-छाडि देहि मोहि । मनु मैंना साची कहौ ।
आनि मिलावौं तोहि । मालति कौं भौंरा जिसैं[16] ।

सोरठा— जिह सत ऊपरि चाउ । सुपनै असतु न रुच्चई ।
इहु[17] सिरु जाइ तौ जाउ । साधुन सत्तु न छांडीयै ।२

चौपाई— दूति वचन मालिनि जौ कह्या । मैंना धाइ कैर मुखु[18] चह्या ।
रूखे वैन तोखे तोरे नैना[19] । बोले सही[20] महा सति मैंना ।
लाज कान तोहि कहत[21] न आई । अस बूझत जस बोलहि[22] धाई ।

---

१. पराहै, २. सौं तिहि परीयहु, ३. महरा का धीय चंदकुमारी, ले गयो सिंदुर मोर उतारी, ४. का कह, ५. वैरीन करै चंद अस कीन्हा, ६. वाली, ७. ओछे दिनां, ८. सु, ९. करैंजु वाके द्योंहरा, १०. जिहिसौं दुहूं जग थिर रहै ।

११. भरी १२. रोवन, १३. अरु फूटति

१४. दीप गए ते आवन हारा, तोरो पी उन देखौ वारा ।

१५. जिहि घर कंत सुकरहि विलासु, नार न छांडइ पीय कर पासु ।।

१६. दोहा—तोरो दुख सुनि मरतिहौं, बोल वांह दै मोहि ।
जिसि मालति कौं भंवरा, आनि मिला वहु तोहि ।।

३७. जे, १८. रामु मुखु चहा, १९. तीखै नैना दूखे वैना, २०. सती, २१. मोरि, २२. बोलसि,

फाटो तासु नारि का हीया । एक छाडि जिन दूसर[1] कीया ।
एकोएक करत भीत देउ । पग दूसर का नामु न लेउ ।

दोहा— मोर भवर बस[2] मालती । रूप कि पूजै कोइ ।
धँ घ स्याम गुवर सणी[3] । भवर कि सरबर होइ ।

सोरठा— नारि इकेली सेज । सावन रुति बरसै घणा ।
का ती[4] होइ क रेज । साधन साइं बाहरी ।

चौपाई— सावनु मैना माह उलाणा[5] । घरि घरि सखीय हिंडोरा ताना ।
हरीयर[6] भुइ कसुंभी रतनारी । नाह सरीखी खिलसि धमारी ।
उन्ह[7] सुखु तोहि रयन दुहेली । झुरि झुरि मरिहि सेज इकेली ।
सो दुखु तोर देपि हौं नैना[8] । सावन गंग नीर[9] भए नैना ।
कंत सुहागनि झूलहि बारा । गावहि बिरह होइ[10] झनकारा ।

दोहा— जोबन जात न जानीये । गयें होस[11] पछिताव ।
मानि भवर तोहि मिलसवौं[12] । सौंन जगत कछु भाव ।

सोरठा— जो प्रिय प्रीती न जाइ, जोबन जातें ना डरौ ।
सूखि रहै कुम्हिलाइ, बहुरयो जोबन प्रीति सौं ।

चौपाई— सुन मालिनि सावनु तिहि भावे । जाकर[13] पिउ घर देसहि आवे ।
मुहि लेखे संसार उजारी । भोग भुगति चित[14] धरो उतारो ।
रितु मानुक जो मोर कहावे[15] । ना तरु मैना मुई बरावे[16] ।
मोर पिता माइ सब भाई । जो सुनि पावहि मारिहि धाई ।
सुनि मालिनि बागम जो हारौं । तिह हौं भासि अगिनि महि भारौं[17] ।

दोहा— मोरउ बचन सुभाइ सुनु । जनमु कि जुगि-जुगि होइ ।
कांजी दूध परत ही बिणसे । बिरला जाने कोइ[18] ।२७

सोरठा— भादौं गहर गंभीर । मैन गगन[19] गोरी भरे[20] ।
क्यौं करि पावहि ठोर । साधन तिरिया नाह बिनु ।

चौपाई— भादौं मैना मेघ झकोरा । उमो प्यास[21] भरी नीर हलोरा[22] ।
दादुर पपिहा कुहकहि मोरा । सूनी सेज हिया फाटसि तोरा ।
घोर घोल जाई तारा पाऊं । इहि बै तोहि बरहि बिसाऊं ।

१. जिहि दूजा, २. मुनि, ३. जोरे स्यामु गुवरीरत, ४. पानी, ५. चाह तुलाना, ६. हरिहरी भूमि, ७. उनको, ८. तोरो दुख सुनत मरति हूँ मैना, ९. नैरे, १०. गीत उठे, ११. बार, १२. मेसठ ।
१३. नहकरति, १४. सब, १५. रितु, मानो जो मोरक भावे, १६. मुऐ गवावे, १७. तू पापिनी मोहि पाप सुनावसि, इमी भातम मूं मोसर पावसि, १८. कांजी बूंदक दूध जिम, बिनसै परतक सोइ, १९. गंग, २०. तरै, २१. कंथ साम, २२. घन गरजै बरसे घतिघोमी, गरिम करे था सोहु भयो पानी ।

सखी सहेली अस मनि आवा[1]। को अपना को रचै[2] परावा।
अंध कुप्प निसि रयन दुहेली। झुरि-झुरि मरि है सेज इकेली[3]।

दोहा— जोवन काहि न विलसहू। अलप वै प छांह[4]।
केतक भवरा बैठही। कमल फूल दल मांहि[5]।

सोरठा— चौगन जोवनु जाउ। गय पिया पिरति न चाहीयै।
सूकि रही कुमिराउ। बहुते जोबन पिरति विनु[6]।

चौपाई— सुनि भादौं घन उठ्यौ रिसाई[7]। अब तुहि ओ खर वोलिहौ धाई।
काहू को अस रौती[8] खाई। जाकरि[9] बात सुनावसि आई[10]।
जोबन[11] मरौ सो साथि न आवै। तिलगि[12] आपहि को डहकावै[13]।
डहकत जाइ न बांधै थीती। तिह जोवन सौं कौंन परोती।
सुनि तिलु एक करतु वहु पापू। तिह लग कोंनु विटारै आपू[14]।

दोहा— काजर कीयौ ऊवरी[15]। धाइ पापु तस[16] आह।
दरसनु होई लोर सन[17]। ऊतरु देउ त छाह[18]।

सोरठा— सारद ससिहर जान[19]। साधन विरह चवगना।
जनु[20] अरजन के बांण। मार तार[21] चूकै नहीं।

चौपाई— सुनि मैनां यह चढ्या कुवारू।
नए ताग सह[22] गूथहि हारू।
घर घर बार[23] कनागत होई।
पियु भोगत[24] विनु रह्या[25] न कोई।
ज्यो नऊ हारहि होइ उजियारी।
तिरिया खेलहि सहज धमारी[26]।
तूं काहे आपहि अब हेरसि[27]।
मोर बोल[28] तूं काहे फेरसि।

---

१. भावा, २. रवै, ३. तिल एक सुख्य जनम कौ पापु, तैंलगि कोड़ रुकावै आप, ४. वैस सुकुमारि, ५. विरह आगि सिगवारि, ६. सोरठा—
तासौं कीजै नेह, जासौं ओरं निवाहिये।
तासन कौनु सनेहु, साधन डहकि जु छाडियै॥
७. रिसाई, ८. अमरोती, ९. जिहि की, १०. धाई। ११. जोवन मूए, १२. लीनैं, १३. नसावैं, १४. अंधकार जे रैनिहु दुहेली, झुरि झुरि मरिहै सहज अकेली, १५. जस ओवरी, १६. असरण्जो लोरसौं, १७. सम १८. उतर का देताहि, १९. दरस ससि निरवांण, २०. जसु, २१. मदना सरु।
२२. सब, २३. उपजै साख, २४. भुगति, २५. रहै,
२६. जोन्हु दहुं दिस उवैंभरारी, तरुणी खेलहि प्रेम धमारी
२७. तूं आपुहि कहि औरहि खेलसि, २८. मेरी वात

धन जोबन जिन होत न साथा।
गए बार पाछें पछताया।
मानि भवर छोहि भेसवी।
सैन पग त कि घी जाब।

दोहा— मानि संपति सो ऊपरा। छोरी करमि न कानि।[1]
तिह सग जोबमु खोवसी। काहे हो हिं[2] पयानि।

सोरठा— जिह राता मोरा पीउ। हौं चेरो ता सौतिकी।
बार न बाधों जीउ। साधन सीस कि राखीयें[3]।

चौपाई— सुनि मालनि कौं बारि किं[4] भाषा।
बात सुनत मोहि भाव न भावा[5]।
होहि कनागत परख दिकारो[6]।
मुहिं[7] सेबे ससार उजारी।
मोम भुगति सो तासिग[8] मानिय।
जो मालिनि अपुना करि जानिय।
कर कारिक कस पापहि सोवें।
कारी मास बसन बारो मैं[9]।
करवत सीसि देइ जौ मोरा।
तबहू धगु न डोलें[10] मोरा।

दोहा— इहु जोबन लोरक बिनु। जारि करौ तन छार।
पिरति बाइ इन्ह[11] बात तें। सरग होइ मुह कार।

सोरठा— दोजें हाथ उचाइ[12]। पावें[13] पीजें बिसलीये।
गए न मूंडि चराइ[14]। साधन किरपन बापुरे।

चौपाई— बमि जोबन भोगवें ससारू।
तो पहि मैना बहुतु बिचारू।
बांभनि बैछनि पदिमिनि नारी।
घरी यन पव घन सरगमु नारी।

---

१. सोतिन की तुहि ऊपरी, छोरी कानम कामि।
२. होसि।
३. मो बरिहीं पिय लागि, जैसे छुवा न देखिये
बरा कया कि लागि, साधन सती सुभेखिये।
४. किमि, ५. मोरिक बिन मोहि अगसुन भावें, ६. सरस उजारी, ७. मो
८. तासीं मानो,
९. कुस कारिस कस पाप लगावसि, कारोय मसि कसमें मुख लावसि।
१०. उसमें, ११ बिम बात नहिं।
१२. उठाइ, १३. जोयें, १४. चढाइ सधिमुए,

तु[1] पर बी दिन कातिगु आवा।
सहु को षेलै परब बधावा[2]।
षेले[3] पवन छत्तीसौ जाती।
तुम्हरी[4] वैस भोग की ताती।
तुहि देषत और हि लेगावा।
छोडि सि तोहि निरापनु[5] भावा।
ऊडि गयौ तासौं कस नेहू।
तह करे काजि उदेहूं।

दोहा— जोबनु भोग[6] नु राषीयै। का षोवसि तिहि[7] लागि।
सारस[8] सबद फटसि होया। जिउं जिउं देषसि जागि।

सोरठा— जो राता जिहि[9] पास। सो जिउ ताहू[10] मनि बसै।
तिहि[11] तन की का आस। साधु नु जनु माटी परी।

चौपाई— का कर[12] कातिग परब दिवारी।
झूठी बात का[13] कहसि गवारी।
रितु परबो दिनु मानौं सोई।
जिहि सरीर मालिनि जिउ होई।
जियरा मोर चांद लै धरा।
जिय बिनु सब घरु[14] माटी[15] परा।
माटी लग जौ आपु विटारौं।
धरम परंतर दुहु जगि हारौं[16]।
रितु[17] जानौ लोरक सगि[18] मानौ।
पिय विनु जगतु धुंधु[19] करि जानौं।

दोहा— राइ भोग[20] इह पृथवी। तिल इकु होइ[21] न साउ।
जुग जग चलै इन्ह बात तैं। तिहि लगि मुहि संताउ[22]।

सोरठा— काया[23] विटारै कोइ, जगु राता माटी वसै।
चरितु षिलावै[24] सोइ। झूठै झूठा पेलीयै[25]।

चौपाई— माटी माटी कहा बषानसि।
माटी भेद न मैना जानिसि।

---

१. उत्तिम कातिग परबु दिवारी, सब कोई खेलै परम घमारी।
२. वरइ निपट इनी सुरग सुलारी।
३. मानै परवु, ४. तपै भई असि भाग की ताती, ५. विराना, ६. रतनु भोग करि,
७. खेवसि वह, ८. सरद ससि बहुरे निहि, अ फटै देखे जागि,
९. तिहि, १०. जनु ताकै, ११. ता घर की कस आस, १२. काका, १३. कस,
१४. घरु, १५. माटी में, १६. दुहु जुगु धर्म सुनिहवै हारै, १७. और परवु,
१८. सो, १९. झूट के।
२०. भोगवै पृथिमी, २१. पिसाउ, २२. जुग जुग झूट पतीरवतिहि, लगी मोहि न सताउ, २३. काय २४. खेलवै २५. झूठी झूठ ज बोलुना।

माटी ऊपरि दिव नंबु[1] मेला ।
माटी माझ पिरम रसु पेला[2] ।
[3]सोन बरन है माटी फूली ।
माटी देषि सु माटी भूली ।
माटिहि भोग बै माटी पाई ।
माटी उपजै रंग समाई[4] ।
माटी बिरला बूझै कोई ।
परितु पेमु सभु[5] माटी होई ।

दोहा— काच सूत अस टूटि है ।[6] तैसें ठस की हसि मोर ।
मगहम छेमु बिपाउ[7] तुहि । बिलसु कहा सुनु मोर ।

सोरठा— सावन जो सिर आइ । सतु न खाइ[8] आपुना ।
सीजै दीजै नाइ । सत थके सत कि भागरे ।

चौपाई— जो मालनि सोरहि अस भावा ।
नामुहि रोसु न परि हुसु आवा ।
[9]जिह पिय सों अपुना सिर हारा ।
कौन नापु सो जियरा मारा[10] ।
राजु देइ सो कवन बड़ाई ।
सीप मगावल का घटि जाई ।
बचन तुम्हारें धरमु[11] उवारुं ।
फुनि सोरहि कामु[11] तहौ बरिसाऊं ।

दोहा— परसि भागि हौं[12] भामिनी । है वत[13] मरी बुझाइ ।
मगहन छेमु[13] दीया तुमहि । तुम ही बिलसउ जाइ ।

सोरठा— सवरि[14] सुपेवी सेज । मन मन भांति सवारियै ।
जाइ[15] फाट करेज । कामिनि[16] रसोमा बाहिरी ।

चौपाई— मैना पोस मास बिधु[18] आवा ।
झुरका पवनु[19] तु सीत भावा ।
[20]दरुनी सींच पवनु अपारा ।
दारुण पवन आहारा ।

---

१. वृष्टि विधि २. परम हंस माटी में खेला, ३. समाई, ४. सोने फूल सु, ५. पुमि, ६. तस ठसकाइस, ७. बिलसहु, कहा सुनै जो मोर, ८. पापहि देउ बहाइ, सत की कानी भागरी, ९. जमै आपन जिउ जुहारा, बारि फेर या परबि बु हारा, १०. इह तुरजो सतु भांति पराई, ते कह दीस न करै बड़ाई, ११. का मुहु बरसावै, १२. मैं, १३ जियरा, १४. बिल्ससी, मोरा सतु वो जोइ । १५. सौरि, १६. फटै, १७. सावन सांइ बाहिरै, १८. मव १९. रे पौनु तुसार बनावा, २०. दारुन पवन बहै जु अपारा,

[1]कांपहि हार डोर घन हारा।
कांपहि दसन[2] नीर झरु नैना।
गरब तुहार न पावहि मैना।
सीत[3] सुपेती जाड़ु न जाई।
अधिक मदनु तरासै[4] आई।
मानु बोल तुहि देउ मिलाई।
पोसै[5] केले कउ निसि जाई।

दोहा— बोल[6] नेह चित विलसहू। कामिनि इह संसार।
अजहूं[7] रसिया मेलवौं। राषहु बोल हमार।

सोरठा— झूठा[8] नेह न कीज जगु। लपट बैरी घना।
जैसा परे सहीज। साधन जीयरा राषीयै।

चौपाई— सुनि कुट्टिनि[9] मैना उठि जाई।
ताकहु भुरहु जनु रई जाई।
पोस मास का करहि मोरा।
था तनि[10] जिउ हरि लै गउ लोरा।
लोरकु विरहु तवै मोरी[11] माँगा।
सिवरौं नेह पहिरिवी आंगा।
विरह आगि पुनि[12] पवनु बहाई।
कह वा कसु सुनावसि आई।
भोग भुगति कै नियर[13] न जराऊं।
सीइ[14] घांम कै करि न डराऊं।

---

१. कांपे हियरा फटे मनहारा २. गात ३. सौरि, ४. हियै तरसाई, ५. पासे अकेले जाड न जाई, ६. नवल नेह नित कामिनी, विलसै यह संसार। ७. अबहि,
८. झूठा यह संसार, झूठै नेहु न कीजिए।
साधन पिय के बार, साचु होइ जिउ दीजिए।।
९. रतना मालिनी हकराई, तिहि कह भुरउ जु भरइ जाई।
१०. अझरि कै
११. मारै मंगा, सुरति सनेह सु पहिरै अंगा।
१२. तन तिलु न बुझाई, रहा विरहु में नासै जाई।
१३. नियरै न जाऊं, १४. घाम सीत कै डर न डराऊं।

॥ श्री मैना का सत ॥

चौपाई— प्रथम हीं विन वूं सिरजन हारू । अलप अगोचर मया भंडारू ॥
आस तोरो मोहि अहुत गुसांई । तोरै कर कांपी करर कि नांई ॥
सत्रु मित्र सब काहू संभारै । भुगत देई काहू न बिसारै ॥
फूलि ज रही जगत फुलवारी । जो राता सो बला संभारी ॥
अपने रंग आपु रग राता । मूर्फ कौनु तुम्हारी बाता ॥

दोहरा— बघ न आंखी (पि) हमारीयां
एको चरित न सूझि ।
सोवत सपनौ देपियौ
कोऊ करै कछु बूझि ॥

सोरठा— विहि कलि विसरी एह । अस दल गज बलमसे ।
साधन मए ति पेह । पृथमी चिन्हा नां रहा ॥

चौपाई— जाता देख्यौ यह संसारू । का लोगा तुम्ह करो पियारू ।
पानी जेसि बुलबुला होई । जो आवा सो रह्या न कोई ॥
पहिलै राइ जु दई उपाने । आवत देयं जात न जाने ॥
इक छत्रु राज निरजन कीन्हा । प्रिथमी तिहि कर रहा न चीन्हा ॥
हम पुनि दिनि इकु चलावस गैहै । मूप आपर समुझोता कै है ॥

दोहा— भूवां को सौ घोरहर । पृथमी कोऊ न रहै निदान ।
साधन रोइ क्फामिमै । जो जो मन हु तुलान ॥

सोरठा— कोडी कोडी जोरि । मुए सो किरपन बापुरे ।
गए गबंत करोरि । मनि पछताने पापीया ॥

चौपाई— सातनु कुँवर नगर कर धूत । कपट रूप नारद कर पूत ।
तिहि रतना मालिनी कराई । मैना सत तैं पेहु डुलाई ॥
वूत वचन जो मैनहि पाऊं । तो मालिनि सिर ते पहिनाऊं ।
मालनि पान वूत के लीन्हे । कपट रूप सब आगे कीन्हे ॥
जो हन मोहन लीन्ह सभारी । टोना टामनि पहरि सम्भारी ।

सोरठा— कपट रूप चली दूती गई मैना के बार ।
जिहि बिधि रापै सत सौं कौन डुलावन हार ॥

सोरठा— जिहि रापै करतार । तिहि कर बार न बंकीयै ।
जो लागै संसार । साधु न छांह न चंपीयै ॥

चौपाई— मालिन जाइ मंदिर मै पैठी । मैना जिहां सिंघासन बैठी ।
चपै कै फूल चौसरा हारू । भेट दीन्ह अरु कीन्ह जुहारू ॥
हंसि करि पूछै मैना रामी । कहां गवन कीन्ही जग गामी ।
कहै मालिनि सुनि मालति मैंना । अब चीन्है कस मोलति बैना ।
तोरे पिता धाइ हौं कीन्ही । तो मैं थारै पूची दीन्ही ॥

दोहरा— मनु न रहै जोउ गृह सरै। आगि परी तन मोहि।
सुमिर मोह चित ऊपज्यो। देषन आई तोहि।।

सोरठा— सोस नवै भै लागि। मुष रोवै नैननि हसै।
साधन धनकु चटाइ। ज्यो थल ढूकै अहेरीया।।

चौपाई— मैनां वात सांच कै मांनी। दूती कै वोलिनि पतियांनी।
तव नाइनि कौं वेगि वुलाई। कूं कूं मरदन उवटि न्हवाई।।
घेवर बावर काढि पवावा। सुरंग चूरी आनि पहरावा।
हरसी मालिनि अंग न भाई। अव मो पै मैनां कहां जाई।।
मैल चीरु तेरो देषौं मैना। सेंदुरु मांग न काजर नैनां।

दोहरा— वदन जोति तोरी धूमरी। कत अव हेरसि आपु।
माग कोपि तेरी सीयरो। सिरह छत्र तोरा वापु।।

चौपाई— पिता मोर अरु काहे न राजा। पिता राज मेरै कोनै काजा।
पियु दुषु मोहि परा है आई। अस दुपु सौंतिहि परीयउ धाई।।
महरा का धीय चंद कुमरी। लै गयौ सिंदुर मोर उतारी।
का कह मालिनि करौं सिंगारा। मो परि हरि गयौ कंतु पियारा।।
वैरी न करै चंद अस कीन्हा। वाली वेसि मोहि दुष दीन्हा।

दोहरा— फिरै भाग ओछै दिनां। मीत सु वैरी होइ।
करै जु वांके द्यौंहरा। अैसा करै न कोइ।।

सोरठा— तिहि सौं कीजै नेह। जिह सों उर निवाहीयै।
साधन कौंन सनेह। टूटै काचे सूत ज्यौं।।

दोहा— तिह जगि आगु सु दे उहौं। जहां न सुरजन मोर।
झूठ नेह मोहि[1] भोर वसि। कहा करौं कस तोर[2]।

सोरठा— समुद्र कि उपै रा जाइ। पवन कि बांधा बाधियै।
साधन कि वर षटाइ। माह इकेली पीय विनु[3]।

चौपाई— माघ तुसारु कहौं[4] सुनु वारा।
नैन करां विनु षिचहि धारा[5]।
पवन सु सबदनुसार के बाजे[6]।
डरे नर नाग देव मुनि भाजे[7]।
पांच इंद्र कै एकै वैना।
कंठे भवरु लुकी नै मैना[8]।

---

१. झूठी वात ता, २. कहा सुनै कछू तोर
३. समुद कि पारै जाइ, पौन कि बंधै बंधीयै।
साधनु कोनु खटाइ, माघ अकेली गोर री।।
४. सहै को पारा, ५. हीएँ अंगोठी वरै असरारा, ६. उठि सरगै वाजा, ७. सुर नर सबै देखि कै भाजा।
८. भाजै पांच इंद्री के जना, कंठ अलोप भमर भए मना।

सात सपेती पवनु फुराई ।
फूटहि हाउ गोड झरि थाई ।
विरह छइल जिह ऊपरि होई ।
तिह की सीव न चाँपै कोई[1] ।

दोहा— विरह तुसार[2] सेसु दुपु । मैना बहुतु[3] संतापु ।
पांच भूत की हुतिया । इहु काहे कस पापु[4] ।

सोरठा— इहु काहे का पापु पिय कारनि सिर[5] धोजई ।
साधन बहुतु[6] संतापु वैरी निनु मारया मसा[7] ।

चौपाई— धरमहि मालिनि करता[8] चाऊ ।
पाप पंथ धरी नहु पाउ[9] ।
का किहु पापु धरम किहु[10] केरा ।
लोर पंथ मुकता इहु मेरा[11] ।
कै वहि थाउ कि लागौ हीरा ।
लोर सनेह न सजौं सरीरा ।
तनु महि भागि भागि तनु दहै ।
जहु वा भागि तुसार का करै ।
माघ मासु मोहि सुनत न भावै ।
जाइ भाग बोलौं रकु भावै[12] ।

दोहा— तिल इकु भागि सु सोय मुहि । पुनि विरहा संतावा ।
घरी एक कहु मालिनी । को आपुहि बहकावा[13] ।

सोरठा— जोबन भाया[14] भार । साधन सार न करि सकी[15] ।
उतरि गया सो पार[16] । सिर धोजै फिर सै[17] नहीं ।

---

१. इन चार चरणाद्यों के बदले में दो चौपाइयाँ हैं—
माघ मास होउ कि जाऊ, लोरिक बिनु मोहि और न भाऊ ।
माघ मास होऊ कि हेवंतु, मेरे जीय बहे है कंतु ॥
२. संतावै, ३. गरुब, ४. मह धाकि दै संतापु, ५. जीउ दीजियै, ६. कौन, ७. जीबे तें मरना भला, ८. करि हुँ, ६. निसरिहौं, १०. है मोरा, ११. लोरक संग जीव है मोरा, १२. भागे की ६ चौपाई इस प्रकार ८ हैं—
जिहि तन भागि विरह की जरै । भाम तुसार ता देखें डरै ॥
कै बहे थाउ कि लागो हीर । लोरक नेह मैं तज्यो सरीर ॥
माघ मास सुनत न भावै । जाइ भागि जौ लोरिक भावै ॥
भानि दैउ तोहि परम पियारा । कहा सुमसि धो बोलु हमारा ॥
१३. तिल इक त्रिभिनी भोग करि, बहोरि होइ पछिताव ।
घरी एक कै कारनै को, मालिनि भ्रापु बहकाव ॥
१४. भाए, १५. साधन सतु कस कीजीये, १६. उतरि गये, ते पार १७. बहुरयौ,

चौपाई— फागुन मदनु न[1] मानै कह्या[2]।
उधर्‌या[3] पवनु[4] विरह तनु दह्या[5]।
व्यापै विरहु पय गहि हरना[6]।
वनसपती भई[7] इंगुर वरना।
विरहु अगनि फुनि पवन बहाई।
हरि मैना सिरहू न बुझाई[8]।
कुं कुं चंद[9] बहु षौरीहि वारी।
चहु जग[10] दे भइ रतनारी।
जिहि घरि कंतु ति नारि अमोली।
ते फुनि नारि कहि सब होली[11]/[12]

दोहा— रितु विलसहु[13] चित मानहुं। पिरमु[14] न अगमुहाइ।
तिन्हहि[15] देषि नहिं चिर। रसीया देउ दिषाइ[16]।

सोरठा— फुनि झूठा संसारू। झूठा नेंहु न कीजिये[17]।
साधन पिय कै वारि। साचो हुइ सिर[18] दीजिये।

चौपाई— का झूठा झूठा[19] जगु षेलसि।
झूठ नेह लगि[20] चित्त न मेलसि।
पिय म[21] झूठ मम[22] कपट ज षेला।
झूठ नेह लगि चित्त न मेला।
विनु सुहागु कुंकुम कस अंगा।
सींदूर झूठ नाह[23] विनु भंगा।
गीत नाद चाचर धम[24] तारा।
तिन्ह रुचै जिन्ह पासि पियारा।

---

१. जो, २. कोई, ३. उखरि, ४. पौन, ५. होई, ६. सीतल, ७. भए अंगरे पांनी, ८. प्रति नं० २ में नहीं है। इसके वाद 'जिहि घर' वाला पद्य है और फिर 'कुंकुं' वाला। ९. हसैं, दुर पुरैवारी।
१०. चिहुं दिसि जगत भरे फुलवारी।
११. ते फागुन नित खेलैं होरी।
१२. गावति फिरैं तरुण अरुवारी, काम धरे सुरग सो नारी,
नं० १६ के बाद नं० २ में यह अधिक है,
१३. मानौं पिउ विलसौ,
१४. प्रेम अंग न समाइ,
१५. तेहु देखि न समझासी,
१६. मिलाइ,
१७. झूठा यह संसार, झूठा खेल न खेलिये,
१८. जिउ, १९. झूठी झूठी, २०. झूठी बात कस आनि, परम २१. जिय, कटुजु खेलैं, २२. नरक कुंड सो आपहि मेलैं, २३. नहीं, २४. घरैं,

मो[1] जीय पीयं बिनु जगतु[2] गतु उजारी ।
हौं[3] कहा पेलौं पिरम[4] पमारी ।
करउँ[5] फागु सोरक घरि आवै ।
नातरू मैना मुए बरावै ।
दोहा— कत नेह बितु बांधि[6] । मीउर म[7] मन महि भाव ।
तौ[8] दिन करहु फाग मैं । जब सोरक घरि आव ।
सोरठा— सावन चढ़या बसतु । बिरहनि बिरह चवग्गुना ।
परतीय सुवषा कत । मरनै[9] प जियना भसा ।
चौपाई— चैत राउ रितु आइ सुलाना ।
रितु[10] बसंतु करं मन माना ।
बन बन भवरा कुसुम[11] नु माना ।
फूलहि[12] भवर भवर बितु माना ।
अगर कपूर स[13] सेवा सहि ।
कामिनि फूल सेज भरि बासहि ।
रावहि[14] रैनि सेजि चढ़ि बारी ।
मानहि[15] आसति परम पियारी ।
कवल[16] फूल बनसपती फूली ।
बासमती कामिनि रसि भूली ।
चंचलु बिरह न मानै कहा ।
सुनि सखि बिरहु बलक होइ रहा ।
मद सौं भवर नाद झनकारा ।
अधिको उठै बिरह तन झारा ।
बिउ बिउ पेलहि नारि पियारी ।
छौ[17] सु जाति है मैना तोरी ।
कहौ बात[18] जौ सुनि है मोरा ।
मिलै[19] जौ तोहि परम[20] पियारा ।
चैत[21] बसंत काम सर मारा ।

---

१ मोहि, २. रे जगत अंधारी, ३. मैं- ४. फाग, ५. नं० २ में यह पद्य नहीं है ।
६. बांभिनी, ७. नेह नहीं भाव, ८. तिह, ९. जियनै तैं मरना भला, १०. नं० २ में यह नहीं, ११. कसु म गयाना, १२. न० २ में नहीं, १३. फुलेल निबासहि, १४. रवहि रानि, १५. मानी संग पति परम पवारी, १६. यहाँ से ७ पंक्तियाँ नं० २ में नहीं है, १७. वैस धात हिय हरै तोरी, १८. बुधि सुनि जौ मोरी, १९. आनि देउ, २०. संतु, २१. 'कहा सुनिसु बोल हमारा', नं० २ में अधिक है, और 'संत' शब्द से आगे की तीनों पंक्तियाँ नहीं है। इसके बाद में यह दोहा है—चैत बसंत परम रतु, मैना मानहु भोग ।
प्रियमी जगतु देखि भौं, महा करतु है सोग ॥

चैत मास रवि लिहु कल माहा।
जोवनु असु जैसे है छांह।

सोरठा— मालति[1] भवरा जोगु, भवरा कवल हि वेधिया।
साधन पूरो सोग, जोगु[2] वरी सरवरि करै।

चौपाई— रितु[3] वसंतु मालिनि किन आवै।
वात कहत मोहि नामु न भावै।
दूती दूत चलनु[4] सह तोरा।
भवरु चलावै वधाइ[5] हि मोरा।
अपति[6] पठांनी अठहि न दारी।
नितु[7] उठि आइ देत हसि गारी।
हौं[8] मालिनि फूल न सिरि राजा।
सेज मोर जु वरहि सिरि छाजा।
जनहि[9] चितु अपना न डुलाउ।
लोर पंथ सिरजा उत जाउ।
मैना[10] तव मालिनि झकझारी।
अव लौं मैं पति रापि तुम्हारी।
लोक कुटुंव की[11] अहै ज कानी।
सिर तोहि आज अनावी पानी।

दोहा— रितु अनरितु रस[12] अनरसह। मोहित[13] मनहि न भाव।
रितु वसंत तव मानि, जव[14] लोरकु घरि आव।

सोरठा— आया[15] लीजै धाइ। साधन जे[16] तनु पाहुना।
मान विहूंणा जाइ। पछितावा पाछै रहै।

चौपाई— मा[17] जरि मातु चढा वै सापू।
मदन भुयंग रह्या[18] चढि तानू।

---

१. मालित भयो वियोगु, भवरूं कमल में वंधियो,
२. सुपरोरा,
३. प्रथम की दो पंक्तियां नं० २ में नहीं। पीछे की आगे पीछे है, ४. चलन नव, ५. वधावा, ६. आपनि उतार अजा निनदारी, ७. नू आनि ८. ये पंक्तियां नं० २ में नहीं है।
९. जनमा चित न डुलाऊं काऊ, भवर पंथ जिउ रह्यो कि जाउ।
१०. मैना मालिनी धरि झकझोरी, वहुत मांनि पनि राखू तोरी।
११. होत निकानी, निरते काजु उतारेनिउ पानी।
१२. रस् अनरस्, १३. मोर न भावा भाउ. १४. जौ. १५. आए. १६. सोवनु,
१७. मैना कहु पापा वैनागु, १८. जानि जिउ रानु,

जिउ जिउ देय पवन झरकाई ।
बिनु गारुरी को बेनु न आई ।
तिरिया[1] नहि जात को हीनी ।
दिन दिन आइ बिरह तन खीनी ।
बिरस नेह न आगि झाई ।
बिरह आगु होइ दमि दगि जाई ।
जिउ[2] जिउ संग महरि मरि पावै ।
पिय[3] माहरु: बिन बनु जावै ।
महर[4] जनम गवा तिहु बारा ।
एक माम मुंमु वह न मारा[5] ।

दोहा— तन[6] झोनी मन ऊमरा । पवन बेनु[7] फुफकार ।
बिरहि[8] पगनि मैना मुनहु । जरि जरि हुइ है छार ।

सोरठा— जिउ[9] जरिया पिया लागि । परगट धूआ न देखिये ।
जरो क माटी आगि । गायन गती न जानिये ।

चौपाई— जो[10] मालिनि पिय की रति जरावे ।
इहु जगि भवन गुरा न करी ।
मरन जीवन कहुँ[11] सब कोइ पावा ।
मोरें[12] को को कहुँ समावा ।
राई सुख[13] कहु कहे सरीर ।
नाबी बूद बिरनि है नीर ।
पागम[14] बूद न जाइ पहाई ।
छाड़ी[15] को नर मठी न जाई ।

१. इसके आगे ४ पंक्तियाँ प्र० २ में नहीं हैं, २. जब जब, ३. पिय मारहि
बिनु को उबरावै, । ४. यह दो पंक्तियाँ प्र० २ में नहीं हैं ।
५. इसके आगे नं० २ में पंक्तियाँ हैं—
रत के गहे मालिनि हुइ जाई, तु जाहुँ के उर बिसराई ।
बेगारपन्थ कहे मोहनी, मालि जाहि को पुरहरी ॥
६. तन ईंधी मन पुरहनी, ७. बैंन फुफकारि,
८. बूड़ि एक बेर्गुर मेरी, देखा काहे धर फिरतारि ।
९. जो जारे जगसारि, बिरह धार ना देखिये ।
देखा भरम नारित, लाघव वहनु उपहिये ॥
१०. मालिनि तिन कारन जिउ जार, दुइ दुख दर मन लोग कहार ॥
११. को सब मर जाई, १२. मोरे मेरि कहु बहुत बहुरावै, १३. पूरन कर स्वरन
१४. दरस दुइ करत मुहु जाई १५. रत नहि कर बाद समान,

मूंदि[1] आंषि र ती छीटी जाई।
भोर भए रवि किरन दिषाई।

दोहा— जैं[2] इह जोवनु जारि करि, कै अधिकौ पेल उडाव।
इहु सिर दिया लोरकहु, अवर न देष न पाव।

सोरठा— कीया[3] न जोबन भोग वर। सग बाई है सषी।
घर घरि नितु सोग साधन। अहि री जनम ठायौ।

चौपाई— जेठ मास रवि किरन पसारी[4]।
टूटति[5] धरती परत अंगारी।
दधि[6] धरती सुत पै पट सारा।
घ्रासु[7] तंतु जरि हुइ है छारा।
अंगन सीतल है मानौ[8] देहा।
अधिकौ[9] उठै विरह तनु षेहा।
सुसर[10] कंठ कोइल कुह काई।
चला वसंतु टाल्हार[11] जनाई।
केही[12] पिरति गयौ जम वारा।
बहुत न आई परति है वारा।

दोहा— हेम[13] सरद अरु वरिष रा। ग्रीषम सरसु वसंतु।
गए छवौ रित अहिर रा। तो निरास छिनु कंतु।

सोरठा— सो[14] जानै जिह पीर। विरहा घाउ न देषियै।
कोइल वरण सरीर। साधु न डाह जडाहीयै।

चौपाई— कि नर[15] चितवै जेठ सिरि आई। जरि[16] धरती किन जाइ उडाई।
जौ[17] जरि विरहुं छार होइ जाई। तबहि न छोरो लोर को नाउ।

---

१. नं० २ में ये दो पंक्तियां नहीं हैं।
२. जो मोहि मदना जारइ, जारि करै तनु खेह।
 तो उडिकै लै जाइ, लोरिक ही के गहे॥
३. आगि जरै ज सरीर, विरला कोइ सम्हारि है।
 साधन विरह की पीर, जेठमास सीतला रुचै॥
४. पसारा, ५. टूटि टूटि धरती परै आरा, ६. धरनि आनि पाटी पर सारा,
७. घास-पात, ८ मानै तैंहो, ९ विरह होइ है तैंही, १० सरस, ११ मल्हार,
१२. कहो वात एक करहु विचारु, एक मास सुनु वोल विचारु।
१३. वरिषा शशिर हेमंत रितु...............
१४. कवहु न डिगहि पाइ, साधन सत के पंथ में।
 जेंठ जारिकिन जाइ. जो ठडि लौर पगन परै॥
१५. कसन दूती, १६ करि धरति छगर उडि जाइ।
१७. काहे न विरह खाई खोई जाइ, ऊ तव हूं नत जो लोरकानाउं।

सोइ सहेली जिन्ह[1] जई पाई। तिन्हि[2] के चित कस सबद पठाई।
सब[3] ही बारह मास पठाने। दीन एक म म सोर कराने[4]।

दोहा— सोर[5] कहा जो[6] ठेसउ[7]। सतु राखा करतार।
रहि[8] म मीत सोरक सिखा। जसु प्रगट्या संसार।

सोरठा— पाप पुंन दोइ बीज। जो सींचें[9] सो ऊपजै।
सायनु जैसा बीज। तैसा पावें पसु[?] मिलै।

मालिनि[10] तब मालिनि हकराई।
मारि कीटे कुटिनी ससराई।
मूंड मुंडाइ सिर[11] बान बंधाए।
कार[12] पिया सिर टीका लाए।
गदहि[13] बैसाइ सबहि सुनराई।
हाट हाट सहु नगर फिराई।
जो जग[14] करै सु तैसा पावै।
इन बातनि करि[15] साप न पावै।
सागर[16] बैन कसतूरी पान।
को दो बैन क सु भीमन हि पान।

दोहा— सतु मैना का सायनी[17]। थिर राखा करतार।
भई[18] बिरहिनि सोर क सतु। कुटिनी के मुख छार।

(इति श्री मैनासतु समाप्तं)

१. गांडउ, २. मैनरमनकम प्यार पठाइ
३. सब ए बारह मास सुनाने, तिन इक बार कुछ हेराने
४. दारुन दुख पावस पावे, सवनि के बिरह हिये सब लावे ॥ सं० २ में अधिक है।
५. सेरा, ६. पेन दे, ७ ठाहि रही मारक गो, मीरत करे संसार ॥
इसके बाद यह चौपाई अधिक है।
सो पढ़ि पाए मीरतु गावे, फिरि मास लिनु पार सुनावे।
सब ही होइ मीरत पर रागी, गीदिन गान सराइ लागी।
८. बोरें मांई गई, ९ हारापे।
१०. पैंग मालिनी निकर कुमारी, पटि कीटा कुटिनी निहुराई।
११. कैसे दुख देवे, १२. कारे गांरे मुख टीका दीन्हे, १३. गदह सवारिके सर्वत्र
बसाई १४. जैसा, १५. का दसमुख पाई,
१६. सादे गंधे सा आइ हुआरा, को रा बरु कि मुखी ने बाला।
१७. सायन,
१८. कुटिनी रैन निकरिए, कौन्ही दसा के सार ॥

नलदमन

[कवि सूरदास कृत]

संपादक--श्री वासुदेवशरण अग्रवाल

कवि सूरदास कृत 'नलदमन' काव्य

[श्री वासुदेव शरण अग्रवाल, काशी विश्वविद्यालय]

ये कवि सूरदास सुप्रसिद्ध हिन्दी कवि सूरदास से भिन्न हैं। इन्होंने हिजरी सन् १०६८ अर्थात् संवत् १७१४ (ई० सन् १६५७) में 'नलदमन' काव्य लिखना आरम्भ किया। इनके पिता का नाम गोरधनदास था। इनके पुरखों का निवास स्थान गुरदास पुर जिले का कलानौर स्थान था। वहाँ से आकर उनके पिता लखनऊ में बस गए थे। लखनऊ में ही सूरदास का जन्म हुआ।

इस कवि का पहले पहल परिचय श्री मोतीचन्द्र जी ने हिन्दी संसार को दिया था।[1] उनके लेख का आधार बम्बई संग्रहालय में सुरक्षित फारसी लिपि में लिखी हुई एक सचित्र प्रति थी। उस प्रति से उन्होंने पूरे ग्रन्थ की एक देवनगरी प्रतिलिपि कराई थी जिसकी एक टंकित प्रति नागरी प्रचारिणी सभा के पुस्तकालय में है। कितने ही स्थानों में फारसी से देवनागरी लिपि में लाया हुआ पाठ संदिग्ध है।

अभी दो वर्ष पूर्व श्री मुनि कान्तिसागर को डीग-भरतपुर की ओर हिन्दी ग्रन्थों की खोज करते हुए 'नलदमन' की एक देव नागरी प्रति प्राप्त हुई थी। उन्होंने जब वह प्रति मुझे जयपुर में दिखाई तो मैंने वह प्रति कुछ समय के लिये उधार ले ली जिससे पहली प्रति के साथ पाठ मिलाकर देख सकूं। पीछे मुनिजी ने अपनी सहज उदारता से मेरी प्रार्थना पर वह प्रति हिन्दी विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, आगरा को भेंट कर दी और पाठ संशोधन के बाद वह वहीं विद्यापीठ पुस्तकालय में सुरक्षित हो जायगी। इस प्रति में लेखन संवत् १८१५, चैत्र मास शुक्ल पक्ष तिथि १२ है। प्रति यद्यपि देवनागरी लिपि में है पर जगह-जगह पाठ मिलाने से अनुमान होता है कि फारसी लिपि में लिखी हुई किसी मूल प्रति से यह उतारी गई।

इस नई सामग्री की सहायता से नलदमन काव्य का एक पाठ तैयार किया गया है। इसमें बम्बई की फारसी प्रति की प्रतिलिपि से जो सभा में सुरक्षित है सहायता ली गई है। दोनों प्रतियों के पाठों को तुलनात्मक दृष्टि से मिलाया गया है। खेद है कि ऐसा करते समय बम्बई संग्रहालय की मूल फारसी लिपि वाली सुलिखित प्रति प्राप्त नहीं हो सकी, केवल उसकी प्रतिलिपि से ही संतोष करना पड़ा है।

ग्रन्थ में १७वीं शती के मध्य की अवधी भाषा का स्वरूप सुरक्षित है। इसलिए वह मूल्यवान् है। अतएव बम्बई के पाठ के लिये अधिक प्रतीक्षा न करके इसका एक संस्करण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। जैसा मोतीचन्द्र जी ने लिखा था 'नलदमन' की रचना हिन्दी

---

१. श्री डा० मोतीचन्द्र, कवि सूरदास कृत 'नलदमन' काव्य, नागरी प्रचारिणी पत्रि-भाग १९-अंक २ (संवत् १९९५), पृ० १२१-१३८।

में सूफी विचारों से रचित प्रेमाख्यानक काव्यों की भाँति ही की गई थी। भाषा में पंजाबी का पुट भी है—

तिस कारन यह प्रेम कहानी। पूरबदी भाषा बिच आनी ॥

सभा की प्रतिलिपि [संकेत स०] और मुनि कान्तिसागर जी की प्रति [संकेत कां०] से पाठ मिलाने का प्रारम्भिक कार्य श्री दौलतराम जुयाल ने किया है। अर्थ की दृष्टि से संशोधित पाठ को मैंने देख लिया है।

स्वस्ति श्रीसर्वज्ञाय नमः ॥

अथ नलदमन सूरदासकृतमारभ्यते ॥

ईश वंदना

सुमिरौं[1] आदि अनादि जो कोई । आदि अंत[2] पुन एकै सोई ॥
जाहि न वरन न रूप न रेखा । अविगत गति अभेख वहु[3] भेखा ॥
सिथिल न चंचल[4] बड़ा न छोटा । तरुन न बूढ़ा लटा[5] न मोटा ॥
बहुत न थोरा सजा[6] न फूटा । मिला न बिछुरा जुरा न टूटा ॥
ज्यों कुछ त्यों का गाँऊं[7] नाऊं[8] । नाउं जो[9] घरै घरै तिहि[10] नाऊं ॥
नाउं इहै[11] जो कहै[12] सो नाऊँ । इही कहब[13] बरु[14] राषत[15] नाऊँ ॥
नाउं धरत खिन सरगुन होई । जो निरगुन तिहि[16] नाउँ न कोई ॥
वह जो रूप वा कोउन[17] कहा । बचन न चलै तहाँ थकि रहा[18] ॥
जहाँ बचन कर गवन न होई । तहाँ कौन बिधि बरनै कोई ॥

दोहा— आपुन बना न[19] बनै विना आपुन बना[20] वनाव ।
ज्यों सो[21] बना त्यों नहिं[22] बना कहत[23] न बनै वनाव ॥१॥

दोहा० १—१. सुमरूं (कां०), २. अनंत (स०), ३. तिन्ह (स०), ४. चपल (कां०), ५. लघा (कां०) । ६. सचा (कां०) । ७. नांव (कां०) । ८. वताऊँ (कां०) । ९. जु (कां०) । १०. तिन्ह (स०) । ११. एही (कां०) । १२. कहैं (स०) । १३. कहिन (कां०) । १४. पर (कां०) । १५. राखव (स०) । १६. तिन्ह (स०) । १७. को अन कह्या (कां०) । १८. रह्या (कां०), १९. वनान न वनै वना (स०) । २०. वनां (कां०) । २१. सू (कां०), २२. त्योंही वना (कां०) । २३. कहित (कां०) ।

जद्यपि ज्यों ज्यों कहा[1] न आई। पै घट औघट रहा[2] समाई ।।
जहाँ न यह[3] सो ठौर न कोई। सकल[4] ठौर महँ एकौ[5] सोई ।।
सो[6] पुनि छेद[7] भेद[8] कछु नाहीं। सिमिटि[9] समाय रहा[10] सब मांहीं ।।[11]
मांहि जो ठाठ या कोउ न ठठा। सदा एक रस बढ़ा न घटा ।।
ज्यों आकास समान समाना। यही जान एही[12] उनमाना[13] ।।
पै यह चेतन यह जड़ सूना[14]। यह सजोति यह जोति बिहूना ।।
जो कुछ दिस्टि परै सो नाहीं। पै इहि[15] या महँ सो[16] इहि[17] मांही ।।
चर्म[18] दिस्टि सों जाइ न देखा। तौ[19] दीसै जो होई कुछ रेखा ।।
बातहि बात जाइ यह जाना। दिस्टि न आवै प्रगट[20] हेराना ।।

दोहा— देख देखत देखि जब, दिस्ट परै[21] कछु नाहि।
दिस्टि अगोचर मनसम यह, ता नाही[22] कै माँहि ।।२।।

सब में सो[1] सबही सों न्यारा। सब कुछ करै अकरता प्यारा ।।
तिह[2] चेतन[3] बिन कछू न होई। पै करतूत न लागै कोई ।।
मंदिर माहिं दिया ज्यों बारा। त्यों घट घट तामों उजियारा ।।
घट महँ कन्न[4] सकल[5] सब तामों। पै यह अलग दिया ज्यों जागो[6] ।।
जैसे कपास सुरज मिलि[7] मिलै। पै वाको गुन ताहु न मिलै ।।
कंचन मिलै कछु सुरज न मिला। सो ताकै सुरा मिलै न मिला ।।
त्यों चेतन जड़ माहिं समाना। घनमिल जाइ भिन्ना सा जाना ।।
ज्यों पानी[10] पूरै घट माहीं। दिस्टि परै ससि थें[11] परिछाहीं ।।
जल गुन जान[12] परै अब[13] हलई। चंद सों अलग न हलइ न चलई ।।

दोहा— कहीं[14] न जाहि बनाय कछु ता साहब के रंग।
रंग[15] संग सब सा मिल बनै, आपु[16] न रंग[17] न संग[18] ।।३।।

दोहा २—१. कह्यो (का०)। २. रह्या (का)। ३. मांहि (का०)। ४. ठौर ठौर में (का०)। ५. एकै (का०)। ६. ऊ (ग०)। ७. छिद (ग०)। ८. छद (ग०)। ९. छुद (ग०)। १०. समय (ग०)। ११. रह्या (का०)। १२. निरंतरी (ग०), १३. मनमाना (ग०), १४. सूना (ग०), १५. यह (ग०), १६. यह (ग०), १७. या (ग०), १८. चर्म (ग०), १९. तो (ग०), २०. प्रघट (ग०), २१. पड़ी (ग०), २२. मांही (का०)।
दोहा ३—१ सो (ग०), २. तिह (ग०), ३. चिंतै (ग०), ४. कुपी (ग०), ५. में (का०), ६. वर्म (का०), ७. मंदिर (का०), ८ बालो (का०), ९. बिन (ग०), १०. पानी (का०), ११. सो (का), १२ जानि. १३. अब। १४. कहै (का०)। १५. रंग रंग संग नाहि बिन (का०), १६. [illegible] (का०)। १७ निरञ्जन (का०)। १८. मदन।

जद्यपि[1] आप अलिप्त अकरता। पै करता भरता औ हरता।।
सरजनहार जगत कर सोई। अलख निरंजन और न कोई।।
जो देखौ सब वहै बनावा। न कुछ मांहि कुछ कै दिखरावा।।
कीन्हेसि प्रथम जोत परकासू। कीन्हेसि पानी पवन[2] अकासू।।
अगिन पौन[3] जल रज इमि साजै[4]। जिन्ह[5] सौं ए कौतुक उपराजै[6]।।
कीन्हेसि धरती सुरग पतारा। मेरु समुन्द सूर[7] ससि तारा।।
दिन अरु[8] रैन धूप अरु छाहां। मेघ वर्ण[9] पानी[10] जिहि[11] मांहां।।
देंव मनुज दईत[12] औ प्रेता[13]। पसु पंछी जल थल जीव[14] केता।।
तरुवर मूल[15] बेल अरु[16] बूटी। अगिन[17] सिरजना[18] गिनत[19] न टूटी।।

दोहा—जे देखा ए खेत[20] जग, अनवन[21] बरन[22] अपार।
छिनक एक[23] मंह सब किए[24], करत न लागी[25] बार।।४।।

जहं[1] लग जीव जंतु उपराजा[2]। भूख[3] सर्वहि कर साथहि साजा।।१।।
आपु सवन[4] सुधि कै पहुंचावै। कीट पतंगन बिसर न पावै।।२।।
हस्ति[5] आदि दै चांटा ताईं। छिन न बिसारत ऐसउ सांई।।३।।
अस अटूट कीन्हेसि भंडारा। घटै न अघट अपूर अपारा।।४।।
जो जिहि[6] जोग देइ[7] तिहि[8] सोई। ताकर दीन लेइ[9] सब कोई।।५।।
जो कोउ गरब करै मन मांहीं। हम[10] उपराज[11] दरब तब खाहीं।।६।।
गरब[12] मांझ का दरब कमावा[13]। तहां कौन उद्यम करि[14] खावा।।७।।
पसु पंछी जो बसै वन मांहां[15]। केतक अरथ दरब तिन्ह पाहां[16]।।८।।
वहै एक जग कै सुधि लेवा। अलख अपार निरंजन देवा।।९।।

दोहा—करन हरन पोषन[17] भरन, जग कर्त्ता[18] के हाथ।
पल[19] छिन कै[20] सुधि लेइ[21] लगि रहै सवन के साथ।।५।।

दोहा ४—१. जदप (स०)। २. प्रौन (स०)। ३. खेह सब रचि (कां०)। ४. साजो (कां०)। ५. तिहि (कां०)। ६. उपराजो (कां०)। ७. सुर (स०)। ८. औ (कां०)। ९. प्रान (स०)। १०. पाइ (स०)। ११. जिन्ह (स०)। १२. दैत्य (कां०)। १३. परेता (स०)। १४. ज्यों (स०)। १५. मूर (स०) १६. औ (कां०)। १७. अग्नि (कां०)। १८. सिरजटा (कां०)। १९. कटत (कां०)। २०. लखे (कां०)। २१. आनों (स०)। २२. वर्ण (कां०) २३. मैं (कां०)। २४. कहै (स०)। २५. लाई (स०)।

दोहा ५—१. जिन्हि सो (कां०)। २. अपराजा (स०)। ३. भेख (स०)। ४. कहै ४. सवहि। ५. हस्त (स०)। ६. जिन्ह (स०)। ७. दिये (स०)। ८. तिन्हि (स०)। ९. लिए (स०)। १०. हमही (कां०)। ११. उपाय (उपराज को काट कर उपाय बनाया गया है। उपाना=उत्पन्न करना भी अवधी की धातुहै (जोहि सृष्टि उपाई, राम चरित्र मानस)। (कां०)। १२. गर्भ (कां०)। १३. गमावा (स०)। १४. कर (स०)। १५. माहीं (कां०)। १६. पाहीं (कां०)। १७. पूषन (स०)। १८. जग को ताके (स०)। १९. छिन (कां०)। २०. की (कां०)। २१. लेन (कां०)।

करता सोइ जु चाहै सो करै। भरे ढारि[1] छूछे में[2] भरै ॥
परवत तिन ज्यों तोरि उड़ावै। तिनकहि[3] परवत करि[4] दिखरावै ॥
सागर सोखि[5] उछारै छारा। सूखी मँह जल भरै अपारा ॥
कंचन मंदिर बसत उजारै[6]। सो[7] उजार में कंचन ढारै[8] ॥
राता बिरछ करै बिनु पाता। ठूँठ[9] निपात[10] करै तिन्ह[11] राता ॥
पंडित गुनी निरगुन[12] कै डारै। मूरख पंडित करि[13] बैठारै ॥
छत्रपती सों भीख मँगावै। लै भिखमंगा राज बैठावै ॥
इंद्रहि चींटा करि[14] अवतारै। चींटहि[15] इंद्रासन बैसारै[16] ॥
चंद[17] मतो फिर फिर अवतारै[18]। प्रथम अपरम[19] करत उपारै ॥

दोहा—संवरत[21] बिगर सूरै[22] करै, सो बिरच संवत[23] सूर।
सदा हजूरी दूर करि, दूरै करै हजूर ॥६॥

ऐसो अलख ऐसी प्रभुताई। छमा[1] बूझ कछु बरनि न जाई ॥
जौने अंग भजै जो ताकों[2]। तेही अंग मिलै वह ताको ॥
जो ताकों साहब कै[3] मानै। ताहि कहो सेवक कै[4] जानै ॥
जो कोउ[5] कहै कि सखा हमारा। ताहि सखा होइ मिलै पियारा* ॥
जो कोउ[6] ताकौ[7] जात कहावै। जाउ[8] मात तिन्ह[9] पास[10] मिलावै[11] ॥
जो कोउ[12] कहै अंस हौं ताको। एक रूप मेरो अरु ताको ॥
तिहि[13] अपनों[14] अंस[15] कै जानी[16]। निरमल अमल आप सो मानी[17] ॥
जो कोउ[18] ढीठ कहै हौं सोई। सो अरु तामें भेद न कोई ॥
ता पर रीझ बहुत गुन मानै[20]। अंतर मेटि आप सो सानै[21] ॥

दो०—ऐसो साहब और नहि, इतनी प्रभुता जाहि।
सेवक जो गरवर[22] करै, करै आप सरि ताहि ॥७॥

दोहा ६—१. ढारै (ग०)। २ ते (ग०)। ३. कहुँ (ग०)। ४. करि (का०)। ५. सूक (ग०)। ६. उजारी (का०)। ७. सो (का०)। ८. धारै (ग०)। ९. ठूँठ (का०)। १०. नपात (ग०)। ११. कहु (का०)। १२. निगुन (का०)। १३. कै (ग०)। १४. कै (ग०)। १५. चाटा (का०)। १६. बैठारी (का०)। १७. चंदमत (का०)। १८. अवतारो (का०)। १९. अपर्म (का०)। २०. अवधारी (का०)। २१. संभृत (का०)। २२. सूरि (ग०)। २३. संभृत (का०)। २४. दूरी (का०)।

दोहा ७—१. छिमा (का०)। २ तिन्हहीं (ग०)। ३. करि (का०)। ४. करि (का०)। ५. कोई (का०)। ६. कोई (का०)। ७. ताकी (का०)। ८. जाति (का०)। ९. तिह (का०)। १०. पाति (का०)। ११. मनावै (का०)। १२. कोई (का०)। १३. तिन्ह (ग०)। १४. कोइ (का०)। १५. अंशु (का०)। १६. जानहि (का०)। १७. मानहि (का०)। १८. कोई (का०)। १९ ढीठ (का०)। २०. मानहि (का०)। २१. मानहि (का०)। २२ गरब (ग०)।

* जयपुर की प्रति में यह पंक्ति छोड़ दी है।

निज समुझौ[1/1] तो एकौ सोई। साहब सेवक भेद नै[1/2] कोई ।।
जड़ चेतन अंतर पुनि[2] नाहीं। सबै समाइ रहै ता माहीं ।।
ज्यों जल माहिं बुदबुदा[3] भएऊ। है जल नांव और होइ गएऊ[4] ।।
गांठि छूट जब जलहि समाना। जल को जल कुछ भयो[5] न आना ।।
कनक सिला ज्यों चित्र बनाए[6]। पसु पंछी लिख नांव धराए[7] ।।
एक[8] कनक होइ[9] रहा[10] अनेका। कारण[11] टूट एक को एका ।।
त्यों यह सब सोइ होइ रहा। भेद कीयें[12] तिन मरम न लहा ।।
वहै[13] नचैया[14] वहै[15] बजैया। वहै[16] खेल औ वहै खेलैया ।।
जब चाहै तब धरै उठाई। अपना ज्यों को त्यों रहि[17] जाई ।।

दो०— वह जो रूप वाको अचल, तासों भयो न भंग।
जग समुंद्र जल मांहि ज्यों, उपजी एक तरंग ।।८।।

जो संदेह धरै जिउ[1] कोई। वह[2] चेतन कैसे जड़ होई ।।
जद्यपि वह[3] चेतन जड़ नाही। पै जड़ प्रगट[4] भए[5] ता माहीं ।।
जड़ कछु[6] दूजे वस्त[7] न जाना। मकरी कर[8] जारा कै[9] माना[10] ।।
काढ़ि आप सों कौतुक कीन्हा। औ[11] छिन मांहि[12] लील पुनि लीन्हा ।।
अंत महा परलै जब होई। दिष्टि पदारथ रहै न कोई ।।
होइ अलोप[13] तत्तु[14] गुन[15] मेला। कछु न रहै वह रहै अकेला ।।
सब कुछ[16] ताही[17] मांझ समाई। चेतन अविनासी कहि[18] जाई ।।
आदि अंत जो एकै सोई। मध्य[19] उपाधि[20] न मानो कोई ।।
ऐसे समुझि एक निजु जानहु। दुविधा भूलि[21] न मन में आनहु ।।

दोहा—और न भखउ[22] जो[23] कुछ सो वह[24] अलख निरंजन एक।
भांति[25] भांति कै भेख धरि[26], एकै भयो अनेक ।।९।।

दोहा ८—१/१ समझै (कां०)। १/२ एकै (कां०)। १/३ और (का०)। २. कछु (कां०)। ३. भयो (कां०)। ४. गयो (कां०)। ५. भेव (स०)। ६. बनाई (स०)। ७. धराई (स०)। ८. कनक अंग (कां०)। ९. हुइ (कां०)। १०. रह्या (कां०)। ११. कारै (म०)। १२. गिनै (स०) १३. वही (कां०)। १४. नचावहि (कां०)। १५. वही (कां०)। १६. वही (कां०)। १७. रहि (कां०)।

दोहा ९— १. जन (कां०)। २. बिन (स०)। ३. बिन (स०), ४. प्रघट (स०)। ५. भई (कां०)। ६. दूजी (कां०)। ७. जानहि (कां०)। ८. को (कां०)। ९. करि (कां०)। १०. मानहि (कां०)। ११. ऊ (स०)। १२. मांझ। १३. अनूप (कां०)। १४. तत (स०)। १५. खन (स०)। १६. कछु (कां०)। १७. ताहि (कां०)। १८. ही रहि (कां०)। १९. भरहु (स०) २०. उपाइ (कां०)। २१. मूल (कां०)। २२. कछु कछु (का०)। २३. सो (कां) २४. वोह (कां०) २५. कई (स०)। २६. धर (स०)।

ता गति[1] ता बिनु हाथ न आवै। बुद्धि[2] तहाँ परवेस न पावै ॥
मति[3] तिमि निसि यह दिन उजियारा। ताकर कहाँ तहाँ पैसारा ॥
केहिं[4] बिधि मिलै धूप कहुँ[5] छाहीं। जौन सुरज छिपवै तिन्ह[6] माहीं ॥
खोजहिं[7] खोज हार पै माना। सपि[8] न सकै सोहि पै[9] हेराना ॥
है तो तिनकै ओट पहारा। पै तिन तिन[10] आखिम तिन डारा ॥
स्वप्न भर्म जासों जग फीका। एकहि हुए देखै जुग नीका ॥*
औ[11] तिन्ह[12] कहन कथा होइ काढ़े। कहु[13] न जाइ ताकै बिन काढ़े ॥
जब सोइ सा समहि[14] निकारै। ज्ञान नैन सूखै कै[15] डारै ॥
बांक[16] द्वैत दरसन मिट जाई। तब निज एको देह[17] दिखाई[18] ॥

दोहा—अगिन परगट जब काठ तें,[19] काठै देइ जराइ।
तबहिं काठ तासों मिलै, नातर मिलो न जाइ ॥१०॥

जेती वा[1] प्रभु कै[2] प्रभुताई। तेती गति[3] नहिं[4] जाइ सुनाई ॥
अति[5] अपार गति पार न कोई। मिथ बरनन कैसैं कर होई ॥
ताको बरनन और न कोई। यहै[6] बचन जो कछु सत[7] सोई ॥
कै बिस्तार पार को पावै। कवमी[8] औरै[9] और करावै[10] ॥
जो रसना सत[11] होहिं[12] कथैया[13]। बिह[14] सौ कर सब होंहि लिखैया ॥
मुहं[15] अकास कागज[16] सब होई। सरवर औ सागर मसि[17] सोई ॥
लेखनि[18] सब[19] तरुवर तन[20] डारा। तोउ[21] सो[22] लिखि न जाइ बिस्तारा ॥
जो कहिये तासों उपराहीं[23]। अस्तुत की निदान कछु नाहीं ॥
यहै[24] निदान जो[25] नाहिं[26] निदानू। सो प्रभु अनगिन कीन्ह[27] विधानू[28] ॥

दोहा— निरगुन औ सगुन[29] गुनी[30], अबरन औ बहु भेस।
एक अनेक जो होइ रहा, ताहि[31] करौं आदेस ॥११॥

दोहा १०—१. ताकत (स०)। २. बिधी (स०)। ३. मत (स०)।* यह चौपाई केवल मुनि कांति सागर जी की प्रति में है। ४. किहि (कां०)। ५. कहि (कां०) ६. तिहि (कां०)। ७. खोजे (कां०)। ८. सिस (स०)। ९. हुवे (कां०) १०. तन (स०) ११. ऊ (म०) १२. औहु गवित गढ़ायेहु गाढ़ै (कां०)। १३. कहि (कां०) १४. तामह तिमहि (स०)। १५ गहि (कां०)। १६. बात (स०)। १७. देहै (कां०) १८. देखाई (स०)। १९. सौं (कां०)।

दोहा ११—१. ता (कां०)। २. को (कां०)। ३ कत (स०)। ४. नह (स०)। ५. अस (स०)। ६. येही (कां०)। ७. सब (स०)। ८. कीन्ह (कां०) ९. पौर (कां०)। १०. करि पावै (कां)। ११. सब (स०)। १२. होतिहि (कां०)। १३. कथा (कां०)। १४. जिहि तो गुरु सत होतिहि लपा (कां०)। १५. मुम्म (कां०)। १६. कागर (स०)। १७. मिस सागर (कां०)। १८. लेखन (कां०) १९. सात (कां०) २०. तिन (कां०)। २१. तौ (कां०) २२. सु (कां०) २३. ओपराहीं (स०)। २४. ऐहि (स०)। २५. जु (कां०)। २६. नाय (स०)। २७. भिनई (कां०)। २८. निदानू (कां०)। २९. सब गुन (स०)। ३०. गुनी (कां०)। ३१. ताकौं (कां०)।

अब गुन कथन मत कै करौं। जिन्ह कै प्रेम प्रताप मिस्तरौं ।।*
जबते प्रघट मोहिं निसितारे। उन एते केतै निस्तारे ।।*
प्रथम निरमल वह जोति उपाई। तिन्ह कै प्रीत सब सिष्टि बनाई ।।*
रसन एक अस्तुति वहु भेखा। लिखै सो को नाहि कछु लेखा ।।*
जाके प्रेम हिय यह मदमाते। ताकै प्रीत प्रथमै रंगराते ।।*
हौं बलहार नांव कै जाऔं। जिन्ह प्रताप प्रभु दरसन पाऔं ।।*
औं उन्ह प्रेम बिन मुक्ति न होई। जिन भूलौ भटको मत कोई ।।*
अतम सब कल मांह सो जानहु। यही बचन सत्य कै मानहु ।।*
निस बासर रावर जस कहौं। कंवल चरन मन करतें कहौं ।।*

दोहा— तीन लोक नौ खंड महं, ऐसो और न कोइ।
आतम आदि तैं अंत लग, भयो न कोऊ होइ ।।१२।।

बादशाह वर्णन

साह जहां सुलतान चकत्ता। भानु समान राज एकछत्ता ।।
दिहली उवा[१] सुरज[२] उजियारा। चहूँ ओर जस किरन पसारा ।।
राजन्ह के मुख रहा न पानी। मनौ[३] बेलि रवि तेज झुरानी[४] ।।
हुते[५] जु[६] गढ[७] मेर ज्यों ठाढे[८]। गारि[९] नवाइ[१०] नीर कै[११] काढै ।।
किये नमान[१२] सबै अभिमानी। मान छोड़[१३] अब[१४] करहिं[१५] किसानी ।।
सीस नवाइ रहा जो वांचा। जो उकसा सो काल मुख खांचा ।।
रहा न कतहूं जुद्ध[१६] कर[१७] मानू। अस दिढ़ होइ बैठा सुलतानू ।।
छत्री छत्रधार जो कहाए। ते जुहार कौं[१८] वार[१९] न पाए ।।
खंड खंड कै राजा राऊ। ठाढ़े रहत जोरें कर पाऊ ।।

दोहा— जे राजा तरवार वर[२०] कटक देत है[२१] टार[२२]।
तोरि तोरि तरवार तिन्ह[२३] फार[२४] गढाए[२५] कार ।।१३।।

दोहा १३—१ हुवा (कां०)। २. सूर्य (कां०)। ३. मान (स०)। ४. झरानी (
५. होते (स०)। ६. जो (स०)। ७. घर (स०)। ८. बाढ़े (स०)।
(स०), गार (कां)। पर शुद्ध पाठ 'गारि' है। गारना = दबाकर निचो
मेरु के सदृश दुर्गों को झुका कर उनहें कउका पानी निचोड़ कर बहा
१०. लुदाय (कां०)। ११. कइ (कां०)। १२. अपमान (कां०)। १३
(कां०)। १४. अति (कां०)। १५. करैं (कां०)। १६. जड (कां०)
करि (कां०)। १८. कहि (कां०) १९. पार (स०)। २०. बलि (क
२१. ही (कां०)। २२. तार (स०)। २३. वह (कां०)। २४. झार (
२५. गढाई (कां०)।

साज काज जब करै चढ़ाई। महि मंडल[1] हय[2] मय होइ जाई ॥
चलहिं[3] गयंद ठाठ बहु मोरा। मैमन ग्रमी[4] कीन्ह मनु[5] ओरा ॥
अनगित सैन न वार न पारू। महि पहं[6] सहि[7] न आइ सो भारू ॥
कांपै धरनि मेरु धस जाई। कमठहिं भान बनै कठिनाई ॥
वासुकि डुलै[8] होइ कसमसी। धरं पताल लोक खसमसी ॥
परवत चूर चूर होइ चाहीं। मसल मसल होइ धूर उड़ाहीं[9] ॥
इंद्र लोक पहुंचै सो धूरी। अंधकार उपजै तिहिं[10] पूरी ॥
सूरज प्रकास न देइ देखाई। वासर मद्धत रैन होइ आई ॥
बन[11] पंथ टूटि सोइ मिलि जांहीं। सरवर सागर सबिस[12] सुखाहीं ॥

दोहा— अगले ऊज्वल जल पिवैं[13], पिछलै रखवर[14] खामि[15]।
ता[16] पिछलिं चोका खनैं, तब पावहिं[17] ते पानि ॥१४॥

न्याउ नौस जो पुरानन गाई[1]। सो प्रिथमीपति कै देखराई[2] ॥
गऊ सिंघ एक घाट पिआए[3]। राव रंक सर कै[4] बेठराए[5] ॥
रह्या न जग अमीत[6] करै[7] चीन्हा। अब सौ बैर अर्जा[8] सुख लीन्हा ॥
नीर छीर सों होइ निरारा। करै नियाइ[9] बार[10] कै खारा[11] ॥
पुत्र[12] अनीत करै जो काऊ। सील[13] न राखै करै नियाऊ ॥
देस देस कै पतियां आवैं[14]। सो मीकैं[15] नित बांचि सुनावैं[16] ॥
सुना[17] अनीति कीन्ह जो काहू। बांधि मंगावैं बांहि[18] पिछाहू[19]।
बूढ़ बार कहं यह ठहराई। बैठें[20] साह आप[21] होइ न्याई[22]।
जिन्ह[23] जाकौं जैसो दुखहोई। विनवैं आइ न बरजै कोई ॥

दोहा—ज्यौं तन कै सुधि चित धरैं, त्यौं जग कै सुधि ताहि।
चांटी दुखी जो[24] पाव[25] तर, सोउ[26] सुनै सो[27] ताहि ॥१५॥

दोहा १४—१. मंदिल (स०)। २. है मई (कां०)। ३ चलइं (स०)। ४. उनै (स०)। ५. जनु (कां०)। ६. पहि (कां०)। ७. सह (स०)। ८. दबै (स०)। ९ मिलाहीं (स०)। १०. तिन्ह (स०)। ११. बनखंडु (स०)। १२. ससल (स०)। १३. पिवन्ह (स०)। १४. रखद (स०)। १५ रिम्झाम (स०)। १६. पिछले जब चोका पुनै (कां०)। १७. पावैं (कां०)।

दोहा १५—१. गाए (स०)। २. देखराए (स०)। ३. पियाई (कां०)। ४. कर (कां०)। ५. दिपराई (कां०)। ६. अनीत (कां०)। ७ बरि (कां०)। ८ प्रजा (कां०)। ९. तपाइ (कां०)। १०. बारि (कां०)। ११. धारा (कां०)। १२. पुतर (स०)। १३. सील राषय (कां०)। १४. आवई (स०)। १५. मेगी (कां०)। १६. सुनावइ (स०)। १७ सुनत (कां०)। १८. बांहि (कां०)। १९. पछाहुं (कां०)। २०. बैठि (कां०)। २१. पब (कां०)। २२. नियाई (कां०)। २३. जिहि (कां०)। २४. जु (कां०)। २५. पाइ (स०)। २६. सोउ (स०)। २७. सिर (कां०)।

धरमराज परजा सुख पावा। देस देस सब सुबस बसावा ।।
सुख सों करै किसान किसानी। बोइ सो बांट देइ रजधानी ।।
राज अंस सो बाढ़[1] न लीजै। परजहि[2] आध बचै सो[3] कीजै ।।
परजा घर आनंद बधाई। भूखा एक[4] न सबै अघाई ।।
अपने भाग दुखी जो कोई। ताकै सुधि संभार पुनि होई ।।
बरध[5] बीज भख[6] सब तिन्ह[7] दीजै। जब ताकै उपजै तब लीजै ।।
निरभै बनिज करै ब्यौपारी। लाखन साज रहै मग डारी ।।
चोर जगत महं दिष्टि न आए। जिन चोरीं सब चोर चोराए ।।
राज नीति सब कहं सुख दाई। जग सुख सो उद्यम[8] करि[9] खाई ।।
दोहा—देखि जगत सबही[10] सुखी, सुखहू पायो सुक्ख।
दुख अति[11] सुख सों[12] दुखी होइ, समुंद पार[13] गयो दुक्ख ।।१६।।

दाता कहियात एकै सोई। ता सरबर[1] कहि और न कोई ।।
एक बार तिहि[2] सों जिन मांगा। पुनि[3] भर[4] जनम न काहू खांगा ।।
जे मंगत टूकन[5] कै मांगा। तिन धन भरहिं[6] रतन कै मांगा ।।*
जे[7] मंगत धन घर[8] घर डोलै। सो दर पग न[9] धरै बिन डोलै ।।
जे मंगत चीरन्ह कै जोरा[10]। तिन्ह[11] कै कनक चीर कै जोरा ।।
जे[12] मंगत[13] चैने[14]* कर चूनू। खाहि सो मुकत[15] बिनी[16] कर चूनू ।।
लीन्ह[17] जो सदाबरत कै दाना। दीन्ह[18] अब[19] सदाबरत कर दाना ।।
असेष[20] मान दान जग दीन्हा। मंगत जन दाता सब कीन्हा ।।
जिन दानन[21] हातिम जग जाना। दीन्ह साह मंगन[22] ते दाना ।।
दोहा – साहजहां दातार उर, धरै पतार दुराइ।
दधि मुकता तऊ[23] ना बचै देइ[24] कढाइ लुटाइ ।।१७।।

दोहा १६—१. हन (स०)। २. परजन (स०)। ३. त्यों (कां०)। ४. एकौ (स०)। ५. बरद (स०)। ६. भूख (कां०)। ७. तिहि (कां०)। ८. उद्दम (स०)। ९. कर (स०)। १०. सब सुख (कां०)। ११. तातें (कां०)। १२. दुख दुखी (कां०)। १३. दिखन सका तिहि दुख (कां०)।

दोहा १७—१. सर बढ़ (स०)। २. सर (स०)। ३. तिन (कां०)। ४. फिर (कां०)। ५. लोकन (कां०)। ६. फिरहि रतनग (स०)। ७. फिरि भ्रांतनि लगि (कां०) जा (स०)। ८. दर दर (कां०)। ९. हरै (कां)०। १०. चोरा (कां०)। ११. तिहि (कां०)।
१२. जिन्हन (स०)। १३. मिलत (स०)। १४. चूनी (कां०)। १५. मुक्ति (कां०)। १६. चूनो (कां०)। १७. लेहि (कां०)। १८. देहि (कां०)। १९. जु (कां०)। २०. अब तक (स०)। २१. दातन (कां०)। २२. मंगत (कां०)। २३. नै संचै तौ (कां०)। २४. दिए (कां०)।

* जो मंगते टुकड़ा मांगते थे उनकी स्त्रियाँ रत्नों से मांग भरने लगीं।

अब गुरु देव केर गुन गाऊं। रंग बिहारी[1] जिन कर नाऊं ॥
जो करलौं सो कथा उच्चारी। जग[2] जानइ ज्यों रंग बिहारी ॥
आदि नगर लहोर जिन्ह[3] नाऊं। जनम भूमि उन्हकै[4] तिन्हि[5] ठाऊं ॥
छत्री[6] कक्कर जात कहाई। अम्मा बारहु[7] मर्म देखाई ॥
पहले कहियत नांव बहोरा[8]। कसन बहोरे[9] नांव बहोरा[10] ॥
चोरी धेस बहुत मसि भरे। सिद्ध साधु के सेवा करै ॥
दयावंत[11] दुखी पर दुखो। देखि न सकै अतीथिहिं[12] भूखी ॥
धरमी धरम पंथ पग धारै। कथा वारता सुनें[13] बिचारै ॥
रहैं पवित्र भजन सौं कामू। सुमिरन करैं सदा हरिनामू।
साधु सिद्ध[14] संगत करैं, साधुन सौं ब्योहार।
सुन[15] न सकहिं समुझ पहैं, आतम रूप बिचार ॥१८॥

नित प्रति प्रात उठै जब[1] भानू। जाइ ससित[2](सरित)अस करहिं[3] सनानू ॥
बालक तहां सरौं पुनि खेलैं। लिपटैं[4] भिड़ैं[5] दइ मिलि पेलैं ॥
तिन्ह[6] कौतुक छिन मन बहरावहिं[7]। नित प्रति तहँ देवल जो[8] आवहिं[9] ॥
देवल पाइ बालक सुख पावैं। अपिको कौतुक कर बिसरावैं ॥
एक दिन देखत हुते तमासा। सिद्ध एक आवा उन[10] पासा ॥
अद्भुत भेख धरे अविगती[11]। सूफी[12] भी न सेवड़ा जती ॥
सन्यासी पुनि कहा न जाई। ब्रह्मचर्य[13] गति जाइ न पाई ॥
जंगम कहा न जाइ न जोगी। खट दरसन सौं[14] भेख बियोगी ॥
माथें[15] तिलक हाथ जपमाला। सींगी गरे[16] कांध[17] मृगछाला ॥
मन कै सुरति पीठ सौं लागी। भ्रम मिटि गयो संका सब भागी ॥
दोहा— पलक न लागैं आंखिन[18], मासी निकट न जाइ।
भौं[20] न अंग परिछाहींऊ, अमर भूमि[21] सौं पाइ ॥१९॥

दोहा १८—१. रंगभारी (स०)। २ जाने (का०)। ३. जिन्हि (का०)। ४. तिनको (का०)। ५. तिन्ह (का०। ६. छतरी (स०)। ७. बारि पुनि (का०)। ८. बिहोरा (का०)। ९ बिहोरै (का०)। १०. बिहोरा (का०)। ११. सभा की प्रति में यह अंश त्रुटित है। १२. आरमा (का०)। १३. सोहं (स०)। १४. साधु (स०)। १५. सुनहि शिष्य शिक्षाधर हैं (का०)।

दोहा १९—१. जब (स०)। २. ससिल (का०)। ३. करैहि (का०)। ४. लिपटहं (स०)। ५. फिरहं (स०)। ६. तिहि (का०)। ७. भरमावहं (स०)। ८. कीर्ति सागर जी की प्रति में यह शब्द नहीं है। ९. पू आवहि (स०)। १०. सन्यासा (स०)। ११. अवधती (का०)। १२. सोपहि और न सेप रावतै (स०)। १३. ब्रह्मचरण (स०)। १४. मुन (स०)। १५. मायम (स०)। १६. करै (स०)। १७. कांधे (स०)। १८. आंख न (स०)। १९. भाखैं (स०)। २०. भो न अंग पत छाहो (का०)। २१. भुई (स०)।
* चेना = एक प्रकार का निकृष्ट धान्य।

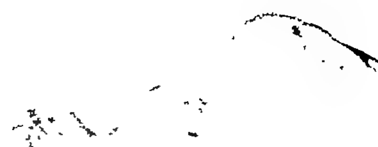
इन वह पुरख दिष्टि महं[1] आना । देखत सिद्ध पुरुख पहचाना ।।
सिद्ध पुरुख इन्ह तन पुनि पेखा । भई परस्पर देखी देखा ।।
तब इन[2] देवल[3] गोद सों[4] काढो[5] । हिय[6] में पीत दरसन तें वाढी ।।
हंस कै पुरुख हाथ गहृ[7] लीन्हीं[8] । लै रंचक अपनै मुख दीनी[9] ।।
कर जो रहे[10] इनके मुख डारै[11] । डारत वुद्धि किवार उघारे ।।
कै चेला चल भय[13] गुरु आगे । ए गुरु के पीछे[14] उठ[15] लागे ।।
एक[16] वचन पूछा तिहि ठाऊं । कही[17] गुरु तुम आपन नाऊं ।।
कहा अचित नाम सुन मोरा । रंग विहारी राखां तोरा ।।
कहि[18] "सुवचन[19] पुनि दिष्टि न आवा । पुरुख जहां कर तहां समावा ।।

दोहा— उनहीं[20] घरी[21] कृपा भई, दया कीन्ह[22] गुरु देव ।
आतम[23] रूप लखा प्रगट[24] रहा न अंतर भेव ।।२०।।

दोहा— २०. १ मैं (कां०) । २. उन (कां०) । ३. चोल (स०) । ४. तै (कां०) । ५. काढ़े (कां०) । ६. ते ताके सनमुख भये ठाढे (कां०) । ७. फल (कां०) । ८. लीन्हे (कां०) । ९. दीन्हे (कां०) । १०. रहि (स०) । ११. डारी (स०) । १२. विरह कुवार ओसारी (स०) । १३. भागु (कां०) । १४. पाछे (कां०) । १५. उठि (कां०) । १६. वूझों वचन जो अज्ञा पावों (स०) । १७. कही कही (स०) । १८. कहसि (स०) । १९. वचन (स०) । २०. वही (कां०) । २१. घडी (कां०) । २२. करी (कां०) । २३. उत्तम (स०) । २४. प्रघट (स०) ।

सिद्धान्त-माधुरी

[श्री रूपरसिक जी कृत]



सिद्धान्त माधुरी

जै जै श्री हरि प्रिया देवि दंपति की दासी ।
इछा शक्ति स्वरूप महल की टहल उपासी ।।
रहे प्रसन्न मुख किये लिये रूख हिये उलासी ।
दुरि देखत सखि जहां तहां की करत खवासी ।।

यहां कोउ प्रश्न करें कि सखी दुरि देखें अरू श्री हरि प्रियाजू तहां की खवासी करत हैं तो राहू तो एक सखी हैं इनकों निरंतर सुख की प्राप्ति कैसें संभवें तो तहां कहियें कि हरि प्रीयाजू हैं सु जुगलजू की इछा शक्ति निज दासी स्वरूप धारण कीनों है इनि विना विहार वनत नांहीं। काहे तें जो इछा होइ तो विहार होय या तें इनि को स्वरूप मुख्य जानियें । श्रौरू सखी जु है सु श्री रंगदेव्यादिक प्राधान्य जू थे स्वरी हैं । पैं एहू सव श्री निज दासी जू को स्वरूप हीं। श्रापु ही अष्टधाविग्रह धर्यो है । यातें उनमें इनिमें भेद नाहीं। जैसे श्री प्रीयाजू प्रीतम प्रीतम श्री प्रियाजू या प्रकारि जानियें। अन्यथा नाहीं । श्रौरू कोऊ कहैं कि अष्ट सखिन में मुख्य श्री ललिता जू सुनियतु हैं । अरू तुम श्री रंगदेवी मुख्य कही तौ तहां कहिय कि अपने इष्ट माहिगुरत्व शत्तोपदेश कारिनी कृपा इनिहों कों हैं। याते मुख्य कही अन्यो अन्य स्नेह पूर्वक अति प्रसन्न जुगल जू कीं सेवति हैं तत्व एक ही हैं। सेवा निमित्त अनेक रूप आभासतु हैं । भेदन करनौं। ए प्यारी प्यारेजू की प्यारी सखीं हैं। जव दोऊ प्रीतम परम प्रकास मय मोंहन मंदिर में अलवेले अति स्नेह सौं सुरत जुद्ध करत हैं तव वा समैं न्याराररस है अति सुख अमृत पांन करिवे के लियें निरीक्षण करत हैं । अरू श्री हरि प्रियाजू भीतरि यातैं रहति हैं कि वहां सुरत जुद्ध है। जो दोऊनमें कोऊ एक विवस होय तौ संभराइवेकों चाहियें। अरू वे श्री रंग देव्यादिक सखी जु हैं सु उनि पर मरमनीय परम अद्भुत लाल पीत स्याम सेत मनिनि करि जटित मुक्तानिकी जालिनि के रंधृनिमग लगि वा पूर्ण प्रेम रंग भरी माधुरी कौं अवलोकनि करि परस्पर निज भाग सराहति हैं अरू कहत हैं कि धन्य धन्य भाग है सजनी रसिक रसीलेजू की रहसि निहारें दिन रजनी। तातैं यह सुख जु है सु इनिके आश्रय विना अति दुर्लभ हैं। सुर्ल्लभ जाही कौं हैं कि जापर श्री निजदासा जू निज करि कृपा करें। यातें यथम इनको आश्रय लेय जव इनकी कृपा होय तव सखी रूप कौं प्रापति है करि श्री मन्निज वृंदावन में नित्य विहार को सेवन करें। अरू निरंतर रूप माधुरी को पान करें। कैसो हैं श्री मन्निज वृंदावन जाकी दिव्य कंचन मय भूमि हैं । अनेक भांतिनि की मनिनि करि जटित हैं अति विचित्रता सौं। वृक्षन की सोभा पैंठ नीलमनि मय हैं । तौ साखा हरित मनि मय हैं पत्र पीतमनि मय हैं तो फल अरूनमनि मय हैं। फूल अति सुकंग सुपष्ट सौरभ मधुर वभत द्रुम एसे हैं । जिंनके पत्र फल पूलसखा मूल सर्वत्र नानारंग आभासतु हैं। परम मनोहर रम्य कोटि कोटि सूर्यनि को प्रकासु हैं । लता हैं अति रसीली ते ललित तरूनि सौं लपटाइ रही हैं व भतकलता ऊरधगामिनी हैं । व क्षतक लता भूमि कौं प्रसरित हैं श्री जमनाजू कंकना कर अति सिंगार रस मय पर करि पूर वहत हैं । नामा रंग तरंगनिकरि छवि छलकति है । अरून नील स्वेत

कमल फुल जहाँ तहाँ प्रफुलित हैं। तिन पर मधुर मधुमुष्य गुंजार करत हैं। अनेक स्वरनि सौं सार सहंस चक्रवाक कारंज कोकिला कोक कीर चकोर चातिक मोर इत्यादिक नाना पक्षी जुगलजू के नाम रटतु हैं स्वतंत्र। अरु उभय तट हैं सु रत्न बद्ध हैं। तिन पर वृक्षन की धारे झुकि झुकि फल फूलनि के भार जल कौं परसि रही हैं। अति सोभायमान हैं। तहाँ की सोभा देखि दंपति जू आप सोभायमान ह्वै रहे हैं। अरु इक छिनु न्यारे नाँहि ह्वै सकति हैं। ऐसौ जो निज धाम ताकै मध्य नव निरय स्थल अनेक दल कमलाकार तिनमें निज पंकति अष्टदल हैं। तिन पर अष्ट प्रिय सखीनिकी कुंज हैं जिनके नाम रंग रसद मद नवल सुख सुखद मधु मंजुल। इन विषैं समस्त सेवा की सामगिरी रहत हैं। जिहि जिहि समैं सो सो सहज ही अवति हैं। अति कमनीय कर्णिका तेजोमय ताके ऊपर चारि सरोवर हैं मान सरोवर मधुर सरोवर, स्वरूप सरोवर, रूप सरोवर। च्यार्यौं ही ओरनि जिनकी रचना अपार है। अनेक नगनि करि घाट निर्मित हैं। सुंदर सिढ़ीनकी प्रभा को प्रकासु है तिन सरोवरनि कै मध्य भाग एक अष्ट द्वार को महल है। द्वार द्वार प्रति तोरन ध्वजा पताकादि अलंकृत हैं। विशाल मुक्तानिकी वदनमाला कुंदन कपाटनि कुधानिके निकरन करि जटित जगमगाति हैं। कोटि जाकी एक छविलेसपर कोटि कोटि दुति अरधि के प्रकास कौन है। स्फटिक मनिमय भीत अति स्वच्छ हैं। जामैं श्री मन्दिर वृन्दावन को प्रतिबिंब गैर गैर अनेक ह्वै भासत हैं। अद्भुत अनेक रंग चित्रनिकरि चित्रित हैं। चारु चारु चूनी चहुं ओर चमकति हैं। खिरकिनि की गोखनि झरोखनि की जारिनि की अटनि अटारिनि की दुति दमकति हैं। छाजनि की छाजनि विराजनि विविध विधि साजनि सिखर सोभा झूंमि झमकति हैं। चमकति खरी खिलिझुमक ताप नति कीर मकसिराजी रवि छविवि छमकति हैं। ता महल कैं भीतर चौक बीच रत्न मंडल पर कल्प वृक्ष नीचें मोहन मंदिर हैं। सरस मनि मृदुल मनि कंचन मनि सूर्य कांति चंद्र कांति हेम कांति मनि कांति पद्मराग पुष्पराग इत्यादि दिव्य अद्भुत मनिन करि विचित्रता सौं रचित हैं। ताकैं मध्य मृदुल सेज पर स्याम श्री सुरत बिहार हैं। यहां और काहू को प्रवेश नाहीं। बिना एक श्री हरि प्रियाजू कौं कै ए इच्छा शक्ति निज दासी स्वरूप हैं या तैं अरु इनिको जो भेदाभेद को अभिप्राय है सो तो पहिलें लिख्यो ही है। तैं तैसें समूझियौं। मोहन मंदिर कैं अग्रभाग आंगन में मोहन मंडल ताकै ऊपरि अनोपम अष्टकौन कौ एक सुख सिंहासन है। तहाँ जुगलजू विराजत हैं। कौन कौन प्रत्येक एक प्रिय सखी निज निज गननि जुत अनेक भावनि सौं सेवा करत हैं। प्रिय सखीन के नाम। श्री रंगदेवी, सुदेवी, ललिता, विशाखा, चंपलता, चित्रा, तुंगविद्या, इंदुलेखा, इनिकौं प्रिय सखी जानियें। काहू काहू मतांतर विषैं इनके औरहू नाम सुनियतु है। परि यामें कछू संदेह न गिनियें। जैसें श्री प्रिया प्रीतमजू के अनेक नाम हैं। निज महल के जैसें तैसें हू लक्षिन कं ऐपरि यह जू स्वमतानुसार लिखे हैं। निखिल मही मंडलाचार्य प्रवर चक्र चारू चूड़ा मनी जू को हृद हैं सो तो यह बिना कृपा अगम्य हैं। परि वाको सहज ही उपाव है। श्री गुरू चरण अरु श्री गुरू हैं सो साक्षात भागवत रूप हैं। तहाँ प्रमान सुनूं स्लोक।

श्लोक—आचार्यो विष्णुरूपोहि पुराणेष्वित निश्चय,
निग्रहानु ग्रहाम्यावै श्री हरस्तेन समानता।

जिनको निग्रह अनुग्रह श्रीकृष्ण के समान हैं परन्तु इतनौं अधिक हैं सो भगवान रूठें तो श्री गुरु सहाय करें पै श्री गुरू रूठें भगवान पै सहाइन होय सकैं। तातें सर्व भांति करि श्री गुरू को प्रसन्न राखें। तथा ही।

श्लोक—हरौ रूष्टे गुरू स्त्राता गुरौ रूष्टेन कश्चिन।
तस्मात्सर्व प्रयत्ने न प्रसाद्यः सर्व देहिनां।

अरू श्री गुरू विखें मानुषो वुद्धिन करें। तथा ही

श्लोक—आचार्ये मानुपी वुद्धिर्नकर्तव्याक दाचन।
अस्मामि श्रेयइछद्भिर्यतः स्थानहि श्रेयसां।

दीक्ष्या मंगलेः।

समझे गुरूहि न मानवी है। गुरू श्री हरिदेव॥
मनसा वाचा कर्मना करें कपट तजि सेव।
हरि रूठैं राखे जु गुरू गुरू रूठें नहिं कोय॥
तातें सोई विधि करैं ज्यों गुरू राजी होय।

अरू श्री गुरू हैं सो ज्ञान मंजन की सलाका करि नेत्रन के प्रकासकारी हैं। अज्ञान तिमिर करि अंध भये हैं। तिनकों पुराणातरे।

श्लोक—अज्ञान तिमिरावस्य ज्ञानानां जन सिलाकया
चक्षु रून्मीलितं येनतस्मै श्री गुरूवे नमः

जैसे जु श्री गुरू हैं तिनकौं नमस्कार है। जिनके चरणाश्रय तैं सर्व सु मिलैं। अरू जो कोऊ भगवान की प्राप्ति चाहैं सो श्री गुरू को आश्रय लैय। वेद हू कहत हैं कि विना गुरू भगवान की प्राप्ति नाहीं। पंच संस्कार के दाता हैं। श्री गुरू तिन समान प्रत्युपकार कारने कौं द्विवतीयोनास्तिलुस्तवे।

श्लोक—पंच संस्कार दायीच महो धर्त्ताभवार्णवात्।
तेषां प्रत्युपकाराही न कोपि जगती तले। दिक्षामंगले।
छाप तिलक अरू नाम पुनि माला मंत्र जु पांच।
संसकार जव गुरू करैं तवही हरि जन सांच॥

तातें प्रथम जव गुरू कौ आश्रय मिलैं कृपा करि जब श्री गुरू नवधा भक्ति दिठावैं। करत करत परिपक्क भयो जानैं। तव प्रसन्न ह्वैं हृदय गत वस्तु उपदेसैं। अरू निज रूप की प्राप्ति करैं। नित्य लीला दरसावैं। सो नित्य लीला व्रह्मादिकनि कौं अलभ्य हैं। तो तुम कैसें जानी तो यहां यह उत्तर कि व्रह्मादिक हैं सो वैकुंठनाथ के अधिकारी हैं सो अपने अधिकार में मग्न हैं। जिनके जानिवे को यह रस नाहीं। रसमारग भिन्न है। यह तो मुक्तिनि हूं कौं आलम्य हैं तो कर्म ज्ञानिन कौं कहा याकौं तो कृपा चाहिये कृपा होय। जव प्रेम होय तव यह रस पावैं। तहां महावाक्य प्रमान हैं कर्म ज्ञान को नेकहूं नाहीं जहाँ संसर्ग प्रेम विना पहुंचे नहीं। पांचौं ही अपवर्ग। तातें प्रेम ही मुख्य हैं। सर्वथा जो कोऊ

चाहे कि बिना प्रेम ही प्राप्ति है तो कदाचित नाँहीं क्यों के अन्य सुलभा प्रेम सुस्वभाय है विरद विपत हैं सो कृपा साध्य हैं अरु कोऊ कहै कि कृपा कौन की श्री हरि प्रयाजू की कि प्रिया हरिजू की तो यहाँ यह उत्तर जो कृपा न्यारी नाँहीं कृपा एक ही हैं। इनिकी जो उनकि जो इनिकी इच्छा कहा भिन्न हैं। यह तो भावना के भेद हैं। अरु वस्तु एक है। परन्तु इनिमें गुरुत्व हैं। तातें कृपा इनहीं की। जाकरि प्रेम रूपो सुख मिलें। सो सुख कैसो है। अनंदमय दिव्यास्प असिवैसो है। अमकमसडेसो है रसीलो रंग रंगीलो है छबीलो है।

यह सिद्धांत जु माधुरी कही बुद्धि अनुसार।
रूप रसिक जन जो कहै लहै सोई सुख सार ॥

विरह-शतं

[सोलहवीं शताब्दि का एक अप्रकाशित हिन्दी ग्रन्थ]

सम्पादक—अगरचन्द नाहटा

सोलहवीं शताब्दि का एक अप्रकाशित हिन्दी ग्रन्थ—
विरह-शतं

[अगरचन्द नाहटा]

सोलहवीं शताब्दि के पहले का हिन्दी साहित्य वहुत ही कम जानकारी में आया है। वड़े वड़े ग्रन्थ कम मिलते हैं और छोटी छोटी रचनाओं की ओर अभी ध्यान ही नहीं गया है। गुजराती राजस्थानी साहित्य के १३वीं शताब्दि से १६वीं तक की अनेक फुटकर रचनाओं के संग्रह निकल चुके हैं, जिनसे उन भाषाओं के क्रमिक विकास, रचनाओं के प्रकार व परंपरा आदि पर वहुत ही सुंदर प्रकाश पड़ता है। पर हिंदी की प्राचीन रचनाओं के संग्रह का अभी तक कोई प्रयत्न नहीं किया गया। इसीलिये इनी-गिनी रचनाओं के अतिरिक्त हमें १३वीं शती से १५वीं शती तक की रचनाओं के संवंध में वहुत ही सीमित जानकारी है। अब इस कमी को पूरा करना अति शीघ्र आवश्यक है।

जव तक प्राचीन हिंदी रचनाओं के संग्रह ग्रंथ प्रकाशित न हों, हमारी शोध-पत्रिकाओं में छोटी छोटी प्राचीन रचनाओं के प्रकाशित होने का प्रवंध होना चाहिये। इसलिये हिंदी अनुशीलन में जिस प्रकार ग्रन्थानुसंधान चालू किया गया है उसी प्रकार अन्य त्रैमासिक शोधपत्रिकाओं में कुछ पृष्ठ इसके लिये अवश्य रहने चाहिये। यह सुझाव देने पर डा० सत्येन्द्र जी ने भारतीय साहित्य एवं आगरा विश्वविद्यालय के वार्षिक अंक में प्राचीन ग्रंथ प्रकाशन के लिये एक स्तम्भ नियमित रूप से प्रारम्भ करना स्वीकार किया है। और उसके लिये नियमित सामग्री देते रहने का मैं वचन दे चुका हूँ।

प्रारंभिक रचना के तौर पर साधन कवि रचित मैना-सत को देने का विचार था। पर उसकी दो प्रतियाँ मेरे पास हैं। दो अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, एक 'जोधपुर पुस्तक प्रकाश' में प्राप्त हैं। इस अंक में सोलहवीं शती के लगभग का विरह शतं प्रकाशित किया जा रहा है। हमारे संग्रह में १७वीं शताब्दि की लिखी हुई तीन पत्रों की एक प्रति है जिसमें इस विरह शतं के साथ दूसरा एक शतं भी लिखा हुआ है। उसका नाम नहीं लिखा होने से उसके विषय को देखते हुए प्रेम शतं नाम देकर मैंने इन दोनों रचनाओं का आद्यान्त विवरण राजस्थान विश्वविद्यापीठ उदयपुर से प्रकाशित राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज के चौथे भाग में दिया था। अभी जयपुर के दिगम्वर तेरह पंथी भंडार में इन दोनों रचनाओं की एक और प्रति मिल गई है। उन दोनों का मूल आधार एक ही प्रति है। इसमें दूसरे शतक का नाम वोर्डर में शृंगार सतक भाषा लिखा है, जिसे मैंने प्रेमशतं संज्ञा दी थी। यह दूसरी प्रति चार पत्रों की है। इसके अंत में हर्ष कीर्ति का उल्लेख है। जिनका समय १७वीं शती का पूर्वार्द्ध है। पीछे की पंक्ति में भिन्नाक्षरों में सं० १७२२ चैत्रवदी १ लिखा हुआ है और इसके पहले और पीछे की एक एक पंक्ति पर काली स्याही फेर दी गई है। दोनों प्रतियाँ १७वीं शताब्दि की हैं। मूलाधार उससे पहले १६वीं शताब्दि का होना संभव है। शृंगार शतक फिर कभी दिया जायगा।

विरह-शतं

जो उच्चरिय सु नाम तुअ । अस बुझिये जु अरत्थ ।
सोइ करता अक्षर सरिस । भंजन गढन समत्थ ।। १।।
सम कहुं कह न हीं कहां हहि । रे पवित्र कहि मोहि ।
माया मुद्रित नगन मम । क्युं करि देखुं तोहि ।। २।।
इन नयनन देखुं नहीं । इह विधि ढूंढयौ जग्ग ।
सोइ उपदेसो ग्यान महि । जिहि पावौ तुं अभंग्ग ।। ३।।
विरह उपावन विरह मैं । विरह हरन सावंत ।
विरह तेज तन नहिं सकत । व्याकुल महि जावंत ।। ४।।
विरह पुव्व प्रभु कुं भयौ । सब रचि रापिउ मूल ।
नैन बुझति नहि आप महि । तां लगि रच्यो रसूल ।। ५।।
प्रथम कही विधि आप मुखि । हिंदू तुरक मझारि ।
ही जि कहति इह रसन लग । पावन करति विचारि ।। ६।।
तू अनाम न गुन न विप्र प्रभु । जनम एक परि लेइ ।
घोर अगनि परसैं नहीं । अंति परम पद देइ ।। ७।।
देहि प्रदक्षन रयन दिनि । नखत न पास भजाहि ।
सोई आलम राज न कुं नव । महि भेटे प्रभु साहि ।। ८।।
कही जु दारुण दुख दहै । तुहि पेमू कि किह तीर ।
विरह व्यथा प्रान न हरइ । सो परम पीर हर पीर ।। ९।।
वन तिन वडवानल मुपहि । जिम मल परसत नीर ।
हरे पाप दुख राम जहि । सुपि जिय राजन पीर ।।१०।।
प्रीति रचो अति सुक्ख लगि । दुख चरिउ मम हत्थि ।
मन मति सच लोयन श्रवन । पंच चले तूअ सत्थि ।।११।।
पग आगैं मन पछिमइ । हीयइ मझि विपरीत ।
मींत पयानी धजा सम । नयना जल मुख पीत ।।१२।।
हियइ रुंध(ति) विरसना थकित । लोचन जल भरि लीन ।
ऐसौ त दुज्जन पुनि करहु । जो इन तिहूं न कीन ।।१३।।
जे दिट्ठ वैनहु तेज पिय । ते चल्ले संग तुज्झ ।
निठुर विपछिज मोहि तन । रह्यौ लजावन मुज्झ ।।१४।।
कौ वोलइ आंकम भरहि । कोइ गहै तुअ पाइ ।
गम तजु अज[1] भव उप्पजिउ । हुं गही सु[2] साधिग भाइ ।।१५।।
वासर विरह निमत्त कुं । विन संगम मम छाँह ।
स्याम रयन नहि सहि सकत । सु हुं विमुक्कति ताह ।।१६।।

---

१. अधभुअ, २. जु सातिग ।

विरह व्यथा अति कठिन तन । सुर नर सकहिं भाखि ।
मंदिर पब्बइ कूप बन । सुन बोलति मम साखि ॥१७॥
रयना[3] परि रचि पेम की । होसी करम संयोग ।
कौन पदारथ करि बरइ । मिलने को है वियोग ॥१८॥
विधि कत दीन्हौ प्रेम धन । विरह संग दियौ काइं ।
जिनि हि जियावत पिय रहति । पल पल रहत न थाइ ॥१९॥
हीयै हुतासन भर धरै । धुटाधि मुकति सास ।
विरह[4] वा रवि से भस्म करि । विहुर न भंक असास ॥२०॥
सिखत मूत अबिकसत[5] । पल मज्झहि प्रभु ताहिं ।
दुख भक व मोटि न सकत । को[6] सेवक तू माहिं ॥२१॥
पेम सरोवर माँहि परि । जिन्ह तकित तरि तीर ।
निकसि मीन सिर धुनित । तब पायौ सब नीर ॥२२॥
रे जिय परिहरु पेम यहि । विलसि अनेक तरंग ।
माउ समप्पति मुख कौवन[7] । नयन मीन के संग ॥२३॥
विरह तेज कहु जगत नहिं । मुहि सम चुकको आहि ।
बिछुरन ताता संग बिन । यौ दुख दीन्हौ जाहि ॥२४॥
सहि कठिन अति विरह भर । परसी जिन्ह सरीर ।
तिहु बिय मुज्झ सहिम सरिस । सहि त सकी पिय पीर ॥२५॥
नयन तपत तन मैं नमी । मइ नहि जाग्यो तब्ब ।
वा निरमोही मिलन दिन । सो हूं पुछू कब्ब ॥२६॥
नेह नैन बिरहा अमिल । ते मिल उठी जु जोति ।
मन पतंग मज्झिह परत । जानति नहिं कहां होत ॥२७॥
रे मन पेम पतंग तू । रूप ज्योति सम सेत ।
रसन दीप मुख जय मगति । उइ अगमि जिउ देत ॥२८॥
मन पतग[8] उत्तिम करत । विरह ज्योति कारनेतु ।
बरइ तो पावइ परम पद । बर्ने त सामै हेतु ॥२९॥
पेम बैद औषध गुनिक । पूछ्यौ वह कह थाइ ।
विरह मन्त्र घसि सेंउ तह । पीर विषम जिह जाइ ॥३०॥
हूं जइ सो पिय पेम यहि । ते जु दए बैद तब्ब ।
जहां कहां की गारर मिलइ । तौ विष हरइ सरब्ब ॥३१॥
पन्नग विरह डस्यो जु मम । मग ष गारर मोहि ।
पिय रवि उदइ कठिन लहरि । नहिं जगहिं बिन तोहि ॥३२॥

---

३. रयनायर, ४. बिहि, ५. भविर कसत, ६. का, ७. बस, ८. पतंग।

विरह उसासन जरंति रंवि । तिय मुक्कति विननाह ।
मनहु सिराख[९] तन तपत । सांझ परत दधि माहि ॥३३॥

मदन संचरंति सांझ[१०] हिय । जह लौ ती सब जाति ।
मोहियँ वसंति जु विरह अति । डसति सपूरन राति ॥३४॥

दीपक भुवन न अलि कमल । तरु विहगम तिह संत ।
मोतन विरहानल वसैं । तपत सकल तन मझि ॥३५॥

पुहमी वदंति[११] दीपधर । सभि सुख मनसि अनंग ।
विरह दीप मो उर वसैं । मन फिरि परैं पतंग ॥३६॥

रयनि जु रमनी विरह की । काम दियइ विच छाइ ।
सो रंग रंक तन ननि चुवैं । संचित रंग हुइ जाइ ॥३७॥

नयन कलस भुर त्रिकुटि कुच । कुच शिव मस्तक आहि ।
कोट बूंद दिन पति परति । तुअ दरसन कौ साहि ॥३८॥

जांम चतुर तुअ विरह जरि । रजनी भई लि हार ।
पुनि जारिवौ जारि दियइ । सुरगि भयौ जिवार ॥३९॥

मो हिया विरइजु वइरि । खिरि खिरि जुरि आवंति ।
जहम जुठारत पवन मिसि । तह असुवन वरिसंत ॥४०॥

इंद पटल पर पूर जल । इंद वदन वर पंत ।
इंदी वर पिय तुअ विरह । इंद वधू निरखंत ॥४१॥

अंवर पूरत वन पटल । पिय विदेसिं निसि स्याम ।
असि दामिनि दव्विन करह । वाम गहइ कच काम ॥४२॥

आथि सरोवर सकल महि । नीर जी नीर पूर ।
मन मरालि मन मानसर । रमैं न जद्दिप दूर ॥४३॥

पेम सलिल पिय सुक्ख जौ । दौ दीन्हो तन लाइ ।
वरि विरह झरि परि जरी । वह सुन जिरत[१२] जाइ ॥४४॥

मिलि पिय पिय चातिग रसन । प्रेम तिया दाहंति ।
लोचन धन बरसंत नित । श्वाति अधिक चाहंति ॥४५॥

पावस निसि या पूर तम । छट विजुल छल कौन ।
हुं विरहनिवह जलद संग । विहसि महा दुख दीन ॥४६॥

कांती कंता देष मम । तुअ विजोग जिउ जाम ।
टटि वेनी श्रम अर्घ जल । मुख कंचन तूअ नाम ॥४७॥

जोगी गिरि आरंन चवन[१३] । मिलइ न आश्रम कौन ।
हंस पुरी जिह पिय मिलइ । विह[१४] मग्गौ लिय गौन ॥४८॥

---

९. सिरावत, १०. सांड, ११. वंद्धति, १२. सर, १३. वन, १४. तिह ।

कानभि मुद्रा करि घसी । सीस परज करि भ्रम्य ।
भसम दयौं जौ पिय मिलइ । भसम करूं तन सब्ब ॥४९॥

कहा राम दुपंत नल । ते जानत तीय वियोग ।
हंस दिन्ह विधि दुख सम । इह पीर परम मोहि योग ॥५०॥

कहु बंधव कहु मित्त जन । ओ पीर घटावन मोहि ।
विरही कहाति पंच जन । भा पहि पूछुं तोहि ॥५१॥

रे कहियौ को विम कवन । को वाल्हिम दिन कोन ।
कोइ जनम ससार को । कोन सुघट दुख कोन ॥५२॥

सौं मायी सुत पवन जिम । चपा सु जोवन मूर ।
सकति रही नहि साह महि । उर लग्गे उन पूर ॥५३॥

रे मन हसहु[१५] दी जियहु । मंस परी मम संग ।
सेव ससिल दरपन दहन । रख पव मंचल पंग ॥५४॥

मुख भालिमहि हियौ भरि । मुख देखिहि चख रंक ।
यु विधि मंकि जनम पट । इह लिलाट तिव मंक ॥५५॥

यह लु फंद सुर नर रचेइ । छोर न जतन बताहि ।
विन फंद फंदे जु प्रेम फंद । ते निरखनि न ताहि ॥५६॥

मदभुत पीर परेम की । व्यापि रही जगपूर ।
बहु ते स्यामे पचि रहे । कहु करि घटी न मूर ॥५७॥

द्रुम सनेहि तन अति वहै । बरी विरह प्रतिवार ।
साह सिरावन नयन जल । उठति अधिक तन भ्भार ॥५८॥

रावन परतिय हेत लगि । दह सिरि दिये कुभाउ ।
दह मारग चंपावती । एकउ देत संकाउ ॥५९॥

जह पल लोचन चारि भे । तब जु दये जिय गांठ ।
तन गर पर दी छार भइ । धी तम छुट्टी गांठि ॥६०॥

मवन परहि संतोष सुनि । रसन गहै जपि सुचख ।
ए भक्षर हिव रस भैन । देखन चाह हि मुक्ख ॥६१॥

मिलि मनित पान भाहि तन । मन पाहुनो करित्त ।
को आमिग हि को सूमै । को देपहि चरित्त ॥६२॥

जो मुहि भावत सोइ करत । घस ध्यानिति मिलि चित्ति ।
यहै न जानत भाप मम । भावति परति मुनिति ॥६३॥

विरहागिन उर तिम जरइ । रसन कहन नहि जाइ ।
जिम दस मस्तक पीय उर । तिनि रिखनि जरै बुझाइ ॥६४॥

१५. मम मंसहु. १६. भिभरति ।

एकोतन का एक जिय। खेह करै किन काम।
मह जनम जनम कहुं एह सजो। जुठ जुंन तेरौ नाम ॥६५॥

पग देखत लगि साहि जिउ। नयन रहे पचि हारि।
जिउ प्रस्थानौ दिन करै। हुं राखित करि मनुहारि ॥६६॥

ताहि न साहि विसरियहु। दया[18] आधारि जीवंति।
हुं कुमदनि तुम्ह सरद ससि। कृपा करन पीवंति ॥६७॥

कह दिनियर कहा कमलिनी। कह कुमदनी मयंक।
प्रीति तिहुं पुर वल्लहा। कह राना कह रंक ॥६८॥

विन साहिब सव स्याम निसि। किउंव मोर तिय लेइ।
विरह व्यथा दुख कहति हुं। हुंकारौ न विदेइ ॥६९॥

सिसकति जारि भसम्म करि। मां जन लकि मृग अंक।
तिय वधू सुठ सब तैं कठिन। सुद्रनूं चरइ कलंक ॥७०॥

जौ ससि जुगवै रैनि किय। पलल गो नहिं नयन।
तापर कंटक किरन किय। पूरि रहति मम सैन ॥७१॥

जीव जतन करि मिलन कुं। मन पठयौ तूअ पासि।
मन कुच संकट फंधियौ। हिय धकधूको यौ सांस ॥७२॥

तैं जु दए दुख नखत सम। पिय गन तैंन सिराहि।
ए भ्रम राम विराम मुहि। इह विसाल निसि जाहि ॥७३॥

जाइ टक दृकि रैंन दिनि। गनत तराइन गैन।
डंडो भ्रकुटी नयन पल। तुलति समग्राल रैंनि ॥७४॥

को जानैं किहि करवर हि। पंकहि परे जु नयन।
करिवर छर कठेन लए। आवन दए वतैंन ॥७५॥

तुह देखन लगि मोह विधि। नइंन करति इक सत्थि।
पछताए कर सभ मरति। नख सिख तन पद हत्थि ॥७६॥

दव्व गव्व सोभाग हित। अरधंगो पुनि दीन।
दुक्ख न जानति हे सखी। विछुरति तिन्ह जौ कीन्ह ॥७७॥

विछरन सरिखौ दुख नहीं। मिलन समान न सुक्ख।
विधि ललाट तेउ अंक लिखि। संतति देखौ मुक्ख ॥७८॥

प्रिय मग्गहि जउ कीजियै। जनम अमग्गि न जाइ।
जिहि मग्गिहि पिय पाइयै। सो मग्ग देखहु आइ ॥७९॥

लोचन पत्री महि लिखूं। कै काढ़ि पथिक कर देउ।
इहै जुगति जिहि तूं मिलै। देखि जनम फल लेउ ॥८०॥

---

१७. मइ, १८. इया, १९. मोर।

मान महत कुल गर्व गुन । जप तप को रौसत्य ।
पेम पत्य पर त्यपर । जीवन समं समत्थ ॥८१॥

विरह अंकुरित हृदय भर । उस पारन मैलिन्ह ।
लोचन श्रवन तन परस मम । तिहि सिंचित तरु कीन्ह ॥८२॥

कै नैमम दै मन गवन । कै कुच कठिन तन हीय ।
यह रचना विपरीत कर । कह दरस देहि विधि पोय ॥८३॥

ठौर देखि लोचन न मह । निद्रा भावति मोहि ।
किहु करि भामति रैनि पिउ । धाम न देखु तोहि ॥८४॥

पत्री लिखति अनेक दुख । मरि चू लिखित हहि स्यास ।
समै लितीत जुव पसि गय । तिहि वाचति होहि दयाल ॥८५॥

पत्तो को हित देखि सखि । विग्न पग पिय पहि जाइ ।
मोहि न लेह हह पुरुष रति । त्रिभुवन सेह पठाइ ॥८६॥

बिछुरन समै जु पिय रहिउ । मिटे न स्याम के अंक ।
स्रवति लोचन जसद करि । धोवसि पवन कलंक ॥८७॥

घोइ विरहगिनि निवारक । ज्यारी जगत अनग ।
तिह कारिखि में स्याम भरि । कोकिल मीन कुरंग ॥८८॥

रूप पयासे विन रहत । लोचन चातिग दोन्ह ।
मन बाहर घर जाइ मुखि । पानिप पीवति कीन्ह ॥८९॥

रे मन लागो पाइ तुम । भट पुनि संगहि लेहि ।
श्रीखंड चंपक बरन तन । आलिगन मुह देहि ॥९०॥

विरह गयंद शरीर बन । तरु तोरति करि गव्व ।
करि न संभारति माह घरू । भावति करित सु सव्व ॥९१॥

संकुल अलि कजु फद हुते । विरहन गज मद पाइ ।
सो दीन्हो छोरि बसत पति । विय विलहिइ जाइ ॥९२॥

कामत याको रूप हुइ । हुं जहुरी बिन सीय ।
हहा भरत भ्रम उपज्यौ । रावन देख्यौ नीय ॥९३॥

धरी धरी उर कूप भरि । नैन रहिय घटि पंति ।
तुम सनेह सरवर अमिउ । पिय सींची इह भंति ॥९४॥

तु अमिन[१८] वल्लि म पनस सम । स्मरि स्मरि जरि जाइ ।
एक अवगुन महि सुरति । जिहि ठमि तपत बुझाइ ॥९५॥

लास रहे पर हार सखि । ज्योति रही भरतरम ।
अजहु न सोभित तास बिन । पछतायो पय हत्य ॥९६॥

---

१८. तुमगुन ।

सक तहि करि झंपो नैन । मति आवइ निसि सोइ ।
सुपनइ देखौ पिय वदन । इहु दरसन पुनि होइ ॥९७॥

दुख असुर हएति संचिरउ । मो तन सव्व सरीर ।
पंच भवानी प्रगट हुअ । संहु संहरि हरि पीय ॥९८॥

तुअ सनेह चंपावती । जन मन छोड़ो काउ ।
सवत इ दुल्लभ प्राण घट । तुअ मग रहौ कि जाउ ॥९९॥

चंपा चंपा जिय जपति । और हि मुक्कवि काम ।
नई सिष्ट ज वो । लेत उठूं तूअ नाम ॥१००॥

ज्ञान ध्यान संजमन व्रत । मंत्र यंत्र सभ सून ।
इहु भेखन प्रसन तूअ । कौ रक्षौ मम मौन ॥१०१॥

पंच जहां तहं पंच मग । पंच रहति नहि हत्थ ।
मल इक्कौ वलि इक्क कै । इक चलति पिय सत्थ ॥१०२॥

नवमिय विरहौ त जुप्पजै[१९] । किहि निमित्त किहि काज ।
मो तन देतन प्रेम वलि । चंप भवानी आज ॥१०३॥

मनसा वाचा करमना । कहौ तदिव्व कर लेउ ।
चंपक माला दरस पर । कोटि जीउ वलि देउ ॥१०४॥

रोही अवरोही जतन । विश्वास जिय जाम ।
इक्क कहै चंइक्कपा । प्रति लगाति तूअ नाम ॥१०५॥

किह जप तप किहु ज्ञान धन । किह विद्या किह राज ।
मैं सीव्यौ तु अ नाम निज । तु अ पेमहिं स्युं काज ॥१०६॥

वरिस दिउंस दिन वरस गय । गैवर खाचि जु लाल ।
ए प्रभु अजहु दयाल हुई । कृपा न करहु दवाल ॥१०७॥

जीवन दिन अवृथा सवै । आहि वांय सजि लीन्ह ।
पिय भेटन की येक मल । भुजा अलिंगन दीन्ह ॥१०८॥

प्रीतम भेटयो इह समै । सुन्यो अमिय मुख वैण ।
संप्रदाउ पुनि तिह घरी । विहु देखौ इह नैण ॥१०९॥

अंतरि पुट धाननि धरौ । तामहि देखौ पीय ।
वयन रचौ दुख कुं दहै । ए विरमावौ जीय ॥११०॥

विद्या रूप न अतिहि वल । उ बुधि गहि सरीर ।
जिस घट विरह न संचरइ । क्या जानै पर पीर ॥१११॥

सम चातुरी न वंध न हि । नव रस कियौ न नेह ।
विरस पीर जु न पीरियौ । क्या बुझइ सच एह ॥११२॥

---

१९. जिअ वध ।

सोधन इंद्र हरस पुनि । प्रागुर बस सताह ।
प्रेम चरित कहि नहि सकत । होहि सबै हककाह ॥११३॥
कवि विचार धरि सुगति पग । पुंसुव वोयनि कोरि ।
कति विशेष कवित्त गुन । भाखा ज्यौ काइ होइ ॥११४॥
कवि जन इक्क न भारती । कल्लोभति सविचित्त ।
मोकर देषौ आपमो । दोष चुरावह मित्त ॥११५॥
स्वाति सलिल पिय पेम सुभ । भाजन भाव धरंति ।
अहि विषमहि मुत्तिय मगति । कदलि कपूर भरंति ॥११६॥
महि मुख सुधा कि पाइयइ । सीतल तमु मन लेहि ।
दुजन पाहि असप्पनउ । सुचि स्वानेह का केह ॥११७॥

सिंगार-सतक भाषा

[illegible]

([illegible])

[illegible]

सिंगार सतक भाषा

ओ३म् नमो त्रैलोक्य मैं । प्राना कर करतार ।
प्रेम रूप उद्धरन जग । दया सिंधु भवतार ।।१।।
इक्कल रे पति लोक विय । सचेव वहि निसि जग्गि ।
आडंबर रुचि पेम कौ । रच्यो महम्मद लग्गि ।।२।।
सिंगार प्रभु सज्जि करि । वेगहि होइ सिंगार ।
मोह न हुई रंजहि सकल । रहो न बुद्धि विचार ।।३।।
पति सिर ताज सिंगार रस । अष्ट महानद आहि ।
भाव तरंग ,समान सव । नव रस रंजन साहि ।।४।।
रस आगम निवास रस । रस लंघित तिय काल ।
तिनही मह सुख उपज्य । रत विरत जंजाल ।।५।।
पेम उदधि तिय निद्दलगि । किय मत्थन मनमत्थ ।
पेम जार संसार पर । विस्तरीयौ नर नत्थ ।।६।।
मथ्यौ ज चौदह रतन लगि । ते तिय तन सव आहि ।
मूरख देवज पित्त जन । उदधि विगारयौ साहि ।।७।।
पुहंवी रतन ज उप्पजिउ । भयौ न सुरनर गोत ।
पटतर देखन तौ वनै । रति अनंग सुत होत ।।८।।
अलिमाला वल्लिन गई । अहि कुल दुरे पतार ।
मृग मद कौ करना छुअै । वरन वास तुअ वार ।।९।।
स्याम कुटिल चित्तह डसन[1] । परतषि विषधर आहि ।
मंत्र कहूँ जौ हसि पटत । करह गहत कच साहि ।।१०।।
सुरति श्रम जल उप्पजै । बूंद रही लट अंत ।
शिव लिलाट पै तृपति भै । अहि मुषि अमी चुवंति ।।११।।
घट पटी लट उन्ह है । छुट विज्जुल मुसकंति ।
बूंदज श्रम जल वदन थैं । विपरीत हि बरषंति ।।१२।।
श्रम जल बूंद ज चून भौं । अलक वनी फंद वारि ।
चित पर वीच रचत फंधिउ । सकइव कौ निरवारि ।।१३।।
पेम अषेटक करन लगि । राग पर त्रिय दिन्ह ।
अलका वरि वावरि रची । मो मन मृगधर लिन्ह ।।१४।।
कच झारत तम वित्थरिउ । गयौ सुरवि दधि माहि ।
अति भजु वंछति दरस मुख । भई संध्या कत जाहि ।।१५।।
कच बुटे तुअ सीस पर । पुहप रहे सोभंत ।
देखि अनंग खिसि गयौ । मानहु तिमिर हसंत ।।१६।।

---

१. रसन ।

मातंके उर उर नगर । नैन सजे तिन्ह संड ।
को जाने किहि पर तन्यौ । परै भु भौंह को बंड ।।१७।।
राम परय कर करम तव । सोइ को बंड भुव तास ।
त्यौरी तरुन जितामिघी । सरफट्रुति हिम फास ।।१८।।
प्रीतम कीटी चाप भुव । मैन धरे बज साहि ।
मर्द्ध दृष्टि उर मैं तनत । मरत गात चप ताहि ।।१९।।
मैन भालि कोदंड भुव । प्रगधरे कुच सूर ।
प्रवीन षु घावत वदन तन । विव फिटुत मुग कूर ।।२०।।
परिमल चढ़ित विस भरि[१] । बेमौ मदन प्रधान ।
जगतरे मा मुनिमय । दृष्टि चुकी नहि वान ।।२१।।
क्षुद्रावलि चंटिक मनो । नैन दीप उदोत ।
हुत तिम घूंघट तम करत । कोटि भीड बब होत ।।२२।।
भौंह अनूप धरि दृष्ट सरि । दया मई ता नं ति ।
कटाछ भाल उर मैं गडी । बदन न कछू मानंद ।।२३।।
मृगनैनी मृगराज कटि । मृग वाहन मुप जाहि ।
मृग संगो मृग मद तिलक । मृग रौझति सुर ताहि ।।२४।।
मृग कर्दव काननि गहैं । कमल मीन जल माहि ।
कंचन मंजन दैत दुरि । जाहि विलखि मैं नाहि ।।२५।।
प्ररुण सलज्ज उत्तग पल । करना इत भौरेहु ।
निर्मल से तम कजले । लोहन परमित एह ।।२६।।
नैन दीप जगमगत मुख । कोति रही तन धौरि ।
कजम[२] सोइ सीस पहरिउ । पल मुख कुंतल गौरि ।।२७।।
लोचन बानत पान किय । तनत मर ततिहकाल[३] ।
बंधति कज्जल बिपहु धर । मुक्कति के कह हाल ।।२८।।
चहु दिसि दिक्खत नहिं मिलत । जिउ सेगो[४] बसै न ।
भवननि सुबमती करत । कहा करै षु नयन ।।२९।।
द्रुम मुखा पानिप अमिय निधि । देखत पाइ अगात ।
नयन बिबिन अमलित बिनि । पीवती महं अघात ।।३०।।
छवि दुति बरसत नहि बनैं । पानिप उदधि समान ।
मैन किस किला हुई झपहि । रूप गहै परिमान ।।३१।।
रूप चांदिनी तन गहिउ । हस्यो बिरह तम जोर ।
अमिय किरन ससि बदन की । पीवत नयन चकोर ।।३२।।
प्रतुन सलज्ज उतंग फल । करना इस अवरेहु ।
बिमल सेत सोइ कज्जले । लोइन परमित एह ।।३३।।
मुख संपुट कुंदम बरन । जिहि दिक्ख कहत मुनि बगि ।
भरयौ कुम न काम न रतम । सिय बम रंकम सगि ।।३४।।

१. मृग २. कमल ३. तिकाल ४. सँगे ।

श्रम जल बुंद मुख चंद परि । हसि जु लेत पिय नाम ।
लोचन मध्य जु भसम करि । सींचि जु आवत काम ।।३५।।
हारावलि पैन्हौ जतन । सोभित मुतियन फंद ।
वदन वीच इम देखियत । ज्युं पावस बैठौ चंद ।।३६।।
तिन तो रहु राहु न गहै । तिय घूंघट करि टंक ।
वदन सुधाकर सरद कौ । मृग मद आउ कलंक ।।३७।।
चंपा वरन तुअ देखिकै । चंपा सतु तरु डार ।
कंचन समसर होन लगि । दिनहु सहन तन झार ।।३८।।
वदन चंपिका चंद सम । भूल्यौ भय मति चित्त ।
उह वंदीयै जगि दुइज दिनि । इह पति वंदइ नित्त ।।३९।।
मन पतंग फिरि फिरि परै । चंपा रूप तुअ जोति ।
रतन दीप मुख जग मगै । फूकि मरहि सुठि सौति ।।४०।।
हित परीति सहि जु चंपा । मूरति चंपा अनंग ।
तरु सुहाग तरु ना सकल । कंचन चंपा सुरंग ।।४१।।
कवि पटतर है मयंक सम । आनन चंपा सु काई ।
निःकलंक जलि लाट पर । सोठ लग्गत तिय पाई ।।४२।।
खंडित अधर जु दरपनहि । निरखि लई तिय सीक ।
मुख कुंदन जन जरिय पिय । चूनि रही जिन पीक ।।४३।।
वचन पान कछु कर गहे । बोलति सिथल जु वैन ।
मकरंद जु लयौ कमल जिम । देखहु सखि ए नैन ।।४४।।
ग्रहै जुनवरस साखि धरि । अर्द्ध प्रीति रंग जाहि ।
चंप वदन दुज राज कर । संकल्पौ जिउ साहि ।।४५।।
साहिव संचौ मैन रचि । शशि के तेजत याज ।
हेम पेम कुंदन करति । मूरति भरीअ चंपाजु ।।४६।।
नयन अवटि साचौ कियौ । पचि तरु चिति विधि आह ।
हिमकर हिम हिम कटित भरि । मूरति चंपा जुसाह ।।४७।।
कीर चंच रत्तिय कुटिल ।
सास पिमुक्कति नासिका । वर्णत वनत न मूल ।।४८।।
पल सकुचित पल उस्ससति । मधुप पुहप पर होइ ।
मुत्तिय मुकट जु इक्क पुर । त्रिपुर विराजत सोइ ।।४९।।
कहु फूली सुख तिन्ह रवा । कवहु विराजत नत्थ ।
विनह अलंकृत सोहिवी । छवि वर्ण अकथत्थ ।।५०।।
कहां वधू विद्रुम कवल । कहां मानिक कहां लाल ।
सुरत अंत कहत न वनहि । सोहत अधर गुलाल ।।५१।।
अधर सुरंग कुरंग भै । नैन कुरंग सुरंग ।
करै जु रंगति रंग तन । रहै न अंग सुचंग ।।५२।।

नयन जु आए रसन हुइ । सुमिर न वह दुप विन्ह ।
अधर पिव पर मौपषी । मर न व्यथा हुरिसिन्ह ॥५३॥
भ्रू कटाक्ष सोभित तरुनि । फिर चितवनि मुसकाति ।
मुद्रित भसि भ्रुकुटि मनौ । भौर कमल बिकसांति ॥५४॥
वल्लभ दृह भ्रमभौं रह्यौ । गए लच्छिनहि चिन्ह ।
पेम पियासे अधर मधु । कथा पुब्बक लिन्ह ॥५५॥
दिव्य कमल मुख बास मसि । भए बसन मसि ताहि ।
मुक्तिय धम बंधन भरे । सोभित चौंका साहि ॥५६॥
धसि चंदनि हीरा घरनि । गगन बीजु दधिमोति ।
दारिम मुख मुद्रित रहित । देखि दसन की जोति ॥५७॥
कूप चिबुक मो मन परित । पिया अधर जल आस ।
कुंतल कंटक कुटिल परि । कर करि कट्टति तास ॥५८॥
मनु तुम पेम हि गह रम्यौ । नयन अरस आकास ।
कूप चिबुक पर बावरे । पुनि निकसन को आस ॥५९॥
वदन सरोवर मदन जल । जुब्बन लहरी लैत ।
नैन पियासे दरस के । घूंघट घाट न देत ॥६०॥
कह पायो कंठ मोर पिक । कह कपोत कि कान ।
चलिति जु नारि फणिव गति । वर्णत बनै न वान ॥६१॥
मद जुब्बन कुच कुंभ दुइ । गर्जंति सीस मतंग ।
अर्द्ध मयंक लिलाट पर । अंकुश पञ्यो अनंग ॥६२॥
पन्नग पंकज मुखि गहै । जिर्प अनतिहां दिठ ।
उर सिंहासन साथि करि । साहिब साहिब इठ ॥६३॥
चक्रवाक कुच हुवी सर । मुखचिन्ह घटित सुघाट ।
तहाँ फुल्लित भई कुमुदिनी । देखत चंद ललाट ॥६४॥
उर सर परि कुच कमल जोत । मुद्रित मंचल काम ।
गहे जु सोरम मयन अलि । मति कलपी मोर स्याम ॥६५॥
संधि बहिः क्रम आनि करि । ताहि कुचह क्या किन्ह ।
देखत भावत जुब्बन हि । उठिके आदर दिन्ह ॥६६॥
लाय सरिस धाहक मदन । सरूप महस्कटि बंधि ।
कुच तूं या हिय रचित करि । धसो वहि क्रम संधि ॥६७॥
प्रीतम अंबर माहि रहु । कुच अंतर तम सत्य ।
निसि बासर उद्योततम । हरण करण मोहत्य ॥६८॥
मर बराहि जुब्बम समैं । भए जु सिहन उतंग ।
हुवी ठसायी पीय कहु । छाए हुरबरे अनंग ॥६९॥
तिह पुरष बस केलि करि । राखि करी मन मत्य ।
ता निमित्त कुच संमुहे । पुहमि पसारत हत्थ ॥७०॥

मंडलीक कुच अवल वल । उद्यत कठिन सगर्व ।
स्याम छत्र सिरि चक्रवति । कर दाइक जन सर्व ॥७१॥
न्याय पयोहर चक्रवति । कुंदन श्री फल आहि ।
दिग मंडल कर जे ग्रहत । ते करदे तव साहि ॥७२॥
भरे जु कुंदन कलस कुच । कुंद करन नखि कुंद ॥
जुव्वन मद गुन गर्व्व करि । मुखज मैन मसि बुंद ॥७३॥
चित्त हरन कंचन वरन । सिहुन रचे जगदीस ।
दृष्टि निवारण कर परस । मसि कज्जल दिय सीस ॥७४॥
जुव्वन समैं जु कंचुकी । कुच हैं दोउ उतंग ।
सिव जित्तन कहु गूडरा । मान हुईइ अनंग ॥७५॥
उब्भलता कर जोरि कंइ । कुच उन्नत कटि सुद्ध ।
मदन महाजल उम्मटिउ । घाघ निहारति मुद्ध ॥७६॥
तोरत अंग अनंग कुच । तापर परींजु दृष्टि ।
अति उतकंठा पुत्तरी । ऊछटि सीस वइट्ठ ॥७७॥
भृंगी कुल जनितंबयर । केहरि लंक जुसाहि ।
सौतिनि गव्व गयंद जिमि । भुंजत सौरभ साहि ॥७८॥
धूप सिखा रोमावली । शिव कुच अक्षत फूल ।
इह तपक्रम पायौ जु फल । साहिब पति अनुकूल ॥७९॥
पिय भेटत घर वलय वद । चंदन रहत न अंग ।
हित त कुंतल अधर कुच । पीर सहत मोर संग ॥८०॥
मज्जन राम सुगंध तन । अभरन वनैं अनूप ।
पान वदन छवि देखि मुनि । चेतुप मुक्कहि रूप ॥८१॥
मुकलित भूषन कुच कसन । मउ लित वलय मिराम ।
दंपति मदन विरच्चिये । थकवे सुरति संग्राम ॥८२॥
विभ्रम हलि मिलि थकित तन । दोउ निद्रा वि करीर ।
प्रीत गमन भुज फंद । फंदे अरुझे वारह वार ॥८३॥
निसि विभ्रम पुहपित नखत । परमल भिन्नित अंग ।
लोचन निद्रा सिथिल हित । गहत परस पर संग ॥८४॥
निद्रा नयन विलास गय । धूपित दीपग नार ।
सीरक मोतिन्ह पुलक तन । फीकौ वदन उगार ॥८५॥
दोऊ भावत अति पेम रत । सकुच पमुक्कि मिलेजु ।
सुरत अंत नयन नु मिलहि । दुरि मुसकांत भलेजु ॥८६॥
श्रम थके अंकम सिथिल । हेतत होत विमौन ।
हुं जानत पिय आनि है । रूसन वदि उव कौन ॥८७॥
भावत सुरत वियाम करि । मिलति उपजति सास ।
दुहु तन आउस साधि जन । जीय तैं इक्कहि आस ॥८८॥

कंकण पिठ्ठिहि देखियत । कंठ विना गुनहार ।
मो अरविंदन इक कर । कर तब कौन विचार ॥८९॥
रे अलि तू बिन बिस गहहि । मोषिहि नही मौर ।
जिम कमल छवि पुतली । तिम हिय और न ठौर ॥९०॥
कमल निरखति कमल नहि । कमल मिलहि न अघाइ ।
द्वादस कमलहि इक हुइ । कमल-कमल नहि जाइ ॥ ९१॥
कमल नयन जिनि खचित करि । गुंजु अनिमेष धराहि ।
बरनि मुक्ति गुण कुंचन । परत नीर हुइ जाहि ॥ ९२॥
नयन सीपि छवि स्वाति जल । पीपत पलक पसारि ।
पिय मुक्ताहल चाहियत । हसति मुकावलि मारि ॥ ९३॥
पिय पगि लागि मनाउ तूं । मिलपहि पछिम जाम ।
नहि अक्षर विपरीत कर । मानमि मुक्कहि मान ॥ ९४॥
कत आनन सुं रूसकरि । चित खिज्यौं किहि काज ।
रूसति रमणि मनाइयैं । उपम लात कि लाज ॥ ९५॥
चंचल तिरछत निमिख विधि । मनमोहन ज कहंत ।
तू अमूरति देखन हुलगि । ठौरहि ठौर उगंत ॥ ९६॥
लगनल पानि पवन्न बहु । कर अंगुल ज धरंति ।
रे मुक्ताहल निलज तिय । हंसि हंसि गुंज करंति ॥ ९७॥
कंकन पीठहि देखियत । कंठ बिना गुन हार ।
मो अरविंदु जु इककठा । करतब कौन विचार ॥ ९८॥
अक्षर मुक्ताहल रच्यौ । गुन गुंथि रच्यो पंति ।
भ्रमर मानो दोहरी । हिय संपुट इहि भांति ॥ ९९॥
मुक्तिय गुन हुवौ सकति । कुकत पीठ कमंठ ।
मध्य लाल को माल गुन । कंठ माल मम कंठ ॥१००॥
नयन चतुर मूरति चंपा । पल पल कुतिज धरंति ।
जनु कुतिमा के पंथ जिम । दिनि दिनि कला चढंति ॥१०१॥
मुरि बैठति पन्नगह जिम । कसव अनंत न चीम ।
मानुष चित नय सिप चरित । मंत्र न मानति तीय ॥१०२॥
इन्ह नैनन पहर खन नाहि । रसन नैन न बुझाहि ।
चित हुरत चेटक मदन । रूप कहां काहि साहि ॥१०३॥
उर समुद्र मथि मानमर । काढे लाल रतन्न ।
पेम हेम कुंदन करत । जूरे जुतिम रतन्न ॥१०४॥
इति सतम् ।

पीछे के भिन्नाक्षरों में यह पोथी हरख कीरति पासि लीन्ही थे । यह पोथी का पत्र ४ मंके चारि पत्र थे । पवना की थी । संवत १७२२ चैतवदि १ ॥

॥ सिंगार सतक भाषा ॥

सवाई पचीसी तथा सवाई बतीसी

[मुनि कान्तिसागर जी से प्राप्त]

लेखक—किसोर पोष्करणों

।। अथ सवाई पचीसी कृति दिली मै किसोर पोष्करणो ।।

।। दूहा ।।

सरसति समरूं स्यंघ गुण, अवतारां ज्यौ वोप ।।
पेस पचीसी भूप की, प्रगट बिसन पछोप ।।१।।

।। छंद जाति मनहर ।।

आगै आप अवतार, नृस्यंघ सरूप धार, हैनांकुस मारि, पहैलाद कूं उबारे जू
वारन पुकार कीरकार सुणि ततकार, जल माहि तारबे कूं पाव आपधारे जू ।।
हेटि हेटि जैतवार असुर पछार मार, अपने उधारन कूं ढील न करारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।२।।

आप अवतार रांम त्रेता मांहि धारि नांम, बड़े बड़े कीन्हे कांम दस्थ उधारे जू
जानकी कौं व्याहि अर सेयौ बनवास जाय, दुष्ट के उडायबे कूं जोग तप घोरं जू ।।
सीता को हरन हार तै बिडारयौ रावन ज, बार बार जीत कै अयोध्या हू पधारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।३।।

बड़े महाभारथ मैं स्वारथ न कीन्हौ कदै, सदा परमारथ सुक्यारथ के भारे जू
जीत कुरषेत, लंक भभीषण देत, तिके आय लेत आसिरो ते सरणि उबारे जू ।।
बड़े वड़े राषस तै षाष में मिलाय दिए, आषत किसौ जस कुल उजियारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।४।।

बड़े घाट दल छल बल सूं अमल कीयौ, वड़े वड़े जेर कीए आगैर अंबारे जू
आगै राजा मानस्यंघ लीए डाण समंद्रपै, चिगतौ न चित कीयौ कैई कांम सारे जू ।।
साहिव सूं सरषरु सदा मदि कूरम ऐं, तिके महै मंडल के मडलीक लोर जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।५।।

मान कै तो माहास्यंघ सदा षंगार हूवो, ताकी तरवारि आगै घरक संसारे जू
ताकै हुवौ जयस्यंघ सेवाहू से कीन्हे जेर, घेरि घेरि गनीमूं कूं फेरि हेरि मारे जू ।।
ताकै रांम औरंग पै सेवा कूं उवास्यौ सही, पात्यौ बोल बाप कौर आप वहां तारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ।।६।।

केहरि कू मार कै नौ तरवार ही कौं जौर, ठौर ठोर रोर मारे चोर र चिकारे जू
साथ तीन बीसी सेती मारे है हजार तीन, वड़े मुगलान पान पठान कूं मारे जू ।।
विष्ण भयो किष्ण कै ज, विष्ण के जगतपति, तौ कूं नमै मंडलीक नृप बंस सारे जू
नृप जयस्यंघ कौ उमंग आगै टिकै कौन, वाजत सवाई जी के जैत के नगोर जू ।।७।।

बामन से कान्हर सौ वृषभाष हुवौ तपै, बाके कोटि छपन जादौ रे रूप मोर जू
कान्ह कूंसि कंसासुर राज दीयौ उग्र कूं ज, बाध्या सुर प्रघासुर पटकि पछारे जू
ससिपाल जरासिंध को तो कीयो मान हीण, हरि लेके रुकमणि द्वारिका सिधारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥८॥

कान्हर मैं सोहस ज सोला माहि निज रूप, गोपमां प्रनूप जो पै बरनीन पारे जू
सुदामा के मंजे रोर, द्रौपदा को बाध्यो चीर, दीऐ राज पंडवा कूं कौरव स्यधारे जू ॥
वैसे ही प्रताप तपै महाराजा जयावती, बड़े बड़े भूपपति सरणि सिहारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥९॥

कलिक प्रगट मैं सुभट नृप जयसहि, मारे मारे बड़े मीर तीर तरवारे जू
नौरंग की रग ए कीयी जाय दखिन मैं, लीयौ गढ़ पेलना ज पड़ी धाक सारे जू ॥
बहादर साहि को बिलाय गई बहादरी, हुवौ सो कुहाडा कहूं चूं'पस्यौ न पारे जू ॥
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१०॥

भारी जुध भारथ कीयौ है पुव सांभरि मैं, मारे सैदखादे मीर मुगल पछारे जू
होडोमि को थाणां तो उठाय दयो पल माहि, पड़ी धाक साहि घर सकै न संभार जू ॥
फरक कूं तपत को थपो कीयौ पल माहि, करै सोही आप स्वाम नृप जी उचारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥११॥

फरकस्या फरि कहै जैस्यंघ कूं दीन्ही सीप, कोन्ही हठ जयसाहि फिरयौ सिरकारे जू
होणहार माफिक जू हुवौ सही सब कहै, कूरम को बोलबाला मुरि हीण हारे जू ॥
तेरा तप तेज आगै अजबैब मारे सैद, तेग बांधि कौन सकै तूं ही पाछी वारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१२॥

फरक के मरक मैं उमरक नृप किते, जिते मौहो गरक जबरक लगारे जू
सैद करी हरक जक रक बरक भए, सरकन रह्यौ पीछै तरकन मारे जू ॥
जो भीम गजराज मारे गए मरक ज्यौं, वा दिन किरादि कहूं बूझो न बकारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१३॥

सूण ज हुलास दोय महमद जैस्यंघ की, मुगल कूं बीजै नाहि कूरम करारे जू
जोम धारि अमी भई मस्जिद सबै खोयौ, जयूंही मरि गयौ भयौ धूक धूक सारे जू ॥
धीज र पतीज नेपवाई स्यपनाथ मंच, छपत के थंभ सदा स्वाम काम सारे जू ॥
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१४॥

अमी मूवे महमदस्या पातिसा नचित हुवौ, मेघबाहा जयसाहि कूं जस्यम सारे जू
बिदा हुवौ पटन पै बड़े से सामान भार, टिक्यौ नहीं मही कमी एक हलकारे जू ॥
हुते मुजराज सो किसान प कहावै तेरे, मिले आय किते भगे जादव तिहारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१५॥

अकबराबाद की तो सूबो पायो जयपती, बड़ो बड़े छत्रपती फिरत है मारे जू
तेरो जोम दस देषि कम दीपण सि कीन्ही, परोव पैं जेजीयौव नणायो भरे सारे जू ॥

तषत के घणी वीज षाय के बलायौ नृप, माफ कीयौ जेजीयार हुकम तिहारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१६॥

जेजीयो छूड़ायौ चहूं चक जस छायौ, कोई मूढै नाँहि आयौ इह बिरद उबारे जू
बड़ो जस पायौ ईह कांम सुनि दोरि ध्यायो, मुथरा से दिलो आयौ लष दल लोरे जू ॥
सवाई कीयौ सवायो बोल बाला, सुर छायो असुर गुमायो हद बाँधी सिरदारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१७॥

बालक बुरान्हपुर बीजापुर विदरज, बागड बदकसान अवाई बषारे जू
बारधि बुदेल बीणां बाणारस बुघेलज, बेहड बिकट बाट तहां घाट धारे जू ॥
बलाबंध बडा जूर वडज धाक, बीकपुरि बधनौरो हुकम करारे जू
नृप जयस्यंघ उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१८॥

काबिल कमाय कोर करणाट कासमीर, कांगरू किलंगी कोट वोटते उबारे जू
तिलंगी तंबोल तारा आगरै अंटरे इल्हावास आय मिले तेऊ सरणि तिहारे जू ॥
गोलकुंडा भानगढ़ भदोर के मिले रहे धारै तिके जोम ताकी षोम षोम मारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥१९॥

गंगा को कराय घाट गया को छुड़ायौ नेग, पांच पांच सै ज कौस लग आण सारे जू
हींदू ध्रम कीनो हद, भई ह हुकम थारै, ताईयां तषत सूं तो स्वांम ध्रम पारे जू ॥
पोकर पिराग लाग मेटि असुरान की ज, दया ध्रम तप तेज दुनीं जै जैकारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२०॥

काठा ज केमेर किते हेरि हेरि काढे घेरि, नर नारी तेरे राज सबै सुष धारे जू
बिकट मैवास सौ बिणा से भास दषै मेरे, मीणां आय मिले बली रही बिसतारे जू ॥
ठसक जवालूं की तो ठसक हुई ज ठस, कसि बसि का ए तैज बंकीया विडारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२१॥

पूर पाछी उत दाछी च्वारूं दिसि मंडल मै मानत जिहान आन रान पेसकारे जू
षोट षोठ देषियो जठै तिनकं निषौट कीए, चोरन के सिर चौट तैसमै सकारे जू ॥
वहालूं वडाई करूं आप तणी कलाकी ज, पावै कौन पार कबि किसोर उचारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगे टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२२॥

आपज प्रताप की तौ मानै छाप पाति साहा, द्रुबल बिलाप मेटबे कू है दातारे जू
स्यंघ गाय एक घाटि पीवत है तेरे राज गरीबि नवाज आप दुष्ट कूं पछारे जू ॥
निबल निवाजि कै ज सवल कूं दीजै सजा, एही जस जीवनि असीस देत सारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२३॥

आपकी बड़ाई की न करवा की मुति मोमै, आप हो प्रतछि रूप इंसुर संसारे जू
राजि के चरण गहे निसतारो होत सहो, महीपति म्हाराजा ताजा तेग तारे जू ॥
मारवाड़ मेवाड़ औ मालव मरैट मेव, सबै जन सेव करै देव बल धारे जू
नृप जयस्यंघ की उमंग आगै टिकै कौन, बाजत सवाई जी के जैत के नगारे जू ॥२४

॥ कवित्त छप्पै ॥

मची पीति के बंध, धंम पतिसाहा घाट थिर
सुभट स्यंभ सिरदार, नमै नृपबंस सबै नर ॥
किता करै अरदासि, किता पेस ले आवै
किता कहै करतार, सप घाट टबावै ॥
स्यवंस बंस कुछाहा तिलक नमै मीर पतिसाहि के
साजत सदा फते तमगु, म्हाराजा जयसाहि के ॥२५॥

पचीसी संपूर्ण लिपते सं० १७८१ का पोठ सु० ११॥ लिर्यंसा स्रति पीम्करणी किसोर मालपुरा का ॥

अथ सवाई जैस्यंघ जी म्हाराजाधिराज की बतीसी कृति ।
किसोर पोष्करणं मालपुरा का गोत्रे सज्याति देवेरा ।।

।। दूहा ।।

सरसति प्रसन हंसासणी, दीयो नाथ उपदेश ।
बतीसी मो बुधि सरू, श्री ज्यैसंघ की पेस ।।१।।

।। छंद इल्लः ।।

बिसन छवाज चढ़े दल साजि
लीए सूर जोध ज साथि अमानां ।।
भोमे भूपाल सबूं संक षईज
पेस कसी जसि तावी भराना ।।
रूघबंस महे अवतार भयो
सीताराम सहाय ज दास वषानां ।।
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ
फबै ज फते पचरंग निसानां ।।२।।

श्री दुध आप चट लंक पैं ज
कलंक कूं मारि कीए कमठानां ।।
थूंहानि मारि गरद करी
अरि डीघ आय लीयो ज सिचाना ।।
आडा वलाबंघ के केसर षान
षंगार देवा मंन मांहि किसाना ।।
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ
फबै ज फते पचरंग निसानां ।।३।।

गरव गल्यौं गुबरेडा तणों ज, षंडारि तणां ज षजाना
चक्रवात चिगथा महैमदसाहि, सितावी भेज्यौ घड़ी मांहि फुमाना ।।
ता राजगट का सुषा दीया ज तो, आय मिल्यौ ज कि ताज अमाना
तपै म्हाराजि सवाई ज्यैसंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ।।४।।

बड़े मीर अमीर धूजै पीर बिरज, भाजि गए ज कितेक फराना
षेलुणां गढ़ का ष्यालु कीया ज तो, पकड़ि से वाकू डील वचाना ।।
हसन अलीषां कीया अति जोर, सो गैब ही सं दगादार उड़ाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबैज फते पचरंग निसानां ।।५।।

पुहनि धूंसि बिधूसि गनीमर, दूनी में भाय बैठायो ज थामा
कासीर गढ़ का पूव सहया ज तो, आंवा ज वाला ज देख्या प्रमाना ॥
देवस्यंघ पंगार का भाजि गया ज तो सार सीया ज प्रकट गुमाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबैज फते पचरंग निसानां ॥६॥
कांगुरे गढ़ कोट संगूर घड़े था, ओवा दुगोला च उड़े असमानां
भावा दुनी आयके घेरि सीया, इक टकर मै सब मकर मानां ॥
हाडा बलावंघ कहै नृप सु, भय लाजीए पैस भए फिर्स माना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥७॥
सबै दल के घट सुघट कीए ज, सुभट की थाक बिकट मिसाना
कुघट घते कुंजघट बलावत, कुरम घट प्रगट प्रमाना ॥
मरट घरै ते हुवै प्रहैघट, निपट मिकट अघट घमासा
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥८॥
धमकि भ दौड़ के नृप गोपाल, दई पेसकसि बेटी निवराना
धमक सुणे मर कि मर पूजत, पूजन को ईस स्यंघ सूं स्वाना ॥
आद्रम भाय मिले सगरे, तापै केई लई केते धाम मराना ॥
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥६॥
कुविस सो जति सो भारमल, भणो भगवंत तिसो कुल माना
मान को मान सो मानि रबीहान बडे घमसान जीस्यौ असवाना ॥
जगैतो माही स्यंघ जैस्यघ जिसा ज, भए राम किस्न ज विष्ण बपानां
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज पते पचरग निसानां ॥१०॥
भापी पंडराजि प्रचंड की माण, अखंडन पैं डंड लेत घमानां
पुनि प्रचड के मुंड कु पेषि, अरिडं बिहंड बरंड मडाना ॥
इसो बलिबंड सुमेड मौतार, घमड सु जीतै केई घमसाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥११॥
गोड र तु वर घोषी मिडमारब, आद्रम हाडा जसार सगाना
सोलंषी पवार भाटीर सोसोद, कमधजवी गहैलोत मिलाना ॥
मदोड़ बुंदेल रवू हिंदवाना, सबै अधकैधाक सु पुरसानां
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरग निसानां ॥१२॥
मान समंद्र पैं डाण लीए, मुसलाण र राणपठाणा मिलाना
पूरब दषि पछी उतराध, नमोघरु थान ज माम को माना ॥
चिगयो पतिसाह कीयो कुछवाह, दिसी थम है अब कोज घराना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ॥१३॥
आप पठयो जयस्यंघ दियन कौं, आप भेरयौ ज मरेट को थाना
पल माहि पकडि भेज्यो सिवा कुंज, दिसी सुरताण मरान फुमानां ॥
रांमकवार उबार सोसोदीयो, आपकी बाहर बाप को बामा
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरग निसानां ॥१४॥

बरस नारायन उमर मैं, बड़ी गुमर सूं नवरंग मिलाना
कसाव कराब षराब कीए ज, सराब पुराब की आब उडाना ।।
पुकाब हूई पतिसाब नषाब धुकाब अराब चहूं आब दुपाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ।।१५।।

अराबा चहूं दुपवाय जैस्यंघ पै, आरंग जी चढनां फुरमानां
तदी महाराज कवार तैंऊ केसरया गहैरा सर्ब साथ कराना ।।
चढे हजरति अरजि हुईज, फबै ज फते पचरंग निसाना ।।१६।।

आप दिलीपति सा अवरंग, बुलाय हजूरि करा पकराना
कह्यौ मुष सूं अव जोर कहाज, दुवै पकरे निसतार किलाना ।।
दीयो ज किताब सवाई सरस, सदा जैंगजीत सू जस सुहाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज पते पचरंग निसानां ।।१७।।

पाय किताब तैं आब सवाय, लीयो गढ षेलनां एक चुटाना
नोंग को रंग एक कीयौ ज, सुरां अवतार भजै असुराना ।।
बहादर की ज बहादरी अैसे, बिलाय गई तैंसै आतुस छानां ।।
तपै म्हारजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज पते पचरंग निसानां ।।१८।।

सांमरि जीतरि लीन्ही हींडोनि, उडायो अनीत तणो कफराना
नीत धरी फ्रकस्या हजारति, सूनीत न चीत तपै सुरताना ।।
नीत घटे ते मिट्यौ तप तेज, भयो जफ जीत मृतग जिहाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसांना ।।१९।।

लूंण हराम भए सैंद जांम सो, मारे गए तैंसे बाज चिडानां
लूण हलाल ज कूरम को वज, मानैं हजरति दिली तषतानां ।।
तेरैं भरोसैं महैमंद दिलीपति, वैंठो किला मैं अलार कुराना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ।।२०।।

बडो जाणि मरद कूं सोंपी सरम, सरद के रोज गनीम के थाथा
माफ कीयौ तुमकुं जे जीयार, ओसाफ तुम्हारो कल्पा जरहाना ।।
आय नवाय कैं बृज कौ मोकम, कीन्हो षराब सो भागौ फिरानां
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ।।२१।।

पायो प्रकाश ज भूप उजास, भेजे सिवदास मैंवास उड़ाना
तिके अरिबास अैंवास उचास, सोरालै निसा सर दास क़हाना ।।
हुकम योही सिवदास कूं कीन्होज, पाडो गढासर भास दिषाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ फबै ज फते पचरंग निसानां ।।२२।।

केते भोमिए तो रजू आय हुवे, तूं चाला कीया लुरवा की वजाना
मिले आयरहूं तिन देकैं तिके, तिन कूं तो निवाजि कीया वालवाना ।।
रानैं कुरम राज सिरी जय साहि को, ताकी अवाई अरी डडिजाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ।।२३।।

पूहमि जोध र आगरा को सूबो, तहाँ अमल अडिग बैठाना
जीत्यो सही गुमरेजा को जग ज, पावटे आय लेगे अमसाना ।।
उमराव बड़े विख टालो करै ज, फते पचरंग निसाना ।।२४।।

घडाक हठी स्यथ कीन्ही भडाक, सी एक ही हाक गडाक चलाना
डाक बजाक सुणाक जैस्यघ की, काचो सड़ाक पडा कपटाना ।।
डाक बजाक सुणाक जैस्यघ
किलाक चोराक बिलाक गए ज, सवाई की धाक सूं भूमि समाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरंग निसाना ।।२५।।

भई तो पंजारि उड़ाय के आवोज, हाडा किजा पे संबंध रहाना
आडा बला पै चढ्यो अब हीरजू, जो गरधा कहुरी जमसाना ।।
अथौणि कू कुटिर लूट्याअजमेर, एरि भाजि गया सब छांडि ठिकाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसाना ।।२६।।

स्याहन सो जिको नाहि हुवै बलि, ता परि कूरम राव रिसाना
कहि इनके घर को अभिरथ, सो भारी संका उनका थरराना ।।
हेटि हेटि जीती हय रूम तणोवंस, तास प्रकास सुरास प्रमाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरंग निसाना ।।२७।।

दुष्ट धरा दिसि दिष्टि करै जू, अनिष्ट अवाई सुनत डराना
राम को इष्ट अरिष्ट को काल, सरिष्ट महा जग रिष्ट है जाना
आदिष्टि छाडे कूं जमिष्ट कीया ज, तेरो रिपू राव अमिनिवा माना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ फबै ज फते पचरंग निसाना ।।२८।।

चढै बारन डारन सु भूपाल, पाताल पुतालन सूज बखाना
बढे बेहद घट बिकट हुते, घट कूरम सु अवघट भयाना ।।
कसके कननम सखैस चमकंत, भूरि उड़ै उमती सरसाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसाना ।।२९।।

गरजै गयरा हय महीसठ हेव, किसो नृप बल सार सजाना
गहै री सम्बितान बसै जमि भयाण, सुमाण डेरे अवसाण अमाना ।।
धमकै ज परै झटकै धमकै, मनि सीस मिले पे सभास लीयाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसाना ।।३०।।

धरकै ज धरा धरकी जितनी, कितनी धरि भारि गरी उकलाना
भुजन के दल पल हुयी ज, प्रबल घटा मद गल सुहाना ।।
भिकसी ज सवाई चढे तै किसौर, पुतालन सु अपताल को पाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यघ, फबै ज फते पचरंग निसाना ।।३१।।

इती बुधि कहा कथू गुमराजि को, जो बुधि सारूप कीन्ही अपना
अंब के माय सनाथ भएज ज्यौ किष्ण सुदामा को रोर उड़ाना ।,

तैसे ही दालिद कूं हरीए, करोए बड़ी मोज ऋिगाज निधाना
तपै म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबैं ज फते पचरंग निसानां ।।३२।।
कीनें है व्दादस बींस कबित पहोक्करण व्यास किसोर प्रमानां
सभा सै पिचासे बदो तीज भादुर, वार अदीत उदार कहानां ।।
असीस हमारी कछू जगदीस, तुम्हारी सुदिष्टि सूं होत कल्याना
तपौ म्हाराजि सवाई जैस्यंघ, फबै ज फते पचरंग निसानां ।।
बतीसी संपूर्ण लिखतै ।।

ब्रजभाषा व्याकरण

मूल लेखक

लल्लू जी लाल

व्रजभाषा व्याकरण

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने मीरजा खां इब्न फखरुद्दीन मुहम्मद रजित तुहफ तुलहिंद नाम की पुस्तक में मिलने वाली भाखा व्याकरण को व्रजभाषा का ही नहीं आधुनिक भारोपीय देशी भाषाओं का सबसे पुराना व्याकरण बताया है। उन्होंने लिखा है—

"The Braj-Bhakha grammar in the Tuhfat would appear to be the oldest grammar of a Modern Indo-Aryan Vernacular that has so far to light".

इसी के साथ उन्होंने बताया है कि जेकब जोशुआकेटेलएर की हिन्दुस्तानी ग्रामर तथा पादरी मनोएल द अस्सूमपसम की बंगाली ग्रामर से मीरजा खां का व्याकरण भली प्रकार समानता कर सकता है। ये दोनों यूरोपियनों के व्याकरण १७४३ ई० में प्रकाशित हुए हैं।

मीरजा खां का व्याकरण १६७६ ई० का है।

इसी संबंध में मीरजा खां की व्याकरण के अंग्रेजी अनुवादक श्री जियाउद्दीन महोदय ने भी लिखा है—

"हिन्दी अथवा हिन्दोस्तानी की व्याकरण लिखने के लिए मीरजाखां से पहले भी कोई प्रयत्न हुआ उसका मुझे ज्ञान नहीं। जेकब जोशुआ केटेलएर ने हिन्दस्तानी की व्याकरण १७५१ ई० के लगभग लिखी जो डेविट मिल्लियस ने १७४३ ई० में प्रकाशित की। सर जी० ए० ग्रीयरसन † ने मसादिर-ए-भाखा नाम की व्याकरण के लेखक के तौर पर आगरा के लल्लूलाल (१८०३ ई०) का उल्लेख किया है।" मीरजाखां, केटेलिएर और लल्लूजीलाल के बीच में शुल्ज की हिन्दुस्तानी व्याकरण* का उल्लेख और होना चाहिए जो १७४५ में प्रकाशित हुई। किन्तु जहाँ तक व्रजभाषा का संबंध है मीरजाखां के बाद लल्लू जी लाल का ही नाम आता है। अतः यह लल्लू जी लाल का व्याकरण प्राचीन व्याकरणों में दूसरे स्थान पर आता है। यह १८११ ई० में प्रकाशित हुआ।

लल्लूजीलाल का यह व्याकरण अप्राप्य है। हम जो व्याकरण यहां दे रहे हैं वह नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता की प्रति की प्रतिलिपि है।

---

*देखिये प्रोसीडिंग्स सोसाइटी बंगाल मई १८९५ में ग्रियर्सन का निबंध।

† ग्रियर्सन महोदय ने १७७८ ई० में Grammatica Indostana published (lisbon) का भी उल्लेख किया है।

ब्रजभाषा व्याकरण

डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या ने मीरज़ा खां इब्न फखरुद्दीन मुहम्मद रजित तुहफ तुलहिंद नाम की पुस्तक में मिलने वाली भाखा व्याकरण को ब्रजभाषा का ही नहीं आधुनिक भारोपीय देशी भाषाओं का सबसे पुराना व्याकरण बताया है। उन्होंने लिखा है—

"The Braj-Bhakha grammar in the Tuhfat would appear to be the oldest grammar of a Modern Indo-Aryan Vernacular that has so far to light".

इसी के साथ उन्होंने बताया है कि जेकब जोशुआ केटेलएर की हिन्दुस्तानी ग्रामर तथा पादरी मनोएल द अस्सम्पसम की बंगाली ग्रामर से मीरज़ा खां का व्याकरण भली प्रकार समानता कर सकता है। ये दोनों यूरोपियनों के व्याकरण १७४३ ई० में प्रकाशित हुए हैं।

मीरज़ा खां का व्याकरण १६७६ ई० का है।

इसी संबंध में मीरज़ा खां की व्याकरण के अंग्रेजी अनुवादक श्री जियाउद्दीन महोदय ने भी लिखा है—

"हिन्दी अथवा हिन्दोस्तानी की व्याकरण लिखने के लिए मीरजाखां से पहले भी कोई प्रयत्न हुआ उसका मुझे ज्ञान नहीं। जेकब जोशुआ केटेलएर ने हिन्दुस्तानी की व्याकरण १७५१ ई० के लगभग लिखी जो डेविट मिलियस ने १७४३ ई० में प्रकाशित की। सर जी० ए० ग्रीयरसन † ने मसादिर-ए-भाखा नाम की व्याकरण के लेखक के तौर पर आगरा के लल्लूलाल (१८०३ ई०) का उल्लेख किया है।" मीरजाखां, केटेलिएर और लल्लूजीलाल के बीच में शुल्ज की हिन्दुस्तानी व्याकरण* का उल्लेख और होना चाहिए जो १७४५ में प्रकाशित हुई। किन्तु जहां तक ब्रजभाषा का संबंध है मीरजाखां के बाद लल्लू जी लाल का ही नाम आता है। अतः यह लल्लू जी लाल का व्याकरण प्राचीन व्याकरणों में दूसरे स्थान पर आता है। यह १८११ ई० में प्रकाशित हुआ।

लल्लूजीलाल का यह व्याकरण अप्राप्य है। हम जो व्याकरण यहां दे रहे हैं वह नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता की प्रति की प्रतिलिपि है।

---

*देखिये प्रोसीडिंग्स सोसाइटी बंगाल मई १८९५ में ग्रियर्सन का निबंध।

† ग्रियर्सन महोदय ने १७७८ ई० में Grammatica Indostana published (lisbon) का भी उल्लेख किया है।

GENERAL PRINCIPLES

OF

INFLECTION AND CONJUGATION

IN THE

BRUJ BHAKHA

OR

The Language spoken by the Hindoos in the Country of B
in the District of Goaliyur, in the Dominions of the
Raja of Bharutpoor, as also in the extensive
countries of Bueswara, Bulundawur,
Untur and Boonkelkhund.

Composed for the use of the Hindoostanee students

BY

SHREE LALLOO LAL KUVI

Bhakha Moonshee in the College of Fort William.

Calcutta.

Printed at the India Gazette Press.

1811.

INTRODUCTION.

In offering to the Public the following work upon the grammar of the Bruj Bhakha, the Author conceives, that a few preliminary observations upon its origin and construction, as well as the affinity it bears to the other dialects in use amongst the inhabitants of Hindoostan, may not be deemed superfluous. To render this more obvious he proposes, to illustrate them by examples drawn from the most brated writers.

The Hindoos suppose, that the Universe is divided into three Regions (Lokus) for each of which there is a distinct language : 1st, the Region in the Heavens, or Sooru Loku, supposed to be the residence of Angels : 2nd, the Region under the Earth, or Patalu Loku, (Patal signifying, under the earth) which is entirely inhabited by Snakes; and 3rd the Earth, Nuru Loku, or the world of Man; also Murtyu Loku, or the World of human beings.

For each of these three Worlds, there is also a distinct language, or Bhakha; and a mutual intercourse is supposed to have existed between their respective inhabitants till the commencement of the Kuli Joog, when, from the increasing wickedness of man, the power which he then possessed, of transporting himself to the other two regions, was taken from him; 1st, the Sooru Banee, or speech of the Sooru Loku, called also Sooru Bhakha and Devu Banee (Soor and Devu having the same meaning) which is supposed to be the Sanskrit a language too celebrated to need explanation here. An example of a Shloku (the name of the stanza in which the Sanskrit is written) is here given.

*शेते धरा भराकान्तेशेषेनारायण: स्वयम्
लक्षमोवन्तोनजानन्तिदु : सहांपरवेदनाम्

Shete d,hura b,hura kante sheshe.Narayunuh swuyum;
Lukshmee vunto nu janunti, dooh-suham puru vedunam.

INTRODUCTION.

In offering to the Public the following work upon the grammar of the Bruj Bhakha, the Author conceives, that a few preliminary observations upon its origin and construction, as well as the affinity it bears to the other dialects in use amongst the inhabitants of Hindoostan, may not be deemed superfluous. To render this more obvious he proposes, to illustrate them by examples drawn from the most brated writers.

The Hindoos suppose, that the Universe is divided into three Regions (Lokus) for each of which there is a distinct language: 1st, the Region in the Heavens, or Sooru Loku, supposed to be the residence of Angels: 2nd, the Region under the Earth, or Patalu Loku, (Patal signifying, under the earth) which is entirely inhabited by Snakes; and 3rd the Earth, Nuru Loku, or the world of Man; also Murtyu Loku, or the World of human beings.

For each of these three Worlds, there is also a distinct language, or Bhakha; and a mutual intercourse is supposed to have existed between their respective inhabitants till the commencement of the Kuli Joog, when, from the increasing wickedness of man, the power which he then possessed, of transporting himself to the other two regions, was taken from him; 1st, the Sooru Banee, or speech of the Sooru Loku, called also Sooru Bhakha and Devu Banee (Soor and Devu having the same meaning) which is supposed to be the Sanskrit a language too celebrated to need explanation here. An example of a Shloku (the name of the stanza in which the Sanskrit is written) is here given.

*शेते धरा भराकान्तेशेपेनारायण: स्वयम्
लक्षमोवन्तोनजानन्तिदु : सहांपरवेदनाम्

Shete d,hura b,hura kante sheshe Narayunuh swuyum;
Lukshmee vunto nu janunti, dooh-suham puru vedunam.

2nd, the Nag Banee, or speech of snakes. (Nag, signifying a snake, and Banee, B,hak,ha signify language,k,h and sh being interchangeable, as will be hereafter shewn) called also by them Prakrit, a language differing from the B,hak,ha (properly so called,) by having the Nooni Ghoonnu, or nasal noon, much more frequent, and in having many of its letters mooshuddud, an arrangement necessary to adapt it to the formation of the tongues of these animals. This language is no longer a living one, but may be considered as having been that of an age, intermediate with that in which Sanskrit was spoken, and the present B,hak,ha. An example is given

मेपविमाप विविज्जई मणुपिज्जई सोक वावराहोवि

पन्नोविणमक्काहेमणकस्मपवसंसहो मग्गी

Yenu vina nu vijju,ee unoo niju,ee sokuvaburahobi, putte hinururu, hunu kuffu nu vulluho uggee.

3rd, Nur Banee, or B,hak,ha, or that language of which we are treating. B,hak,ha, is a Sanskrit word, originally signifying speech in general, but now applied to the Nur Banee or living language of the Hindoos, particularly that spoken in the country of Bruj, & in the district of Go, aliyur, Bruj is a district lying between Dillee and Agra, and reverenced by the Hindoos with peculiar honours, as the scene of the last incarnation of the Deity in the from of Krishn, its capital is Mat, hoora, and it has also in it the cities of Brindabun and Gokool, both celebrated as the scenes of the sports and miracles of their favorite Deity; it also includes the dominions of the Raja of B,hurtpoor and the Hill of Govurd,hun. Go, aliyur is the country dependant upon the celebrated fort of that name, and is usually called Gohud; in these two districts the Bruj B,hak,ha is spoken in it utmost purity, and is considered by the Hindoos as the most comprehensive and eloquent language in existence. In proof of what we have observed of the three languages, the following couplet from the teeka of tke Sutsuhee, a work of Krishan Kubi, a celebrated Poet, is given.

पौरूष कविता त्रिविधिहै कवि सब कहत बखान।
प्रथम देववानी बहुरि प्राकृत भाषा जान
Puorooshu kuvita tribid,h huc, kuvi sub kuhut buk,han;
Prut,hum devuvanee buhoori Praktritu b,hasha jan.

And he particularly explains, that by the word B,hak,ha there used, he means the language spoken of above as peculiar to the countries of Bruj and Go,aliyur; for example :

देस देसतें होत सोभाषा बहुत प्रकार
बरनत हैं तिन सबनमें ग्वालियरी रससार
Des Des ten hot so b,hasha buhoot Prukar,
Burnut huen tin subun men gwaliyuree rusu sar.

The word B,hak,ha has thus become exclusively confined to this language, although as we have shewn, originally signifying any language whatsoever, and afterwards applied to the general colloquial language of Hindoostan.

It is difficult to ascertain from what time the Bruj B,hak,ha became a written language; but there is reason to suppose, that it was not till long after it had become the only living tongue in those districts, and with a very inconsiderable variation, the countries surrounding them; or whether it is derived originally from the Sanskrit, a point most positively denied by the Hindoos, but which appers almost certain, from the numerous words which have been transferred into it from that language. However this may be, it has attained such a degree of credit and excellence, that the Hindoo composers, of whatever part of Asia they may be, compose their poetic works in it as the Khiyal, Took, Dhoorpud, Bishun Pud, stoot, various kind of Songs, and the Kubit, Ch,hund, Doha, Chuopa,ee, Sor,tha, Koon, duliya, C,hhuppue, names of different kinds of Poems; and their learned men have in consequence declared it to equal the Sanskrit, as in the following couplet from Kesho Das in the Kubi Priya;

भाखा बोलन जानई जिनके कुलकोदास
भाषा कविमो मंद मति तिहि कुल केसो दास

B,hasha bol nu janu,ee jin ke kool kuodas
B,hasha kuvi b,huo mund muti tinhin kool kesodas.

And Koolputi Misr, who was a Brahmun and poet of great celebrity has praised the B,hak,ha in his Rusu Ruhusyu :

जिती देवबानी प्रगट है कविता की घात
ते भाषा में होयतो सब समझें रस बात।

Jitee devu banee prugut hue kuvita kee g,hat,
Te b,hasha men hoyu tuo sub sumjhen rus bat.

And again :

ब्रजभाषा भाषत सकल सुरबानी समतूल
ताहि बखानत सकल कवि जान महा रस मूल
Bruj b,hasha bhak,hut sukul soorbanee sum tool;
Tahi buk,hanat sukul kuvi jan muharusmool.
ब्रजभाषा बरनी कविन बहु विधि बुद्धि बिलास
सब को भूषन सत सैया करी बिहारीदास

Bruj b,hasha burnee kuvin buhoo bid,h boodd,hi bilas,
Sub kuo b,hooshun Sutsueya kuree Bihareedas.

The earliest books of which I have been able to obtain any information as having been written prior to the reign of Ukbur, are the Prut,hee Raj.

Rasa, or the wars of Prut,hee Raj and the Humeer Rasa; the former supposed to have been written about the time of the invasion of the Moosulmans under Muhmood of Ghuznu, by Chand Kub, who was ambassador to that Prince from Prit,hee Raj or Pit,huora, and the latter said to be much later, but of the exact date the author has been able to gain no information. With the exception of these, most of the books now to be found in the Bruj B,hak,ha were either written during the reign of that enlightened Prince, or since that period; and so scarce are those former works, that we may be considered as indebted to him for all which we possess in this comprehensive and most useful language.

As the author trusts, that he has by the foregoing remarks and examples, shewn the estimation in which this language is held by the learned Hindoos, he will conclude

by observing, that, although the countries which he has mentioned as being as it were the brith-place of this language, are sufficiently extensive to render it can object of interest; yet he has no doubt, it will become still more so when he asserts that, not only in these but in the extensive countries of Bueswara, B,hudawur, Boonkelk, hund and Untur Bed, with a variation too trifling to be preceived, but by an intimate acquaintance with them, this is the original and only vernacular tongue that throughout India, with a greater or smaller proportion of difference, naturally arising from accidental causes, is the ground-work of every dialect of the Aborigines of the Country.

The ancient language spoken in the Cities of Dillee and Agra, and stiill in general use among the Hindoos of those Cities, is distinguished by the inhabitants of Bruj, by the name of K,huree bolee, and by the Moosulmans indiscriminately by looch Hindee, nich,huch,h Hindee or in theth Hindee, and when mixed with the Arabic and persian from what is called the Rekhtu or Oordoo.

It may be necessary to observe, that there are in Hindee two letters which have not the pronounciation which would appear applicable to their from, viz. डढ which ough actually the harshd, and it's aspirate, are pronounced as harshr & its aspirate Ex : घोडा g,hoda, or g,hora, पढना pud,hna, or pur,hna. The letter ष is in discriminately pronounced Shu or K,hu, and the following letters are interchangeable लर, डर, वव, यज्ञ, शस, क्षछ, भव, मव, भव, गघ, यन, तथ, पक, यइ, येऐ, अय, पख, होंई, कज In this work जालो, जारी, थाली, थारी, घोड़ा, घोरा, घड़ा, घरा, वन, वन, वसुदेव, वसुदेव, यमुना, जमुना, यस, जस, शंख, संख, शिशु, सिसु, अक्षर, अछर, लक्षमी, लछमी, गांम, गांव, नांम, नांव. इमली, इंवलों, कम, कवू, कभी, कवी, पगड़ी, पघड़ी, पगा, पघा, रथ, रत, भरत, भरथ, योतिशी, योतिकी, योतिप, योतिक, यह, इह, आये, आएे, लाये, लाऐ, किया, किआ, दिया, दिआ, पट, खट, पप्टी, खष्टी, येही, येई, तूहो, तूई, तुहे, तुअे, तुक, तुज,

and in the new Edition of the Prem Sagur, lately printed; it will be observed that, there are five letters अखचकर substitut

for मपमहृन of the former Edition, these are not new bvt in fact the old Devunagree restored in lieu of the Kuet,hee nagree.

Conjugation of the verb hona, shewing the difference in the Termination of the Hindee (or K, huree bolee) and Bruj B, hak, ha.

	Hindee		B, hak, ha,
Sing	होना	To be	होनीं, हैबो
Sing	मैं हूं	I am	हौं, मैं, हौ
	तें, तू है	Thou art	तें, तू, है
	वह है	He is	वह सो है
plu	हम हैं	we are	हम हैं
	तुम हो	you are	तुम हो
	वे हैं	They are	वे ते हैं
1. sing.	होता था	I was, thou was, he was becoming.	होतु हो
2. plu.	होते थे	We, you, They, were becoming.	होत हैं
1. sing.	होती थी	Fem. I was, thou wast, she was becoming.	होति ही
2. plu.	होती थीं	fem. We, you, they were becoming.	होति हीं
sing. mas.	मैं था	I was	मैं, हूं, हो
	तू था	Thou wast	तू, तें, हो
	वह था	He was	वह सो हो
sing. fem.	मैं थी	I was	मैं, हौं ही
	तू थी	Thou wast	तू, तें ही
	वह थी	She was	वह सो ही
plu. mas.	हम थे	We were	हम हे
	तुम थे	You were	तुम हे
	वे थे	The ywere	ते वे हे
sing.	मे हुम्रा	I became	वे ते हीं
	तें तू हुम्रा	Thou becomest	तें तू मयी
	वह हुम्रा	He became	वह सो मयो
plu. fem.	तुम थीं	You were	तुम हीं
	वे थीं	They were	वे ते हीं
	हम थीं	We were	हम हीं

sing. mas	मैं हुई	I became	हौं मैं भई
	तैं तू हुई	Thou becamest	तैं तू भई
	वह हुई	She became	वह सो भई
plu. mas.	हम हुए	We became	हम भये
	तुम हुए	You became	तुम भये
	वे हुए	They became	वे ते भये
plu. fem.	हम हुईं	We became	हम भईं
	तुम हुईं	You became	तुम भईं
	वे हुईं	They became	वे ते भईं
sing. mas.	मैं हुआ था	I had been	हौं मैं भयौ हो
	तैं तू हुआ था	Thou hadst been	तैं तू भयौ हो
	वह हुआ था	He had been	वह सो भयौ हो
sing. fem.	मैं हुई थी	I had been	हौं मैं भई ही
	तैं तू हुई थी	Thou hadst been	तैं तू भई ही
	वह हुई थी	She had been	वह सो भई ही
plu. mas.	हम हुए थे	We had been	हम भये हैं
	तुम हुए थे	You had been	तुम भये हैं
	वे हुए थे	They had been	वे ते भये हैं
plu. fem.	हम हुई थीं	We had been	हम भई हीं
	तुम हुई थीं	You had been	तुम भई हीं
	वे हुई थीं	They had been	वे ते भई हों
sing. mas.	मैं होउंगा	I shall, or will be	हौं मैं होउंगो हैहौं।
	तू तैं होवेगा	Thou shalt, or wilt be	तू तैं होयगो हैहै
	वह होवेगा	He shall, or will be	वह सो होयगों हैव्है
sing. fem.	मैं होउंगी	I shall, or will be	मैं हौ होउंगी हैव्हों
	तैं तू होवेगी	Thou shalt, or wilt be	तू तैं होयगी हैव्है
	वह होवेगी	She shall, or will be	वह सो होयगी हैव्है
plu. mas.	हम होंगे	We Shall or will be	हम होंयगे हैव्है
	तुम होगे	You shall, or will be	तुम होंउगे हैव्है
	वे होंगे	They shall, or will be	वे ते होंयगे हैव्हैं
plu. fem.	हम होंगी	We shall, or will be	हम होंयगीं हैव्हैं
	तुम होगी	You shall, or will be	तुम होउगी हैव्हो
	वे होंगीं	They shall, or will be	वे ते होंयगीं हैव्हैं
sing.	मैं होउं	I be, or I may be	हौं मैं होंउं
	तैं तू होवे	Thou beest.	तैं तू होय
	वह होवे	He be	वह सो होय
plu.	हम होवें	We be	हम होंय
	तुम हो	You be	तुम हो

	वे होवें	They be	वे होंय
sing.	होता	I were, Thou wert, He were	हो तौ तु
plu.	होते	We, you, they, were.	हो त ते
sing. fem.	होती	I were, thou wert, she were.	होती
plu. fem.	होतीं	We, you, they, were.	होतीं
sing. mas.	होनेवाला होनेहारा	Becoming	होनवारो होनहारो
Fem. sing	होनेवाली होनेहारी	Becoming.	होनवारी होनहारी
plu. mas.	होनेवाले होनेहारे	Becoming.	होनवारे होनहारे
fem. plu.	होनेवालीं होनेहारीं	Becoming.	होनवारीं होनहारीं
	हुआ	Become	भयौ
	होनेपर	About to be	होन परपै
	होने पै		हैवे पर पै
	हुआ चाहता है	About to be	भयौ चाहतु है
	मेरा	My	मेरौ
	तेरा	Thy	तेरौ
	उसका	His, her, its	वा, ता को
	मुझको	To me	मोकौं
	तुमको	To thee	तोकौं
	उसको	To him, her, or it	वा ताकौं
	मुझे	To me	मोहि
	तुझे	To thee	तोहि
	उसे	To him, her, or it	वा, ताहि
	इसका	Of this	याको
	उसका	That	वाको
	तिसका	Of that or it	ताको
	मुझसे	From me	मो, मोतें
	तुझसे	From thee	तो सों तें
	उससे	From him, her or it	वा तासों तें
	तिससे	From that	ता, सों तें
	इससे	From this	या, सों तें
	अपना	Own	आपनो
	कौन	Who ?	कौन को
	किसका	Whose ?	काको

	कैसा	How ? of what kind ?	कैसौ
	किसको	To whom ?	काकौं
	किसे		काहि
	किससे	From whom ?	का सों तें
	क्या	What ?	कहा
	कोई	Any body	कोऊ
	किसीका	Of any body	काहूकौ
	किसूको	To any body	काहूकौं
	किसे	Whom	काहि
	कुछ	Some	कुछ
	किधर	Whither ?	किस
	क्यों	Why	क्यौं कत
	कभी	Ever.	कबहू
	जो	Who	जो जौन
plu.	जो	Who	जे
	जिसका	of which	जाकौ
	जिसको	To whom	जाकौं
	जिसे		जाहि
	जिससे	From whom	जा सों तें
	तक	To, upto;	लौं
	जिनने	Who	जिन
	जिन्होंने	Who	जिननि
	जितना	As much as	जेतौ
	जैसा	As, such, so	जैसौ
	जितना	As much as, so much	जितनौ जितेक
	जिधर	Where ever	जित
	भला	Well, good	भलौ
	भले	Good	भले

खड़ी बोली

निकलन चौखट से घरकी बाहर जो पट की ओकल ठिठक रहा है ।
सिमल के घट से तेरे दरस को नयन में आजी अटक रहा है ।।
अगन ने तेरे विरह की जब से झुलस दिया है मेरा कलेजा ।
हियेकी धड़कन में क्या बताऊं यह कोयला सा चटक -
क्या कुढब पड़गया है उलकेडा, हरि भजन बिन नहीं है

नाम मल्ली से पारहूं पलमें कृष्ण बिन मांझ भार है बेड़ा
लगके चरनों से कृष्ण के यह कहूं कुंजगलियों में हो जो मुटभेड़ा
वो मुके ठौन यह प्रबल हरिश्री जैसे ध्रू को दिया प्रटल खेड़ा
तेरे मिलने की बाट है सीधी यों ही मारें हैं कितने भटभेड़ा
कृष्ण को रख गुपाल नित उठ भोग मिसरी मक्खन मलाइ और पेड़ा
यही सब में रहै हरि ग्राप हर हर से नियारा है
यही है देखलो परतछ जगत उस का पंसारा है
उसीने बात के कहते ही यह रचना रची सारी
उन्हींने क्या प्रसग ब्रह्मांड यह मदिर संवारा है
उसी का नाम ले के तर गये लाखों कड़ोड़ों यहां नसीना नाम जिसने
हरि का उसका बोझ भारा है
किया था गर्व सागर ने कि सरवर कौन है मेरे कि ठौन प्रबली से से प्रचमन
किया मीठे को खारा है
कुटुम को देख भूला है नहो साथी कोई उस बिन न भाई बंधू है
तेरा यहां भव सुत न दारा है
जो चातुर है सो मन में रह निराला जगत से भव यहां
कि जैसे ग्रांच के लगने से भागे तड़फ पारा है।

भाषा

उनबिन सब ऋतु फिरगई देख दिनन के फेर,
जेठ भिजोई ग्रांसुवनि सावन जारी पेर
गौन समें फेंटा गह्यो सुंदरि हित जिय जानि,
छूटत ही दोउ छुटे उत फेंटा इत प्रान
मन राखों हों बरज कै बिय राखों समुझाय
मैना वरजे नारहें मिलें ग्रगाऊ जाय।
जब बरजे तब नारहे गये प्रेमरस लैन
ग्राप बस तें पर बस भये ये बिसवासी नैन
प्रीत जु ऐसी कीजिये ज्यों निस चंदा हेत।
ससि बिन निस है सांवरी निस बिन चंदा सेत।
कागद भीजत नैम जल कर कांपत मसि सेत
पापी बिरहा मन बसत बिया लिखन नहीं देत
बिरही लोयन में रहत तिय बिन और गंभीर
मीन रहत सब नीर में हम नीननि में मीर
तेरे बिरह समुद्र में हों जहाज भई कंत
तन मन जोबन बूड़ि यो प्रेम ध्वजा फहरंत
रोम रोम बूर्दे पुर्य लोग प्रस्यद कहंत।

संजनी सजन बियोग तें सब तन रुदन करंत
चतुर चितेरो जौं लिखै रचि पचि मूरति नारि
वह चितवन अरू मुरहंसनि किहिं विधि लिखै संवार

BURSES IN K, KUREE BOLEE.

NIKULnu chuok, hut se g,hur kee bahur, jo put kee oj, hult, hit, huk ruja hue,

Simut ke g, hut se tire durus ko nuyun men a jee uuk ruha hu
Ugun ne tere biruh kee jub se h,hoolus diya hue mere kule ja,
Hiye kee d,hurkun muen kya buta, oon yih ko, ela sa chutuk ruha hue.

Kya kood, hub pur guya hue ooj, hera,
Huri b,hujun bin nuheen hue sulj, hera.
Nam bullee se par hoon pul men,
Krishn bin man j,h d,har hue bera
Lug ke churnon se krishn ke yih kuhoon,
Koonj guliyon men ho jo mootb, hera.
Do moo j,he t,hour wooh uchul huri jee,
Jue se D,hroo ko diya utul k,hera.
Tere milan kee bat hue seed,hee,
Yonhee mare hue kitne b'hutb,hera.
Krishn Ko ruk,h goopal nit oot,h b,hog,
Misree mukk, hun mula,ee uor pera.
Wuhee sub men ruhe huri ap hur hur se niyara hue
wuhee hue dek,h lo purtuch,h, jugut ooska pusara hue.
Oosee ne bat ke kuhte hee yih rachna ruchee saree,
Oonheen ne kya ulug bruhmand yih mundir sunwara hue.
Oosee ka nam leke tur guye lak,hon kuroron yuhan,
Nu leena nam jisne huri ka ooska boj,h b,hara hue.
Kiya t,ha gurb sagur ne ki surbur kuon hue mere,
Ki teen unjlee se le uchmun kiya meet,he ko k,hara hue.
Kootoom ko dek,h b,hoola hue nuheen sat,hee ko,ee oos bin,
Nu b,ha,ee bund,hoo hue tera yuhan ub soot nu dara hue.
Jo chatoor hue to mun men ruh nirala jugt se ub yuhan,
Ki juese anch ke lugne se b,hage turp,h para hue.

B,HASHA DOHA

Oon bin sub ritoo p,hir gu,een dek,h dinun ke p,her,
Jet,h b,hijo,ee ans owun sawun jaree g,her.
Guon sumen p,huenta guhyo soondur hit jivi jan,
Ch,hootut hee do,oo ch,hoote oot p,huenta it pran.
Mun rak,hon hon buruj kue jiyu rak,hon sumooj,hae,
Nuena burje na ruhen milen uga,oo ja,e—.
Jub burje tub na ruhe guye prem rus luen,
Up bus ten pur bus b,huye ye biswasee nuen.
Preet jo uesee keejiye jyon nis chunda het,
Susi bin nis hue sanwree nis bin chunda set.
Kagud b,heejut nuen jul, kur kamput mnsi let,
Papee birha mun busut bit,ha lik,hun nuheen det.
Birhee loyun men ruhut tiyu bin neer gumb,heer,
Meen ruhut sub neer men in meenun men neer.
Tere biruh sumoodr men hon juhaj b,huee kunt,
Tun mun johun booriyuo prem d,hwuja p,huhrunt.
Rom Rom boonden choowen log pruswed kuhunt
Sujunee sujun biyog ten sub tun roodun kurunt.
Chutoor chiteruo juo lik,hue ruch puch moorut nar,
Wuh chitwun uroo moor hunsun kihin bid,h lik,hue sunwar.

THE HINDEE ROMAN ORTHOGRAPHICAL ALPHABET.

According to Dr. Borthwick Gilchrists excellent System.

u	a	i	ee	oo	oo	ri	ree	lri	lree
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ

e	ue	o	uo	n	h
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः

k	k,h	g	g,h	n	ch	ch,h	j	j,h	n
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ

t	t,h	d	d,h	n	t	t,h	d	d,h	n
ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न

p	p,h	b	b,h	m	y	r	l	v	s	sh	s
प	फ	व	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स

h	h	ksh	gr
ह		क्ष	ज्ञ

ku	ka	ki	kee	koo	koo	ke	kue	ko
क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को

kuo	kung	kuh
कौ	कं	कः

अस्मा

हालति

सेग़ऐवाहिद		सेग़ऐजमअ
फ़ाइल	पुरूप	पुरूप
इज़ाफ़त	पुरूप को के को	पुरूपनि को के की
मफ़ऊल	पुरूप कों	पुरूपनि कौं
निदा	हे पुरूप	हे पुरूपी

हालति

फ़ाइल	पुत्र	पुत्र
इज़ाफ़त	पुत्र को के को	पुत्रनि को के की
मफ़ऊल	पुत्र कौं	पुत्रनि कौं
निदा	हे पुत्र	हे पुत्री

हालति

फ़ाइल	पुत्री	पुत्री
इज़ाफ़त	पुत्री को के की	पुत्रीन पुत्रियन को के की
मफ़ऊल	पुत्री कौं	पुत्रीन पुत्रियन कौं
निदा	हे पुत्री	हे पुत्रियौ

OF NOUNS.

Singular.	Plural.
N. A. man, or the man.	Men.
G. A. man's, the man's or of a or the man.	Men's, or the men.
A. A. or the man.	Men, or the men.
V. O. man ?	O men ?

N. A. or the son	Sons
G. of a, or the son.	Of sons.
A. A., or the son.	Sons.
V. O. son ?	O sons ?

N. A, or the daughter.	Daughters.
G. Of a, or the daughter.	Of daughters.
A. A, or the daughter.	Daughters.
V. O daughter ?	O daughters ?

अस्मा

	वाहिद	जमअ
हालति		
फाइल	पोथी	पोथीं
इजाफ़त	पोथी को के की	पोथीन पोथियन को के की
मफ़ऊल	पोथी कौं	पोथीन पोथियन कौं
निदा	हे पोथी	हे पोथियौ

जमाइर

मुतकल्लिम

हालति		
फाइल	हौं मैं	हम
इजाफ़त	मे रो रे री	हमारो रे रो
मफ़ऊल	मोकौं मोहि	हमकौं हमनकौं हमें

हाज़िर

हालति		
फाइल	तू तैं	तुम
इजाफ़त	ते रो रे री	तिहा तुम्हा रो रे री
मफ़ऊल	तोकौं तोहि	तुमकौं तुमनिकौं तुम्हें
निदा	यहे तू तैं	यहो तुम

OF NOUNS.

Singular.	Plural.
N. A, or the book.	Bookr
G. of a, or the book.	Of books.
A. A, or the book.	Books.
V. O book ?	O books ?

OF PRONOUNS.

Ist Person.

N. I	We
G. My, mine, or of me.	Our, or of us.
A. Me	Us.

2nd Person.

N. Thou.	You.
G. Thy, thine, or of thee.	Your, or of you
A. Thee	You.
V. O thou ?	O you ?

ज़माइर

हालत	ग़ाइब	
वाहिद		जमअ
फ़ाइल	वह सो	वे ते
इज़ाफ़त	वा ता को के को	उन विन तिन को के की
मफ़ऊल	वा ता कौं हि	उन विन तिन कौं उ ति वि न्ह

अस्माएइशारः

बई़द

हालत		
फ़ाइल	वह सो	वे ते
इज़ाफ़त	वा ता की के की	उन विन तिन को के की
मफ़ऊल	वा ता कौं वा ता हि	उन विन तिनकौं उ ति वि न्हें

क़रीब

हालत		
फ़ाइल	यह	ये
इज़ाफ़त	या को के की	इन को के की
मफ़ऊल	या कौं याहि	इन कौं इन्हें

OF PRONOUNS.

3rd Person.

Singular.	Plural.
N. He, she it.	They.
G. His, her's, it's.	Their, of them.
A. Him, her, it.	Them.

DEMONSTRATIVE PRONOUN.

REMOTE.

N. That	They, those.
G. Of that.	Of them, their.
A. That.	That.

PROXIMATE.

N. This	These.
G. Of this.	Their, of these.
A. This.	These.

ज़माइर

मुश्तरक

वाहिद	जमा

हालति

फ़ाइल	आप
इज़ाफ़त	आप की के की
मफ़ऊल	आप आपन कौं

इस्तिफ़हाम

हालति

फ़ाइल	कौन को	कौन को
इज़ाफ़त	का की के की	किन की के की
मफ़ऊल	काकौं काहि	किनकौं किन्हैं

हालति

फ़ाइल	कहा
इज़ाफ़त	काहे की के की
मफ़ऊल	काहे कौं

PRONOUNS.

[illegible] Plural.

1. [illegible] He, She, &c.
2. [illegible] my, thy, his, our, your &c.
3. [illegible]

[illegible]

[illegible]

मौसूल

	वाहिद	जमअ्
हालति		
फ़ाइल	जो जौन	जे
इज़ाफ़त	जा की के की	जिन जिननि की के की
मफ़ऊल	जाकौं जाहि	जिन जिननि कौं जिन्हैं

नकर.

हालति		
फ़ाइल	कोऊ	कोऊ
इज़ाफ़त	काहू की के की	किन्हू किन्हीं की के की
मफ़ऊल	काहू कौं	किन्हू किन्हीं कौं

हालति		
फ़ाइल	कछू	कछू
इज़ाफ़त	काहू की के की	किन्हू किन्हीं की के की
मफ़ऊल	काहू कौं	किन्हीं कौं

PRONOUNS.

Relative

Singular.	Plural.
N. Who which what.	
G. Whose, of which, & c.	
A. Whom, which, & c.	

Pronomical Adjectives.

N. A, any, person, body, or thing	Some persons, bodies or things.
G. Of one persons, body of thing.	Of some persons, &c.
A. A, an, any, person, & c.	Some persons, &c.

N. Any.	Some.
G. Of any.	Of some.
A. Any.	Some.

सिफ़तओमौसूफ़

वाहिद		जमअ्

हालति

फ़ाइल	भलीमनुष	भले मनुष
इज़ाफ़त	भलेमनुष की के की	भलेमनुषनि की के की
मफ़ऊल	भलेमनुष कौं	भलेमनुषनिकौं कौं
निदा	हे भले मनुष	हे भले मनुषो

हालति

फ़ाइल	भलोछोहरा	भले छोहरा
इज़ाफ़त	भले छोहरा की के की	भले छोहरानि की के की
मफ़ऊल	भलेछोहरा कौं	भले छोहरानि कौं
निदा	हे भले छोहरा	हे भले छहराओ

हालति

फ़ाइल	भलीपोथी	भलीपोथी
इज़ाफ़त	भलीपोथी कौं के की	भलीपोथीन भलीपोथियन की के की
मफ़ऊल	भलीपोथी कौं	भलीपोथियन भलीपोथीन कौं
निदा	हे भलीपोथी	हे भली पोथियो

OF ADJECTIVES, WITH THEIR SUBSTANTIVES.

Singular.	Plural.
N. A, or the good man.	Good men
G. Of a, or the good man.	Of good men.
A. A, or the good man.	Good men.
V. O good man ?	O good men ?

N. A good boy.	good boys.
G. Of a good boy.	Of good boys.
A. good boy.	Good boys.
V. O good boy ?	O good boys ?

N. A, or the good book.	Good books.
G. Of a, or the good book.	Of good books.
A. A, or the good book.	Good books.
V. O good book ?	O good books ?

सिफ़तओमौसूफ़

वाहिद		जमअ्

हालति

फाइल	भलीपुत्री	भलीपुत्री
इज़ाफ़त	भलीपुत्री की के की	भलीपुत्रीन भलीपुत्रियन की के की
मफ़ऊल	भलीपुत्री कौं	भलीपुत्रीन भलीपुत्रियन कौं
निदा	हे भली पुत्री	हे भली पुत्रियौ

राबितऐमअ्रूफ

हाल हवंदो

वाहिद	हाल	जमअ्

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं हौं	हम हैं
मुखातब	तू तैं है	तुम हैं
ग़ाइब	वह सो है	वे ते हैं

इस्तिमरारी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं होतुहौ	हम होतहे
मुखातब	तू तैं होतुहो	तुम होता है
ग़ाइब	वह सो होतुहो	वे ते होत है

OF ADJECTIVES, WITH THEIR SUBSTANTIVES.

Singular.	Plural.
N. A, good daughter.	Good daughters.
G. Of a good daughter.	Of good daughters.
A. A good daughter.	Good daughters.
V. O good daughter ?	O good daughters ?

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

---

to be

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am.	We are.
2. Thou art.	You are.
3. He is.	They are.

Preterimperfect.

1. I did, or was.	We did or were.
2. Thou didst, or wast.	You did or were.
3. He did, or was.	They did or were.

माज़ीमुतलक़

वाहिद		जमअ
सेग़ऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं हो के भयौ	हम हे कै भये
मुख़ातब	तू तें हो कै भयौ	तुम हे कै भये
ग़ाइब	वह सो हो कै भयौ	वे ते कै भये

माज़ीक़रीब

से.ग़ऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं भयौ हौं	हम हुऐ कै भये हैं
मुख़ातब	तू तें भयौ है	तुम हुऐ कै भये हौ
ग़ाइब	वह सो भयौ है	वे ते हुऐ कै भये हैं

मीज़बई.द

सेग़ऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं भयौ हो	हम हुऐ कै भये हे
मुख़ातब	तू तें भयौ हो	तुम हुऐ कै भये हे
ग़ाइब	वह सो भयौ हो	वे ते हुऐ कै भये हे

मुस्तक़बिल

से.गऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं होउंगो के है हौं	हम होंयगे कै है हे
ग़ाइब	वह सो होयगी कै है है	वे ते होंयगे कै है है
मुख़ातब	तू तें होयगो कै हुऐहै	तुम हो उगे कै हैए हौ

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE

Perfect.

Singular.	Plural.
1. I was.	We were.
2. Thou wast.	You were.
3. He was.	They were.

Preterperfect

1. I have been.	We have been.
2. Thou hast been.	You have been.
3. He has been.	They have been.

Preterpluperfect.

1. I had been.	We had been.
2. Thou hadst been.	You had been.
3. He had been.	They had been.

Future.

1. I shall, or will be.	We shall, or will be.
2. Thou shalt, or wilt be.	You shall, or will be.
3. He shall, or will be.	They shall, or will be.

अमर

सेग़ऐ

वाहिद		जमअ
मुतकल्लिम	हौं मैं हौं उं	हम हौंय
मुख़ातब	तू तैं हो	तुम होउ
ग़ाइब	वह सो होय	वे ते हौंय

मुज़ारअ

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं हौंउं	हम हौंय
मुख़ातब	तू तैं होय	तुम होउ
ग़ाइब	वह सो होय	वे ते हौंय

मुज़ारअ अमाजी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं भयौहौंउं	हम भये हौंय
मुख़ातब	तू तैं भयौहोय	तुम भयेहोउ
ग़ाइब	वह सो भयौहोय	वे ते भयेहौंय

माज़ीमुतमन्नी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं होतो	हम होते
मुख़ातब	तू तैं होतौ	तुम होते
ग़ाइब	वह सो होतौ	वे ते होते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me be.	Let us be.
2. Be thou.	Be you.
3. Let him be.	Let them be.

Aorist, or Present Tense Subjunctive.

1. I be, or may be.	We be, or may be.
2. Thou beest, or mayst be.	You be, or may be.
3. He be, or may be.	They be, or may be.

[illegible] Subjunctive.

1. I [illegible]	We [illegible]
2. [illegible]	[illegible]
3. He [illegible]	They [illegible]

[illegible]

[illegible]

अमर

सेग़ऐ

	वाहिद	जमा
मुतकल्लिम	हौं मैं हौं उं	हम हौंय
मुख़ातब	तू तें हो	तुम होउ
ग़ाइब	वह सो होय	वे ते हौंय

मुज़ारम

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं हौंउं	हम हौंय
मुख़ातब	तू तें होय	तुम होउ
ग़ाइब	वह सो होय	वे ते हौंय

मुज़ार अमाज़ी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं भयोहौंउं	हम भये हौंय
मुख़ातब	तू तें भयोहोय	तुम भयेहोउ
ग़ाइब	वह सो भयोहोय	वे ते भयेहौंय

माज़ीमुतमन्नी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं होतो	हम होते
मुख़ातब	तू तें होतो	तुम होते
ग़ाइब	वह सो होतो	वे ते होते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me be.	Let us be.
2. Be thou.	Be you.
3. Let him be.	Let them be.

Aorist, or Present Tense Subjunctive.

1. I be, or may be.	We be, or may be.
2. Thou beest, or mayst be.	You be, or may be.
3. He be, or may be.	They be, or may be.

Preterperfect Subjunctive.

1. [illegible]	We may have been.
2. [illegible]	You may have been.
3. [illegible]	They may have been.

[illegible]

[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

हालिमुतशक्की

वाहिद	जमम्

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं में होतु होंउंगी हैव्हौं	हमहोत हौंयगे हैव्है
मुख़ातब	तू तैं भोतु होयगी हैव्है	तुमहोत होउगे हैव्हौ
गाइब	वह सो होतु होयगी हैव्है	वे ते होतहोंयगे हैव्हैं

माजीशरतीयः बकंद्र

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं भयोहोतो	हम भये होते
मुख़ातब	तू तैं भयोहोतो	तुम भये होते
गाइब	वह सो भयो होता	वे ते भये होते

माज़ीमुतशक्की

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं भयो हौंउगी हैव्हौं	हम भये हौंयगे हैव्हैं
मुख़ातब	तू तैं भयो होयगो हैव्है	तुम भये होउगे हैव्हौ
गाइब	वह सो भयो होयगो हैव्है	वे ते भये हौंयगे हैव्हैं

इसिमहालियः

होतु होत — होत होते

माज़ीमयसूक़मलेहि

हो होकर होकै — होको कै होकरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I may be.	We may be.
2. Thou mayest be.	You may be.
3. He may be.	They may be.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have been.	We had, or might have been.
2. Thou hadst, or mightest have been.	You had, or might have been.
3. He had, or might have been.	They had, or might have been.

Perfect doubtful.

1. I may have been.	We may have been.
2. Thou mayest have been.	You may have been.
3. He may have been.	They may have been.

Participle Present.

Being.	Being.

Participle Present-perfect.

Having been.

इस्मिफ़ाइ़ल

वाहिद	जमय़
हौन मारो हारौ	हौन मारे हारे

इस्मिमफ़ऊ़ल

मयौ

हौन पर पै है हैवुवे पर पै है मयौ चाहतु है

राकिति़ सेग़ऐ मजहूल

जानौं जैवो

हाल

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जातुहौं	हमजात हैं
मुख़ातब	तू तैं जातु है	तुमजात हौ
ग़ाइब	वह सो जातु है	वे से जात हैं

इस्तिमरारी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जातु हो	हमजात हे
मुख़ातब	तू तैं जातु हो	तुमजात हे
ग़ाइब	वह सो जातु हो	वे से जात हे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Participle Active

Singular.	Plural.
Being	Being.

Participle Passive.

Been.

Future Proximate.
About to be.

Helping verbs in the passive Voice.

To Go

Present Tense.

1. I go.	We go.
2. Thou goest.	You go.
3. He goes.	They go.

Imperfect.

1. I was going.	We were going.
2. Thou wast going.	You were going.
3. He was going.	They were going.

माज़ीमुतलक़

वाहिद		जमम्
मुतकल्लिम	हौं में गयौ	हमगये
मुखातब	तू तें गयौ	तुमगये
ग़ाइब	वह सो गयौ	वे ते गये

माज़ीक़रीब

से.गए

मुतकल्लिम	हौं मैं गयौ हौं	हम गये हैं
मुखातब	तू तें गयौ है	तुम गये हैं
ग़ाइब	वह सो गयौ है	वे ते गये हैं

माज़ीवईद

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं गयौ हो	हम गये हे
मुखातब	तू तें गयौ हो	तुम गये हे
ग़ाइब	वह सो गयौ हो	वे ते गये हे

से.गऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जाउंगो जहौं	हम जायगे जैहैं
मुखातब	तू तें जासयी जैहै	तुम जागेउ जैहौ
ग़ाइब	वह जो जायगी जैहै	वे ते जायगे जैहैं

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I went.	We went.
2. Thou wentest.	You went.
3. He went.	They went.

Preterperfect.

1. I have gone.	We have gone.
2. Thou hast gone.	You have gone.
3. He has gone.	They have gone.

Pluperfect.

1. I had gone.	We had gone.
2. Thou hadst gone.	You had gone.
3. He had gone.	They had gone.

Future.

1. I shall, or will go.	We shall, or will go.
2. Thou shalt, or wilt go.	You shall or will go.
3. He shall, or will go.	They shall

अमर

वाहिद		जमम्

से.ग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जाउं	हम जांय
मुख़ातब	तू तैं जाय	तुम जाउ
गाइब	वह सो जाय	वे ते जांय

मुज़ारअ

सॅगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जाऊं	हम जांय
मुख़ातब	तू तैं जाय	तुम जाउ
गाइब	वह सो जाय	वे ते जांय

मुज़ारअमाज़ी

से.गऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं गयोहोउ	हम गयें होंय
मुख़ातब	तू तैं गयो होय	तुम गये होंउ
गाइब	वह सो गयोहोय	वे ते गये होंय

माज़ीमुतम्नी

सॅग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जातो	हम जाते
मुख़ातब	तू तैं जातो	तुम जाते
गाइब	वह सो जातो	वे ते जाते

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me go.	Let us go.
2. Go thou.	Go you.
3. Let him go.	Let them go

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may go.	We may go.
2. Thou mayest go.	You may go.
3. He may go.	They may go.

Preterperfect subjunctive.

1. I may have gone.	We may have gone.
2. Thou mayest have gone.	You may have gone.
3. He may have gone.	They may have gone.

Imperfect subjunctive.

1. I would, or might have gone.	We would, &c, gone.
2. Thou wouldst, &c. gone.	We would, &c. gone.
3. He would, &c. gone.	They would, & c. gone.

अमर

वाहिद		जमअ्

सेगऐ

मुतकल्लिम	हों मैं आउं	हम आंय
मुखातब	तू तें आय	तुम आउ
गाइब	वह सो आय	वे ते आंय

मुजारअ्

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हों मैं आऊं	हम आंय
मुखातब	तू तें आय	तुम आउ
गाइब	वह सो आय	वे ते आंय

मुजारअ्माजी

सेगऐ

मुतकल्लिम	हों मैं गयौहोउ	हम गयें होंय
मुखातब	तू तें गयौ होय	तुम गये होंव
गाइब	वह सो गयौहोय	वे ते गये होंय

माजीमुतन्नी

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हों मैं जाती	हम जाते
मुखातब	तू तें जाती	तुम जाते
गाइब	वह सो जाती	वे ते जाते

हालिमुतशक्की

वाहिद		जमम्

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं जातु होंउगौं हैव हौं	हमजात होंयगेहैवहैं
मुखातब	तू तें जातु होयगो हैवहै	तुमजात होउगे हैव हौ
गाइब	वह सो जात होयगो हैवहै	वे ते जात होंयगे हैवहैं

माज़ीशरतीयः वईद

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं गयोहोतो	हम गये होते
मुखातब	तू तें गयोहोतो	तुम गये होते
ग़ाइब	वह सो गयोहोतो	वे ते गये होते

माज़ीमुतशक्की

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौ मैं गयो होंऊंगो हैवहौं	हम गये होंमगें हैव हैं
मुखातब	तू तें गयो होयगो हुवहै	तुम गये होउगे हैवहौ
ग़ाइब	वह सो गयो होयगो हुवहै	वे ते गये होंयगे हैवहैं

इसिहालिया

जातु जाते

माज़ीमम्रतूपम्रलेहि

जा जाकर जाके जाकरके जाकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I may be going.	He may be going.
2. Thou mayest be going.	You may be going.
3. He may be going.	They may be going.

Perfect Conditional.

1. I might have gone.	We might have gone.
2. Thou mightest have gone.	You might have gone.
3. He might have gone.	They might have gone.

Perfect Doubtful.

1. I may have gone.	We may have gone.
2. Thou mayest have gone.	You may have gone.
3. He may have gone.	They may have gone.

Present Participle.

Going Going.

Participle preterperfect,

Having gone.

इस्मिफ़ाइल

जान वारो हारो — जान वारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

गयौगयीगयी — गये गयेभए

मुस्तक़्बिलिक़रीब

जाम पर पै जाके पर पै के गयी चातु है

राबिति सेगए मजहूल

माज़िमी

मरतो मरती

सेग़ऐ

	वाहिद	जमअ्
मुतकल्लिम	हौं मैं मरतु हों	हम मरत हैं
मुख़ातब	तू तैं मरतु है	तुम मरत हो
ग़ाइब	यह सो मरतु है	वे ते मरत हैं

इस्तिमरारी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मरतु हो	हम मरत हे
मुख़ातब	तू तैं मरतुहो	तुममरत हे
ग़ाइब	यह सो मरतुहो	वे ते मरत हे

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE. PARTICIPLE ACTIVE

Going. Going.

Participle passive.

Gone. Gone.

Future Proximate.

About to go.

OF THE VERB NEUTER.

To Die.

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I die, or am dying.	We die, or are dying.
2. Thou diest, or art dying.	You die, or are dying.
3. He dies or is dying.	They die, or are dying.

Imperfect.

1. I was dying.	We were dying.
2. Thou wast dying.	You were dying.
3. He was dying.	They were

माज़ीमुत्लक़

सेग़ए	वाहिद	जमअ
मुतकल्लिम	हौं मैं मर्‌यौ	हम मरे
मुख़ातब	तू तैं मर्‌यौ	तुम मरे
ग़ाइब	वह सो मर्‌यौ	वे ते मरे

माज़ीक़रीब

सेग़ए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मर्‌यौ हौं	हममरे हैं
मुख़ातब	तू तैं मर्‌यौ है	तुम मरे हौ
ग़ाइब	वह सो मर्‌यौ है	वे ते मरे हैं

माज़ीबईद

सेग़ए		
मुतकल्लिम	हौं मै मर्‌यौ हो	हम मरे हे
मुख़ातब	तू तैं मर्‌यौ हो	तुम मरे हे
ग़ाइब	वह सो मर्‌यौ हो	वे ते मरे हे

मुस्तक़बिल

सेग़ए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मरौंगो मरिहौं	हम मरेंगे मरिहैं
मुख़ातब	तू तैं मरैगो मरिहै	तुम मरोगे मरिहौ
ग़ाइब	वह सो मरैगो मरिहै	वे ते मरेंगे मरिहैं

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Perfect Tense

Singular.	Plural.
1. I died.	We died.
2. Thou diedst.	You died.
3. He died.	They died.

Preterperfect.

1. I had died.	We have died.
2. Thou hast died.	You have died.
3. He has died.	They have died.

Pluperfect.

1. I have died.	We had died.
2. Thou hadst died.	You had died.
3. He had died.	They had died.

Future.

1. I shall, or will die.	We shall, or will die.
2. Thou shalt, or wilt die.	You shall or will die.
3. He shall, or will die.	They shall, or will die.

अमर

माज़ि (ब्य) — जमअ

वाहिद

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मरौ	हम मरे
मुख़ातब	तू तैं मरू	तुम मरौ
ग़ाइब	वह सो मरै	वे ते मरैं

मुज़ारअ

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मरौं	हम मरैं
मुख़ातब	तू तैं मरै	तुम मरौ
ग़ाइब	वह सो मरे	वे ते मरैं

मुज़ारअमाज़ी

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मर्यौहोउं	हम मरे होंय
मुख़ातब	तू तैं मर्यौ होय	तुम मरे होउ
ग़ाइब	वह सो मर्यौहोय	वे ते मरे होंय

सेग़ऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मरतौ	हम मरते
मुख़ातब	तू तैं मरतौ	तुम मरते
ग़ाइब	वह सो मरतौ	वे ते मरते

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me die.	Let us die.
2. Die thou.	Die you.
3. Let him die.	Let them die.

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I die, or may die.	We die, or may die.
2. Thou diest, or mayst die.	You die, or may die.
3. He dies, or may die	They die, or may die.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have died.	We may have died.
2. Thou mayest have died.	You may have died.
3. He may have died.	They may have died.

Imperfect Subjunctive.

1. I could, would, or might have died.	We could, &c.
2. Thou couldst, &c. died.	You could &c.
3. He could, &c. died.	They could, &c.

ह्वालिमुतशक्की

वाहिद		जमम्
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मरतु होंउंगी हैव् हौं	हम मरत होंयगे हैव् है
मुखातब	तू तें मरतु होयगो हैव् है	तुम मरत होउगे हैव् हौ
गाइब	वह सो मरतु होयगो हैव् है	वे ते मरत होंयगे हैव् हैं

माज़ीशरतीयः वईद

सेंग्ऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मर्यौहोतौ	हम मरे होते
मुखातब	तू तें मर्यौ होतौ	तुम मरे होते
गाइब	वह सो मर्यौ होतौ	वे ते मरे होते

माज़ीमुतशक्की

सेंग्ऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मर्यो होंउंगो हैव् हौं	हम मरे होंयगे हैव् है
मुखातब	तू तें मर्यो होयगो हैव् है	तुम मरे होउगे हौंव् हौ
ाइब	वह सो मर्यो होयगो हैव् है	वे ते मरे होंयगे हैव् हैं

इस्मिह्वालियः

मरतु मरतौ मरत मरते

माज़ीमअ़तूफ़मअ़लैहि

मर मरकर मरके मरकरके मरकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I my be dying.	We may be dying.
2. Thou mayest be dying.	You may be dying.
3. He may be dying.	They may be dying.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have died.	We had, or might have died.
2. Thou hadst, or mightest have died.	You had, or might have died.
3. He had, or might have died.	They had, or might have died.

Perfect Doubtful

1. I may have died.	We may have died.
2. Thou mayest have died	You may have died.
3. He may have died.	They may have died.

Participle Present.

Dying	Dying

Participle Preterperfect,

Having died.

इस्मिफ़ाइल

वाहिद	जमअ्
मरन वारौ हारौ	मरन वारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

मर्यौ मर्यौ मयौ	मरे मरे मये

मुस्तक़बिलिक़रीब

मरन पर पै मरवे पर पै मर्यौ चाहत है

सेंग़ऐ मअरूफ़

मारतौं मारबौ

हाल

सेंग़ऐं

मुतकल्लिम	हौं मैं मारतु हौं	हम मारत हैं
मुख़ातब	तू तैं मारतु है	तुम मारत हौ
ग़ाइब	वह सो मारतु है	वे ते मार हैं

इस्तिकरारी

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मारतु हो	हम मारत हे
मुख़ातब	तू तैं मारतु हो	तुम मारत हे
ग़ाइब	वह सो मारतु हो	वे ते मारत हे

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Participle Active.

Singular.	Plural.
Dying.	Dying.

Participle Passive.

Dead.	Dead.

Future Proximate.

About to die.

VERB ACTIVE.

To Beat.

Present Tense.

1. I beat, or am beating.	I beat, or are beating.
2. Thou beatest, or are beating.	You beat, or are beating.
3. He beats, or is beating.	They beat, or are beating.

Imperfect.

1. I was beating.	We were beating.
2. Thou wast beating.	You were beating.
3. He was beating	They were beating.

माज़ीमुतलक़

वाहिद		जमअ
सेगाऐ		
मुतकल्लिम	मैं मैंने मार्‌यौ मारे	हमने नि मार्‌यौ मारे
मुखातब	तू तैं ने मार्‌यौ मारे	तुम नें नि मार्‌यौ मारे
गाइब	याने वाने विन तिन उन मार्‌यौ मारे	जिननि उननि तिननि मार्‌यौ मारे

माज़ीकरीब

सेगाऐ		
मुतकल्लिम	मैं मैंने मार्‌यौ है मारे हैं	हम नि ने मार्‌यौ है मारे हैं
मुखातब	तूने तैं तैंने मार्‌यौ है मारेहैं	तुम नि ने मार्‌यौ है मारे हैं
गाइब	याने वाने विन तिन उन मार्‌यौ है मारे हैं	जिननि तिननि उननि मार्‌यौ है मारे हैं

माज़ीवईद

सगाऐ		
मुतकल्लिम	मैं मैंने मार्‌यौ हो मारे हे	हम नि ने मार्‌यौ हो मारे हे
मुखातब	तून तैं मार्‌यौ हो मारे हे	तुम नि ने मार्‌यौ हो मारे हे
गाइब	याने वाने विन तिन उन मार्‌यौ हो मारे हे	जिननि तिननि उननि मार्‌यौ हो मारे हे

सगाऐं		
मुतकल्लिम	हौं मैं मारौंगो मारिहौं	हम मारेंगे मारिहैं
मुखातब	तू तैं मारेगो मारिहै	तुम मारोगे मारिहो
गाइब	यह सो मारैगो मारिहै	वे वे मारेंगे मारिहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I beat.	We beat.
2. Thou beatest.	You beat.
3. He beateth, or beats.	They beat.

Preterperfect.

1. I have beaten.	We have beaten.
2. Thou hast beaten.	You have beaten.
3. He hath, or has beaten.	They have beaten.

Pluperfect.

1. I had beaten.	We had beaten.
2. Thou hast beaten.	You had beaten.
3. He had beaten.	They had beaten.

Future.

1. I shall, or will beat.	We shall, or will beat.
2. Thou shalt, or wilt beat.	You shall, or will beat.
3. He shall, or will beat.	They shall, or will beat.

माजीमुतलक़

वाहिद		जमअ
सेगए		
मुतकल्लिम	मैं मैंने मार्यो मारे	हमने नि मार्यो मारे
मुखातब	तू तें ने मार्यो मारे	तुम ने नि मार्यो मारे
गाइब	याने ताने विन तिन उन मार्यो मारे	विननि उननि तिननि मार्यो मारे

माजीकरीब

सेगए		
मुतकल्लिम	मैं मैंने मार्यो है मारे हैं	हम नि ने मार्यो है मारे हैं
मुखातब	तूने तें तेंने मार्यो है मारे हैं	तुम नि ने मार्यो है मारे हैं
गाइब	याने ताने विन तिन उन मार्यो है मारे हैं	विननि तिननि उननि मार्यो है मारे हैं

माजीबईद

सगए		
मुतकल्लिम	मैं मैंने मार्यो हो मारे हे	हम नि ने मार्यो हो मारे हे
मुखातब	तून तें मार्यो हो मारे हे	तुम नि ने मार्यो हो मारे हे
गाइब	याने ताने विन विन उन मार्यो हो मारे हे	विननि तिननि उननि मार्यो हो मारे हे

सगए		
मुतकल्लिम	हों में मारौंगो मारिहौं	हम मारैंगे मारिहैं
मुखातब	तू तें मारैगो मारिहै	तुम मारोगे मारिहो
गाइब	यह सो मारैगो मारिहै	ये ते मारैंगे मारिहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I beat.	We beat.
2. Thou beatest.	You beat.
3. He beateth, or beats.	They beat.

Preterperfect.

1. I have beaten.	We have beaten.
2. Thou hast beaten.	You have beaten.
3. He hath, or has beaten.	They have beaten.

Pluperfect.

1. I had beaten.	We had beaten.
2. Thou hast beaten.	You had beaten.
3. He had beaten.	They had beaten.

Future.

1. I shall, or will beat.	We shall, or will beat.
2. Thou shalt, or wilt beat.	You shall, or will beat.
3. He shall, or will beat.	They shall, or will beat.

अमर

	वाहिद	जमअ्
सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मारौ	हम मारें
मुखातब	तू तें मार	तुम मारौ
गाइब	वह सो मारें	वे ते मारें

मुज़ारअ

सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मारौं	हम मारें
मुखातब	तू तें मारें	तुम मारौ
गाइब	वह सो मारें	वे ते मारें

सेंगए		
मुतकल्लिम	मैंने मार्योहोय मारे हौंय	हम ने नि मार्यौ होय मारेहौंय
मुखातब	तू तें ने मार्यौ होय मारे हौंय	तुम ने नि मार्यौ होय मारे हौंय
गाइब	वाने ताने विन तिन उन मार्यौ होय मारे हौंय	विननि तिननि उननि मार्यौ होय मारे हौंय

माजीमुतमन्नी

सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मारतौ	हम मारते
मुखातब	तू तें मारतौ	तुम मारते
गाइब	वह सो मारतौ	ये ते मारते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me beat.	Let us beat.
2. Beat thou.	Beat you.
3. Let him beat.	Let them beat.

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may beat.	We may beat.
2. Thou mayest beat.	You may beat.
3. He may beat.	They may beat.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have beaten.	We may have beaten.
2. Thou mayest have beaten.	You may have beaten.
3. He may have beaten.	They may have beaten.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have, or if I have beaten.	We would, &c beaten.
2. Thou wouldst, &c. beaten	You would, &c. beaten.
3. He could, &c beaten.	They would, &c. beaten.

हालिमुतशक्की

	वाहिद	जमम
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हों में मारतु होउंगों हैव्हों	हम मारत होंमने हैव्हैं
मुखातब	तू तें मारतु होयगों हैव्है	वे ते मारत होंयगे हैव्है
गाइब	वह वो मारतु होयगो हैव्है	वे ते मारत होंयगे हैव्हैं

माज़ीशरतीयम वईद

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	मंने मार्‌यो होतो मारे होते	हमने नि मार्‌यो होतो मारे होते
मुखातब	तू तें मार्‌यो होतो मारेहोते	तुम ने नि मार्‌यो होतो मारे होते
गाइब	वाने ताने विन तिन उन मार्‌यो होतौ मारे होते	विननि तिननि उननि मार्‌यो होतौ मारौ होते

माज़ीमुतशक्की

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	मैं ने मार्‌यों होयगो हैव्है	हम ने नि मारे होंयगे हैव्हैं
मुखातब	तू तें ने मार्‌यो होयगो हैव्है	तुम ने नि मारे होंयगे हैव्हैं
गाइब	वाने ताने विन तिन उन मार्‌यो होयगो हैव्है	विननि तिननि उननि मारे होंयगे हैव्हैं

इस्महालियः

मारतु मारतौ मारत मारते

माज़ीमअतूफ़मलैहि

मार मारकर मारकै मारकरकै मारकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE

Present Doubtful

Singular.	Plural.
1 I may be beaten	We may be beaten
2 Thou mayest be beaten	You may be beaten
3. He may be beaten	They may be beaten

[illegible]

1 I had, [illegible]	We [illegible] beaten
2 Thou hadst [illegible] have beaten	You [illegible] beaten
3. He had [illegible] beaten	They [illegible] beaten

Perfect Doubtful

1. I may have beaten.	We may have beaten.
2. Thou mayest have beaten.	You may have beaten.
3. He may have beaten.	They may have beaten.

Participle Present.

Beating Beating

Participle preterperfect,

Having beaten.

इस्मिफ़ाइल

मारन वारौ हारौ	मारन वारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

मार्‌यौ मार्‌यौ भयौ	मारे मारे भये

मुस्तक़बिलिक़रीब

मार न नें पर पे है कं मार्‌यौ चाहतु है

सेग़ाऐ मजहूल

मार्‌यौ जानौं मार्‌यौवैबौ

सेंग़ऐ

	वाहिद	हाल	जमय
मुतकल्लिम		हौं मैं मार्‌यौ जातु हौं	हम मारे जात हैं
ग़ाइब		वह सो मार्‌यौ जातु है	वे ते मारे जात हैं
मुख़ातब		तू तैं मार्‌यौ जातु है	तुम मारे जात हौ

इस्तिमरारी

सेंनऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‌यौ जातु हो	हम मारे जात हे
मुख़ातब	तू तैं मार्‌यौ जातु हो	तुम मारे जात हे
ग़ाइब	यह सो मार्‌यौ जातु हो	वे ते मारे जात हे

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Participle Active.

Beating.	Beating.

Participle Passive.

Beaten.	Beaten.

Future Prosimate.

About to beat.

IN THE PASSIVE VOICE.

To be beaten

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am beaten.	We are beaten.
2. Thou art beaten.	You are beaten.
3. He is beaten.	They are beaten.

Imperfect.

1. I was then beaten.	We were then beaten.
2. Thou wast then beaten.	You were then beaten.
3. He was then beaten.	They were then beaten.

माज़ीमत्लक़

	वाहिद	जमअ
सीग़ए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्यो गयो	हम मारे गये
मुख़ातब	तू तैं मार्यो गयो	तुम मारे गये
ग़ाइब	वह सो मार्यो गयो	वे ते मारे गये

माज़ीक़रीब

सीग़ए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्यो गयोहौं	हम मारे गये हैं
मुख़ातब	तू तैं मार्यो गयो है	तुम मारे गये हो
ग़ाइब	वह सो मार्यो गयो है	वे ते मारे गये हैं

माज़ीबईद

सीग़ए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्यो गयो हो	हम मारे गये हे
मुख़ातब	तू तैं मार्यो गयो हो	तुम मारे गये हे
ग़ाइब	वह सो मार्यो गयो हो	वे ते मारे गये हे

मुस्तक़बिल

सीग़ए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्यो जाउगो जैहैं	हम मारे जायगे जैहैं
मुख़ातब	तू तैं मार्यो जायगो जैहै	तुम मारे जाउगे जैहौ
ग़ाइब	यह सो मार्यो जायगो जैहै	वे ते मारे जायगे जैहैं

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I was beaten.	We were beaten.
2. Thou wast beaten.	You ware beaten.
3. He was beaten.	They Were beaten.

Preterperfect.

1. I have been beaten.	We have been beaten.
2. Thou hast been beaten.	You have been beaten.
3. He has been beaten.	They have been beaten.

Pluperfect.

1. I had been beaten.	We had been beaten.
2. Thou hadst been beaten.	You had been beaten.
3. He had been beaten.	They have been beaten.

Future.

1. I shall, or will be beaten.	We shall, or will be beaten.
2. Thou shalt, or wilt be beaten.	You shall, or will be beaten.
3. He shall or will be beaten.	They shall, or will be beaten.

अमर

वाहिद		जमअ
सेंगुऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्योजाउं जाऊं	हम मारे जांय
मुखातब	तू तैं मार्योजाय	तुम मारे जाउ
गाइब	वह सो मार्यो जाय	वे ते मारे जांय

मुजारअ

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार्योजाउं जाऊं	हम मारे जांय
मुखातब	तू तैं मार्योजाय	तुम मारे जाउ
गाइब	वह सो मार्योजाय	वे ते मारेजांय

मुजारअमाजी

सेंगऐं

मुतकल्लिम	हौं हैं मार्योगयोहोउं	हम मारे गये हौंय
मुखातब	तू तैं मार्योगयोहोय	तुम मारे गये होउ
गाइब	वह सो मारयोगयोहोय	वे ते मारे गये हौंय

माजीमुतमन्नी

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार्योजातो	हम मारे जाते
मुखातब	तू तैं मार्योजातो	तुम मारे जाते
गाइब	वह सो मार्योजातो	वे ते मारे जाते

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me be beaten.	Let us be beaten.
2. Be thou beaten.	Be you beaten.
3. Let him be beaten.	Let them be beaten.

Aorist, or present Tense Subjunctive.

1. I may be beaten.	We may be beaten.
2. Thou mayest be beaten.	You may be beaten.
3. He may be beaten.	They may be beaten.

Preterperfect Subjunctive.

1. I may have been beaten.	We may have been beaten.
2. Thou mayest have been beaten.	You may have been beaten.
3. He may have been beaten.	They may have been beaten.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have, or if I had been beaten.	We would, &c. been beaten.
2. Thou wouldst, &c. been beaten.	You would, &c. been beaten.
3. He could, &c. been beaten.	They would, &c. been beaten.

हालिमुतशक्की

	वाहिद	जमअ
सेंग़ऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‌यौजातु होंउगो हैव्हौं	हम मारे जात होंयगे हैव्हैं
मुखातब	तू तें मार्‌यौजातु ह्ययगो हैव्हौ	तुम मारे जात होउगे हैव्ही
गाइब	वह सो मार्‌यौ जातु होयगो हैव्हैं	वे ते मारेजात होंयगे हैव्हैं

माजीशरतीयः वईट्

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‌यौ गयौ होंतु होतौ	हम मारेगये हात होते
मुखातब	तू तें मार्‌यौगयौहोतु होतौ	तुम मारे गये होत होते
गाइब	वह सो मार्‌यौगयौ होत होतौ	वे ते मारे गये होत होते

माज़ीमुतशक्की

सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं मार्‌यौगयौ होउंगो हैव्है	हम मारे गये होंयगे हैव्हैं
मुखातब	तू तें मार्‌यौगयौ होयगो हैव्है	तुम मारे गये होउगे हैव्ही
गाइब	वह सो मार्‌यौगयौ होंयगो हैव्है	वे ते मारे गये होंयगे हैव्हैं

इस्मिहालियः

मार्‌यौजातु मार्‌यौजातौ मार्‌यौजातुभयौ मारेजात भये मारे जाते भये

माजीमग्रतूफ़ग्रलैहि

मार्‌यौजा मार्‌यौजाकर मार्‌यौजाके मार्‌यौजाकरके मार्‌यौजाकरकर

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. Perhaps I am beaten.	Perhaps we are beaten.
2. Perhaps thou art beaten.	Perhaps you are beaten.
3. Perhaps he is beaten.	Perhaps they are beaten.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have been beaten.	We had, or might have been beaten.
2. Thou hadst, or mightest have been & c.	You had, &c. been beaten.
3. He had, or might have beaten.	They had, &c. been beaten.

Perfect Doubtful.

1. I may have been beaten.	We may have been beaten.
2. Thou mayest have been &c.	You may have been beaten.
3. He may have been beaten.	They may have been beaten.

Participle Present.

Being beaten.	Being beaten.

Participle Preterperfect,

Having been beaten.

इस्मिफ़ाइल

मार्यो जान वारो हारो	मारेजान वारे हारे

इस्मिफ़ऊल

मार्योगयो भयौ	मारेगये भये

मुस्तक़बिलिक़रीब

मारेजान पर पै मार्योगयो चाहतु है

से.ग़ए मग्ररूफ़

पहुँचनों पहुचवो

सेग़ए

वाहिद	हाल	जमग्न्
मुतकल्लिम	हों में पहुचतु हों	हम पहुँचतु हों
मुख़ातब	तू तें पहुंचतु है	तुम पहुंचत हो
ग़ाइब	वह सो पहुचतु है	वे ते पहुंचत हैं

इस्तिमरारी

सेंगए

मुतकल्लिम	हों में पहुँचतुहो	हम पहुंचत है
मुख़ातब	तू तें पहुंचतु है	तुम पहुंचत हो
ग़ाइब	वह सो पहुंचतु हो	वे ते पहुंचत हे

HELPING VERBS IN THE PASSIVE VOICE.

Participle Active.

Being beaten.	Being beaten.

Participle Passive.

Been beaten.	Been beaten.

Future Proximate.

About to have been beaten.

ACTIVE VOICE.

To arrive.

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am arriving.	We are arriving.
2. Thou art arriving.	You are arriving.
3. He is arriving.	They are arriving.

Imperfect.

1. I was then arriving.	We were then arriving.
2. Thou wast then arriving.	You were then arriving.
3. He was then arriving.	They were then arriving.

माज़ीमुतलक़

वाहिद		जमअ
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंच्यौ	हम पहुचे
मुखातब	तू तें पहुंच्यौ	तुम पहुंचे
गाइब	वह सो पहुंच्यौ	वे ते पहुंचे

माज़ीकरीब

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुच्यौ हौं	हम पहुचे हैं
मुखातब	तू तें पहुंच्यौ है	तुम पहुंचे हौ
गाइब	वह सो पहुंच्यौ है	वे ते पहुंचे हैं

माज़ीवईद

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुच्यौ हो	हम पहुचे हे
मुखातब	तू तें पहुच्यौ हो	तुम पहुचे हे
गाइब	वह सो पहुच्यौ हो	वे ते पहुंचे हे

मुस्तक़बिल

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंचिहौं पहुंचौंगो	हम पहुचेंगे पहुंचिहैं
मुखातब	तू तें पहुंचेगो पहुंचिहै	तुम पहुंचौगे पहुंचिहौ
गाइब	वह सो पहुंचेगो पहुंचिहै	वे ते पहुंचेंगे पहुंचिहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I arrived.	We arrived.
2. Thou arrivedst.	You arrived.
3. He arrived.	They arrived.

Preterperfect.

1. I have arrived.	We have arrived.
2. Thou hast arrived.	You have arrived.
3. He has arrived.	They have arrived.

Pluperfect.

1. I had arrived.	We had arrived.
2. Thou hadst arrived.	You had arrived.
3. He had arrived.	They had arrived.

Future.

1. I shall, or will arrive.	We shall, or will arrive.
2. Thou shalt, or wilt arrive.	You shall, or will arrive.
3. He shall, or will arrive.	They shall, or will arrive.

अमर

	वाहिद	जमअ
सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंचो	हम पहुंचें
मुखातब	तू तैं पहुंचै	तुम पहुंचो
गाइब	वह सो पहुंचै	वे ते पहुंचैं

मुज़ारअ

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंचौं	हम पहुंचें
मुखातब	तू ते पहुंचै	तुम पहुंचो
गाइब	वह सो पहुंचै	वे ते पहुंचैं

मेजारअमाजी

सेंगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंच्योहोउ	हम पहुंचे होंय
मुखातब	तू तैं पहुंच्यो होय	तुम पहुंचे होउ
गाइब	वह सो पहुंच्योहोय	वे ते पहुंचे होंय

माज़ीमुतमन्नी

सेंगऐ		
मुकतल्लिम	हौं मैं पहुंचतो	हम पहुंचते
मुखातब	तू तैं पहुंचतो	तुम पहुंचते
गाइब	वह सो पहुंचतो	वे ते पहुंचते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.
1. Let me arrive.	Let us arrive.
2. Arrive thou.	Arrive you.
3. Let him arrive.	Let them arrive.

Aorist, or Present Tense Subjunctive.

1. I arrive, or may arrive.	We arrive, or may arrive.
2. Thou arrivest, or mayest Arrive.	You arrive, or may arrive.
3. He arrives, or may arrive.	They arrive, or my arrive.

Preterperfect Subjunctive

1. I may have arrived.	We may have arrived.
2. Thou mayest have arrived.	You may have arrived.
3. He may have arrived.	They may have arrived.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have, arrived.	We would, &c. arrived.
2. Thou Wouldst, &c. arrived.	You would, &c. arrived.
3. He could, &c. arrived.	They would, &c. arrived.

हालिमुतशक्की

वाहिद		जमम
सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंचतु होंउगो हैवहौं	हम पहुंचत होंयगे हैवहैं
मुखातब	तू तैं पहुंचतु होयगो हैवहै	तुम पहुंचत होउगे हैवहौ
गाइब	वह सो पहुचतु होयगो हैवहै	वे ते पहुचत होंयगे हैवहैं

माजीशरतीयः वईद

सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंच्योहोतो	हम पहुंचे होते
मुखातब	तू तैं पहुच्योहोतो	तुम पहुंचे होते
गाइब	वह सो पहुच्योहोतो	वे ते पहुचे होते

माजीमुतशक्की

सेंगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंच्यो होउंगो हैवहौं	हम पहुंचे होंयगे हैवहैं
मुखातब	तू तैं पहुंच्यो होयगो हैवहै	तुम पहुंचे होउगे हैवहौ
गाइब	वह सो पहुंच्यो होयगो हैवहै	वे ते पहुचे होंयगे हैवहैं

इस्मिहालियः

पहुंचतु पहुंचतो | पहुंच पहुंचे

माजीममतूफ़म्रलेहि

पहुंच पहुचकर पहुंचकै पहुंचकरके पहुंचकरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Present Doubtful

Singular.	Plural.
1. I may be arriving.	We may be arriving.
2. Thou mayest be arriving.	You may be arriving.
3. He may be arriving.	They may be arriving.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have arrived.	We had, or might have arrived.
2. Thou hadst, or mightest have arrived.	You had, or might have arrived.
3. He had, or might have arrived.	They had, or might have arrived.

Perfect Doubtful.

1. I may have arrived.	We may have arrived.
2. Thou mayest have arrived.	You may have arrived.
3. He may have arrived.	They may have arrived.

Participle Present

Arriving [illegible]

Participle Present perfect

Having arrived

इस्मिफ़ाइल

पहुंचनि वारौ हारौ	पहुंचनि वारे हारे

इस्मिमफऊल

पहुंच्यौ भयौ	पहुंचे भये

मुस्तकबिलिक़रीब

पहुंचवे पर पं है पहुंच्यौ चाहतु है

सेंग़ऐ मअरूफ़

पहुंचावनौं पहुंचेवौ

	वाहिद	जमम्
सेंग़ऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंचावतु हौं	हम पहुंचावत हैं
मुख़ातब	तू तैं पहुंचावतु है	तुम पहुंचावत हौ
ग़ाइब	यह सो पहुंचावतु है	ये ते पहुंचावत हैं

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंचावतुहो	हम पहुंचावत हे
मुख़ातब	तू तैं पहुंचावतु हो	तुम पहुंचावत हे
ग़ाइब	यह सो पहुंचवतु हो	ये ते पहुंचावत हे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Participle Active.

Arriving. Arriving.

Participle Passive.

Arrived. Arrived.

Future Proximate.

About to arrive.

CONJUGATION OF THE VERB ACTIVE, IN THE ACTIVE VOICE.

To reach, or to cause to arrive.

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am reaching.	We are reaching.
2. Thou art reaching.	You are reaching.
3. He is reaching	They are reaching.

Imperfect.

1. I was reaching.	We were reaching.
2. Thou wast reaching.	You were reaching.
3. He was reaching.	They were reaching.

माज़ीमुतलक़

सॅगऐ

	वाहिद	जमअ
मुतकल्लिम	मैं ने पहुंचायो	हम ने नि पहुंचाऐ
मुख़ातब	तू तैं ने पहुंचायो	तुम ने नि पहुंचाऐ
ग़ाइब	वाने वाने विन तिन उन पहुंचायो	विननि तिननि उननि पहुंचाऐ

माज़ीक़रीब

सॅगऐ

मुतकल्लिम	मैं ने पहुंचायो है	हम ने नि पहुंचाऐ हैं
मुख़ातब	तू तैं ने पहुंचायो है	तिनति विननि उननि पहुंचाऐ हैं

माज़ीबईद

सॅगऐ

मुतकल्लिम	मैं ने पहुंचायो हो	हम ने नि पहुंचाऐ हे
मुख़ातब	तू तैं ने पहुंचायो हो	तुम ने नि पहुंचाऐ हे
ग़ाइब	वाने वाने विन तिन उन पहुंचायो हो	विननि तिननि उननि पहुंचाऐ हे

मुस्तक़बिल

सॅगऐ

मुतकल्लिम	हों मैं पहुंचाऊंगो पहुंचो हों	हम पहुं चायेंगे चंहैं
मुख़ातब	तू तैं पहुंचायेगो पहुंचै है	तुम पहुं चाओगे चंहो
ग़ाइब	वह सो पहुंचायेगो पहुंचै है	वे ते पहुं चायेंगे चंहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I reached.	We reached.
2. Thou reached.	You reached.
3. He reached.	They reached.

Preterperfect.

1. I have reached.	We have reached.
2. Thou hast reached.	You have reached.
3. He has reached.	They have reached.

Pluperfect.

1. I had reached.	We had reached.
2. Thou hadst reached.	You had reached.
3. He had reached.	They had reached.

Future.

1. I shall, or will reach.	We shall, or will reach.
2. Thou shalt, or wilt reach.	You shall, or will reach.
3. He shall, or will reach.	They shall, or will reach.

माज़ीमुतलक़

सेंगए

वाहिद		जमअ
मुतकल्लिम	मैं ने पहुचायी	हम ने नि पहुंचाऐ
मुखातब	तू तें ने पहुचायी	तुम ने नि पहुंचाऐ
गाइब	वाने ताने विन तिन उन पहुंचायी	विननि तिननि उननि पहुचाऐ

माज़ीकरीब

सेंगऐ

मुतकल्लिम	मैं ने पहुचायी है	हम ने नि पहुचाऐ हैं
मुखातब	तू तें ने पहुचायी है	तिनति विननि उननि पहुचाऐ हैं

माज़ीबईद

सेंगऐ

मुतकल्लिम	मैं ने पहुंचायी हो	हम ने नि पहुचाऐ हे
मुखातब	तू तें ने पहुंचायी हो	तुम ने नि पहुंचाऐ हे
गाइब	वाने ताने विन तिन उन पहुंचायी हो	विननि तिननि उननि पहुंचाऐ हे

मुस्तक़बिल

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हों मैं पहुचाऊंगो पहुंचो हों	हम पहु चावंगे पंहें
मुखातब	तू तें पहुचावेंगो पहुचे है	तुम पहुं चामोगे पंहो
गाइब	वह सो पहुंचावैगो पहुंचे है	वे ते पहुं चावंगे पंहें

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I reached.	We reachcd.
2. Thou reached.	You reached.
3. He reached.	They reached.

Preterperfect.

1. I have reached.	We have reached.
2. Thou hast reached.	You have reached.
3. He has reached.	They have reached.

Pluperfect.

1. I had reached.	We had reached.
2. Thou hadst reached.	You had reached.
3. Hc had reached.	They had reached.

Future.

1. I shall, or will reach.	We shall, or will reach.
2. Thou shalt, or wilt reach.	You shall, or will reach.
3. He shall, or will reach.	They shall, or will reach.

अमर

	वाहिद	जमअ
सेगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचा ऊं यौं	हम पहुचावें
मुखातब	तू तैं पहुचावैं	तुम पहुंचा वो यो
गाइब	वह सौं पहुचावैं	वे ते पहुचावें

मुजारअ

सेगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचा ऊ यौं	हम पहुचावें
मुखातब	तू तैं पहुचावैं	तुम पहुंचा वो यो
गाइब	वह सो पहुंचावैं	वे ते पहुंचावें

मुजारअमाजी

सेगए		
मुतकल्लिम	मैं ने पहुंचायो होय	हम ने नि पहुंचाये होय
मुखातब	तू तैं ने पहुचायो होय	तुम ने नि पहुंचाये होंय
गाइब	वाने ताने जिन तिन उन पहुंचायो होय	जिननि तिननि उननि पहुंचाये होंय

माजीमुतमन्नी

सेगए		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुचावतो	हम पहुंचावते
मुखातब	तू तैं पहुंचावतो	तुम पहुंचावते
गाइब	वह सो पहुचावतो	वे ते पहुचावते

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative

Singular	Plural.
1. Let me reach.	Let us reach.
2. Reach thou.	Reach you.
3. Let him reach.	Let them reach.

Aorist, or present tense subjunctive.

1. I may reach.	We may reach.
2. Thou mayest reach	You may reach.
3. He may reach.	They may reach.

1. I may have reached.	We may have reached.
2. Thou mayest have reached.	You may have reached.
3. He may have reached.	They may have reached.

Imperfect Subjunctive.

1. I would, or might have or (if) I had reached.	We would, &c. reached.
2. Thou &c. reached.	You would &c reached.
3. He would, &c. reached.	They would, &c. re[illegible]

हालिमुतशक्की

वाहिद		जमा
सॅगऐ		
मुतकल्लिम	हौं मैं पहुंचावतु हौंउगो हैवुहै	हम पहुंचावत हौंयगे हैंवुहैं
मुखातब	तू तें पहुंचावतु होयगो हैवुहै	तुम पहुंचावत होउगे हैवुहौ
गाइब	वह सो पहुंचावतु होयगो है है	वे ते पहुंचावत हौंयगे है हैं

माजीशरतीयः वईद

सॅगऐ		
मुतकल्लिम	मैं ने पहुंचायी होती	हम ने नि पहुंचाये होते
मुखातब	तू तैंने पहुंचायी होती	तुम ने नि पहुंचाये होते
गाइब	वाने ताने जिन तिन उन पहुंचायी होती	जिननि तिननि उननि पहुंचाये होते

माजीमुतशक्की

सॅगऐ		
मुतकल्लिम	मैं ने पहुंचायी होयगी हैवुहै	हम ने नि पहुंचाये हौंयगे हैवुहै
मुखातब	तू तें पहुंचायी होयगी हैवुहै	तुम ने नि पहुंचाये होंयगे हैवुहैं
गाइब	वाने ताने जिन तिन उन पहुंचायी होयगी हैवुहै	जिननि तिमनि उननि पहुंचाये होंयगे हैवुहै

इस्मिहालियः

पहुंचावतु सौ — पहुंचावतु भयो — पहुंचावत के पहुंचावते भये

माजीमअतूफअलैहि

पहुंचाय — पहुंचायकर पहुंचायकरके — पहुंचायकरकर

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Present Doubtful.

Singular.	Plural.
1. I may be reaching.	We may be reaching.
2. Thou mayest be reaching.	You may be reaching.
3. He may be reaching.	They may be reaching.

Perfect Conditional.

1. I had, or might have rcached.	We had, or might have reached.
2. Thou hadst, or mightest have reached.	You had, or might have reached.
3. he had, or might have reached.	They had, or might have reached.

Perfect Doubtful.

1. I may have reached.	We may have reached.
2. Thou mayest have reached.	You may have reachcd.
3. He may have reached.	They may have reached.

Participle Present.

Reaching.	Reaching.

Participle Preterperfect.

Having reached.

इस्मिफ़ाइल

पहुंचावन वारो हारो	पहुंचावन वारे हारे

इस्मिमफ़ऊल

पहुंच्यो पहुच्यो भयो	पहुंचाये भये

मुस्तक़बिलिकरीब्

पहुंचावन पर पै है	पहुचायो चाहतु है

सेंगए मअ्रूफ़

मारसकनों मारसक्यो

सेंगए

वाहिद	हाल	जमअ्
मुतकल्लिम	हों मैं मार सक्तु हों	हम मार सकत हैं
मुख़ातब	तू तें मार सक्तु है	तुम मार सक्त हो
ग़ाइब	वह सो मार सक्तु है	वे ते मार सकत हैं

इस्तिमरारी

सेंगए

मुतकल्लिम	हों मैं मार सक्तु हो	हम मार सकत हे
मुख़ातब	तू तें मार सक्तु हो	तुम मार सक्ते हे
ग़ाइब	वह सो मार सक्तु हो	वे ते मार सक्त हे

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Participle Active.

Reaching. Reaching.

Participle Passive.

Reached. Reached.

Future Proximate.

About to reach.

ACTIVE VOICE.

To be able to beat.

Present Tense.

Singular.	Plural.
1. I am able to beat.	We are able to beat.
2. Thou art able to beat.	You are able to beat.
3. He is able to beat.	They are able to beat.

Imperfect.

1. I could beat or was able to beat.	We could &c. beat.
2. Thou couldest &c, beat.	You could &c. beat.
3. He could &c. beat.	They could &c. beat.

माज़ीमुत्लक़

सेंगऐ

वाहिद		जमअ
मुतकल्लिम	हौं मैं मार सक्यौ	हम मार सके
मुखातब	तू तैं मार सक्यौ	तुम मार सके
ग़ाइब	वह सो मार सक्यौ	वे ते मार सके

माज़ीकरीब

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सक्यौ हौं	हम मार सके हैं
मुखातब	तू तैं मार सक्यौ है	तुम मार सके हौ
ग़ाइब	वह सो मार सक्यौ है	वे ते मार सके हैं

माज़ीबईद

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सक्यौ हो	हम मार सके हे
मुखातब	तू तैं मार सक्यौ हो	तुम मार सके हे
ग़ाइब	वह सो मार सक्यौ हो	वे ते मार सके हे

मुस्तकबिल

सेंगऐ

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सकैयो सकिहौं	हम मार सकैये सकिहैं
मुखातब	तू तैं मार सकैयो सकिहै	तुम मार सकौगे सकिहौ
ग़ाइब	वह सो मार सकैयो सकिहै	वे ते मार सकैंगे सकिहैं

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Perfect Tense.

Singular.	Plural.
1. I could beat.	We could beat.
2. Thou could beat.	Yon could beat.
3. Ho could beat.	They could beat.

Preterperfect.

1. I have been able to beat.	We have been able to beat
2. Thou hast been able to beat.	You have been able to beat.
3. He has been able to beat.	They have been able to beat.

Pluperfect.

1. I had been able to beat.	We had been able to beat.
2. Thou hadst been able to beat.	You had been able to beat.
3. He had been able to beat.	They had been able to beat.

Future.

1. I shall, or will be able to beat.	We shall, or will be able to beat.
2. Thou shalt, or wilt be able to beat.	You shall, &c be able to beat.
3. He shall, or will be able to beat.	They shall, &c. to be able to beat.

अमर

वाहिद	जमअ

मुज़ारअ

सेंगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सकौं	हम मार सकें
मुख़ातब	तू तें मार सकै	तुम मार सकौ
ग़ाइब	वह सो मार सकै	वे ते मार सकें

माज़ीमुतमन्नी

सेंगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मार सकतौ	हम मार सकते
मुख़ातब	तू तैं मार सकतौ	तुम मार सकते
ग़ाइब	वह सो मार सकतौ	वे ते मार सकते

हालिमुतयक्की

सेंगए

मुतकल्लिम	हौं मैं मारसकतु होंउगो हैंव्हैं	हम मारसकत होयगे हैंव्हैं
मुख़ातब	तू तैं मार सकतु होयगो हैंव्है	तुम मारसकत होउगे हैंव्हौ
ग़ाइब	वह सो मार सकतु होयगो	वे ते मार सकत होयगे हैंव्हैं

हैंव्है

HELPING VERBS IN THE ACTIVE VOICE.

Imperative.

Singular.	Plural.

Aorist &c.

1. I may be able to beat.	We may bc able to beat.
2. Thou mayest be able to beat.	You may be able to beat.
3. He may be able to beat.	They may be able to beat.

Imperfect Subjunctive.

1. I may have been able to beat.	We may have been able to beat.
2. Thou mayest have been able to beat.	You may heve been able to beat.
3. He may have been able to beat.	They may have been able to beat.

Preterperfect Subjunctive.

गृफत नामः

ग़लत	सही	सफ़ा	सतर
का	को	४	८
कां	कौं	४	१०
वे	के	५	१३
पहुंत पहुंते	पहुंचते पहुंचते	१०	१८

ERRATA.

Page 9. 2d person Sing. of Aorist, read thou beest, for thou hast.

10 pl. of Participle present. read Being, for being.

22 Line Ist, read Active for Passive.

23 Line Ist, read Active for Passive.

25 3d Person Sing. of Emperfect Subjunctive, read He would, for He could.

KITAB COLLEGE FORT WILLIAM
SEAL

प्रकाश नाममाला

[मियाँ नूर कृत]

श्री गणेशायनम्

प्रकाश नाममाला लिष्यते ॥ मियाँ नूर कृत भाषा ॥

दोहा ॥

प्रथम नमो परब्रह्म कौ ॥ जो परमातम ईस ॥
नामन की माला करौ ॥ सुमिरौ जस जगदीश ॥१॥
आल रसूल कवूल कुल ॥ जग में जागति जोत ॥
दान वली भुज वल अली ॥ कीनौ वंस उदोत ॥२॥
पान जहां नव पंड मैं ॥ प्रगट वहादुर पान ॥
जाके दान कृपाँन कौ ॥ साहि करत सनमाँन ॥३॥
पाँन जहा वहादुर वली । जफर जंग जिह नाम ।
सिपहदार पांनंद तिह । जीते अरि संग्राम ॥४॥
साहि सराहत सर्वदा । जानत सव संसार ।
सिपहदार पां कौ सुजस । पारावार सुपार ॥५॥
सिपहदार को वहादुर । ताको नादिर नूर ।
कादर करयो उदार वर । कवि कुल जीवनिमूर ॥६॥
पोथी ग्रंथ कथानि को । जानत सकल विधान ।
मूरै रचौ क्रतार को । दाता सुघर सुजान ॥७॥
ग्यान दान विनु ग्यान को । अधिकारी नहि कोइ ।
नूर नाम ही दाम की । ज्यों परमारथ होइ ॥८॥
परमारथ उपगार विनु । परमारथ न लहाहि ।
नूर जनम ताकौ सफल । जिह अस बोल रहाहि ॥९॥
यातैं यह संछेप सौ । माला रची वनाइ ॥
नूर नाम जग में अमर । पढ़त चित्त बिरमाइ ॥१०॥

ईश्वर नाम :

परब्रह्म पूरन पुरुष । परमेश्वर परधान ॥
परं जीति अविगत अलष । अविनासी भगवान ॥११॥
निर्विकार निर्गम विभु । निरंजन जगदीस ॥
सर्ब दरसी सरवज्ञ अज । नाथ चिदानन्द ईस ॥१२॥
जाकी आदि न अंत है । नहि आकार न रूप ॥
ताकौ नाम कहा कहौ । बिरद अनूप अनूप ॥१३॥
में अजान जानौ नहीं । एक नाम कौ ग्यान ।
अपने मन को सुद्धि कौ । दोहा बुद्धि प्रबान ॥१४॥
वालक हू सम कै कछू । पढ़ै जु या कौ नाम ।
अमर कोस तैं काढ़ि कै । कीनी प्रगट सुदाम ॥१५॥

सम्‍वत् सै पवन बरस। बिजै दसमि इषु मास।
नूर नाम माला करी। भाषा नाम प्रकास ॥१६॥
पहलैं पोथी नाम की मोहि न कछू बिचार
जैसे समझपी चित्त में। तैसें करी उचार ॥१७॥

कृष्ण नाम :

विष्नु नारायन क्रिस्न हरि वैकुंठ गोविन्द।
माधव दामोदर स्वंभू। इंद्रा वर्ज उपेंद्र ॥१८॥
चक्रपाणि भौ चतुर्भुज। पद्म नाभ वैस्यारि।
कैटभ जुत विस्वम्भर। जनार्दन कंसारि ॥१९॥
विष्वक्सेन त्रिविक्रम। हृषी केस विस्व रूप।
मुर मर्दन र मुकुंद सौ। नरसक सुमनूप ॥२०॥
श्री पति पुरुषोत्तम विभुः। गरुडध्वज जलशायि ॥
विष्टरश्रवा अधोक्षजः ॥ वासुदेव जस सायि ॥२१॥
मधुरिपु अच्युत सार्गेर। सौरि पुंडरीकाक्षि ॥
पीतांबर बनमाल सों श्री वत्स लांछन साक्षि ॥२२॥
केसव बलि ध्वंसी बहुरि। यज्ञ पुरुष सु पुरान ॥
पुत्र प्रगट वसुदेव को। आनक दुंदभिवान ॥२३॥

तीर्थंकर नाम :

विनायक सर्वज्ञ जिन। वीतराग अरहंत।
अद्वय वादी मारजित। धर्मराज मुनि संत ॥२४॥
षडभिज्ञः दसबल सुगत। बुद्ध लोक जित जान।
सास्ता श्रीघन तथागत। समत भद्र भगवान ॥२५॥

गौतम नाम :

मायादेवीसुत प्रमद। सौद्धोदनि रविवीर ॥
साक्य सिंघ सर्वार्थ सिध। साक्य मुनि मति धीर ॥२६॥

कृष्ण के आयुध नाम :

हरि कौस्तुभ मणि पांच जन्य संख सुदर्शन चक्र।
नंदक असि कौमोदकी गदा बसिष्ट धनक ॥२७॥

गरुण नाम :

गरुत्मान् तार्क्ष्यः गरुड ॥ वैनतेय खगईस।
गोतक भी नागभुक् सुपर्णरथ, अमरोस ॥२८॥

वलिभद्र नाम :

हलधर अरु अच्युताग्रज। रेवतीरमण राम ॥
प्रलंबघ्न बलदेव सो। मुसली पालक काम ॥२९॥

कालिन्द्री भेदन बलः । संकर्षण सीर पाणि ।।
रौहिणोय तालांक सो ।। नीलांवर तिहजाणि ।।३०।।

कमला नामः

श्रीपद्मा पद्मालया रमाभार्गवीमा सु ।।
लोक जनिनी छीरा ब्धिजा विश्नुप्रिया इंदिरा सू ।।३१।।

कामदेव नामः

काम मदन मनमथ समर । मकरध्वज सुअनंग ।।
दप्पक मन भव आतमभू । पुहप वापु वहुरंग ।।३२।।
मनसिज रतिपति प्रद्युम्न । मीनकेतु अरु मार ।।
मैनअन्य-नज ब्रह्म सू विरही जननि विदारि ।।३३।।
संवरारि कंदर्प पुनि नाम पंच सरताहि ।।
वितुन वहुरि झष केतु । अनुरुद्ध उपापति आहि ।।३४।।

काम के पंचवानः

मोह उचाटन वसिकरन उनमद ताप अपार ।।
पंच वान हैं काम के तीनि लोक व्योहार ।।३५।।

पितामह नामः

ब्रह्मा चतुरानन दुहिणः आतमभू सुर जेष्ट ।।
स्रष्टा वेधा विधाता । प्रजापति परमेष्ट ।।३६।।
विधि विरंचि कमलासन । अब्ज जोनि लोकेश ।।
हिरण गर्भ औ स्वयं भूः विश्वसृज पितामहेश ।।३७।।
विपण भिपण अज कमल भूः वाहनहंस वपान ।।
सुता सारदा पुत्र तिहि नारद प्रगट प्रवान ।।३८।।

मानसीक पुत्र ब्रह्मा काः

सनक सनंदन सनातन सनत कुमार विचार ।
ब्रह्मा सुत वैधात्रि कहि मानसीक एच्यार ।।३९।।

महादेव नामः

शंभु ईश शिव विश्वपति । शूलीभव ईशान ।।
शंकर ईश्वर शर्व मृड । स्थाणु रुद्र सोई जान ।।४०।।
चंद्र शिषर सु गिरीश पुनि ।। भूतेश्वर सर्वज्ञः ।।
कपाल भृतू प्रथमाधिपति । हर वृषभध्वजभर्ग ।।४१।।
व्योम केश अंधकरिपुः । क्रतुध्वंसी भिन कंठ ।।
भीम महेश्वर समर हर गंगाधर श्री कंठ ।।४२।।
चंड परशु मृत्युंजयः । कृत्ति वासा शिपिविष्ट ।।
त्रिलोचन त्रिपुरान्तकः त्रिवृक नंदु पनिष्ट ।।४३।।

कृशानुरेता धूर्जटी विरूपाक्षिग्रो वामा।
पंच वक्त्र ग्रहिर्बुध्न पुनि उग्र उमापति नाम ।।४४।।
नन्दकेश्वर प्रमेथेश पुनि नील लोहित त्रिपुरारि।।
पटों पिनाका कपर्दी विश्वनाथ उर धारि।।४५।।
जटा जूट हर कपर्द: । ग्रजगव धनुष पिनाक।
प्रथमा जामद्ग पारषद । ग्रष्टसिद्धि सिद्धि बाक।।४६।।

अष्ट सिद्धि के नाम.

ग्रणिमा महिमा लघिमा । गरिमा प्राप्ति प्रकाम.।
वसी करन मद ईसता ग्रष्ट सिद्धि के नाम।।४७।।
भूति विभूति सु ऐश्वर्य। ग्रष्ट भांति सिधि सर्व।।
हा हा हू हू ग्रादि दै। देवन के गंधर्व।।४८।।

नवनिधि के नाम:

महा पद्म ग्रौ पद्म पुनि कच्छप मकर मुकंद।।
शख वर्च मद नोल इक ग्रव इक कहियत कुंद।।४९।।

पार्वती नाम:

गौरी गिरिजा ईश्वरी स्वरी ग्रम्बिका मातु।
उमा ग्रपर्णा भैरवी चामुंडा विख्यात।।५०।।
सर्वमंगला ग्रंबिका सर्वाणी दुर्गा
सुमेनकात्मजा ग्रारजा कर्म मूली कहि तासु।।५१।।

सप्तमाता नाम:

वैष्णवी ब्राह्मी वाराहीमाहेस्वरिइन्द्राणि:
चामुंडा कौमारिका मातरि सप्त बषानि।।५२।।

गणेश नाम:

विघ्नायक सु गणाधिप । द्वैमातुर एक दंत।।
लंबोदर हेरम्ब पुनि गनपति गिरिजातंत।।५३।।
मूषक वाहन शिवतनय कहै गजानन ताहि।
फरस पानि सु गनेस है विघ्न बिनाशन ग्राहि।।५४।।

स्वामि कार्त्तिक नाम

महासेन सरजन्मगुह । तारकजित सु कुमार।
शिषि वाहन ग्रौ शक्ति धर बाहु लेय सुविचार।।५५।।
पार्वती नन्दन ग्रग्नि भू:। सेनानी सुविशाष।
स्कंध षडानन मात्रिपट। क्रौंच दारण हमाष।।५६।।

स्वर्ग नाम:

दिव द्यौ ग्रव्यय नाक स्व:। त्रिदशालय सुरलोक।
स्वर्ग त्रिविष्टप ग्रो बहुरि। त्रिदिव: सोई सुर ग्रोक।।५७।।

इंद्र नाम:

जिश्नु पुरंदर, सची पति, सुरपति, सुत्रामान,
जमभेदी, स्वच्छो वृषा । बाल राति मरुत्वानि ॥५८॥
वास्तोपति, वृद्धश्रवा, सुनासीर, शतमन्य ॥
सहश्रादि दुश्चियवन पुनि जिह्वाकृपर्वंन्य ॥५९॥
कौशिक वासव वृत्रहा आखंडल तिहिगान
सक्र पाकशासन बहुरि मघव बिडौजा मान ॥६०॥
लेखर्षभ संक्रंदनो । हरिहय कुलिशित होइ ॥
तुराषाट नमुचिद्विषा दिवस्पती हु सोइ ॥६१॥
है सुराट पुरहूत पुनि शतक्रतु जगनिशान ॥
पुन पाक शासनि प्रथम द्वितीय अयंत बखान ॥६२॥

इंद्रणी नाम:

इंद्राणी नू पुलोमजा । सची नाम पुनि नाम ॥
वैजयंत प्रासाद है । मरावती विलास ॥६३॥

ऐरापति नाम:

ऐरावत ऐरावणो अभ्र वल्लभो जानि ।
इंद्र अभ्र मातंग है व्योम जान सुविमानि ॥६४॥
हय उच्चैश्रव इंद्र को । मातलि जानहु सूत ॥
पुष्कर रथ नंदन सु बन । सुधर्माधिपति रूप ॥६५॥

वज्रनामे:

वज्र ह्लादिनो कुलिश पवि । भिदुर अशनि निघात ।
दंभोलिः स्वरु संवद । शतकोटि उपपात ॥६६॥

देवता नाम:

देव अमर निर्जर विबुध । सुमनस औ गीर्वाण ।
त्रिदिवेश त्रिदस दिवौकसः दिविषद स्वर स्वपर्वाण ॥६७॥
अदित नन्द लेपा अवर आदितेय आदित्य ॥
रिभु अस्वप्न अमृतांधसः वृंदारक दैवत्य ॥६८॥
आग्निजिह्व रु विमानगत । क्रतुभुंजन अति ओप ॥
दानवारि बहिर्मुपा । रहत दिष्टि आलोप ॥६९॥

गण देवता नम:

आदित्य १२ विश्व १३ वसु ८ तुषित ६६ पुनि ॥
भास्वर अनिला ४९ जानि । महाराजिक २२ साध्या–
१२ रुद्रा ११ गण देवता बखानि

दस देव जोनि नाम:

विद्याधर १ १ गंधर्व २ जक्ष ३ अप्सर ४ राक्षस ५ सिद्ध ६ ॥
किंनर ७ गुह्यक ८ भूत ९ पुनि । मरुपिशाच १० दशविद्ध ॥७१॥

देवसभावासुमेर नाम :

देव सभा सोई सुधर्मा नारद सुर रिष नेम ।
मेर सुमेर सुरायस रत्न सानु गिर हेम ॥७२॥

दैत्य नाम :

इन्द्रारि : दानव असुर । दनुज : पूर्वदेव ॥
दितिसुत सुरद्विषप दैत्य । पुनि सुक्र सिष्य दैतेय ॥७३॥

अमृत वा कल्प वृक्ष नाम :

अमी अमृत पीयूष मधु । सुधा मयूष बखान ॥
हरि चन्दन मंदार पुनि पार जात सतान ॥७४॥

अप्सरा नाम :

सुर वेस्या उर्वसि सुधा । कहै अप्सरा नाम ॥
बहुरि घृताची मेनिका । रंभा उर्वसि भाम ॥७५॥
मंजु घोषा सतिलोत्तमा । बहु सुकेसी तीय ॥
सप्त भांति ए जानिए । बसति सुरन के हीय ॥७६॥
अश्विनी दस्त्रौ बहुरि नासत्यौ सुर वैद: ॥
प्राण देव आश्विनेय पुनि । दोऊ वीर अभेद ॥७७॥

अग्नि नाम :

अग्नि वहि वैश्वानर: ज्वलन हुताशन जीव ॥
जातवेद जल जोनि हरि । धामुसपा वहनीव ॥७८॥
सोचिष्केस उपर्बुध: । आशयास बृहद्भानु ।
पावक अनल धनंजय: निर्जर धूक कृशानु ॥७९॥
चित्र भानु दमुना बहिर्हौत होत्र । शिखावान ।
हिरण्यरेता हुतभुज. ग्रुष्याश्विपरवान ॥८०॥
अशु शुक्षणि: शुचमा बहुरि । विभावसू, रोहिताश्व ॥
कृपीट जोनि तनून पात् । कृष्न वर्त्मा जासु ॥८१॥
समी गर्भ स्वाहारमण शुचि कहिये तिह नाम ।
वृषा कपि हव्य वाहन: सप्त जिह्व अभिराम ॥८२॥
वरुना पिता माता अरणि स्वाहा स्यौ हिउ मन्त: ।
दक्षिणाग्नि गारहपत्य आह वनीय त्रय अग्नि ॥८३॥

अग्नि शिखा नाम :

अर्चि हेतु ज्वाला मर्यु कीला शिखा बखानि ॥
वरवानल बड़वा औरै दव दावानल जानि ॥८४॥

धूवावा अंगार नाम :

धूम भंग औ सिषध्वज धूवा नाम बषान।
कहै फुलिंग रु अग्नि कण अंगार न परवान ।।८५।।

यमराज नाम :

धर्म्मराज औ पितृ पति : समवर्त्ती की नाश
अंतक काल किनाक यम सहपध्वज है तास ।।८६।।
वैवस्वत नर दंडधर श्राधदेव जु कतांत।
समनो यमुना भ्रात यो प्रेतराज सुवृतात ।।८७।।

राक्षस नाम :

राक्षस असुप रात्रि चर क्रव्यातः क्रव्याद।
कर्गा सुत निकषात्मजः। जातुधान दुर्नाद ।।८८।।
जातु रक्षसों पुन्यजन कर्बुर आसुर होइ।
नैरित कोणप असृक्प रात्रि चर है सोइ ।।८९।।

वरुण नाम :

वरुण याद सांपति सोई। पासी जलचर ईश।
बहुरि प्रचेता आप पति नूर कहत कविईश ।।९०।।

पौन नाम :

वायु स्वसन मारुत मरुत पवन अनिल पवमान।
गंधवाह पुनि गंध वह नभसुत अरु जगप्रान ।।९१।।
वात प्रभंजन आसुग पृषदस्व बहुरि समीर।
मातरिश्वा ओस्पर्शन कहै सदागति धीर ।।९२।।

पांच प्राण नाम :

हिरदै प्राण १ अपान २ गुद मंडल नाभि समान ३।
कवदेसउ द्दानहै ४ सर्व शरीरग व्यान ५ ।।९३।।

सीघ्र नाम :

शीघ्र चपल द्रुत तूर्ण लघु अविलंबित उत्ताल।
जव सत्वर क्षर क्षिप्र अरु आसुफटति अति चाल ।।९४।।

किन्नर नाम :

रहस्पद तुरसी तुरीय तुरत चलन के नाम। *
किन्नर किंपुरुष मयु। तुरग बदन अभिराम ।।९५।।

---

*हस्तलिखित प्रति में भी दोहे का केवल एक ही चरण है। दूसरा चरण नहीं है। किन्तु यथार्थ में ऐसा नहीं है क्योंकि एक चरण 'शीघ्र नाम' के साथ ही रहना चाहिए और 'किन्नर नाम' द्वितीय चरण में आरम्भ होते हैं। यह एक शैली दीखती है।

अति नाम:

अतिशय भर अति बेलि भृश । अतिमात्र उद्गाढ ॥
निर्भर तीव्र नितांत दृढ़ एकान्त सोई गाढ ॥९६॥

निरंतर नाम:

अभीक्षण सतत सश्वत् विरत अभिसतो नित्य ।
अजस्र अस्त्रांत अनारत । अनवरत अभ्र चित्त ॥९७॥

कुवेर नाम.

राज यक्षकुपा नर वाहन किन्नरेश ।
धनद मनुष्य धर्मा बहुरि श्रीद पुण्यजनेश ॥९८॥
यक्ष राट पौलस्त्य पुनि वैश्रवण हुजुकहंत ।
एक पिंग यक्ष एलविल । धनपति नाम सहंत ॥९९॥
धनद उद्यानसु चैत्ररथ नल कूबर सुत जान ।
कैलास थान अलिकापुरी । पुष्पक ताहि बिवान* ॥१००॥
इति स्वर्ग वर्ग समाप्त :

अथ व्योम वर्ग: । आकाश नाम:

अभ्र व्योम पुष्कर गगन अंतरीक्ष आकाश ॥
अम्बर नभ सुर वर्त्मपं । नाक अनंत अनवाश ॥१०१॥
वियत, विष्णुपद महाबल । मेघद्वार जलधाम ।
अभ्यय तारा पंथ दिव । द्यौ बिहाय सो नाम ॥१०२॥
इति व्योम वर्ग. । अथदिग्वर्ग: ।

दिशानाम.

दिशा ककुभ काष्ठा हरित । गो कन्या आशा सु ।
दिशा मध्य जो आप दिशा । विदिक कहे कवि तासु ॥१०३॥

चारि दिशा नाम:

पूरब प्राची अवाची दक्षिन जानहु आह ।
प्रतीची पश्चिम उहे उत्तर उदीची ठाह ॥१०४॥

दश दिशा नाम.

पूरब आग्नेउ दक्षिन । नैरित पश्चिम मान ॥
वायव उत्तर ईशान दिश ऊर्ध्वा नागा दश आनि ॥१०५॥

आठो दिशापति नाम :

इंद्र वह्नि यम नैऋत । वरुण सु मारुत आह ।
धनद ईश शिनि पावक पूर्व तें पति आहि ॥१०६॥

*मूल में पाठ 'पुष्पक ताहि बिवान है ।'

दिशापति ग्रह नाम :

रवि भृगु मंगल राह सनि ससि बुध सुरगुरु होइ ॥
यथा आठ दिस आव ग्रह। वरनत है सब कोइ ॥७॥

आठदिगपति नाम :

ऐरावत पुंडरीक पुनि वाधन कुमद स भाग ॥
अंजन पुष्फदंत सार्वभू । सुप्रतीक दिगनाग ॥८॥

मेघनाम:

मेघ अभ्र तनयिन्नु घन धारा-धरंत डित्वान ॥
मिहिर मुदिर जीमूत पुनि और बलाकहजान ॥९॥
वारि वाह वारिद सोई। धूम जोति पर्यन्य ॥
कंभृत जरगुक घनाघन । जह बरषत सो धन्य ॥१०॥
मेघमाल कादिंविनी स्तनित मेघ निर्घोप ॥
गर्ज्जितरसत सु आदि दै। जानि घोर निर्द्दोप ॥११॥

दामिनी नाम:

सौदामिनी अकाल की । क्षटा चंचला देपि ।
ऐरावत्य क्षण प्रभा संपा कादिनी लेपि ॥१२॥
विद्युत चपला शतह्रदा घनरुचि तडित कहंत ।
रिजु रोहित है इंद्रधनु शक्र पांनि जु गहंत ॥१३॥

वर्षा का अवर्षा नाम:

वृष्टि वर्ष सो वर्षणं। तद्विघात जो होइ ।
अव ग्राह सु अवग्रह कहै अवर्षण सोइ ॥१४॥
आसार धारा पतन सीकर जल कण जानि ।
वर्षोपल कारिका सोई ओला कहै वखानि ॥१५॥
मेघ छंन दुर्दिन उहै । रिरंमद घन जोति ॥
वज्र शप्दसो स्फूर्जथु: जामै अभ्र उद्योति ॥१६॥

ढकणा का नाम:

आच्छादन अर्तछि पुनि अपवारण अपिधान ।
अंतर्द्धा व्यवधा वहुरि तिरोधान सुपिधान ॥१७॥

चन्द्रमा नाम:

चन्द्र चन्द्रमा इंदु विधु। ग्लौ मृगांग द्विजराज्य ।
कुमद वांधव कलानिधि क्षपाकर सुविराज्य ॥१८॥
सोम ससांक सुधांस कहि औषधीश सुभ्रांश ।
नक्षेत्रश जैवात्रक अज्व मयंक हिमांसु ॥१९॥
है हिमदुति शशधर प्रगट निशापति निशचार ।
जगदर्प्पण औ कलंककी राकापति विचार ॥२०॥

माया का नाम:

भिस सकल सोगंह पु
बिय भद्र मंडल कला।

चांदिना व कलंक नाम:

जौन्ह चन्द्रिका कौमुदी
भू छाया मांछन लक्ष्य

सोभा नाम:

भाभा कान्ति द्युति, छवि
विभ्रम राजा विभूपा

पाला का नाम:

प्रालेयं तुहिनं हिमः
जड़ मुनोमि मिहका खिव
है प्रसाद परसन्नता हि

ध्रूवा मगस्ति नाम:

ध्रूव मौत्तानिपादि सौ
मैत्रा वरणि नारि सिह तं

नक्षत्र वा वृहस्पति नाम:

तारा भं तारक उडु
जीव वृहस्पति गुरु धिपण
चित्र शिपं द्विज आंगिरसु
प्रोष्पति जनक हुतै । सु

शनैस्वर नाम:

उशना भार्गव काव्य
सौरि असित शनि

मंगल या बुध नाम:

कुज अंगारक लो
महो पुत्र पर

राहु या केतु नाम:

राहु वि
केतु ि

सप्त रिषि नाम:

नारदा
मंचित

अत्रि मरीचि सु आदि दे नाम सप्त रिषि जान ।।
रासिन की उदयोलग्न । मेष वृषादय आन ।।१३१।।

सूर्य नामः

सूर्य सूर रबि अर्जमा द्वादशात्म ग्रह पति ।।
भानु हंस इन दिवाकर विभाकर सु अभिगत्ति ।।१३२।।
भास्वत विवस्वत चंडकर उश्नरस्मि उश्नासु ।।१३३।।
मिहर तिमर हर-प्रभाकर मित्र वृध्न सहस्रांसु ।।१३३।।
अर्क विरोचन वीर्भविसु मार्तंड त्रयिअंग
अंबर मणि दिनमणि तरुणि कर्मसाक्षि सु पतंग ।।१३४।।
प्रद्योतन संविता तपन चित्रभानु हरदश्व ।
द्युमणि विभावसु विकर्तन त्वपांपत्ति सप्ताश्व ।।१३५।।
पूषण अरुण आदित्य पुनि जगत चक्षु पद्योत ।
लोक वंधु हेलि अहस्कर । भास्कर तेज उद्योत ।।१३६।।
मावर पिंगल दंडए रहै निकट निति सूर ।
सूर्य सूत गरुड़ात्मजः काश्यपि अरुण अनूर ।।१३७।।

वाडिपरिवेष नामः

सूर्य मंडल उपसूर्यकः परिधि सोई परवेष ।
द्योत प्रताप सू आतप, तिग्म तीक्ष्णपर लेप ।।१३८।।

छाह नामः

सूर्य प्रिया प्रतिविम्व सो कांतिअनातप छांह ।
अनुतुच्त्री संतोपिनी । छावा छाजत नाह ।।१३९।।

किरणि नामः

किरणि गभस्ति मयूष कर अस्त्र मरीचि सु अंसु ।
दीधति भासू छविः दीप्ति द्युतिरोचिसोचि सुप्रसंस ।।१४०।।
रुक् रुचि त्वटू भा घृश्नि घृणि प्रभावहुरि गो धाम ।
मृगतिश्ना सु मरीचिका । हरि किरननि को नाम ।।१४१।।
इति दिग्वर्गः

अथ काल वर्गः

काल नामः

वय अनीहअनभिप समय समाज वेला काल ।
कहै अदृष्ट एने हसः । जाकी गति चल चाल ।।४२

पडिवा वा दिन नामः

पक्षति प्रतिपत् प्रतिपदा तदा दयो तिथि जान ।
अहन घस्र बासर दिबस अह दिन नाम प्रवान ।।४३।।

प्रभात नाम:

प्रात प्रकल्य प्रत्यूष उष, प्रत्यूषसि ग्रहमुख ।।
भोर प्रभात विभातयोः ग्ररुणोदय तें मुष ।।४४।।

संध्यात्रय नाम:

पितृ प्रसूः संध्या सोई सायं भोर दिनात ।
प्रातक्रम मध्यान्ह ग्रपराह्न सो, संध्यात्रय ग्रनिवांत ।।४५।।

रात्रि नाम:

निशा रात्रि रजनी तमी क्षणदा क्षपा त्रियाम ।
शर्वरी ग्रोर तमस्विनी विभावरी के नाम ।।४६।।
निशीथनी ग्रौ महानिशि है निशीथ ग्रपराति ।
कहै तमिश्रा तामसी ज्योतिरना ग्रतिक्रान्ति ।।४७।।
रजनी मुखमु प्रदोष है । याम प्रहर की जान ।
पर्व संधि नाम पंचदशी पक्षांतो परवान ।।४८।।
पूर्णमासी पूर्णिमा ग्रनुमति कला जु हीन ।
राका पूर्ण चन्द्र जहा, भाषत नूर प्रवीन ।।४६।।
ग्रमावस्या ग्ररु प्रतिपदा बीचि रहन को होइ ।
पंचदशी है होत है पुनि पक्षांत सुसोइ ।।५०।।
ग्रमावास्यावर्शसो । सूर्य चन्द्र मिलि जाय ।
कुहू नष्ट ससि जानियें सिनी वाली दरशाय ।।१५१।।
जहां ग्रमावस रैनि में चन्द्र कला जो होइ ।
सिनी वाली सो जानियो कुहू कला बिन सोइ ।।१५२।।

ग्रहण नाम:

उपराग ग्रहराहु करि ग्रस्त सूर ससिहोइ ।
उपप्लव उपरक्त सु पुष, उपाहित ग्रग्नि तें सोइ ।।१५३।।
निमिष ग्रठारह जब लगें कहै काष्टा ताहि ।
तेन्'दश बीतें कला कलानिदा क्षिण ग्राहि ।।१५४।।
द्वादश क्षण सु महूर्त इक । तेनितस दिनरात ।
ग्रहोरात्रि दश पंच गयें । पक्ष पूर्व परण्यात ।।१५५।।
कृष्ण शुक्ल पूर्व पक्ष को एक भाग तब होइ ।
मापादिक द्वै मास रितु ग्रयमत ग्रयन सुसोइ ।।१५६।।
उत्तरायन दक्षणायन बीते वत्सर जान ।
होहि बराबरि राति दिन विषवत विषवत मान ।।१५७।।
पून्यौ पुष्प जुत मास जिह जानहु पोषो ताहि ।
नाम पोष मापादिते एकनाम पुनि ग्राहि ।।१५८।।

मार्ग सर वा पौह वा माघ नाम :

मार्ग शीर्ष मार्ग सहा, आग्रहापिणि कहुंत ।
पौष तैष सहस्प पुनि तपा माघ सलहंत ।।१५९।।

फागुण वा चैत वा वैशाष व जेष्ट नाम :

फाल्गुन तपस्पः फाल्गुनिक, मधु चैत्रक श्रीचैत ।
वैशाप राधो माधो, जेष्ठ शुक्रद्वैवेत ।।१६०।।

असाढ़ वा सावन वा भादों नाम :

शुचि आषाढ सु श्रावणि नभ श्रावणिकइ सोय ।
भाद्र पद, प्रोष्ट पद, नभस इनाम तिह होइ ।।१६१।।

आसौज वा कार्तिक नाम :

आश्वनि इष अश्व जु ज उहै है सोई आसोज ।
कार्तिक कः कार्तिक उर्ज वाहुल जानहु सोज ।।१६२।।

षट ऋतु नाम :

षट ऋतु छे छे मास की मंगि सिर पौष हेमंत ।
माघ फाल्गुन सिसर रितु । जामै सीत अनंत ।।१६३।।

बसंत ऋतु नाम :

कुसमाकर माधव सुरभि पुष्पसमय रितुराज ।
मधु वसंत रितु जानियै चैत्र वैसाख समाज ।।१६४।।
ग्रीषम उष्म उश्न पुनि उष्मा गम तम होइ ।
उश्नो पगम निदाघ सो जेष्ट अषाढ सुदोइ ।।१६५।।
प्रावृट बरषा रितु कहै सांवन भादों मास ।
सरद सरित्सुवषानियौ । अश्वनिकार्तिगमास ।।१६६।।
षट रितु मंगसिर आदि द्वै । मासन की दै हर्ष ।
संवत्सर बत्सर अब्द । शरत सुहायन वर्ष ।।१६७।।
अहोराति पित्रृनिकी एक मास की होइ ।
दे बन की एक बरस की यज जानै सब कोइ ।।१६८।।
दैवन के युग सहस छै, ब्रह्मा कल्प बषानि ।
मन्वंतर दिव्य बरष जुग, इकहत्तरि परवानि ।।१६९।।
प्रलय कल्प संबर्त्त क्षय । कल्पान्त जग होइ ।
पून्य श्रेयसी सुकृत वृष । धर्म करहु सब कोइ ।।१७०।।

पाप का नाम :

पाप पंक किल्बिष कलुष, वृजिन तुरित अघ एन ।
रंह दुःकृत कस्मल कलल कल्मष पाप भजेन ।।१७१।।

आनन्द वासुप नाम :

आनंद प्रति प्रमोद मुद संमद प्रमद उछाह ।
आनंद मु: प्रहर्ष सोई, धर्म जाउनी वृता जाह ॥१७२॥

कल्याण नाम :

स्वः श्रेयस शस्त्र शिवः भद्र भव्य सुम क्षेम ।
मंगल भाविक भविक शं इष्ट कुशल सब प्रेम ॥१७३॥
मतल्लिका सु मचर्चिका मुडतल्ल जो भाग ।
पैकाड वाच प्रशस्तए मय सुभा सुविधिधान ॥१७४॥

भाग्य नाम :

भाग्य धेय भी नियत विधि दैव दिष्टि यो कर्म ।
विशेष अवस्था काल को सोई यहंवमर्म ॥१७५॥

कारण नाम :

हेतु निमित्त सु कारणं बीजं जोनि निबंध ।
कारण आदि निदान है गुण सत रज तम धध ॥१७६॥

जीव वा प्रकृति वा उतपात्ति नाम :

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुष सत्व प्रकृति अनुमान् ।
पुनर्भवी चेतन सोई । जन्तु जन्यु सु प्रधान ॥१७७॥
जनुः जन जन्मन जनि उत्पत्ति उद्भव धाव ।

प्राणी वा जाति नामः

प्राणी जन्मी जंते जन्यु चेतन तनु भृत मोइ ।
जाति जात सामान्य पुनि व्यक्ति पृथक जो कोई ॥१७९

मन नामः

चित्त चेतो हृदय हुर स्वांत कहृद कवितहि ।
मानस मानस नूर कहि, जुग को कारन चाहि ॥१८०॥

इति काल वर्ग अथ धीवर्गः

बुद्धि मनीषा धीषिषणा । प्रज्ञा सोई चित्त ।
शेमुषि चेतना मेधया, मति प्रेक्ष मचित्त ॥१८१॥

बुद्धि का गुण नामः

शुश्रूषा नूर धवा ग्रहण धारणा बुद्धि ।
ऊहे उचित जानन चर्च तत्व ध्यान पुन बुद्धि ॥१८२॥
मेधा धीधारणवती, मन को धर्म गह का ।
मनस्कार धामोंद चित्त जानन को सुदशा ॥१८३॥

चर्चा वा तर्कः

चर्चा कहै विचारणा संख्या जानुहुताहि ।
अध्या हार सुतर्क है ऊह सकवि जन आहि ।।८४।।
विचिकित्सा सोई संसय, द्वापुर पुनि संदेह ।
निर्नय निश्चय जानियो, नूर सिधांत सुएह ।।८५।।
नास्तिकता मिथ्या दृष्टि २ ।।

द्वेष नाम वा भ्रम नामः

द्रोह चित व्यापाद, मिथ्या मति भ्रम भ्रांतिए ।
भ्रम के नाम जगाद ।।१८६।।
संवित आगू प्रतिज्ञा आश्रव संश्रव नेम ।
अंगी कार समाधि अभ्युपगम प्रतिश्रव प्रेम ।।१८७।।
गुवित विपै मति जासंकी नूर ज्ञान है सोइ ।
शिल्प शास्त्र मैं जो चतुर है विज्ञान सुलोइ ।।१८८।।

पंचम गति नामः

लय सु मोक्ष श्रेय अमृत निर्वाण अपवर्ग ।
महा सिद्धि कैवल्य पुनि निःश्रेयसवर स्वर्गः ।।१८९।।

अविद्या वा विषयाः

कहै अविधा अहंमति सोई है अज्ञान ।
रूप शब्द औ गंध रस स्पर्श विपया आन ।।१९०।।

इंद्री नामः

गो हृषीक पंकरण गुण इंद्री जानहु ताहि ।
इंद्रियार्थ जो आनिये गोचर कहिये वाहि ।।१९१।।
विपया इंद्रीय हृषीकं कर्मेन्द्रिय पाद्वादि ।
मन नेत्रादिक धीं न्द्रिय। अपनै अपने स्वादि ।।१९१।।

षटरस नामः

तुवर सोई कपायल मधुर लवण कटु त्तिक्त ।
अम्ल सुरा षट रस प्रगट अवरनही अतिरिक्त ।।१९२।।

सुगंधि नामः

आमोदी आमोद पुनि मुष बासन सो जान ।
घ्राण तर्प्पन नूरमनि निर्हारी सो आन ।।
इष्ट गंधि सुरभी उहै, है सुगन्धि जग माहि ।
निरहारी सो नूर कहि पंडित भेद कहाहि ।।१९४।।

परिमल नामः

विमल द्रव्य मर्दन किये प्रगटै परमल सोइ ।
जो सुगंधि मन कौ हरै, अति निरहारी होइ ।।१९५।।

दुर्गंधि नाम:

पूति गंधि दुरगंधि सो आम गंधि पुनि आहि ।
नियनाम सो नूर कहि कोऊ करत न चाहि ॥१९६॥

उज्जल नाम:

शुक्क शुभ्र शुचि बिसद सित । गौर स्वेत अवदात ।
अर्जुन, पांडुर, धवल, पुनि और बिलक्ष, बिख्यात ॥१९७॥

काला व पीला नाम:

कृस्न नील मेचक असित काल. स्यामल स्याम ।
पीत हरिद्राभ हरित कहि पालास तिहि नाम ॥१९८॥

अरुण नाम :

रोहित लोहित रक्त भनि, कोकनद युक्त ।
अव्यक्त राग सोई अरुण पाटल स्वेतक रक्त ॥१९९॥
श्यावक पिश सो धूम्र पुनि धूमल कृष्ण ललात ।
हरिण पांडुर धूसर ईषत पांडु सुभात ॥२००॥

पिंगल व कर्बुर नाम:

पिंग पिशंग सु कद्रु पुनि कपिल कडारहु भाष ।
शबल चित्र किर्मीर सो कर्बु है कल्माष ॥२०१॥

सरस्वती नाम:

हंस वाहनी सरस्वती वाक् भारती जान ।
ब्राह्मी भाषा गिरा,गो वाणी इश प्रधान ॥२०२॥

बोलण का नाम:

उक्ति लपित भाषित वचन वच व्याहार गु बोल ।
अपभ्रंश अपशब्द पुनि बाचक भूक्षिमय बोल ॥२०३॥

वेद नाम:

वेद निगम आम्नाय श्रुति त्रिविधि धर्म बिचार ।
ऋग्साम: यजुर्वेद इति वेदत्रयो बिचार ॥२०४॥
शिक्षा सो उत्पत्ति जो, सो श्रुति पग बिचार ।
कवि कोविद सब कहत हैं । नूर बिचार बिचार ॥२०५

षडंगरा ओंकार नाम:

शिक्षा कल्पो व्याकरण छंदो ज्योति निरुक्ति ।
ओंकार प्रणवो वषो इतिहास पुरा उक्ति ॥२०६॥

शास्त्र वा पढ़ण का नाम:

आगम प्रवचन सूत्र ग्रंथ तत शास्त्र निदान ।
स्वाध्यायपाठ पठन, अध्ययन भनिजा ॥ २

षड दरसन वा शास्त्र नामः

शैव वेदान्त नैयायक, बौद्ध मीमांसिक जैन ।
षट दरसन षटशास्त्र ते कह्यौ ग्रंथ मत ग्रैन ॥२०८॥

राजनीति विद्या नामः

आन्विक्षिकी विद्या तर्क, दंडनी अर्थ प्रवान ।
उपल व्यार्थ आख्या[यि]क लक्षन पंच पुरान ॥२०९
प्रवल्हिका नु प्रहेलि[क]ा रचना कथा प्रपंच ।
धर्म संहिता सो स्मृ[ति] समाहृति संग्रह छंद ॥२१०
सर्गः प्रति सर्ग व[ंश]रि वंस मन्वंतर जान ।
वंशानुचरितं कहे लक्षन पंच प्रवान ॥२११
प्रवल्हिका सु प्रहेलि[क]ा रचना कथा प्रवन्ध ।
धर्म संहिता सो स्मृ[ति] समाहृति संग्रह छंद ।

वात नामः

किंवदंति जन श्रुति कहै समासार्थ समस्यासु ।
वार्त्ता प्रवृत्ति वृतांत पुनि नाम उदंत सुतासु ॥२१२॥

नाम का नामः

संज्ञा आह्वयगोत्र पुनि आख्याह्व अभिधान ।
नाम धेय सोनूर कहि तारन तरन प्रवान ॥

विवाद नाम वा सगध नामः

उपन्यास सो वाग[म]ुपं विवादो अव्यवहार ।
सपन सपथ सौंह स्[य]ौ कहै उपोद्यात उदाहार ॥२१४॥

चुप्प के नामः

तूश्नो तूश्नीकं पुन[ि] मौन अभाषणनाम ।
सद्य सपदि सुतत्क्षण[ा]ः तात्कालिक अभिराम ॥२१५॥

बुलावण का नाम

आह्वानं आकारणं हूति बुलावति कोइ ।
संहूति वहु वोल दै तिह आवन नहिं होइ ॥२१६॥

उश्न वा उत्तर नामः

अनुयोग प्रछा प्रश्[न] मारग नूर लहंत ।
उत्तर पुन प्रति वा[क्]य सो प्रश्नोत्तर जु कहंत ॥२१७
सव्द होत अनुराग तै कहै प्रणाद सुताहि ।
उद्दात्त अनुदात पुनि स्वरित तीर स्वर आहि ॥२१८॥

झूठी करतूति वा झूठ वचन नामः

अभिख्यान सो जानि[ये] मिथ्याभिजोग सुहोइ ।
अभिसाप सो जानि[ये] मिथ्याभिसंसन सोइ ॥२१९॥

कीर्ति नामः

वर्ण गुणानजि ख्यात जस साघु वाद अवदान ।
कीर्ति समज्ञा स्तव स्तुति, नुतिः स्तोत्र परवान ॥२२०॥
कहिये दोयर तीन बर तिह आम्रेडित जान ।
सोक भीत युत है जु धुनि ताकहु काकु बखान ॥२२१॥

कचेपुकार नामः

गुंजै घुष्टं घोषणा संघु क्रुष्ट सनिष्टीव ।
वाचाल वाचाट जो कुत्सित भाषो षीव ॥२२२॥

निंदा नामः

गरहण कुत्सा जुगुप्सा । आक्षेप निर्वाद ॥
अपवाद वतु अवर्ण सो, उपक्रोश परीवाद ॥२२३॥
पारुष्यं अतिवाद सो भर्त्सनंभी अपकार ।
निंदा सहित उपालम्भौ परिभाषण सुविचार ॥२२४॥
माक्षारणाय: सोई मैथुन प्रति आक्रोश ।
आभाषण भलाप है प्रलाप अनर्थ बचोस ॥२२५॥
भनलापो भाषन मुहुः परदेवन सु बिलाप ।
विरोधोक्ति विप्रलाप है मिथ भाषण संलाप ॥२२६॥
सुवचन को सुप्रलाप कहि मिन्वव है अपलाप ।
वाणा क्रोध कुरेफणा श्लाघ चाटुचटु चाप ॥२२७॥

सराप नामः

सवेस बाकू सो बाचकं क्यती है अकल्याणि

सुभ वाणी बोलैः

कल्या वचन सुभात्मिका मधुरं सात्वं आणि ॥२२८॥
निष्ठुर परुष कठोर पद अश्लील सो ग्राम्य ।
युगपत् एक ही काल जो सून्यत प्रिय सत्य साम्य् ॥२२९॥

बात कहैं थूक आवै ताका नामः

सनिष्टीव अंबूकृतं त्वरितो दितं निरस्त ।
अनक्षरं सु अवाच्य है लुप्त बर्ण पद ग्रस्त ॥२३०॥

झूठो अर्थ जिह समने मैं:

आहृत कहै मृषार्थक अवद्ध अनर्थक होइ ।
अविस्पष्ट सुविलष्ट कहि वितथ अनृत वच सोई ॥२३१॥

सांच वा झूठा नामः

सत्य तथ्य सम्यक ऋतं मिथ्या आदि प्रकार ।
उचित अमोघ यथारथ निर्संदेह निरधार ॥३२॥

जथोरथ बहुरो बृषामिथा मिथ्या मोघ अलीक ।
बिलथ बितत्थ ब्रिषा अनृत मृषा असत्य अठीक ।।३३।।
मनितं रातिकुजित सब्द श्रव्य हृद्य मनोहार
विस्पष्टं प्रकटोदितं प्रेम्ला मृपा उचार ।।३४।।

इति घी वर्ग:

अथ शब्दादिवर्गा:

शब्द नाद निश्वन निनद स्वान घोप निर्हाद ।
धुनि रव सुन निश्वान सो ध्वान अराव निनाद ।।३५।।
आरसं राव विराव पुनि शिंजित भूषण राव ।
स्वनित कहि पर्णादिक कौ मर्म्मर वस्त्र सुभाव ।।३६।।

वीण शब्दनाम:

निक्वाणा निक्वण क्वण: क्वाण: क्वणन वपान ।
वीणा के एते क्वणत, पक्णा दयवहु आनें ।।३७।।

बहुत शब्द पछी शब्द नाम:

कोलाहल कल कल रूतं, पंछी वाशित होइ ।।
प्रति श्रुत प्रति ध्वनि नूरकहि गीत गान है सोइ ।।३८।।

इति शब्दादिवर्ग्ग:

अथ नाद्य वर्ग्ग: प्रथम ही सप्त स्वर नाम:

निषाध, रिपभ, गंधार पुनि षडग सुमध्यम जानि ।
धैंवत पंचम सप्त स्वर पंडित कहै बषानि ।।२३९।।

सप्त स्वर स्थान:

स्वर निषाघ गज्ज राज्ज कौ रिषभ सुचात्रिग सैन ।।
गंधार स्वर अजा कौ षड्जसुकेका अैन ।।४०।।
मध्यम कुंज सु उच्चरैं धैंवत दादुर जान ।
पंचम कोकिल कौ वचन ए सप्त स्वर थान ।।२४१।।

मनुष्य के सप्त स्वर स्थानक नाम:

हिरदै उठै निषाध स्वर । सिरहरिषभ स्वर होइ ।
सुर गंधार नासिक कहत कंठ षंग सुर सोइ ।।२४२।।
मध्यम जो उर तै प्रगट धैंवत नाभि बषानि ।
पंचम स्वर सो ज्यानियो कपै सप्त संधान ।।४३

तीन ग्रामनाम:

सूक्ष्म मनोहर हौइ धुनि तिह काकली कहंत ।
निपट मधुर औ प्रगट नहि सो कल नाम लहंत ।।४४
काकली कल सूक्ष्म सु धुनि मधुरा स्फुट कल होइ ।
मंद्र गभीर जु तार सुर अति उच्चै त्रय सोइ ।।

तन्त्री कठोस्थित स्वर समन्वित सय ताल ।
वल्लका वीणा विपंची तन्त्री सप्तरसाल ॥४६॥

च्यारि प्रकारं वादित्र नाम

तत माथ वीणादिक आनद्ध मुरजादि ।
वंशादिक सुषिर, सोई घन काँस्यतालादि ॥४७॥

वादित्र नामः

वादित्र आतोद्य पुनि मुरज मृदग मुजादि ।
अनया लिग्या उर्द्धका भेदत्रय विख्यात ॥४८॥
पस पटह ढक्का बहुरि भेरी दुदभि मान ।
आणक पटह सु कोण कौ वेणु वादितं जान ॥४६॥
सूत्रधार भट्टारक राजा नायक देव
सेना सुर सगीत के जानत सिगरे भेव ॥५०॥

वादित्र भेदाः

डमरू डिंडिमकुर्चरा मर्दल पणवो अन्य
मडु माथ त्रभेदिए नर्तकी तासिकी, अन्य ॥५१॥
विलंबित द्रुत मध्य सो तत्व मोघ घन जाल ।
तालक्रिया परिमाण है लय साम्य सुवपाल ॥५२॥

निर्त्तनाम·

तांडव नटनं नर्त्तनं नाट्य लास्य नृत्य सोइ ।
नृतगीत वादित्र युत नाट्य तीनि विधि होइ ॥५३

निरत कारी नाम

भ्रकुंस भ्रकुंस पुनि भ्रकुंस नर रूप ।
त्रियावेष धारी फिरत नर्त करत सु अनूप ॥५४॥

नृत्य भेद नाम

अमविक्षेप अंगहारकाहै व्यंजक अभिनय आहि ।
अंग सत्या तिरवर्त्ते है आंगिक सात्विक चाहि ॥२५५
जो रानी अभिषेक की देवी कहि ये नाम ।
और ममट्टनो जानियें नूर सुकवि अभिराम ॥२६६॥

नौ रस नाम :

सिंगार वीर करुणा बहुरि, अद्‌भुत हास्य प्रधान ।
भयवीभत्स बखानीये । रुद्र शांत नौ जान ॥२५७॥

श्रृगार वा वीर वा दया नाम :

उज्जल शुचि श्रृंगार है । वीर युधि उत्साह ।
अनुक्रोश करुना घृणा, कृपा सु अनुकपाह ॥२५८

हास्य वा बिभत्स वा अद्भुत नाम :

हंस हास सों हास्य रस, बिभत्स बिकृत जानि ।
अद्भुत विस्मय चित्र सो कहि आश्चर्य प्रवान ।।२५९।।

भयानक रुद्र शान्त रस नाम :

भैरव दारुण भीष्म सो भीम भयानक घोर ।
भीषण प्रतिभय भयंकर रौद्र उग्र शम ओर ।।२६०।।

डर वा विकार नाम :

दर त्रास भीः भीति पुनि साधू सभय को नाव ।
मानस भाव विकार है, अनुभाव वोधक भाव ।।२६१।।

विकार नाम :

अपनै जी कछु और ह्वै होत और की ओर ।
तासौं कहत विकार कवि, नूर सकल सिर मौर ।।२६२।।

मांन वा आदर नाम :

मांनसमउ अभिमान मद दर्प गर्ब अहंकार ।
गौरव अरु सन्मान पुनि आदर सोई सत्कार ।।२६३।।

अनादर का नाम :

तिरस्कार अवमांनना रीढा अवज्ञा हेल ।
असूक्षणं परिभाव सो, परभव पुनि अति वेल ।।२६४।।

लज्जा वा ईर्षा वा शान्ति :

मंदाक्ष व्रीडा त्रिपांगी अपत्रपा आन ।
अक्षांति ईर्षा वहुरि, शान्ति तितिक्षा मान ।।२६५।।
परधन की इक्षा करै ताहि ताहि अभिध्या लेषि ।
कहै असूया गुणनिमै । दोषारोपण देषि ।।२६६।।

वैर वा शोक का पश्चाताप् नाम :

बैर बिरोध बिद्वेष सो शोक मन्यु शुक होइ ।
विप्रती सार अनुताप पुनि पश्चाताप् है सोइ ।।२६७।।

कोप नामः

कोंप छोभ आमर्ष क्रुध रोष मन्यु रुट क्रोध
प्रतिष्टा कहियेपेदसो, जातैजगत विरोध ।।२६८।।
शील आचरन सुचि कहै चित्त विभ्रम उन्मान ।
प्रेमा प्रियता हार्द पुनि प्रेम स्नेह जगाद ।।६९।।

अभिलाष नाम:

दोहद कांक्षा मनोरथ स्पृहा तृट्र लिप्सा काम ।
अभिलाषा ईहातर्ष वांछा लाल सनाम ।।२७०।।

चिंता का नाम:

आध्यान चिंता स्मृति चितन पाप उपाधि ।।
उत्कंठा उत्तमिका सोई मिथा मानसी व्याधि ।।२७१
सोध शौर्य भ्रतिशक्ति युत भ्रध्यवसाय उत्साह ।।

कपट नाम:

कुहुक छद्म उपधव कितव व्याज्य दंभ मिप भाह ।।७२।।

सठता वा तमाशा नाम:

साठ्‌य कुसृतिनिःकृति, भनवधानत प्रमाद ।
कौतूहल कौतुक कुतुहर्ल सबभाव ।।७३।।

स्त्रीणां हा वा:

स्त्री बिलास बिब्बोक पुनि बिभ्रम ललित कहाव ।
क्रिया भाव शृंगार जा हेला लीला हाव ।।७४

केलि वा बहाना वा खेलण का नाम:

परीह्रास क्रीडा सु द्रव लीला नर्म बपान ।
ब्याज सप्त उपदेस पुनि क्रीडा कूर्दन भ्रान ।।७५

पसेव के नाम:

घर्म निदाघ स्वेद सो प्रसय चेतना नष्ट ।
भ्रवहित्था भ्राकार जिह गुप्त होइ सुप्रविष्ट ।।७६

ईषत हास्य नाम:

सोल्लास आछूरितकं स्मित ईषत हास ।
एई नाम सुहास के कीने भूर प्रकास ।।७७
मध्यम विहसित जानिए। भटवडि हासन ग्राहि ।

रोमांच नाम:

रोमांच रोम हम रोम हर्षण चाहि ।।२७८

भ्रतिहास वा परिहास नाम:

हसतें तृप्तिम होइ जिह सो भवि हास उचार ।
परिहास उपहास पुनि परजम हर्स निहार ।।७९।।

रुदन वा जंमाई नाम:

क्रुष्ट रुदित क्रंदन रुदन, (जंमाई नाम) जृंभः ग्रृ भण जान ।

वियोग नाम:

बिसंवाद बिप्रसंभ पुनि, (चक्रवघर्मनाम) रिणणस्यसम बपान ।।८१।।

सोवण का नाम:

स्वाप सैन निद्रा स्वप्न गुरा कासु घवेदा
संभ्रम की सवेग कहि सद्री प्रमोला मेध ।।२८२।।

कुटिल दृष्टि नामः

कहे आदृष्टि मुतासं को जिह असौम्य दृग आहि ।
भ्रकुटि भ्रकुटि भ्रूकुटि भ्रू के नाम सुचाहि ॥२८३॥

स्वभाव वा कंप नामः

संसिद्धि प्रकृति सोई वहे स्वरूप सुभाव ।
नाम निसर्ग वपानिये वेपथु कंप कहाव ॥२८४॥

उछाह नामः

उत्साव उद्धव महक्षण उद्धर्ष उत्साह ॥
कहे नाम ए नूर कवि नाट्य वर्ग अवगाह ॥२८५॥

इतिनाट्य वर्गः समाप्तः

नाट्य वर्ग पूरन भयो वरनत नूर पताल ।
बलिराजा वाचन सहित् रहत तहा सब काल ॥८६

पाताल नामः

अधोभुवन वडवामुप । वलि सद्म रसातल जान ।
नाग लोक पुनिः (छेद नाम) : छिद्र विल विवर रंध्र कुहरान ॥
रोक वपा शुचि शुभ्र सुए सुपिर छेद के नाम ।
तम तमिश्र ध्वांत तिमर अधकार सो स्याम ॥२८८
(गाढा अन्धकार नाम)*

गडहा का नामः

अवट गर्त्त भुवि सुभ्र विल अध तमस तम जोर ।
क्षोणो अवतम सतमः विष्व सं चहु ओर ॥२८६॥

सेश नामः

सर्प्प राज वासुकि प्रगट सेप अनंत वपान
नाग राग* औ सहस मुप । नाग काद्र वेय आन ॥६०

जाति भेद नामः

तिलत्स गोनस अजगर । शयु वाहस जु कहत ।
अलगर्द्दो जल नाग है राजिल डुंडुभ हुंत ॥२६१॥

कांचुरी युत वा नामः

मालुधान मातुल अहि । सोकंचुक जुत होइ ।
मुक्त कुंचुक निर्मुक्त । मपी तजत जो कोइ ॥६२

सर्प्प नामः

सर्प प्रदाकु भुजंग उरग आसीविप अहि व्याल ।
भोगी पन्नग जिह्मगदंदसूक सो काल ॥६३॥

---

* मूल में भी राग ही है, पर सम्भवतः राज होना चाहिये ।

काकेवर पद्मभवा फणी मणी विष धार ।
वीर्ष पुष्टि दर्वा करो पवनाशन हरहार ॥९४॥
लेलिह और विलेशयः गूढ पात हरिह्रोइ ।
बहुरि सरोसृप कुंडली नाम भुजगम सोइ ॥९५॥
सर्प विषै जो सबहि (ताको नाम)
आहेयं विष आदि सब फूट फण फण के नाम ।
कन्चुकि का निर्मोक कहि छूवेड गरल विष आम ॥

विष की नो जाति:

काल कूठ काकोल पुनि कहि हलाहल ताहि ।
ब्रह्मपुत्र सौराष्ट्रिक शौक्ति केय सो आहि ॥२९७॥
बत्सनाभ दारद बहुरि, और प्रदीपन जान ।
विष के भेद जु नो कहे पंडित करहु प्रमान ॥२९८॥

विष वैद्य नाम:

जांगुलिक विष वैद्य जो, करै जु विष उपचार ।
व्यालग्राही अहि तुंडिक सर्पाजीव विचार ॥२९९
भोमिवर्ग पाताल को बर्नसुनावो नूर ।
नर्क वर्ग अब कहत है जो दुर्गति की मूर ॥३००॥

इति पाताल भोगिवर्ग्गः संपूर्ण ।

अथ नर्क के नाम:

नर्क नार्क दुर्गति निरय (नर्क भेद नाम): ताप अवोचोपात ।
महारौरव रौरव काल सूत्र भेदाद् ॥३०१॥

वैतर्नी नदी नर्क निकट की:

प्रेता वैतरणी सौई सिपुकहत है ताहि ॥
बहुरि अलक्ष्मी निर्ऋति आजूविष्टि सुआहि ॥३०२

नरक की दरिद्रता को नाम:

नर्क वर्ग्ग पूरन भयो है जामै भय भूरि ।
दारिदर्य सुनि नूर भनि होत सकल भ्रम दूरि ॥३०३॥[1]

मर्म पीड़ा नाम.

तोव्र वेदना जातना कहे कारणा ताहि ।
पोड़ा बाधा व्यथा दुष कष्ट कृछ सो आहि ॥३०४॥
आभिल आत्रिग्लानि जो प्रवचि मर्क दुष त्रास ॥ (प्रसूति पीड़ा नाम)
आमनस्य परसूति करि बाधा होत प्रकास ॥३०५॥

---

१. यह दोहा मूल में लाल स्याही से कटा हुआ है ।

इति नर्क वर्ग समाप्तः

नर्क वर्ग पूरन भयो है जामैं भय भूरि ।
वारि वर्ग सुनि नूर भनि होत सकल श्रम दूरि ।।३०६।।[2]

अथ वारि वर्ग्गः ।। समुद्र नामः

अब्धिं[3] सागर उदधि अर्णव सिंधु सरस्वान् ।
जादसांपतिरु अपांपतिः अमृतोद्भवउदन्वान् ।।३०७।।
पारावार सरित्पतिः इहावान् अकूपार ।
रत्नाकर जु अपार पुनि सप्त भेद सुविचार ।। ८
लवण, ईक्षु औ सुराघृत दधिसु दुग्ध जल सात ।
अतलस्पर्श अगाध है कहत कविन के तात ।।३०९।।

पानी वा तरंग नामः

आप वारिकं सलिल पय विप को लाल सुतोय ।
उदक पाथ पुष्कर कमल नीर छीर कुश होय ।। १०
अंभु अंबु संवर अमृत अर्णवाः पानीय ।
मेघ पुष्फ जीवन भुवन वनक वंध जानीय ।।११।।
घनर सपाली सर्व मुप सुजल बासी पर्युपिताहि ।
लहरी वेला वीचि भंग, उर्म्मितरंग सुचाहि ।।१२।
उल्लोल कल्लोल सो उर्म्मी उठत महंत ।
अति जल भ्रम आवर्त्त है विप्लुप पृपती पृपंत ।।१३।।

जल चमनः

पुट भेद भ्रम चक्र पुनि ए जल निर्ग्गम जानि ।
वाहु प्रवाहु वपानिये । वहै वेग जुत आनि ।।३१४।।

किनारा का नाम:

कूल अवधि उपकंठ तठ पुलिन निकट अभ्यास ।
तीर प्रतीर वपानीये सीमनि सीमा आस ।।१५।।

पारावार कौ नाम, बीच नाम:

परसु कहै परतीर कौ अर्वाची सोवार
दहुतीरन विच अंतरं पात्रं ताहि विचार ।१६।।

जल बीचि की भूमि:

द्वीप अंतरीपं सौई जो अंतर तट वारि ।

जल उछलै ताका नाम:

तोयोस्थित पुलिनः

२. ऊपर जो दोहा कटा हुआ है वह यहाँ आ गया है
३. यह शब्द मूल में इस प्रकार लिखा हुआ है 'अब्धि' ।

रेत समेत जल का नाम:

सैकत सिकता मयं बिचारि ॥१७॥

कीच व काई नाम:

पंक सादकर्दम सोई निपद्वरः जं यास ।

नहर के पाठ का नाम:

जमोद्वास परिवाह कहि

सामग्री नाम:

नाव्यनौतार्य सुचाल ॥

जो पोदत जल कारनैं भूमि वस्त करि कोई ।

कहैं विदारक कूपक, सूर नाम ए दोइ ॥१९॥

नाव वा जहाज नाम:

तर तरिलौ भि तिरंडा पादाबिल्बी मान ।

बोहित पोत जहाज सो आन पात्र जल यान ॥२०॥

बेड़ा कहीयैं छुद्र नाव नाम:

उडुप प्लव सो कोल पुनि बेड़ा नाम उदोत ।

सोत नाम:

पंकुमबत जो आप तैं, पंबुमन स्वत स्रोत ॥२१॥

षेवा वा कतरी नाम:

आतर सर तरपण्य पुन । षेवा जानहु सोइ ।

द्रोणीकाष्टा कृवाहिनी डोंगी नाम सुहोइ ॥२२॥

डोंगी भाषा में डोंगी कहे हैं:

नाव वेचै ताको नाम:

पोत वाणिक सायांत्रिक जो व्यापारी नाम ।

कर्णधार नाविक दोऊ एपेवक जल धाम ॥२३॥

पोतवाह नाम वा पेवक नाम वा गुण काष्ट नाम:

पोत वाह सुनि पामक जेसब पेवक और ।

गुण वृक्षक कूपक कहै बंधै नाव जिह ठौर ॥२४॥

केनिपातकः भरित्रं क्षेपणी नौका दंड ।

जल मापत जिह दंड सो 'नूर नाम तिह मंड ॥२५॥

नाऊं काठडी 'मा' काष्ट कुद्दाल नाम:

सेक पाम सेचन दोऊ भग्निकाष्ट कुदाल ।

नो समुद्र का जानियो नर सामुद्रिक भाल ॥२६॥

निर्मल व मलीन नाम:

प्रसन्नाक्ष निर्मल सोई बोधविमल सलहंत ।
ग्राविल कलुप ग्रनभ्रक्ष, पुनि ग्रागाघात जु कहंत ।।२७।।

ग्रौडा वा उचाका नाम:

निम्न गभीर गभीरता ग्रति उन्नत उत्तान ।
ग्रतल स्पर्ष ग्रगाध है उथल सो उत्तान ।।२८।।
जाल ग्रनायक पवित्रकं सनसूत्र सुजग चाहि ।
केवट धीवर दास कहि कैवर्त्तक कवि ग्राहि ।।२६

कुंभिनी नाम:

मत्स्याधानी वडस पुनि कहै कुवेणी ताहि ।
वनसी वेधनमीनकी मत्स्य वेधनं ग्राहि ।।३३०।।

मछ नाम:

मत्स्य ग्राह वैशारिणी ग्रंडज सफरीमीन ।
सकलीनक विशारझप प्रथरोमापाठीन ।३३१।।

बढ़निका नाम:

गंडक सकल ग्रर्भक सहस्त्र दंष्ट्र पाठीन ।

मत्स्य भेद नाम:

उलूपी शिश्रुक चिलचिमी ताहिक है नलमीन ।।
प्रोप्टी सफरी नाम द्वै कहै नूर ए जान ।
क्षुद्रांड समदाय झप कहै सु पोताधान ।।३३२।।

रोहू नाम:

रोहित महुर शाल सोरा जीव सकुल कहंतु ।
तिमि तिमंगला दयः ते, यादांसि जल जंतु ।।३

मकरादिक मत्स्य भेद नाम:

शिश्रुमा रोद्रः शंबुकहु मकरा दय ते ग्राहि ।
कर्कटकः सुकुलीर पुनि नक्र ग्राह ग्रवराहि ।।३३४।।

उनसों भिन्न भेद है ।। कछ वां वा सोप नाम:

कूर्म्म कछप कमठ पुनि वाहन राह सुउक्ति

सीप नाम:

मुक्ता स्फोट सुक्ति सो । जंबूका जल श्रुक्ति ।।३४

मोती नाम:

जल सुत दधि सुत सीप सुत, मोती गोती चन्द ।
मुक्ता गुलिक सुनूर कहै जगबंद ।।*३३६।।

* मूल में भी पद भंग है ।

केंचवा नाम

किंशुकल' गडू पद । वहै गिडोला नाम ।
नूर कह्या जगुधरजीएँ । जल थज जीव विश्राम ॥३३७॥

जोक वा गोह् नाम

कहै जलौका रक्तपा बहुरि जलौक सचान ।
गोधा सोई गोधिका निहाका सुपरवान ॥३३८॥

कौडो नाम

कपर्दिका सुवराटिका । कौड़ी कहिए ताहि ।
प्रब्धिक डडीर पुनि फेन झाग सो प्राहि ॥३९

शख वा छोटा शख वा मीडक नाम

शख कवुम दुर्नपते शंप नपा वजू मूर ।
ददुर मेंक मडूक प्लव वर्षा भू सालूर ॥३४०॥

मीडकी नाम

भिलो भौर गडूपदी वर्षा म्वी मेकी सु ।

काछवी नाम

कमठी दुलि (मगरी नाम) भृंमी प्रिया मुहुरस्यएकी सु ॥४१॥

जल थान नाम'

दुर्नामा दीर्घ कोपिका । जलाशय जलधार ।
हूवै प्रगाध जल जासमै ह्रद वह ताहि उचार ॥३४२॥

चौबच्चा नाम वा कूप नाम

कहि आहाव निपान सो । जलाशय उप कूप ।
कूप प्रधू उदपान प्रही नेमिस्त्रिका प्रनूप ॥३४३॥

पुहकरनी जोहडी नाम

मूप बंधन जो कूप की । तिहि बीनाह बयान ।
पुष्करनी को पात कहि देव सरोवर भाम
प्रपात देव कत जान ॥३४४॥

जोहड वा छोटो वावडी नाम

पद्मा कर सरसी सु सर ताल तडाग का सार ।
व दंत पल्वल प्रल्प सर । दीर्घिका जलधार ॥३४५॥

पाई या थाहुलो नाम

वेर्म परिधा धार सो सो जल धारण होइ ।
श्राम वास प्रवास पुनि प्रायापो है सोइ ॥४६॥

---

१ सम्भवत मूल में 'क' कटा हुआ है ।

नदी नामः

सरित्तवंती निम्नगा सैवलनी तटनीय ।
ह्लादनी धुनी तरंगिनी, आपगा द्वीप वतीय ॥३४७
स्रोतस्विनी सरस्वरी । कूलं कपा वपान ।
निर्ह्̮यरनी सो नूर कहि । रोवा वक्रा आन ॥३४८॥

गंगा नामः

गंगा विस्नुपदी प्रगट हैमवती हरिरूप ।
धूनंदा मंदाकिनी भागीरथी अनूप ॥३४९
त्रिपथ पदी निर्जरनदी जह्नुसुता तिहि जान ।
त्रिस्रोता सुरदीर्घिका सुरनदी कहत बषान ॥३५०॥

कालिंद्री वा सरस्वती नामः

जम अनुजा कृस्न वर्ना। जमन स्वसा है सोइ ।
सरस्वती कूलं कपा रोवा वक्रा होइ ॥३५१॥

रेवा नदी नामः

रेवा सोई नर्मदा, सोमोद्भवा बखानि ।
कुल कन्यका कहत है दछिन गंग सिधानि ॥३५२

करतोया नामः

सैन वाहिनी [illegible] करतोया [illegible] ।

रमजू नदी नामः

[illegible]

कारंज नामः

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

देविका नदी [illegible]

[illegible]
[illegible]

कवल को नामि [illegible]

[illegible]
[illegible]

---

१. मूल में [illegible]
हुआ है। [illegible]

केंचवा नाम

किंचुकल[1] गंडू पद । कहै गिडोला नाम ।
नूर कहा लगुधरनीऐं । जल थल जीव विश्राम ।।३३७।।

जोक या गोह नाम

कहै जलोका रक्तपा बहुरि जलौक सुजान ।
गोधा सोई गोधिका निहाका सुपरवान ।।३३८।।

कौडी नाम

कपर्दिका सुवराटिका । कौड़ी कहिए ताहि ।
अब्धिक डकौर पुनि फेन झाग सो आहि ।।३९

शख वा छोटा शख वा मीडक नामः

शख कवूल हुर्सपत्ते थंप नपा जलु भूर ।
दर्दुर भेक मढूक प्लव वर्षा भू सालूर ।।३४०।।

मीडको नाम

भिलो भौर गडूपदी वर्षा भ्वी मेकी सु ।

काछवी नाम

कमठी पुनि (भगरी नाम) भृंगी प्रिया मुहुरत्यएकी सु ।।४१।।

जल थान नामः

दुर्नामा दीर्घ कोपिका । जलाशय जलधार ।
ह्वै अगाध जल जासमें लव दह ताहि उचार ।।३४२।।

चौवच्चा नाम वा कूप नाम

कहि आहाव निपान सो । जलाश्य उप कूप ।
कूप अंधु उदपान अही नेमिस्त्विका अनूप ।।३४३।।

पुहकरनी जोहडी नाम

भूप बंधन जो कूप को । तिहि वीनाह बपान ।
पुष्करनी को पात कहि देव सरोवर नाम
अपात देव कृत जान ।।३४४।।

जोहड वा छोटो तावको नाम

पद्मा कर सरसी सु सर ताल तडाग का सार ।
व धंत पल्वल अल्प सर । दीर्घिका जलधार ।।३४५।।

पाई वा थाहुलो नाम

पेय परिपा धार सो सो जल धारण होइ ।
आल वाल अवाल पुनि आवापो है सोइ ।।४६।।

---

१. सम्भवत: मूल में 'क' कटा हुआ है ।

नदी नाम:

सरित्स्रवंती निम्नगा सैवलनी तटनीय ।
ह्लादनी धुनी तरंगिनी, आपगा द्वीप वतीय ।।४७
स्रोतस्विनी सरस्वरी । कूलं कषा वपान ।
निर्ह्यरनी सो नूर कहि । रोधा वक्रा आन ।।३४८।।

गंगा नाम:

गंगा विश्नुपदी प्रगट हैमवती हरिरूप ।
धूनंदा मंदाकिनी भागीरथी अनूप ।।४९
निगम पदी निर्जरनदी जह्नुसुता तिहि जान ।
त्रिश्रोत्रा सुरदीर्घिका सुरनदी कहत वपान ।।३५०।।

कालिंद्री वा सरस्वती नाम:

जम अनुजा क्रुश्न यमी। शमन स्वसा है सोइ ।
सरस्वती कूलं कपा रोधो वक्रा होइ ।।३५१।।

रेवा नदी नाम:

रेवा सोई नर्मदा, सोमोद्भवा वपानि ।
एकल कन्यका कहत है पंडित लेहु पिछानि ।।५२

करतोया नाम:

सैत वाहिनी वाहुदा करतोया सदानीर ।

रसजू नदी नाम:

शितुद्रु शतद्रु : (विपाशा नदी नाम): विपाशा जानि त्रिपाट सुवीर ।

कारंज नाम:

कुल्पा अल्पा कृत्रिमा करी नदी जो कोइ ।
वेत्रवती सु सरावती चन्द्रभाग पुनि सोइ ।।५४।।
कावेरी औसरस्वती सरिता मिलै जु जाइ ।
सिन्धु संगम सो कहै सभेद कविराय ।।५५

देविका नदी वा सरजू नदी:

सोण सोण नद को कहैं हिरण्य वाह पुनि सोइ ।
"दाविक" (आविक)[1] सोई देविका सारव सजू होइ ।।५३।।

कवल की जाति नाम लाल कवल नाम:

रक्त संध्य कं हल्लकं सौगंधिक कल्ह
इंदीवर सोनो लहै : (रक्त संधि क नाम) ७५

१. मूल में 'आविक' ही दिया हुआ है । पर मारजिन पर "दा।
हुआ है । यह न तो लिपिकार की स्याही में है और न उसके

सेत कुमद नाम

सित कैरव कुमद दुवै कवल कद नाम सालूक बिनकंद ।
जल नीली :: सेंवाल नाम :: सेंवास सो सेंवल जल पर वद ।।

पुरयान नाम

पुरयिनि जानहु कुमिका वारिपर्णा तिहि नाम ।
नूर कहे निहचै सुनो जाको है जल धाम ।।५६।।

कवलनी नाम

कुमुदवती पुनि कुमुदिनी नलिनी बिधनी मानि ।
कुमद प्रिया पद्मिनी मुधा नूर सेहु पहिचानि ।।६०।।

कवल नाम

कवल नलिन अवुज पद्म । सहसपत्र सतपत्र ।
अंभोरुह सरसीरुह पंकेरुह कहि अत्र ।।३६१।।
उत्पल कंज महोत्पल तामरस, राजीव ।
कुवलय पुष्कर कोकनद पद्म सु मकरदीव ।।३६२
सारस जलज सरोज पुनि पकज अरु अरविंद ।
बिघ प्रसून व कुशेशय सहित सकल ए इद ।।३६३।।
पुडरीक कैरव कुमुद है इन कौ रँग सेत ।
इंदीवर नीलोत्पल नाहिन रवि स्यौ हेत ।।३६४।।

लाल कोकनद वा कवल नाम

नाला नाल मृनाल बिस ततुकंद तिह जान ।
सिफाकद करहाट सो केसर किजल्कान ।।३६५।।
नव दर्ल संवर्तिका कहि जेकवलन के माहि ।
बीज कोस बराटक मध्य कर्णिका माहि ।।३६६।।

चौदह रतन नाम लिष्यते

लक्ष्मी, कौस्तुभ, बिषु, सुधा, सुरा, धन्वतरि धेनु ।
हय, गय, सुरतरु, धनुष बिष सष रभ रत्नेन ।।३६७।।

चौदह विद्या नाम

ब्रह्मज्ञान, रसायन, सुरधुनि ज्योतिष वेद । कोक व्याकरण
कोक, व्याकरण, जलतरण, सेधन, वैदक भेद ।।३६८।।
नटनृति, हयवाहन, षडुरि धनुर्द्धर परवान ।
संबोधन, चातुर्यता, चौदह विद्या आन ।।३६६।।
नूर नाम की दाम मैं, प्रथम कहे दस वर्ग ।
स्वर्ग आदि तैं उदधिलौं सांग सपूरन सर्ग ।।३७०।।

इति . वारिवर्ग. । इति श्री मस्तकल अभिधान रत्नभूषन भूषिताय
मियां नूर कृत भाषायां नाम प्रकाश नाम मालायां प्रथम कांड. सपूर्ण ।

दोहा :

स्वर्ग व्योम दिक कालधी सब्द नाट्य पाताल ।
निरय बारि ये नूर मनि प्रथम पंड नां माल ।।१।।
पृथ्वी पुर गिर बन तरू मृग्गादिक नर वर्ग्ग ।
ब्रह्म क्षत्र बिस शूद्र कहि नूरदूसरे सर्ग्ग ।।२।।

छिति नामः

भू भूमि अचला रसा। स्थिरा अनंता क्षौनि ।
विश्वंभरा वसुंधरा धाराधरनी औनि ।।३।।
मही मेदनी कुंभिनी इला विला गो ज्याहि ।
कु प्रथवी प्रथ्वी क्षमा, वसुधा सर्ब सहाहि ।।४।।
गोत्रा उर्वी काश्यपी भूतधात्री विपुलासु ।
बहुरि लोर्वरा वसुमती रत्नगर्भा तिहभासु ।।४।।

सात दीप नामः

जंबू, सात्मलि, क्रौंच पुनि पुष्करसार जान ।
साकु प्लक्ष वपानियैं सातौं दीप प्रवान ।।५।।

नौषंड नाम

भर्त्तहरि वर्ष किंपुर इलावृत रम्यकाक्ष ।
ह्निन्मय कुरुषंड हरिनमैं केतुमालषंडभाष ।।६।।

प्रशस्त नामः

माटी मृत सो मृत्तिका और प्रसस्ता आहि ।
मृत्सा बहुरो मृत्स्ना जो प्रसस्न कहि ताहि ।।७।।

उत्तम षेत नामः

सस्या ढ्ा सो उर्वरा, ऊप मृत्युका क्षार ।
उपवान उपर कहै, स्थली स्थल बुचार ।।८।।

स्थूल को विचार नामः

जो अकतृमा भूमि ह्वै । ताकौ स्थली कहंत ।
स्थल कृत्रिमा सु जानिए नूर नाम सलहंत ।।९।।

मारवाड भूमि नामः

निर्जल मरु मन्वान सो, पिल अप्रहत जु सुन्य ।
लोक भुवन विष्टय जगत पुनि जगती कहि गुन्य ।।१०।।
भारतवर्ष सुलोक. यह अवधि सरावति जानि ।
देस प्राक दक्षण बहुरि पश्चिम उत्तर मानि ।।११।।

षुरासानः

म्लेक्ष देस प्रत्यंत सो मध्यम देस ।
आर्यावर्त्त पुन्य भू विंध्यहिमाल मध्येस

नृपति बसै नीवृत सोई जनपद पन पुर ग्राह ।
विषय वेस विस्तार पुनि उपवर्त्तन जु कहाह ।।१३।।

जस देस नाम

नद्यात नद्वस मु है, नद् प्राय जो देस ।
कुमद्वान जहाँ कुमद के खेत स्वान बहु वेस ।।१४।।

विस्तार देस नाम

नीवृत जनपद राष्ट्र सो उप वर्त्तन तिह जान ।
विषय मंडल सो देस है मौर विदेस बखान ।।१५।।

कच्छ देस नाम भेद

शाद्वल शाद हरित पंकिल सो सर्जबाल
जल प्राय सु अनूप है नदी कच्छ विधि भाम ।।१६।।

भस्म प्रायभूत का प्राय देस नामः

शार्करिल सो शार्करः शर्करावति देस ।
सिकता बहुरो सिकती सिकतावती विसेस ।।१७।।
नदी अबु वृष्टांबु करि पालित वाहि जु नित्य ।
नदी मातृ को देस इक देस मातृ कथित ।।१८।।
सुष्ट राज्य जियह देस मैं राज न्वान् कहत ।
तातें ज्यों बिपरीति है राज्यवान सतहत ।।१९।।

गोसाला नाम

भूतपूर्वक गोष्ट ज्यों ।

जल बांधियै सो बंध नाम

सेतुआलो सो बंध ।। गांव सीम नामः
पर्यन्त भूसुपरि सरः नगर समीप जु कथ ।।२०।।

बवई नाम

वामलूर वल्मी क पुनि नाकु कहत है ताहि ।
वाम्बी कूठ बखानिए, बहुरि छन्नधिर आहि ।।२१।।

मार्ग नाम

अयनं वर्त्म मार्ग अध्व. पदवी सृति पंथान ।
सरणि पद्धति वरमनो, पथा एक पदी आन ।।२२।

सुपथ नामः

अति पथा सो सुपंथा सत्पथ अंचित अध्व ।

कुपथ नामः

विपथ कदध्वा कापथ व्यध्व सोई दुरध्व ।।२३

चौवटा वा कुमार्ग उजाडि मार्ग वा दुर्गम मार्ग नामः

शृंगाटक सो चतुष्पथ । अपथ कुपंथ उचार ।
दूर शून्य मग प्रान्तर बहुरी कहि कांतार ॥३२४॥
नल्व: हस्तच तुशतं गव्यूति युग क्रोश ।

गज घंटा जिह मार्ग में बाजै सो घंटा पथः

घंटा पथ संसरण पुन ।

नगर तै सैना निकसि करि विश्राम करै ताको नामः

उपनिष्कर होश ॥३२५॥

स्वर्ग भूमि नामः

द्याठा भूमी रोदसी दिव:प्रथव्यी होइ ।
द्यावा प्रथव्यौरो दस्याः नूर कहत कवि लोइ ॥३२६॥
लवण भूमि: लवना कर प्रगटै जहां गंजा रुमा वषानि ।
भूमि वर्ग पूरन भयो नूर पुरी पुर जानि ॥३२७॥

इति भूमि वर्गः। अथ गुरस्थानीय नगरी नाम व पुरी नामः

पत्तन पुट भेदन निगम । पुरी पू: नगरीय ।
सापा नगर सुनि-कटपुरी (पुरी पुरातन नाम): मूल नगर तैवीय ॥

पौली वा हद्नामः　　।

विसिपा रथ्या प्रतोली विपणि वीथिका पण्य ।
निपद्या सु आपन वहुरि, (गढका नाम): होत दुर्ग गढ़ अन्य ॥

कोट वा भीति नामः

साल वरुण प्राकार चय वप्र वृत्ति प्राचीर ।
प्रांतत कोट सुभित्ति कहि ।

(हाड हकी भीत होइ ताको नाम मेंडूक नाम)

कुड्य मेडूक सुधीर ॥३०॥

पद्साल वा घर नामः

सदन सद्म मंदिर भुवन वेस्म निशांत अगार ।
है निकाय्य आलय निचय आस्पद वस्त्यविचार ॥३१॥
सरनायत प्रासाद कुट सौध हर्म्य संकेत ।
वासु उदविसत ग्रेह ग्रह सभा सालासुप देत ॥
ज्यन पद अरु आस्थान कौ वहुरि अगार कहंत ॥३३२

आंगण नाम :

अंगण चत्वर अजियर पुन । भाग्यवंत सुलहंत ॥३३३॥

मुनि ग्रह नामः

पर्णशाल मुनि जनन की, उटज कहत है ताहि ।
चैत्य श्रायतन अग्य भू: (भुइसाल नाम): मंदुरा हय सालाहि ।।३४।।

चौवारा वा पणहूता नामः

चन्द्रसाल सोई सिरो ग्रह: संज्यवर्न चतु: साल ।

सूत्रधार साला नाम सिल्प कारिको नाम हैः

ताहि सिल्प साला कहै भावे सन सुबि साल ।।३५।।
वारि सालिका कहि प्रपा, मठ सिष्यादिक धाम ।
सूतिका ग्रह सु अरिष्ट है गंबा मदिरा धाम ।।३६।।

गर्भ गृह नामः

गर्भागार सु बास ग्रह । जो घर में घर होइ ।
नूर कहत बहु ग्रहन को निपट मध्य है सोइ ।।३७।।

राज स्त्री ग्रह वा झरोपा नामः अंत: पुर नामः

अवरोधन बरोध सो सुद्धांत: पुर आहि ।
बातायन गवाक्ष सो जाल झरोपा चाहि ।।३८।।

मैडा वा छानि नामः

अवृघोम कहिये भटा (छजा का नाम) वसी पटल छज्जा सु ।
पटल प्रांत कहि निध्रु कहि छज्जा अंत प्रकासु ।३९।।

कपोत गृह वा द्वार नामः

प्रती हार द्वारस्थ रथ्य क वर्धक सोई परवार ।
वाहक हैरिक परसरः गूढ़पुरुष चरवार ।।४०।।

जासूस नामः

कहि बिटंक कपोत ग्रह द्वार द्वार प्रतीहार
बहिर्द्वार तोरण बहुरि गोपुर सोपुर द्वार ।।४१।।

किवाडथान सीणी व पैडी नामः

अरर कपाट बखानिए विष्कुंभेर्गल पान ।
नि: श्रेणी अधिरोहणी आरोहन सोपान ।।४२

फौला व देहली नामः

प्रघण प्रघाण अलिंद कहि । बहिर्द्वार जो होइ ।
प्रहाय ग्रहणी देहली अपवारण सिस सोइ ।।३४२।।

किवाडहूकी अटेकापथर वा काष्टबिचगाडि है ताकी नामः

बहु कपाट को अटक को गङ्गोप्रो काष्ठापान ।
कूटहस्त, मप कहत है नूर सुबुद्धि निपान ।।३४३।।

गाढ की ग्राम नाम वा भोंहरा नाम

संवसथ जानियो, हूवै जु गाढ को ग्राम ।
वस्तु वेस्म भू नूर कहि । भूसि ग्रेह के नाम ।।४४

ग्रामांत नामः

उपसल्प सीमा वहुरि सीम कहत कविराज ।
घोप ग्राम आभीर को, पल्ली गोप सुसाज ।।४५

वुहारी वा कूडा नामः

समार्जनी सोई सोधनी, संकर अवकर सोइ ।
निष्क्रपण निःसरण मुप । संनिवेस पुनि होइ ।।४६

घर द्वार वाहर कों निकसै ताको नामः

सवरालय त्तपवन जे कि रात के धाम ।
नूर कही पुरवर्ग अव सुनहु सैल के नाम ।।४७।।

इति पुर वार्गे समाप्तः महीध्र वा पापाण नामः

सैल, शिलोच्चय अचल नग अद्रि, गोत्र, गिरि, ग्राव ।
धर, पर्वत, अग, दरीभृत, शिपी, शिपरी हरि नाव ।।४८
सान मान, निलोचय, त्रिकुट, क्ष्माभृत वहुरि अहार्य ।
ग्राव अस्म प्रस्थर उपल, दृपस सिलाग पहार्य ।।४९।।
लोका लोक चक्रवाल है त्रिकूट, त्रिककुत्, जान ।
अस्तचरम गिर को कहे । उदय पूर्व निरमान ।।३५०

अष्ट पर्वत नामः

मेरु, हिमालय, विंघ, पुनि मलयाचल, कैपासु
उदयाद्रि, रोहण, अष्ट, लोका लोक नगासु ।।५१

पर्वत सिपर वा तट वा मध्य नामः

कूट सिपर अरु शृंग कहि । भृगु प्रपात तट होइ ।
कटक, नितंव, सु मध्यगिर सानु प्रस्थ स्नु सोइ ।।५२

जलपरवा हवा कंदर वषानि नामः

उत्सः प्रसवणु, भर, निभरः वारि प्रवाह वहंत ।
दरी कंदरा जानियौ :: (पानि नाम) :: खजुनि आकर कहंत ।।५३
देव षात जानहु, विला गुहा गह्वरा होइ ।
सिला गिरै गिर तै पृथुल गंडसिला है सोइ ।।५४।।
धातु मन सिला आदि दै, गैरिक धातु विशेष ।
कुंजनि कुंज लतादिकन उदरावृत अतिलेष ।।५५

इति शैल वर्गः ।। अरण्य वा बाग नामः

अटवी, वन, कानन, गहन, कक्ष, विपन कांतार ।
निष्कुट ग्रह, आराम, पुनि उपवन, बाग, विचार ।।५६
अंभी गनिका प्रभु, तपवन, वृक्ष वाटिका जानि ।

राजा, राजा क्रीडा वन नामः

साधारण जुबन उद्यान आक्रीडानि ।।५७।।

पंकति वा अंकुर नामः

वीथी, आलि, आवली, श्रेणी, लेषा, राजि ।।
अंकुर, अभिनव उद्भिदः, बल्या । अतिवन आजि ।।५८

वृक्ष नामः

शाखी, विटपी, पलाशी, कुतर फली नगसाल ।
पादप, अनोकुह, महीरुह, कुठ आगम द्रुम साल ।।५९।।

पेड वा शाषा वा हूंडे वृक्ष नामः

स्थाणु, संकु, ध्रुव, पेड कहि सिफः क्षुप: लघु साप ।

बिना गांठि वृक्ष नामः

स्तंब गुल्म अप्रकांड सो एक सरल क्षुप भाप ।।६०।।

वल्ली नामः

गुल्म, निप्रतति, वितानिनी, बिसनी, बिसति, लताहि ।
बल्ली, उपल, बपानिये वेलि कहत है जाहि ।।६१।।

पर्वकादिक ऊंचा का नामः

वृक्षा विक की उच्चता, सो आरोह बपान ।।

ऊंचा का नामः

उच्छ्राय, उत्सेध, पुनि उछ्य, कहत प्रमान ।।६२।।

डाला नामः

स्कंध, प्रकांड सुडालमे । बड़े पेड़ सामान ।
शाखा, डासा, साप, ते, शिफा, जटा, को जान ।।६३।।

मूल तैं निकरि वेल वृक्ष ऊपरि चढ़ै ताको नामः

शापा सिफावरोह सो लता अग्रगत मूल ।

वृक्ष शिषा नामः

शिषर, शिरोध, बपानिये, मामै कछून मूल ।।६४।।

जड़ वा मीगी या नामः

मूल, बुध्न अंहि सुजड मज्जा मींगी सार ।
वल्क, बलकल, त्वच, सुरवक, काठ काष्ट अरु दारु ।।६५

ईधन नाम वा वृक्ष क्षेदन नाम वा मौर नामः

इध्म, एध, इंधन, समित्, मेध, कहत सब ठौर ।
निकुह, कोटर, छेदतरु, वल्लरि, मंजरी, मौर ।।६६।।

पान नामः

पत्र, पर्ण, दल, छदन, छद, र्वाह, पलास, बषानि ।
पल्लव, कोमल, पत्र, जे, किसलय, कहत प्रवानि ।।६७।

वृक्ष बिस्तार नामः

कहै विटप, विस्तार तरु, वृक्षादिक फल सस्य ।।

बंध्य वृक्ष नामः

वृंत प्रसव वंधन सुनो । स्तवक, गुक्ष, पुहपस्प ।।६८।।
मूल, जाति, कहि बिदारी, व्रीह फलादि वषान ।
पुष्फादिक है पाटला नूर नाम परवान ।।६९।।

फल ऊपर जालो व जालिका घैता कौ नामः

क्षारक, जालक, जाली का कलिका कोरक जानि ।।

बन्धी कली का नामः

ईषत बिकशित जो कली, कुझल मुकुल सुजानि ।।७०।।

फूलण का वा कुमिलाण का नामः

फूलण का वा कुमिलाण का नाम :

व्याकोशः, विकच, स्फुटः, विकसित, फुंलित, सोइ ।
उत्फुल, प्रफुल, संफुल, पुनि, परिफुल्लित, जो कोइ ।।७१।।
दलित, प्रबुद्ध, विनिद्रित, बिहसित, प्रफुलित फूल ।
सकूचित, मृद्रित, निद्रत, मिलितं, मुचितं, मूल ।।७२।।

फूल का नाम :

पुष्फ, प्रसून, प्रसव, सुमन, कुसम, सुमन सुलतांत ।
हे मकरंद, जु, फूल रस, रज, पराग, अनितांत ।।७३।।
संर्बत्तिका सु नौदलं केसर, किंजल्प ।
कूंपलि, कौंप, बषानिये, जो, द्रक्षोपरि झल्क ।।३७४।।

काचा फल नाम :

आद्र होइ जो वृक्ष फल । सोई आम सलाट ।
सके तांन सुनूर कहि, वीज्य कोस सु बराट ।।३७५।।
उन्मूलितः, उद्धृत, लुलित, धुत, पेंखित, उत्पात ।
प्र खोलितः, तरलित, बहुरि, निर्मूलन, विष्यात ।।३७६
आरथा पित, आरोपित, स्थिती करण, बिष्यात ।।७७

आंब नाम :

केवल्लभ, सहकार, सो कामांगः, मधुदूत ।
माकदः, पिकवल्लभः, पुनि रसाल, भी नूत ॥७८॥

नारील वा केला नाम :

वानर मुख, पुनि मांगली, मायस, सो लांगूर
रंभा, मोर्चा, गज भखा, भानु फला, जा, नू ऊर ॥७९॥

सुपारी वृक्ष नाम :

घाटा क्रमक गुवाक पुग सुपारी काम ।
ता की फल उद्वेग है । नूर कहै युग धाम ॥८०॥

अनार नाम :

रक्त बीज हालोक र विक । सुक प्रिय दाडिम नूर ।

विल्व नाम :

सालूप, शैलूप, पुनि, बिल्व, श्रीफल मालूर ॥३८१॥

विद्रुम वा जाय नाम .

सुपिरा, नटी, नपो, धमनि, कपंसाद्रि परवाल ।
जनकेसी, पूनि, मालती, जाती, सुमना भाल ॥३८२॥

रायबेलि दुपहरीया नाम :

प्रधप्टा, प्रिय वादिनी, राजपत्रिका, जूक ।
जपा कुसम पुनि रक्तक बंधु जीव बधूक ॥३८३॥

तिल पुष्प नाम :

ब्रह्मपुष्प, पुनि जपा कहि, एते पुष्प है सोइ ।
नूर नाम एते कहे प्रगट पुष्पतिल होइ ॥

केतकी वा चिरमठी नाम:

केतुकी, कहिये, त्रिणद्रुमा, ताप, खजूरी सोइ ।
काक चिंचुका, कृष्णला, गुंजा, भयो सुहोइ ।८५॥

पीपल वा वड नाम:

अस्वथ, बोध, द्रुम, चलदल, कुंज राशन याहि ।
निग्रोधो, बहुपाद, बटः, जटी, रक्तफल याहि ।८६॥

सूत वा वड वेर नाम:

तूल, तूद, पूप, क्रमुक, ब्रह्मदाव, ब्रह्मण्य ।
कर्कंधू, बदरी, सोई, कोलि, कहत है मन्य ॥३८७॥

चंपा का नाम:

चापेय, सो, चपक हेमपुष्पक जानि ।
गंध फली ताकी कली पंडित करहु प्रमान ॥३८८

तांबूल वल्ली नाम:

तांबूल, वल्ली जानियो । वल्ली नाग वषानि ।
तांबूली, सोई द्विजा, प्रगट, पांन, आषानि ॥३८६॥

वडी इलाइची नाम:

एला, बहुला, निष्कुटी, उहै, चंद्रशाला जु ।

छोटी इलाइची नाम: छोटी एलचा त्रिपुटा, त्रुटि, उपकुंचिका, तुच्छा सूक्ष्मा श्राजु ॥९०

माधवी वा कुंद नाम:

वसंती, सो, माधवी पुन्ड्रक लता कहंत ।
अति मुक्तः, पुनि, कुंद, को माध्यनाम, सलहंत ॥९१॥

धतूरा नाम:

धूर्त्त, कनक, मातुल, मदन, उन्मत, कितव, धतूर ।
मातुलपुत्रक जानिये या को फल परि पूर ॥९२॥

वांस नाम:

वंस, तृणधुजा, वेणु, सो त्वचि सार त्वक्सार ।
तेज नमस्कर जव फलां शतपर्वा, किम्भरं ॥९३॥

ऊष वा पोंडा वा कतारा नाम:

इक्षु, रसाल, सु जानियो पोडा, पुंड्रक होइ ।
ताकार, जु, कंतार, सो, नूर नाम कहि सोइ ॥९४॥

सब्दायमान वा सना वा गांठि वा किनारा नाम:

सब्द करत जे पोन तें वेणव की जक जान ।
गांठि, ग्रंथि, परुषी, पर्व, गुंद्र जनक सरकान ॥९५॥

घास वा तृण वा डाभ वा ताड वृक्ष नाम:

सष्प वाल तृण यवस पुनि अर्जुन घास समाज ।
कुश कुथ दर्भ पवित्र, सो ताड़ ताल तृणराज ॥९६॥

पेठा नाम:

कूप मांड, कर्कार सो पेठा नाम वषान ।

कर्कडी वा तूंबी नाम:

और वारकर्कटिक है तुंबि अला बू जान ॥९७॥
तृण द्रुम ताडो केतकी पज्जूंरी पजूर
नामक हे वन वर्ग में उत्तम उत्तम नूर ॥३९८॥

गांडर वा षस नाम:

वीरतरं, सौबीरण ताको मूल, उसीर ।
अभय, नलद, अमृनाल, लघु, जलाशय, सु उसीर ॥३९९

सबरी, कोली, कूबल, सो कौवल, ववर सौवीर ।
फुमि फेनिल कर्कंधु सो, घोंटा सुनहु सुधीर ।।४००
कहै औषधी वर्ग मे नाम प्रकट जे नूर।
सिंध वर्ग अब बनंऊं सुमत होत बुधि पूर ।४०१।।

इति अरण्य वर्गं संपूर्णो : : अथ मृगराज नाम:

पुंडरीक, कंठीरव, केसरि, हरि, पंचास्य ।
हर्यक्ष: मृगधृष्टि, सो मृगासन:, पुनि भास्य ।।२।।

व्याघ्र वा चीता नाम:

सार्दूल द्वीपिन् सोई कहै व्याघ्र अभिधान ।
तरक्षु मृगादन चित्रक चीता नाम प्रवान ।।३।।

सूकर नाम:

सूर घृष्टि पोत्री किटि: दंष्ट्रि घोणि किरि कोल ।
स्तब्ध रोम भू दार सो, क्राड वराह अडोल ।।४।।

वानर नाम:

वनचर मर्कट, वलीय मुख सापा मृग हरि कीस ।
प्लवग वनौक प्लवंग कपि कहिलांगूल कवीस ।।५।।

रीछ नाम:

अछ, भल्ल भालूक पुनि, भल्लुक ऋक्ष वखानि ।
पांडिग, पशूग सुगंधक गंधा नाम प्रवानि ।।६।।

भैंसा वा भैंस नाम:

वाह द्विषत्, कासार, सो सैरभ महिष सुलाय ।
महिषी स्त्री वा भी स अब याही भांति कहाय ।।७।।

बिलाव वा बिलाई नाम:

होतु बिडाल सु आपु, मुक, वृष दंशक मार्जार ।
मार्जारी ताकी त्रिया स्त्री बाची सु विचार ।।८।।

गीदड़ नाम:

जंबुक, मृग, धूर्तक, शिवा वंचक क्रोष्ट सिगाल ।
भूमिमायु, गोमायु, पुनि फेरु, फेर य भाल ।।६।।

मृग नाम:

हरि कुरंग सारंग हरिण अजिन जोनि वातायु ।

मृग जाति नाम:

कृष्ण सार, रुरुन्यक, सो रंकु एन कहायु ।।४१०।।
संवर रोहिष गोकरन कदली कंदली चीन ।
चमरू प्रियक सुरोहित चमरो मृग परवीन ।११

रोक नाम:

राम सरभ गंधर्व शश :: (परहा नाम) :: गवय सृमर विष्यात ।
मृगेंद्रादि इत्पाद ग्रोग वादयप सुजात ।।१२।।

छछुंदरी वा चूहा नामः

गंध मुपी, सु, दिवांधिका, दीरघ तुंडा जानि ।
उंदुरु मूपक ग्रापु पुनि गिरिका मूपिका मानि ।।१३।।

गिरगट वा छपकली नाम:

मरट वहुरि कृकलास ए दोइ गिरगिट के नाम ।
पल्ली मुसिली गोधिका रहैं छपकली धाम ।।१४।।

मकड़ी वा ममोला नामः

तंतुवायु, लूता, सोईउंर्न नाभ सूत्रा सु ।
पंजरीट पंजन वहुरि कहै ममोला तासु ।।१५।।

कान षजूरा वा कीडा वा वीछू नाम:

कर्णजलौका, शतपदी, नीलागु:, क्वमि, जानि ।
शूक कीट वृश्चिक ग्रलि, द्रोण वृश्चिक सो ग्रानि ।।१६

सिचाना नामः

पत्री श्येन ससादन कहै सिचाना नाम ।
चाप किकी दिव नूर कहि नील पंप ग्रभिराम ।१६

घूघू नाम:

वायस, ग्ररिपेचक, उलू, घूक, उलूक हि ग्राहि ।
कौसिक ग्रौर निशाटन दिवाभीत नहिचाहि ।।१७

सूवा नाम:

स्वर्ण चातक किकी दिवि चाकौ चाष वषानि ।
ग्रनुवादी शुक कीर सो रक्त बिंब पहिचानि ।।१८।।

पपीहा वासारस नाम:

कालकंठ दाल्यूह हरि, सारस सोई सारंग ।
स्तोकक चातक पपीहा जपत रहत पी ग्रंग ।।१९।।

कोइल वा कबूतर नामः

कोकिल बन प्रिय रक्त दृग पिक परभृत एनाम ।
कलरव परावत बहुरि कहि कपोत ग्रभिराम ।।४२०।।

चकोर नामः

विषसूचक बिष भीरुक जावं जीव चकोर ।
ससि प्रिय ग्रल ग्रंगार भुकू कहि, गुद्राल वहोर ।२१।।

काक नाम

मलि पुष्ट सकृतप्रजा । मारम घोप परभृत ।
अरिट अरिष्ट सु वायस ध्वांक्ष वलि भुजो नित ।।४२२

द्रोण काक नाम

द्रोण काक काकोल कहि काल कठ वात्यूह ।

चील्ह नाम

आतायिन् सो चिल्ल है, दक्षाख्य गृध्र समूह ।।४२३।।
मुरगा नाम ताम्र चूड चरणायुध कूर्क सो कृकवाकु ।
चिड़ा नाम: चटक पुनि कलविंक तिहिवनिता चटिका ताकु ।।४२४।।

कुंज नाम

कु क्रौंच "(बगलो नाम)" बक कंक कहि, (सारस नाम) पुष्कर सारस जानि।
कार्दबकल हंस सो "(हंसनाम)" राज हंस पहिचानि ।।४२५।।
स्वेतगरत्त धतसिव बहुरि माल सौक चक्रांग ।
हंस मराल बपानिए चु च चरन अति स्याम ।।(धार्त्र राष्ट्र मलि वांग।)

चकवा चकई नाम

कोक चाक चक्र चक रथांग ताकी नाम ।
राम आपि, जामिनि बिपुर, सुरसपा अभिराम ।।२७

सारो वा हंस स्त्री वा सारस स्त्री वा हंस नाम.

बलाका सु विघकंठिका बरटा जोषित हंस ।
सारस वनिता लक्ष्मणा बन मक्षिका सुवंस ।

मधु मक्षिका नाम

सरघा है मधु मक्षिका, (टीडो नाम) सलमा साह पतंग ।
पतंगिका सो पुत्तिका वीप सिरधि दै भंग ।२९।।

ततैया वा अलप दस वा भमरी नाम

गधोली बरटा बहुरि भमीरी हयपानि ।
भृंगारी सोची रुका चीरो जिलिका मानि ।।३०।।

जोगिनी नाम

खागियो ज्योति मालिनी कीटमणि, इन्द्र गोप सो चाहि ।
ज्योति रेंगण, पद्योत है भाषा झींगम माहि ।।३१।।

भ्रमरनाम

मधुकर मधुलिट मधुप अलि मधुव्रत है मधु चोर ।
अलिन भृंग षटपद अली कीमा लय सोई भौर ।।३२

चिचरीः

चिचरीक चेलंग्र पुनि रोलंबः सारंग ।
द्विरेफ पुष्फलिट्र सिलीमुप इंदोमद चल् अंग ।।३३।।

मयूर नामः

नोज कंठ वरहिण वर्हो शिपी शिपा वलि सोइ ।
केकि कलापी शिपंडी लाशी अहि भुक होइ ।।४३४।।

मोर पूंछ में चंदोवा ताका नामः

चंद्रक मेचक चंद्रिका (मोर वचन नाम): केकावाणी मोर ।

सिर ऊपर मोर कैंह् चूंडा ताको नामः

चूडा शिपा त्रिपंड पुनि । (पूंछ नाम) । पिक्ष वर्हपुंछीर ।।

पक्षी नामः

छिज पतत्रि पत्री पतत् अंडज विहग विहंग
पक्षिन गोक विहायस सकुनि सकुंत पतंग ।।३६।।
वाजि विकर विः विक्वर नीडोद्भव पित्संत ।
पतत्र्यः पुनिपत्ररय नभ संग मगरुत्मंत ।।४३७

पांप वा चूंच वा उंडण का नामः

पत्र पतत्र तनूरुह गरुत पछ छदलीन ।
पक्ष मूल सपक्षति त्रडीन उड्डीन संडीन ।।४३८।।
चंचु स्त्रोटि सृपाटिका पेशी कोशो अंड ।
नीडकुलाय सुनाम द्वै जापक्षी ग्रह मंड ।।३९।।

वालक का वा दोय का नामः

पोत पाक अर्भक पृथुक डिंभ सिसुक सिसुवाल ।
मियुन द्वंद द्वे उभय विव वीय जमल युग भाल ।।४५०

समूह नामः

निर्वह व्यूह संदोह व्रज स्तोम ओघ संघात ।
चय संचय समुदाय गण निचय वृंद सो व्रात ।।४१
जुग युथ कंदल जाल कुल कुरव कि लाल समाज ।
वर्ण परिग्रह ग्राम पुनि कहिअ नेक कविराज ।।४२
निकरंव समुदय व्रिकर निकर वार समुवाय ।
विकर कदंव अनंतए संघ समूह कहाय ।।४३।।
वृंदं भेदसमवर्गंजे ।।
(येक ठौर होंहि सो संघ सार्थकहिए ।)
संघ सार्थ वहु जीव ।।
(यूथ वा कुलपक्षी समूह) सजातीय सौ कुल कहै यूथ पक्षीए कीव ।४४

पशु समूहकौ, समय, कहि मोरल को सु समाज ।
सह धर्मी सुनि काय है भेदकहत कवि राज ।।४५

रासि वा ग्रह पक्षी नाम-

पुंज निकाय सु उत्कर कूट कूट से होइ ।
पक्षी मृग जो धरन में छेक ग्रह्यक सोइ ।।४६।।

वर्ग नाम

देपिये वस्तु अनेक जहां है पुनि सबै समान ।
नूर कहत है समझिकै तासौ वर्ग बपान ।।४७।।
सिष वर्ग को नूर कहि सुनत सबुध बस होइ ।
सुनहु मनुष के वर्ग को नूर बपानत सोइ ।।४८
इति सिषादि वर्गं सपूर्ण ।।

अथ मनुष्य वर्गः ।

मनुष्य नाम

नर मानव पूरष पुरुष मानष मर्त्य पुमान ।
मनुज पंच जन मनुष्य सो शरीरभृत परवान ।।४९।।

स्त्री नाम:

स्त्री योषित् अगुना बधू । बाला बनिता भाम ।
प्रमदा कांता कामिनी महिला रमणी राम ।।५०।।

कोपवती स्त्री नाम

वाम सोपना सुंदरी सीमंतिनी नारी सु ।
ललना जोपी कोपना नितंबिनी प्यारी सु ।।५१

कृताभिषेका नाम

भामिनी भीरु भागिनी पतोप वर्षिनी आहि ।
महिषी पटरानी उहै और भोगिनी चाहि ।।५२
पत्नी, पाणिग्रही, कहै सहधर्म्मिणी सु और ।
दार भार्या, जाया सो ग्रेहिणी ग्रही बहोर ।।५३।

साधु स्त्री नाम

स्वयंवरा, सु, पतिंवरा, पर्यामार्या जाणि ।।
सती मायवी सु पतिव्रता सुचरित्रा सुबपाणि ।।५४

उत्तम स्त्री नाम

उत्तमा सु, वर वनिनो वरारोहासलहंस ।
भामिनो कहियें कोपमा वाम सोचना कहत ।।५५

कुटव स्त्री नाम-

पोरध्री, सु, कुटंबिनी । कुलपालिक कुलतीय ।

कन्या वा गौरी नामः

कन्या कुमारी कौक है सात वरस लौ होइ ।।५६।।

अदि व्यस्त्री नामः

दमयंती, सीता, दितीउ सची, आदि दै दिव्य ।
तारा मंदोदरी सती कहि मानुषी अदिव्य ।।५७।।

तरुण स्त्री नामः

दृष्टर जासो मध्यमा गोरीकहिये सोइ ।
तरुणी युवा सु नाम ऐ [वहू नाम] विध्रू जनी स्नुपा होइ ।।५८

कामुकी स्त्री नामः

इछावती सुकामुका, दृप, स्पंता, सलहंत ।।
पतिहित नत संकेत की, अभिसारिका कहंत ।।५९।।

भगतना नामः

कुलटा असती वंधुकी मुक्तापला सजार
पुश्चली धर्षिणी ईश्वरा श्वैरणी पांशुला नारि ।६०

जा स्त्री कै सौकि होइ ताकौ नामः

पति पत्नी सु सर्भत्रिका, विश्वस्था विधवा सु ।

(त) सुत पति कों हतै ताको नामः

अवीरा सु निष्पति सुता सौति सपत्नि प्रकासु ।।६१

सषी वादूती नामः

सध्रीची आली हितू वयसा सहचरी होइ
दूती कहि संचारिणी कुट्टिनी संभली सोइ ।।६२।।

वेश्या नामः

रूपाजीवा कामुकी सर्व्व वल्लभा नाम ।
वार वधू, रु, विलाशिनी लंझिका गणिका भाम ।।६३।।

रजस्वला नाम

मलिनी पुष्फवती अवी, स्त्री धर्मिणी बषानि ।

बीज वा गर्भवती नामः

उदक्या सु पुनि रति मती आत्रेपी पहिचानि ।।६४

आर्त्तव रज, सो पुष्फ है, दोहद वती श्रधालु ।
निष्कला सु बिगतार्त्तवा बहुरि गर्भिणी भालु ।।६५
आपन्न सत्वा गुर्विणी अंतर्बली जानि ।
वहुरि कौटवी नग्निका नग्न स्त्री पहिचानि ।।६६

वृद्धा स्त्री या पंडिता स्त्री नाम :

ताहि पलिक्नी कहत है, जो वृद्धातीय होइ ।
प्राज्ञी प्रज्ञा पाज्ञा बुद्धिवंत तिय सोइ ।।४६७।।
कन्यातें उपजै पुरुष तिहि कानीन कहत ।
सुभगा सुत को सुक बिजन सो भागिनेय सतर्हत ।।६८।।
भागनेय भगनी सुत सुभेय विख्यात ।
पितृ पिता सो पितमह प्रपितामह तिहु तात ।।६९।।
माता मह, जननी पिता नानानाम बिषात ।
मातुभाता, मातुल, दुहितापति जामात ।।७०।।

पुत्र नाम :

पुत्र सूनु सुत तनय सो आत्मज कहि अभिधान ।

बेटी नाम :

सुता आत्मजा पुत्रिका तनया नूर सुनाम ।
संतति तोकः अपत्य पुनि दुहिता जानहु सोइ ।।७१।।
नून भाम वहोइ बहिन के भन्नी सुता सुहोइ
दपति जंपति स्त्री पुरुष भार्या पती जु होइ ।।७२

भौजाई नाम :

भौजाई सु प्रजावती, जोभाई की नारी ।
मातुलानी, सो, मातुली मामी जानि बिचारि ।।७३।।

उपपति नाम :

उपपति कहिये जार सों जारज कुंड बपानि ।
भर्त्रं रिमृते सुगोल कहि, नूर नाम ए बपानि ।।७४।।
सूति मास बैजनन पुनि गर्भ भ्रूण कहैं दोइ ।
त्रितीया प्रकृति, क्लीव षंड पंडन पुंसक होइ ।।७५।।

बाल अवस्था वा तरुण अवस्था वा वृद्धि अवस्था नाम .

बाल्य लसव शिशुत्व बालस मय अभिराम ।
तारुण्यं पुनि यौवनं स्थाविर वृद्धत्व नाम:
केसादिक उज्जल भए ताको पलित बपानि ।
अति शरीर जीरन सोई जरा विश्रसा मानि ।७६।।
पति पत्नी को प्रसूता स्वश्रू जानो ताहि ।
बहू को पिता सुदहुम की सुसर नाम सो आहि ।।७७

बालक नाम :

उत्तान शयंडिभ सो स्तनंधयी स्तनपासु
माणवक सो बालहै, तरुण, वयस्य युवासु ।।७८।।

दसमी अवस्था नाम :

वृद्ध जीन जीर्ण जरन् प्रवयः स्थबिर कहंत ।
अग्रज अग्रेय बहुर पूर्वज्ञ जेष्टह कहंत ।।७६।।

छोटा का नाम :

अनुज जघन्यज अवरज कनिष्ट जवीयोजान ।

दुर्बल वा बलवान नाम :

दुर्बल छात अभास सो अंसल मांसज मान ।।८०।।

तुंदिल वा नीची नाम :

वृहत्कुछि सुपिचंडिल तुंदी तुंदिक होइ ।

चपटी नाक नाम :

अवटीटो अवनाट, अवभ्रट, नतु नासिक सोइ ।।८१।।

छोटी नाक नाम :

पर्व ह्रस्व सुवावन ।

बुरा सौ नाकता का नाम :

षरणस पुनि षरसा स ।

नकटी नाम :

बिग्र, स्तुगतनासिक कहै नूर सु प्रकास ।।८२।।

बहिरा वा कूबड़ा वा अल्प तनु वा जुरढो वा टुंड नाम :

एड वधिर गडुरा कुज्व पृश्निअल्प तनु सोइ ।

उदर उपरि पली पडै ताको नाम :

बलिनू बलम कुकरः कुणिः सकुचि तांग जिह होइ ।।८३।।
श्रोण पंगु कौ कहत है मुंडन चूड़ा कर्म ।
वलिरः केकर व्यंजन षोरे षंज सु मर्म ।।८४।।
रुक्यूति क्रिया सुचिकित्सा, अनामय आरोग्य ।
भैषज्यः भेषज अगद जायु औषधी योग्य ।।८५।।

रोग नाम :

आतंकः उतपात गद आमय रुक रुज ओष ।
रोग व्याधिसौ कहत हैं ताही जानौ द्‌ोष ।।८६।।
क्षयः शोष, यक्ष्मा बहुरि पीनस है प्रतिस्पाय ।
क्षव क्षुतं क्षुत् जानिये कास क्षवथु कहाय ।।८७।।
सोफ सोथ सोई, स्वपथु सिध्म किलास हि आहि ।
पादस्तोट बिपादिका कहै बिबाई ताहि ।।८८।।

पाम वा विवाई नाम :

पामा पाम विचर्चिका कछ्वा ताहि वपानि ।

कंडू नाम :

कण्डू या कडू बहुरि पजू पाजहि जानि ॥८९॥

फोडा नाम :

फोटक विस्फोट पिटक व्रण नाडी व्रण मान ।
कोठ कुष्ट मंडल सोइ, चित्र गलित परवान ॥९०॥

ववेसी नाम:

मर्दं कहे दुर्नामिका मानो हस्तु विबन्ध
प्रछर्दिका वमथु वमि, छर्दि वांति कृति बंध ॥९१॥

वैद्य नाम:

वैद्य, रोगहारी भिषक चिकित्सिक अगदकार ।
वार्त निरामय कल्प पुनि, उल्लाघ गद पार ॥९२॥

रोगी नाम·

आतुर, अभ्यांतः विकृत व्याधित अभ्यमित होइ ॥
अपटु आमया, वो, बहुरि रोगी कहियें सोइ ॥९३॥

बीज नाम:

षंध मदृक मूर्छाल सो मूर्त्तः मूर्छित आहि ॥
सुक्र तेज इंद्री वीर्य बीज रेतसा चाहि ॥९४॥

मांस नाम:

मायु, पित्त, कफ, श्लेष्मा, त्वक अस्टग्धरा आहि ।
पिसर्त तरस, पलल, सुपल, कव्य आमिष हु बखानि ।
सुष्क मांस वल्लप्त है तिहु बलूर सुजानि ॥९५॥

रुधिर नाम:

रक्त क्षतज शोणित असृग् लोहि तास सहलस ।

मेद वा मल वा गूद वा आंत नाम:

बपा बसा सो मेद है, मल कौ किट्ट बखानि ।
हिरदै मल सो धोव पुनि [आंत नाम] अत्र पुरीत सुजानि ॥९६

नाडी नाम:

नाडी धमनी आमनी धरानशा हिंध्याहि ।
ग्रीषत न्यासा तातुकी स्नायु सिरा सो चाहि ॥९७॥

वस वा लास नाम:

स्नायु मस्न साय कृत्ति कास पंड बसु होइ ।
सालो सृणिका स्यंदिनी दूषिका दृग मल सोइ ॥९८॥

गूथ वा मूत्र नाम:

विष्टा, विसश, मल, शकृत, गूथ, पुरीष उचार ।
वर्च, वर्चकस् अवस्कर:, मूत्र प्रस्राव बिचार ॥९९॥

संपूर्ण शरीर हाड नामः

हाड अस्थि कीकरा कुल्य कर्प्पर सोई कपाल ।
पृष्टास्थिसक सेरुका सरीरास्थिन कंकाल ।।५००

अंग वा मूर्ति नामः

अंग प्रतीकः अवयव, अपघन अंग सरीर ।
काय देह मूर्ति तनु धाम पतंग सुधीर ।।५०१।।
विग्रह उपघन संहरग वर्ष्म पुंगल मात्र ।
वपु संहन सरीर सो कहै कलेवर मात्र ।।५०२।।

पाउ को अग्र नामः

फाग्र, प्रपदं बहुरि चरण अंगि पद पाद ।
गुल्फ घुटि क टकना तलइ, पार्श्नि एडी जगाद ।।३।

गोडा वा जांघ नामः

जानु उपर्व अष्टीवत् प्रसृता जंघा होइ ।

जंघ संधि नामः

उरू पर्पतिह संधि को वंक्षण कहैं सु लोइ ।।४।।

लिंग नामः

मेट्रो मेहन सेफसो सिश्नु लिंग तिह जान ।

आंड नामः

अंड मुष्क, शोको वृषण [गुदा नाम] गुदा पायु सु अपान ।।५

जोनि नामः

भग, बरांग, मंदिरमदन, जोनि, कूपिका, उपस्थ ।
स्त्रीचिन्ह, पुनि, कुगतिपथ, सुपनिधि, उतपति अस्थ ।।६

पेडू नामः

वस्ति नाभि तल को कहत [चूतड नाम] श्रोणि फलक कट होइ ।

कटि वा नितंव नामः

कटि पीछै सु नितंव हैः [जघन वा नाम] जघन पुरस्सर सोइ ।।७।।

कट नामः
कूपक होइ नितंव मैं ताहि ककुंदर जानि ।
कटि श्रोणि सु कुकुद्मती अवलग्नं मध्यमानि ।।८।।

लिंग जोनि डिग अंत ताको नामः

कटि प्रोथ, स्फिच, खोइ, जोनि उपर जो होइ ।
पीठि वंश को त्रिक कहै पृष्ट चरम तन सोइ ।।९

पेट नामः

तुंद पिचंड जठर उदर कुछी पेट प्रवान ।
वक्ष वत्स उर को कहै भाषा छाती जान ।१०।

कुच नामः

उरज, पयोधर, कुच, स्तन, संहन, पुन वक्षोज ।
चूचक कहै कुचाग्र को [गोद नाम], क्रोड भुजांतर सोज ॥११

कांधा नामः

स्कंध भुज सिरो अंस जो जंभुणी सत संधान ।
बाहु मूल श्रेक कहै पार्श्व विहत सजान ॥१२॥

भुजा वा कुहणी नामः

दोप, प्रकोष्ट, सुबाहु, भुज, सुतज, कल्पत कहंत ।

कुहनी उपर प्रगंड नामः

कु फोणी सु कुर्प्पर, उपर तिह प्रगंड ससहंत ॥१३

गोद के नामः

गोद उछंग करोल अंक, अंक मास उतमंग ।

सीस भूषन नामः

सीरप मनि सीरप पुहप चूडा मनि मनि थिम ॥१४॥

पहुचा नामः

पहुचा सोमनि बंध कहि, आपत भूर सुजान ।

नाडा नामः

नीवीग्रंथ बंधन प्रसवन, अंबर निवस परिधान ॥१५॥

हाथ अंगुली विचार नामः

करभ कनिष्टा लगु कहै जो कर बाहिर होइ ॥
अंगुष्ट पुनि अंगुली कर साखा है सोइ ॥१६॥
तर्जनी उहै प्रदेशिनी, मध्यमध्यमा जानि ।
अनामिका सु कनिष्टका क्रम तें लेहु पिछानि ।१७।
नषर, नष, कररुह, करज, कामांकुश महाराज ।
पुनर्भवः, करसूक सो भुजा कंट सुबिराज ॥१८॥
प्रादेश ताल गोकर्ण कहि तर्ज्जनि तें बिस्तार ।
अंगुष्टेसकनिष्ट सो वाहि बितस्त उचार ।
पाणि निकुब्ज प्रसृतिः बिबजुत अंजुलि होइ ।
पौरप, भुज बिस्तार थोउ, नर प्रमाण है सोइ ॥२०

कृकाटिका ग्रीवा नामः

गल कंठ ग्रीवा सिरोधि, कंधरा मलन सजानि ।
कंबु ग्रीवरेषत्रय, (कांधा नाम) कृकाटिघंटु घाटानि ॥२१।

मुष नामः

आसि बेदन आनन लपन धक तुंड मुप नाम :

नासिका नामः

घ्राण नासिका गंध बह घोणी नासा भाम ।२२

होठ व ठोडी नामः

ओष्ट अधर रद छद वाणित दसन बाससी होइ ।
चिबुक कहै ठोडी जुइक गंड कपोल सुदोइ ।।४२३।।

दांत नामः

दंत रदन रद द्विवज दशन (तालू नाम) तालू काकुद जान ।

जिह्वा नामः

जिव्हा रसज्ञा रसना नूर सुवचन प्रवान ।।२७।।
ओष्ट प्रांत सो सृक्वनी गोधि अलिक ललाट ।
भाल कहत है माथ सो अर्द्ध चन्द्र भनि प्राट ।।२८।।

भ्रू नामः

दृग उपरि दोउ भ्रूक है । कूर्च भ्रूवन मध्य होइ ।
सुदेस ललाट सुसंध है भाषत नूर सु लोइ ।।२९।।

द्रिग तारिका नामः

दृग तारिका कानीनिका "(बरुणी नाम)" परुनी पक्ष कहंत ।
पलस्यौं पलक लगैं जबैं पल निमेष सलहंत ।।३०

आषि नामः

दृष्टि नेत्र लोचन नयन । दृग इक्षण चक्षु अक्षि ।।
अंबुज रूप अधीन सो जानैं नूर प्रतिक्ष ।।३१।।

देषण नामः

चितवनि चाहनि जवनि पुनि दरस बिलोक निदृष्टि ।
अवलोकनि निरपनि लषनि दृग चारनि लषिस्टष्टि ।।३२।।

आँसू नामः

बाष्प अंश्रु नेत्रांबू अस्र रोदन मसस्त आक्ष ।
नेत्रांतः सु अपांग है तिह देषन जु कटाक्ष ।।३३।।

कान नामः

कर्ण शब्द ग्रह श्रोत्र श्रुति श्रवण श्रवः सोई कान ।

शिर नामः

मौलि मुंड मस्तक शीर्ष उत्तमांग मूर्द्धान ।।३४

केस नामः

मूर्द्धज कुंतल वाल कच चिकुर सिरोरुह सोइ ।
केस वृंद कौ नाम कहि नूरसु कौसिक होइ ।।३५।।

अलक नामः

अलका चूर्ण कुंतल,

बाल वक्र सिर पर नाम

भाल भ्रमर सिर सोइ। कोई परैं जु पौर मैं।
नूर कहावैं जोइ ॥३६॥

गुंथी चोटी नाम

केस पासी चूडा सिषा खटा जटा की जानि।
प्रवणि वेणी मांग कह सीमत सुवपानि ॥३७॥
केस[1] वेस कबरी य जूडा, सो धमिल्ल कहि जाइ इत्य पिपाठ।

रोम नाम

रोम लोम तनुरुह निचय स्मश्रु पुरुष मुप होइ।

वेप नाम

आकल्प वेपन पथ्य प्रतिकर्म प्रसाधन सोइ ॥५३८॥

अलकार करै ताके वोइ नाम

अलंकार नाम

परिकृत अलकृत सु विभूपित मंडत जानि।
अलंकरिष्णु प्रसाधित अलंकर्तहि वपानि ॥५३९॥

भूषण ज्योति नाम

रोचिषु भ्राजिषु पुनि बिभ्राजू रुचिवत।
अलंक्रिया भूषा सोइ [भूषण नाम] आभूपण सरहंत ॥४०॥

हार बीच मणि ताके नाम

अलकार, परिकार, पुनि, भूषन, मंडन जान।

सिर मैं मनिहर मध्य मनि ताके नाम

चूडा मनि सिरो रत्न

मुकुट नाम

मुकट किरीट वपान ॥४१॥

फूलहु की लता सिर रचना करी ताके नाम

कही पारितथ्या प्रथम बाल पाश्या माल।
पत्र पाश्या ललाटिका रची पुहुप सिर माल ॥

कर्ण भूषन नाम

ताल पत्र सो कर्णिका कुंडल वेटन कर्ण।
हार मध्यगतरत्न मनि ग्रैवेय कठा भर्ण ॥४३॥

मोती की माला नाम

हार कहे मुक्तावली देव छंद शतयष्टि।
सप्त विश मोती न की नक्षत्र माला सृष्टि ॥४४॥

---

१. यह कड़ी नीचे लिखी हुई है—मूल, पृ० ५१

प्रकोष्ट आभरण व मोती माला:

उर सूत्रिका सुमुक्तिका प्रालंबिका सुबर्ण ।
लंबन बहुरिललंतिका और भांति की कर्ण ।।४५।।

प्रकोष्ट आभरण नाम:

पारिआर्य आवापक: [कंकड़ नाम] कटकं वलय [सबंद[२]] केयूर ।
कबिजन कहै अंगद बाजूबंद ।।

मुंदड़ी वाछाप नाम:

आंगुलीय कऊर्मिका अभिग्यान मुद्रासु ।
अंगुलि मुद्रा साक्षर नूर नाम सु प्रकासु ।।४७।।

छुद्र घंटा नाम:

किंकिनि रसना मेपला कांची सोई कटिजाल ।
हेम सूत्रिका सप्त की सारसनं छुद्राल ।।४८।।

बिछिया नाम:

तुला कोटि नूपुर बहुरि पादांगद मंजीर
पाद कटक सोई हंसक बिछिया बरनत धीर ।४९।।
आभूषण जो पुरुष कटि श्रृंषल ताहि कहंत ।
त्वकफल क्रमिरोमादिए। वस्त्र जोनि सलहंत ।।५०।।
क्षौमादिक सो वाल्कं कौशेयं कृमिजास
रांकव कहि मृग रोमजं फाल वादर कर्प्पास ।।५१।।

रेस्मीन वा वस्त्र नाम:

नि: प्रवाणि आनाहतं—

तंत्रक बसनन बीन जो पुराणौ ताको नाम: तंत्र क बस्त्र नवीन।
उद्‌गमनीय होइ सो, धौत वस्त्र युग कीन ।।५२।।

रेस्मी बस्त्र धोया नाम:

धौत करै कौशेय जे तिहपत्रोर्ण कहंत ।
अवगुंठित निचोल सो नि:पीडन सलहंत ।।५३

बहूमूल्य नाम:

वहु मूल्यं सु महा धनं । [पट वस्त्र नाम) क्षोम दुकूल वषानि ।

कंट लंबित कपड़ा नाम:

प्रावृतं सु सोई निवीतं (दसी नाम) दशादसी पहिचानि ।।५४।।

लंबाई वा चौड़ाई नाम:

आनाह आयाम पुनि देघ्र्य कहत है नाहि ।
परिणा हो सुविसालता जोर्ण पट चिरं आहि ।।५५

---

२. मूल में यह शब्द कटा हुआ प्रतीत होता है पृष्ठ. ५२। किन्तु दोहे के संतुलन की दृष्टि से यह रहना चाहिए और केयूर आगे की पंक्ति में जाना चाहिए।

कपड़ा नाम:

आछादन अंसुक वसन चैल निचोल सुवास ।
पोर वस्त्र र सुचेलक : पोपट होइ प्रकास ॥५६॥

मोटी माड़ी नाम:

स्थूल साटकः वराधि पैसई चौसई सोइ ।

राल नाम:

प्रछद पट सु निचोल है [बिछावन कौ वस्त्र नाम.]
रल्लक कवल सो होइ ॥५७॥

साड़ी नाम:

अर्द्धो रुक चंडातक वर प्रसुक कसह ताहि ।
ओढं सिर तैं पाय लौं, आव पचोन सु आहि ॥५८॥

उढनी स्त्री की नाम:

उन सव्यान सु प्रतरीय यथा अंसु कपरिधान ।
प्रवार वृहतिका उत्तरीय उतरा सग सव्यान ॥५९॥

ओढ़नी स्त्री की नाम:

कूर्प्पासिक सोई कंचुकी । कोली चोल कहत ।
शीत निवारण प्रावरण नीसार: ससहंत ॥६०॥

चंदोवा नाम:

अर्द्धो रुक भडातकं, वरवनिताकौ चीर ।
कहै उल्लोच पुनि दुप्याद्य वितान मत घीर ॥

पेरदा नाम:

प्रतिसीरा सो जवनिका जानि तिरस्करणीय
अंतरपट सो नूर कहि जो प्रतरपट वीय ॥६१॥

अंग ससकार नाम:

परिकर्म्म प्रतिकर्म पुनि अंग संस्कार सुहोइ ।

मर्दनी नाम:

मृजा मार्जनी माष्टि पुनि मर्दन कहिए सोइ ॥६२॥

उवटण नाम:

उद्वर्त्तन उत्सादनः स्नान आप्लव आप्लाव
चर्चा चाचिका स्थासकः चर्चित करैयनाय ॥६३॥

गोद नाम : पत्र लेपा नाम:

पत्र लेप पत्रांगुलि, प्रबोधनं अनुबोध पुनि

टीका नाम:

चित्रक तिलक विशेषकः तमाल पत्र विशेष ॥६४॥

केसर नामः

कास्मीर जन्मा अग्निशिष बाल्हीक पीतन होइ ।

लाल चन्दन नामः

रक्त पिशुन संकोचनः लोहित चन्दन सोइ ।।६५।।

लाष नामः

राक्षा लाक्षा द्रुमा मय यावो अलक्त बषानि ।
वृक्षालय जतु रक्तए कहै नूर सुजानि ।।६६।।

लवंग नामः

देव कुसम श्री संज्ञ सोई ए लवंग अभिधान ।

जावक नामः

जावक कालीयक वहुरि कालानु सायं सु आन ।।६७।।

अगुरु नामः

सामर्थक बंसिक अगुरु राजर्हिः सोई लोह ।

मालती समान गंध होइ श्याम सोई नामः

मल्य गंधिक्रमिजः वगुरु, काला गुरु जगु सोह ।।६८।।

राल नामः

यक्ष धूप पुनि सर्यरस, सर्बरसः बहुरूप ।
राल सक्क तृम धूपक ताहि कहै वृक धूप ।।६९।।

चीढ नामः

सरल[1] द्रव पायस बहुरि श्री बेष्ट श्रीवास ।

कस्तूरी नामः

मृगनाभि मृगमद सोई कस्तूरी सु प्रकास ।।७०।।

कर्पूर नामः

चंद्र संज्ञ हिम बालुकः सिता अो घन सार ।

चन्दन नामः

भद्र श्री श्रीषंड हरि मलयज सो गंध सार ।।७१।।

गोरोचन रक्त बन्दनः

गो शीर्षक हरिचन्दन, तैल पर्णिक होइ ।

पतंग नामः

तिल पर्णा, पत्रांगु, पुनि रजनंकु, चंदन सोइ ।।७२।।

कंकोल नामः

कोलक, कंकोलक, वहुरि कहै कोक फलताहि ।

जायफल नामः

जातीकोष, सुजानयो जो जातीफल आहि ।।७३।।

---

१. 'वृक धूप नाम' पृष्ठ ५४ ।

कप्पूँरा, गुरु, कस्तूरी पवि कंकोल मिलाय ।
होत यक्षकर्द्दम तहाँ नूर रचैं सब नाय ॥७४॥

वाती नाम:

समालंब, अगराग, अर्त्ति लेप रसाधन सोइ ।
वर्नक और विलेपन गात्रा नु लेपनि होइ ॥७५॥

अबीर नाम:

वास जाग सो चूर्ण कहि, भावित वासित जानि ।

अधिवासना नाम

गंधमाल्य संस्कार सो वस्तु सुगन्ध जु होइ ।
अधि वासन सो नूर कहि वासित सुमनस सोइ ॥७६॥

माला के नाम:

माल्य दाम स्रक स्रज् सुगुण, ए माला के नाम .
सीस केस मध्य होइ तिह गर्भक कहि अभिराम ॥७७॥

वदी नाम·

लिपालभि सु प्रभ्रष्टकं (बेंदा नाम) ललामक पुर तिस्त ।
प्रालंब मृजुलंब पुनि कबहु होइ न बिस्त ॥७८॥
वैकक्षिक यग्य सूत्र ज्यौं माला पहरै कोइ ।
सिपा वीथि अपर कहै पुनि आपीड सु होइ ॥७९

रचना नाम:

परिस्पद प्रतिसर्त्व पुनि रचना कही बपान ।

पूर्ण नाम:

आभोग परिपूर्णता पूरन भूर विधान ॥८०॥

तकिया नाम.

कंदुक कदु उछीर पुनि उपबर्हण उपधान ।
कहै उसीसा, गौंदुक जिह सज्जा परधान ॥८१॥

सेज नाम·

पर्यंक. पल्यंक पुनि मच शयन शयनीय
पट्वा अष्ट तल्पा सोई सज्जा आमहु हीय ॥८२॥
दीप सिपा तस प्रहु मणि सीत रम्य स्नेहास
कज्जल धुज दोपा तिलक कौमुदी वृक्ष प्रकास ॥८३॥
दशाकर्ष सु प्रदीप पुनि कज्जल मोचनं आहि ।
कटा ज्वाल कपिनूर कहि नाम जोति सो चाहि ॥८४॥

कज्जल नाम:

अंजन, कहियै दीप सुत, गज पाटस, तिह जान ।
नाम मषी कज्जल उहै, रजन चक्षु बपान ॥८५॥

स्नेह तेल बाती दसा दीपति ज्योति सुलोइ ।
शिषा काकपछि कहत है वारे स्यौ जो होइ ॥८६॥
संपुटक: सु समुद्र क:

आसन नाम: आसन पीठ बषानि

परिग्रह नाम:

पतत्ग्राह सु पतत्ग्रह परिगद्दी ताहि पिछानि ॥८७॥

कंगही नाम:

कंकतिका सु प्रसाधिनी पिष्ट बात कष्यात ।
ताल वृंत कं व्यंजनं बाल बिजन बिष्यात ॥८८

दर्प्पण नाम:

दर्प्पण मुकर सु आदर्श प्रतिबिंबी कहि ताहि
प्रति छाया प्रति कृति सोई नूर आरसी चाहि ॥८९॥

इति नृ बर्ग: समाप्त:

नूर रच्यौ नर वर्ग इह अपनी मति अनुसार ।
ब्रह्म बर्ग बरनौ कहा सब्द ब्रह्म नहि पार ॥९०॥

अथ ब्रह्म बर्ग: बंश नाम:

गोत्र जनन कुल अभिजन अन्वबाय संतान ।
संतति अन्वय वर्ण पुनि ब्राह्मन आदि वषान ॥९१

च्यारि वर्ण नाम:

ब्राह्मन क्षत्रीय वैश्य पुनि सूद्र वरन ए च्यारि ।
और पौनि वत्तीस है, पंडित लेहु विचारि ॥९२॥

राज वंशी नाम:

कुल संभव सो बीज्य है राज बीजी राज वस्य ।

साधु नाम:

सभ्य साधु सज्जन आर्य नाम रहस्य कुलीन ॥९३

आश्रम नाम:

ब्रह्मचारी आश्रम प्रथम द्विवतीय गृहस्थ सु होइ ।
वानप्रस्थ है तीसरो त्याग संन्यासी सोइ ॥९४॥

ब्राह्मण नाम:

अग्रजन्म भूदेव पुनि वाडव विप्र द्विजाति ।
ब्राह्मण सो पट कर्म जुत जागादिक दिन राति ॥९५
ब्राह्मन ही सौ जीविका जिह ब्राह्मन की होइ ।
ब्राह्मनधू तासों कहै नूर सु कवि जन लोइ ॥९६॥

पण्डित नाम:

ज्ञः प्राज्ञः कोविद बुधः कृती विमति विद्वान ।
दोषज्ञः संसुधी कवि धीर सु सख्यावान ।।९७
सूरि विचक्षण मनीषी दूरदर्शी बुधिवत ।
सब वर्ण सो विपश्चित दीर्घदर्शी कृपि हंत ।।९८।।
श्रोत्रिय वैदिक, छांदस जो नर पाठी वेद ।
उपाध्याय अध्यापक पाठक विद्या भेद ।।९९

गुरु नाम:

निषेकादि कर्त्ता गुरु, आचार्य मन्त्र प्रधान ।

व्रती नाम: यग्य व्रती यष्टा सोई

जजमान नाम: आदेष्टा जजमान ।।७००

जज्वा नाम:

विधिनेष्टा यज्वा जु को, याजयूक नर होइ ।
इज्या क्षीत सुगोष्पति, कह यज्या पुन सोइ ।।७०१।।
सांग वचन गुरु पै पढ़ै अनूचान सो आहि ।
सम्यानुज्ञ समावृत्त सुत्वा क्रतु कर्ताहि ।।७०२।।

शिष्य नाम:

अन्तेवासी, छात्र पुनि शैक्ष शिष्य जो कोइ ।
एक ब्रह्म व्रत परस्पर ब्रह्मचारिणः सोइ ।।७०३
आत्वारम्भ उपक्रम उपज्ञा आदौ ध्यान ।
नाम सुनौ उपदेश को पारंपर्य प्रमान ।।४

पंच महा यज्ञ नाम:

पाठ होम पूजा अतिथि तर्प्पण बलियै पांच ।
महा यग्य ब्रह्म यज्ञ ए नाम कहत कवि सांच ।।५
पाठ ब्रह्म यज्ञ जानियो हूोम देवजग्य आन ।
तर्प्पन पितुजग्य भूत बलि नृजग्य अतिथि पुजान ।।७०६
अभ्यायज्ञ् समावृत स्नुत्वा तीन्यौं नाम ।
जो कर निवर्‍यो जाग को कहै नूर अभिराम ।।७

सभा नाम:

सभा समज्या परिषत, आस्थानी आस्थान ।
गोष्टी सद संसद समिति, राज समाज प्रमान ।।८

सभापति नाम:

सामाजिकः सु सभासद सभ्यः सभास्तार ।
सभापति नूर कहै, सभापंडित उचार ।।९

जजुर्वेद नाम:

अध्वर्य उद्गात्र पुनि होता त्रयी जु सोइ ।
यजु: साम ऋग्वेद को क्रम तैं ग्याता होइ ।।१०
धन निवारि धारै अगनि ऋत्वजया जक आहि ।

बेदि [बिना सोधी भूमि नाम]

भूमि परि : क्तका :

सोधी भूमि नाम:

स्थंडिल चत्वर चाहि ।।११

त्रयो अग्नि नाम:

दक्षिणाग्नि गार्हपत्या हनी । त्रय अग्नि:
प्रणीत सोई संस्कृत [ज्वलिताग्नि नाम] ज्वलित होत जोजग्नि ।।१२।।

अग्नि प्रयोगी वा अग्नि त्रयी नाम:

अग्नि प्रयोगी समूह्य: परिचारी उपचारि ।
आग्नायी स्वाहा बहुरि हुत भुक्प्रिया बिचारि ।।१३।।
यूप अग्र को तर्म कहि हव्यापक चरु आहि ।
साश्रृत श्नैया क्षीर–मै, दधि जुत आमिक्षाहि ।।१४।।
पृषता दीव सो जानियो दही मिलत जो आज्य ।

षीर नाम:

परिमानं पायस वहु हव्य कव्य सव साज ।।१५।।
वाम अंग कौं सव्य कहि, दक्षिण सो अपसव्य ।
देवन कै हित हव्य है, पैत्र निहित सो कव्य ।।१६।।

होमण का नाम:

जुहु ध्रुव श्रुव श्रुच उपभृत पात्र श्रुवादिक नाम ।
उपाकृत: पश्रु जो कियो अभिमंत्र्य हत काम ।।१७।।

मारणार्थक नाम: जग्य में मारण कै अर्थ न्यौतै ताको नाम:

प्रोक्षण कहै वधार्थ परंपरा कं शमन पुनि

मार्‍या का नाम:

प्रमीत उपसंपंन पुनि, प्रोक्षित हताजग्यार्थ:
संनाय्यं कहिये हविप, हुतं वषट कृत अग्नि:
दीक्षांतो अवभृथ ग्यान ।।

जग्यना कर्म नाम:

तिस्नान सुजग्नि, कृतु कर्मार हयज्ञियं पूर्त्त कर्मपा तादि ।
यज्ञ शेप अंमृत विघस भोजन सेप सुवादि ।।१९

पंडित नाम:

ज्ञः प्राज्ञ: कोविद बुध: कृती विमति विद्वान ।
बोधज्ञ: संसुधी कवि धीर सु सख्यावान ॥६७
सूरि विचक्षण मनीषी दूरदर्शी बुधिवंत ।
सब वर्ण सो विपश्चित दीर्घदर्शी कृपि श्रुत ॥६८॥
श्रोत्रिय वैदिक, छांदस जो नर पाठी भेद ।
उपाध्याय अध्यापक पाठक विद्या भेद ॥६६

गुरु नाम:

निषेकादि कर्त्ता गुरु, आचार्य मम्र यपाल ।

व्रती नाम: मम्म व्रती यष्टा सोई

जजमान नाम: आदेष्टा जजमान ॥७००

जज्वा नाम:

विधिनेष्टा यज्वानु को, याजयूक नर होइ ।
इज्या दीस सुगोप्यति, कहु यज्या पुन सोइ ।७०१॥
सांग वचन गुरु पै पढ़ै अनूचान सो आहि ।
सध्यानुज समावृत्त सुत्वा कृतु कर्त्ताहि ॥७०२॥

शिष्य नाम:

अंतेवासी, छात्र पुनि मौक्ष शिष्य जो कोइ ।
एक ब्रह्म व्रत परस्पर ब्रह्मचारिणः सोइ ॥७०३
आत्वारंभ उपक्रम उराश्रा आदो ध्यान ।
नाम सुनो उपदेश को पारपर्य प्रमान ॥४

पंच महा यज्ञ नाम:

पाठ होम पूजा अतिथ तर्प्पन बलिदं पांच ।
महा मम्य यज्ञ यज्ञ ए नाम कहत कवि सांच ॥५
पाठ ब्रह्म यज्ञ जानियो हूम देवजग्य थान ।
तर्प्पण पितृजग्य भूत बलि नृजग्य अतिथ पूजान ॥७०६
सध्यायज् समावृत स्तुत्या तीर्थ्यो नाम ।
जो कर नियर्यो जाग को कहे नूर अभिराम ॥७

सभा नाम:

सभा समज्या परिषत, आस्थानी आस्थान ।
गोष्ठी सद संसद समिति, राज समाज प्रमान ॥८

सभापति नाम:

सामाजिक: ए सभासद सभ्य: सभास्तार ।
सभापति नूर कहै, सभापतिन उचार ॥६

जजुर्वेद नामः

अध्वर्य उद्‌गात्र पुनि होता त्रयी जु सोइ ।
यजुः साम ऋग्वेद कौ क्रम तैं ग्याता होइ ॥१०
धन निवारि धारै अगनि ऋत्वजया जक आहि ।

वेदि [बिना सोधी भूमि नाम]

भूमि परि : क्तका :

सोधी भूमि नामः

स्थंडिल चत्वर चाहि ॥११

त्रयो अग्नि नामः

दक्षिणाग्नि गार्हपत्या हनी । त्रय अग्निः
प्रणीत सोई संस्कृत [ज्वलिताग्नि नाम] ज्वलित होत जोजग्नि ॥१२॥

अग्नि प्रयोगी वा अग्नि त्रयो नामः

अग्नि प्रयोगी समूह्यः परिचारी उपचारि ।
आग्नायी स्वाहा वहुरि हुत भुक्प्रिया विचारि ॥१३॥
यूप अग्र को तर्म कहि हव्यापक चरु आहि ।
साश्रृत श्नैया क्षीर–मैं, दवि जुत आमिक्षाहि ॥१४॥
पृषता दीव सो जानियो दही मिलत जो आज्य ।

षीर नामः

परिमानं पायस वहु हव्य कव्य सव साज ॥१५॥
वाम अंग कौं सव्य कहि, दक्षिण सो अपसव्य ।
देवन कै हित हव्य है, पैत्र निहित सो कव्य ॥१६॥

होमण का नामः

जुहु ध्रुव श्रुव श्रुच उपभृत पात्र श्रुवादिक नाम ।
उपाकृतः पश्रु जो कियो अभिमंत्र्य हत काम ॥१७॥

मारणार्थक नामः जग्य में मारण कै अर्थ न्यौतै ताकौ नामः

प्रोक्षण कहै ववार्थ परंपरा कं शमन पुनि

मार्‌या का नामः

प्रमीत उपसंपंन पुनि, प्रोक्षित हताजग्यार्थः
संनाय्यं कहिये हविप, हुतं वपट कृत अंगिनः
दीक्षांतो अवभृथ ग्यान ॥

जग्यना कर्म नामः

तिस्नान सुजग्नि, क्रतु कर्मार हयज्ञियं पूर्त्त कर्मपा तादि ।
यज्ञ शेप अंमृत विघस भोजन सेप सुत्रादि ॥१८

दान त्यान नाम:

त्याग विहाय त विसर्ज्जन, उपसर्जन सुवितर्णः
प्रतिपादन प्रादेशनः विश्राणन सुपकर्णः ॥२०
वर्जन निर्वपन पुनि, अंहृति स्पर्शन दान।

त्यान नाम: अवगम मोष मुकत जगत त्याल मान जग जान ॥२१

मृतकार्य मृतक द्योस जो देइ ताको नाम:

मृत कहित ताविन जु वे ताहि मोर्ड दहक जान।
श्राद्धकर्म जु शास्त्रतः निवापः पितृदान ॥२२॥
दिन को अष्टम भाग जो कलः कुतप बपान।
घटिका घटि द्वै पहर में घटिका वह्निमत मान ॥२३॥

ढूंढणा काना:*

अन्वेषणा, गवेषणा, पर्यषणा परिष्टि
सनिः अध्येषणा अर्थना सृष्टि अभिपत्ति ॥७२४॥
आपूर्ण्यक प्राहुणक सो आये सिक आवंत
बहुरि अतिथि सो जानियो प्रगट पाहुनो संत ॥२५॥'
आतिथेय आतिथ्य पुनि आवेशिक जु बपानि।
आगंतु अह अतिथ को पूजा करै सुजानि ॥२६॥

पूजा नाम:

अर्चा, अपचति सपर्जाः, नमस्या, अर्हणः आह।
परिचर्या सु उपासनं वरवस्या सुपूपा ह ॥२७॥

चलण व पड्या रहणका नाम:

अह्य, अटाज्या पर्जटन वीथिनि फिरति जु कोइ।
चर्या इर्या पथ स्थिति मग में ठाड़ो होइ ॥२८॥
उपस्पर्श सो आचमन, मौन अभाषण भाग।
तू दलो तू थोड़ जु बोलत चुप कै राप ॥२९॥
आवृत अतिक्रम पर्ययः उपात्यय अतिपात।
आनुपूर्वी पुनि अनुक्रम सो पर्याय विख्यात ॥३०

परम्परा नाम:

अनुपूर्वी सो अनुक्रम परपाटी पर्याय।
आनुपूर्व्य आवृत सोई परंपरा जु कहाय ॥२९॥

अधिकाई नाम:

उपात्यय अतिपात पुनि पर्यय नाम प्रकाम।
नीरम प्रत सो जानियो उपरस्था उपराम ॥३०॥

---

* यहां 'म' और होना चाहिए। मूल में भी 'म' नहीं है।
नोट—ये नाम अतिथियों के हैं।

प्रथगात्मता बिबिबेक हि बिधि क्रम कल्प सुयोग ।
बिधि संप्रेष्यनि योग कहि फल अपर्ण्ण बिनियोग ।।३१।।

थूक पड़ै नाम:

ब्रह्म बिंदव: बिप्लष बेद पढ़त जु पतंत
ध्यान योग आसन विषै ब्रम्हासन सलहंत ।।३२।।

संयुक्त होइ ताको नाम:

श्रुति संस्कार अहै प्रथम उपाकरण सो आहि ।

पाइ प्रणाम नाम:

पाद ग्रहण अभिवादन, नूर कहत बुध ताहि ।।३३।।

सन्यासी वा तपस्वी नाम:

कर्मंदी पारासरी भिक्षु मस्करि परिव्राट ।

पारि रक्षक: जान सौ नाम:

तापस तपसी जानियो पारकांक्षी प्राट ।।
वाचंयम जो मुनि कहै मौनव्रती मन शांत ।
ब्रह्मचारी वर्णी सोई तपेक्लेश सहोदांत ।।३५।।
रिषि सत्यभाषी व्रती स्नातक आप्लुत जान ।
जीते इंद्रीय ग्राम ये जतिनो जतय: आन ।।३६।।
बल्मीक: कुशिनो कवि: वाल्मीकि बाल्मीक ।
मैत्रा वरुणनाम तिह प्रावे तस मति नीक ।।३७।।

व्यास नाम:

बेदव्यास, द्वयपायन, वादरायन कानीन ।
सत्यवती सुत माठर: पारासर्य प्रवीन ।।३८

जोजन गंधा नाम:

गंध कालिका वासवी सत्यवती दासेय ।
सालकायन जाहै सोई जोजन गंधा भेव ।।३९।।
जामदग्नि, भार्गव, बहुरि रेणुका सुत अरु राम ।
नारद कलिकारक पिशुन देव ब्रह्मसत्य धामन ।।४०
अक्षमाला सु अरुंधती । विधि तै भए वसिष्ट ।
त्रिशंक जायी कौशिक गाधेय तपनिष्ट ।।७४१
सतानन्द गौतम कहौ, कहौ कुशारणि दुर्वास ।
ब्रह्म रात्रि योगेश पुनि, जाज्ञं वल्क स्व प्रकास ।।४२
प्रयत: पूत पवित्र कहि सर्व लिंगी पापंड ।
व्रतीनि कौ आसन व्रपी, अजिन चर्म कृन्पिंड ।।४३।।
कुंडी कहै कमंडलु भिक्षा कदंव रुभैक्ष ।
जप्यं जाप्यं जाप जप स्वाध्याय सोई अक्ष ।।४४।।

दान ग्यान नामः

त्याग विहाय स विसर्ज्जन, उपसर्जन सुवितर्णः
प्रतिपादन प्रादेशनः विश्राणन सुपकर्णः ॥२०
मर्जन निर्वपन पुनि, अंहति स्पर्शन दान ।

ग्यान नामः अवगम बोध मुकत जगत ग्यान मान जम जान ॥२१

मृतकार्य मृतक धोस जो देइ ताको नामः

मृत कहित तादिन जु दे ताहि षोर्ड़ वहक जान ।
श्राद्धंकर्म जु शास्त्रतः निवापः पितृदान ॥२२॥
दिन को अष्टम भाग जो कलः कुतप बपान ।
घटिका घटि द्वै पहर में घटिका वक्रिमत मान ॥२३॥

ढूंढणा कानाः*

अन्वेषणा, गवेषणा, पर्यषणा परिष्टि
सनिः अध्येषणा अर्थना सृष्टि अभिपस्ति ॥७२४॥
आमूर्णक प्राघुणक सो आवे सिक आगंत
बहुरि अतिथि सो जानियो प्रगट पाहुनो संत ॥२५॥[1]
आतिथेय आतिथ्य पुनि आवेधिक जु बपानि ।
आगंतु अह अतिथ को पूजा करें सुजानि ॥२६॥

पूजा नामः

अर्चा, अपचति सपर्जाः, नमस्या, अर्हणः आह ।
परिचर्या सु उपासनं बरवस्या सुश्रूषा ह ॥२७॥

चलण व पछा रहणका नामः

प्रव्रज्या, अटाट्या पर्जटन योपिनि फिरवत जु कोइ ।
चर्या ईर्या पथ स्थिति मग में ठाडो होइ ॥२८॥
उपस्पर्श सो आचमन, मौन अभाषण भाष ।
तू ष्णो तू शीकं जु बोलत चुप कै दाष ॥२९॥
आवृत प्रतिक्रम पर्ययः उपात्यय अतिपात ।
आनुपूर्वी पुनि अनुक्रम सो पर्याय विष्यात ॥३०

परम्परा नामः

अनुपूर्वी सो अनुक्रम परपाटो पर्याय ।
आनुपूर्व्य आवृत सोई परंपरा जु कहाय ॥३१॥

अधिकाई नामः

उपात्यय अतिपात पुनि पर्यय नाम प्रकाश ।
नीयम व्रत सो जानियो उपवर्स उपवास ॥३०॥

---

* यहां 'अ' और होना चाहिए। मूल में भी 'अ' नहीं है।
नोट—ये नाम अतिथियों के हैं।

प्रथगात्मता बिविबेक हि विधि क्रम कल्प सुयोग ।
बिधि संप्रेष्यनि योग कहि फल अपर्ण्ण बिनियोग ॥३१॥

थूक पड़ै नाम:

ब्रह्म बिंदवः बिप्लष बेद पढ़त जु पतंत
ध्यान योग आसन विषै ब्रम्हासन सलहंत ॥३२॥

संयुक्त होइ ताको नाम:

श्रुति संस्कार ग्रहै प्रथम उपाकरण सो आहि ।

पाइ प्रणाम नाम:

पाद ग्रहण अभिवादन, नूर कहत बुध ताहि ॥३३॥

सन्यासी वा तपस्वी नाम:

कर्मंदी पारासरी भिक्षु मस्करि परिव्राट ।

पारि रक्षकः जान सौ नाम:

तापस तपसी जानियो पारकांक्षी प्राट ॥
वाचंयम जो मुनि कहै मौनव्रती मन शांत ।
ब्रह्मचारी वर्णी सोई तपेक्लेश सहोदांत ॥३५॥
रिषि सत्यभाषी व्रती स्नातक आप्लुत जान ।
जीते इंद्रीय ग्राम ये जतिनो जतयः आन ॥३६॥
बल्मीकः कुशिनो कविः वाल्मीकि बाल्मीक ।
मैत्रा वरुणनाम तिह प्रावे तस मति नीक ॥३७॥

व्यास नाम:

बेदव्यास, द्वयपायन, बादरायन कानीन ।
सत्यवती सुत माठरः पारासर्य प्रवीन ॥३८

जोजन गंधा नाम:

गंध कालिका बासबी सत्यवती दासेय ।
सालकायन जाहै सोई जोजन गंधा भेव ॥३९॥
जामदग्नि, भार्गव, बहुरि रेणुका सुत अरु राम ।
नारद कलिकारक पिशुन देव ब्रह्मसत्य वामन ॥४०
अक्षमाला सु अरुंधती । विधि तै भए वसिष्ट ।
त्रिशंक जायी कौशिक गाधेय तपनिष्ट ॥४१
सतानन्द गौतम कह्यो, कह्यो कुशारणि दुर्वास ।
ब्रह्म रात्रि योगेश पुनि, जाज्ञं वल्क स्व प्रकास ॥४२
प्रयतः पूत पवित्र कहि सर्व लिंगी पाषंड ।
व्रतीनि कौ आसन व्रषी, अजिन चर्म कृनिषंड ॥४३॥
कुंडी कहै कमंडलु भिक्षा कदंब दमैक्ष ।
जप्पं जाप्पं जाप जप स्वाध्याय सोई अक्ष ॥४४॥

सत्य सवन अभिषव सोई, नूर कहत है ताहि ।
सर्व पाप ध्वंसी जु जप, अघ मर्षण सा आहि ॥४५॥
तन साधना अपेक्ष धरि निति धु कर्म यम जानि ॥
नित्य कर्म आगंतु की साधन नियम बखानि ॥४६॥

नमस्कार नाम:

नमस्क्रिया नति वंदन नमस्कार सु प्रणाम ।
यज्ञ सूत्र उपवीत सो, दक्षण करपूत काम ॥४७॥
ब्रह्मभूय ब्रह्मत्व पुनि ब्रह्म साजुज्य जु होइ ॥
देव भूयादिक ऐसे ही देव भाव है सोइ ॥४८॥
कृछ्र सातपनादिकं, करैं कष्ट व्रत कोइ ।
अनसन प्राय पुमान जो सन्यास वसो होइ ॥४९॥
नष्टाग्नि सो वीरहा, पुनि कहना विह जानि ।
मिथ्योर्था पय कल्पनां करैं सोभ सैं पानि ॥५०॥
व्रात्य हनि सस्कार जो निराकृति अस्वाध्याय ।
अवकोर्णी सुव्रत व्रत, धर्मध्वजी लिंग वृत्ति ॥५१॥

विवाह नाम

उपयामः उपयम विहृत परिणय सो उद्वाह ।
कर पीडन, पुनि वेसनः, वाहीं कहत विवाह ॥५२

संभोग नाम:

निधुवन, रत, सो मैथुनं ग्राम्य धर्म सु बिवाय ।
रति सभोग बखानिए बनिता संग सुभाय ॥५३
धर्म कर्म अर्थ त्रिवर्ग चतुर वर्ग सो मुक्ति ।
चारो बल तासौं कहे चतुभंद्र सो युक्ति ॥५४॥

इति ब्रह्म वर्ग नाम समाप्तः अथ क्षत्री वर्गः

क्षत्री व राजा नाम:

मूर्द्धाभिषक्त, बाहुजः राजन्य सु विराट ।:
नृप पार्थिव भो क्षमाभृत् भूप महीं[1] पति राट ॥५५॥

सामंत नाम:

जा राजा की राज यह, ताहि कहै सामंत ॥
नर्म सोव सामंत जिहि सोई धांसवर मंत ॥५६॥
उहै चक्रवर्ती सुनो सार्वभौम सो जान ।
मंडल मंडल को धनी तिह मडलेन बखान ॥५७॥
गानजांनि सामज सोई, सेन समाज सु आह ।
नूर कहै मातम तिह पुनि मतम सो चाह ॥५८॥

---

१ क्षित

गज बय बर्नन:

पांच बरस कौ बालगज दस को पोत प्रमान ।
बीस बरस कौ विष्क सो कलभ तीस कौ जान ।।५९।।

राजा की असवारी कौ हाथी वा संग्राम कौ हाथी तकौ नाम:

राजवाह्य, उपवाह्य, गज, नृप चढ़ने कौ होइ ।
समरोचित, सान्नाह्य सो समर लरत गज सोइ ।।६०
राजा अरु सामंत जिह, नमैं अधीश्वर साय ।
सार्व भूमि चक्रवर्त्ति सो, नृप मंडलेश्वर आय ।।६१।
जिहें मंडलेश्वर के सदा, राज सूय करि इष्ट ।
राज्ञा जिहि आज्ञा रहै स सम्राड् सुसृष्ट ।।६२।।

रामचन्द्र नाम:

रामचन्द्र सीतापति: दासरथि: रघुनाथ ।
रावनरिपु, काकुत्स्थ पुनि, भरताग्रज कपि साथ ।।६३।।

सीता नाम:

सीता जानुकी मैथुली, बैदेही सति सोइ ।
भूतनया जनकात्मजा, सीय रघुबरतीय होइ ।।६४

लक्ष्मण नाम:

लक्ष्मन वाल जती लक्षन: सौमित्रेय सु होइ ।
सेपवतार क्षुधात्रिपा, निद्रा जेता सोइ ।।६५।।

बलि नाम:

बाली वालि सु इंद्रसुत अंगद ताकौ पूत ।

सुग्रीव नाम:

रविसुत, सुग्रीव औ जुगराज अभूत ।।६६।।

हनुमान नाम:

मरुत पुत्र अंजनी सुत, केसरी सुत हरिजान ।
अमर वज्र कटि पार्थध्वज, रामदूत हनुमान ।।६७।।

रावण नाम:

दससिर, दसग्रीव, वक्रदस, पौलस्त्य: भुजबीस ।
लंकापति मंदोदरी, बशी अक्षय असुरीश ।।६८।।

जुधिष्ठिर नाम:

धर्मतात, सु, अजातरिपु, कालदहन कौं तेय ।
समर प्रिय कुरराव सो, सत्यबादी जानेय ।।६९।।

अर्जुन नाम:

अर्जुन, फाल्गुन, जिश्नु, पार्थ, धनंजय, श्वेताश्व ।
क्रीटी कपिध्वज इंद्रसुत गांडीव धनु तास ।।७०।।

सत्य सवन अमियथ सोई, नूर कहत है ताहि ।
सर्व पाप ध्वंसी जु जप, अघ मर्षण सा आहि ॥४५॥
तन साधना अपेक्ष धरि निति जु कर्म यम जानि ॥
नित्य कर्म आगतु की साधन नियम बखानि ॥४६॥

नमस्कार नाम:

नमेस्क्रिया नति वदन नमस्कार सु प्रणाम ।
मग्य सूत्र उपवीत सो, दक्षण करधृत काम ॥४७॥
ब्रह्मभूय ब्रह्मत्व पुनि ब्रह्म साजुज्य जु होइ ॥
देव भूयादिक ऐसे ही देव भाव है सोइ ॥४८॥
कृछ्रं सांतपनादिकं, करै कष्ट व्रत कोइ ।
अनसन प्राय पुमान जो सन्यास वती होइ ॥४९॥
नष्टाग्नि सो वीरहा, पुनि कहना तिह पानि ।
मिथ्येर्या पथ कल्पना करै लोम तैं धानि ॥५०॥
व्रात्य हनि संस्कार जो निराकृति अस्वाध्याय ।
अवकीर्णी सुक्षत व्रत, धर्मध्वजी लिंग वृत्ति ॥५१॥

विवाह नाम

उपयामः उपयम विहत परिणय सो उद्वाह ।
कर पीडन, सुनि वेसनः, ताही कहत विवाह ॥५२

संभोग नाम:

निधवन, रत, सो मैथुनं ग्राम्य धर्म सु विवाय ।
रति संभोग बखानिए वनिता संग सुभाय ॥५३
धर्म कर्म अर्थ त्रिवर्ग चतुर वर्ग सो मुक्ति ।
चारौ बल तासौं कहै चतुर्भद्र सो युक्ति ॥५४॥

इति ब्रह्म वर्ग नाम समाप्तः अथ क्षत्री वर्गः

क्षत्री व राजा नाम:

मूर्द्धाभिषक्त, बाहुजः राजन्य सु विराट ।:
नृप पार्थिव औ क्ष्मामृत् भूप मही[1] पति राट ॥५५॥

सामंत नाम:

जा राजा की राज घट, ताहि कहै सामंत ॥
नमैं सीस सामंत जिहि सोई भीश्वर संत ॥५६॥
उहै चक्रवर्ती सुनौ सार्वभौम सो आन ।
मंडल मंडल कौ धनी तिह मंडलेश बखान ॥५७॥
सामयोनि सामज सोई, सेव समाज सु आह ।
नूर कहै मातम तिह पुनि मर्तम सो बाह ॥५८॥

---

१ क्षित

गज बय बर्नन:

पांच बरस को बालगज दस को पोत प्रमान ।
वीस बरस को विष्क सो कलभ तोस की जान ।।५९।।

राजा की असवारी को हाथी वा संग्राम को हाथी तको नाम:

राजवाह्य, उपवाह्य, गज, नृप चढ़ने को होइ ।
समरोचित, सान्नाह्य सो समर लरत गज सोइ ।।६०
राजा अरु सामंत जिह, नमैं अधीश्वर साय ।
सार्व भूमि चक्रवर्त्ति सो, नृप मंडलेश्वर आय ।।६१।
जिहैं मंडलेश्वर के रुदा, राज सूय करि इष्ट ।
राजा जिहि आज्ञा रहै स सम्राड् सुसृष्ट ।।६२।।

रामचन्द्र नाम:

रामचन्द्र सीतापति: दासरथि: रघुनाथ ।
रावनरिपु, काकुत्स्थ पुनि, भरताग्रज कपि साथ ।।६३।।

सीता नाम:

सीता जानुकी मैथुली, वैदेही सति सोइ ।
भूतनया जनकात्मजा, सीय रघुवरतीय होइ ।।६४

लक्ष्मण नाम:

लक्ष्मन वाल जती लक्षन: सौमित्रेय सु होइ ।
सेपवतार क्षुधात्रिपा, निद्रा जेता सोइ ।।६५।।

बलि नाम:

वाली वालि सु इंद्रसुत अंगद ताकी पूत ।

सुग्रीव नाम:

रविसुत, सुग्रीव औ जुगराज अभूत ।।६६।।

हनुमान नाम:

मरुत पुत्र अंजनी सुत, केसरी सुत हरिजान ।
अमर वज्र कटि पार्थध्वज, रामदूत हनुमान ।।६७।।

रावण नाम:

दससिर, दसग्रीव, वक्रदस, पौलस्त्य: भुजवीस ।
लंकापति मंदोदरी, वशी अक्षय असुरीश ।।६८।।

जुधिष्ठिर नाम:

धर्मतात, सु, अजातरिपु, कालदहन कौं तेय ।
समर प्रिय कुरराव सो, सत्यवादी जानेय ।।६९।।

अर्जुन नाम:

अर्जुन, फाल्गुन, जिश्नु, पार्थ, धनंजय, श्वेताश्व ।
क्रीटी कपिध्वज इंद्रसुत गांडीव धनु तास

गुडाकेश, श्वैत्यारि, नर, सव्यसाची तिह जान ।
प्रहलट, विजय, कर्ण्णमित, कृष्न सषा परमान ॥७१॥

भीम नामः

भीम वृकोदर वायुसुत यह भीजो मरि भंज ।
बली गदाधर मगमगम, कीचकारि, मकभंज ॥७२॥

द्रौपदी नामः

नित्ययौवना, वेदिजा, पांचाली, कृस्नासु
याज्य सेनि, सौरंध्रि सो भर्ता पंच प्रकास ॥७३

कर्न नामः

अंगराट, चपाधिप, सूर्यपुत्र, पुनि कर्न ।
राधासुत, धनुदास यों, काम, पृष्ट तिह वर्न ॥७४

सप्त नाग राज्य नामः

स्वामी, मन्त्री, मित्र, जन, कोष, देस, गढ सैन
यह सप्तांग सुराज्य है कह्यौ ग्रंथ मत ग्रैन ॥७५॥
पुरजन, स्रोनी, प्रकृति, कहि ग्रंथ वेस चितासु ।
धरि चिंतन आवाप है, कहत नूर परकास ॥७६॥

परिवार नामः

परिस्पद, परिकर, परिवह, परिवई, परिवार ।
परिछद सो जानिये तन्त्रोपकरण उदार ॥७७

सिंघासन नामः

नृपआसन, भद्रासन, सिंघासन, सिंजानि ।
आतप, वारण, छंत्र, है सज्या महा बयानि ॥७८॥

मंत्री नामः

सचिव, अमात्य, सुधी, सरव, समवायक, मंत्रीस ।
नियोगी तिह जानियो, कर्म सचिव बहुरीस ॥७९॥

प्रधान नामः

महा मात्रा सु प्रधान कहि [पुरोहित नाम] पुरोधा प्रोहित होइ ।

द्वारपाल नामः

सौवस्ति, क, द्वारस्थ, पुनि द्वारपालक सोइ ॥८०
क्षत्ता, मत्र्युत्सारक दण्डी है प्रतीहार ।
रक्षि वर्ग अनीकस्थ है [अकसीनाम] अधिक्ष अधि कर्तार ॥८१
भौरि, कनकाधिक्ष जो, नैष्ठिक स्थाधिक्ष ।
स्थानाधिक, सुधानिक, गौल्मिकः परयक्ष ॥८२॥

सेवक नामः

सेवक, अर्थी, अनुचर, अनूजीवो सो भृत्ति ।
विधिकर किंकर अनुग पुनि कह पदाति सु पत्ति ।।८३
शुक्ल घटादि जु दोजियै जानहु ताहि जगाति ।
धर्माधिक्ष सुधार्म्यक धर्माधिकृर, णीष्याति ।।८४।।
सेनानी, दंडनायक, जो चतुरंग बलपत्ति
स्थायुक अधिकृत ग्राम मैं गोपो ग्राम बहूत्त ।।८५।।
अवरोधक अंतर्वंशिक अंतपुराध्यक्ष बोध ।
शुद्धांतः अंतः पुरः, अवरोधन, अवरोध ।।८६।।

षोजा नामः

पंढ, वर्ष वर सौविदा, कंचुकिनः स्थापत्य ।
सो विदला षोजा कहौ जामिनी भाषा सत्य ।।८७।।

प्रछन्न नामः

बिजन, विविक्त उपांसु वह निशालोक पुनिछंन ।
एकांतर मैं होइ तिह, कहै रहस्य प्रछंन्न ।।८८।।

दुसमन नामः

वैरी, रिपु, रुसपत्न, अरि शत्रु अमित्र अराति ।
दुर्जन द्विट द्वेपण दुहृद दस्यु शात्रु अभिघाति ।।८९।।
अत्यर्थी, परिपंथी, अहित, द्विविपक्षि, परजानि ।
प्रत्यनीक, प्रत्यपक्ष सो, प्रत्यवस्था ता मानि ।।९०।

मित्र नामः

वयस्य सवया सुहृतू, स्निग्ध सहज रो मित्र ।
सषा, दयित, बल्लभ, बहुरि, प्रीतम, पुन्य चरित्र ।।९१

प्रीति नामः

मैत्री, सख्यं सौहृदं, सौहार्द्द पुनि सोइ ।
अनुवर्त्तन, अवरोधन, साप्तपदीनं, होइ ।।९२

जासूस नामः

गूढ़ पुरुष, बार्त्तायन, प्रणिधिः हेरकचार ।
अनुरोध, अवसर्प, स्पशः आत्तंतिक उपचार ।।९३।।

ज्योतिषी नामः

ज्योतिषिकः, मौहूर्त्तिकः, गणकः, दैवज्ञ, ज्ञानि ।
सांबत्सर, मौहूर्त्त, पुनि कार्त्तांतिक, तिहि मानि ।।९४।।
ज्ञात सिद्धांत सुतांत्रिक, सत्री गृहपति आहि ।

लेषक नामः

लेषक लिपिकर अक्षर चन, अक्षर चुंचु, सु, चाहि ।।७९५

दूत नामः

संदेसह रो दूत है दूत्य कर्म करै सोइ ।
अध्वनीस* पांथ पथिक : अध्वग अध्वन्य सु होइ ।।९६।।

षट गुण नामः

संधि, विग्रहे, द्वैध, पुनि, आसन आश्रय जान ।
षड्गुण, ए कविजन कहै अमरकोस परवान ।।९७।।
प्रभाव तैं उत्साह तैं और मंत्र तैं सिद्धि : ।
शक्ति तीनि त्रय वर्ग पुनि क्षय: स्थान अरु वृद्धि ।।९८।।
तेज होत जो कोस तैं ताकौं कहत प्रताप
दंड तेज तैं उप्पजैं, है, प्रभाव सो आप ।।९९।।
साम दाम दंड भेद ए च्यारि उपाय बषानि ।
साम सांत, दम, दंड पुनि उपयाए भेदहि जानि ।।८००।।

यथोचित नामः

भ्रेष:, भ्रंश, यथोचित : उचितार्थ अभ्रेष ।
न्याय कल्प समंजसं देस रूप तिहु लेष ।।८०१
भजमान:, अभिनीत, वत् नाय्यं युक्तं अन्य :
न्यायार्जित जो लाभ है, औपयिकं कहि मध्य : ।।८०२।।
आगमंतु अपराध सो बंधन है उद्दानि ।
संस्था मर्यादा बहुरि स्थिति धारणा बषानि ।।३

आज्ञा नामः

शासन, शिष्टि, नियोग, अरु आदेश: निदृदेश ।
आयस अव अववाद पुनि आज्ञा कहि निदेस ।।४

जगाति दान नामः

भागधेय, करअलि बहुरि, शुल्क घटादिक दान ।
प्रदेसन, प्राभृत बहुरि, नूर कहत मति मान ।।५
भेट, उपायन, कहत कवि उपग्राह्य उपहार :
उपद नाम ए जानियै भरत जु देत कुमार ।।६।।
सत्यफलं सांवृष्टिकं फल उत्तर सु उदर्क: ।
सन्हि तोम भय अदृष्टं दृष्ट सैन्य संपर्क ।।७।।
सदात्वं तत्काल है, आयति उत्तर काल
प्रक्रिया सु अधिकार है, अमर प्रकीर्नक माल ।।८।।
नृप आसन भद्रासन सिंघासन सु विचार ।

झारी नामः

श्री आतपत्र, कनकालुक भृंगार ।।९।।

*यह 'न' भी हो सकता है। मूल में 'ल' है पर उसके ऊपर एक छोटा सा 'न' लिखा हुआ है।

हाथी घोरा रथ पदिक, सेना अंग सुधारि ।
शिवर, निवेश, सु, बोणकः, बसती चमू बिचारि ।।१०

हस्ती नामः

दंती दंता चल द्विरद, द्विप करटो, गज, व्याल :
कुंजर, वारुण, करो, इभ स्तंवेरम सुंडालः ।।११
पद्मी नाग अनेकपः सिंवुर हरि जु गयंद ।
कुंभी बानर पील सो पंचेरम पति इंद ।।१२।।

मस्त हाथी नामः

मदोत्कट, मदकल[1] सोई गर्जित मत्त प्रभिन ।
उद्धांतः निर्मद करी कलभः सावक अन्य ।।१३।।
करणी वशा सुधेनुका, कट गंडस्थल जान ।
करशी कर बमथुः, बहुरि, मद, कूदान, बषान ।।१४।।

हाथी के कुंभ स्थल नामः

कुंभ, पिंड, कुंभस्थल, विहु विंदी विच तासु ।
अवग्रहः सु ललाट तिह,

नेत्र आस पास नाम हाथी का :

अक्षि कूट, क ईषिका सु ।।१५
अपांग देश निर्जान है चूंडिलि का सु मूलि ।
श्रुति अधः कुभ बाहित्थ पुनि, प्रतिमानं तिह कूलि ।।१६
पुष्कर कर गज सुंडि कहि । पद्मक विंदी जाल ।

गज बंधन नाम :

गज बंधन आलान पुनि, तोत्रं बेणुक भाल ।।१७।।

बेडी आकुस नाम :

निगड अंदुक श्रृंषला अंकुश श्रृणि बषानि ।

काष हथी का नाम :

चूषा, कक्ष्या, वरत्रा (साजा हाथी नाम) कल्पना सु सज्जनानि ।।

झूल नाम :

परिस्तोम कुथ आस्तरण वर्ण प्रवेंणी आहि ।
गत यौवन हस्ती तुरग बीत कहत कबि ताहि ।।१९

घोटक नाम :

अश्व तुरंगम, वाजि हय, सैंधव, साप्त किक्यान ।
बाह, अर्व, गंधर्व तुरि तरल धूर्य हरि जान ।।२०

---

१. नोट—पीला रंग तो अक्षर मिटानें का है पहलें "भ" लिखा है पर चाहिए था "क" । पुरानें ग्रन्थों की यह परिपाटी है ।

वीति, तुरंग, सुपार पुनि आजानेय कुलीन
अश्वमेध, को अश्व ययू जवनज पाथि कलीन ॥२१॥
सितकर्क कोतिल कहै (पोथि वाँहु नाम)पृष्ट्र स्यौरी होइ ।
रथ वोढ़ा सो रथ्य है याल किसोर सु जोइ ॥२२॥

घोड़ी नाम

पारसीक, कांबोज, हय, यानायूज वाल्हीक ।
नामी अश्वी आश्वा, गणमें, आश्व ठीक ॥२३॥
कश्य अश्व को मध्य है वाल देस सुनि गाल ।
हेपा ह्रेपा सब्द है (नाक नाम) घोणा प्रोथनि माल ॥२४॥

कवि का वागु वा लगाम वा पूछ नाम

कविका, कहै खलीन सो, पूंछ, लूम, लांगूल ।
सफ्फुर इत्यादि ताक्नी, कशानक बहु भूल ॥२५
आस्कंदित धोरितक पुनि रेचित वल्गित प्लुत ।
सादी अश्वारूढ़ सो, पंच धार गति पुष्ट ॥२६॥
बालहस्त सो बालधी केसवाली कहि ताहि ।
परावृ त उपावृत्त लुठितसु, भूमि परत पुनि वाहि ।२७

रथ नाम

रथ सतांग स्यदन सोई युद्धार्थक जो होइ ।
चक्रयान जो पुष्फरथ समर रहित है सोइ ॥२८॥
कर्णीरथ प्रवहण डयन, वेगिवाह रथ जान ।

गाड़ी नाम

सकट, अन , शिविका, सोई जाप्य जान तिहु मान ॥२९॥

जूआ वा रथ अग नाम

धू., आनमुप, रथांग, कहै उपस्कर ताहि ।
चक्र, रथांग, सु अत, सिह नेमि प्रधि जु आहि ॥३०
रथानाभि सुपिडका

जूओ बाधीयें जिसमें ताको नाम' कूबर युगधर जान ।
आक्षाग्र कीलिका है, अरणि वरूथ रथ गुप्तान ॥३१

वाहन नाम

युग्यं वाहन यान पुनि धोरण पत्र बखान ।
परपरा वाहन आई वैनोपक सो जान ॥३२

हस्ती आरोहु नाम

आधोरण, हस्तिपक, पुनि कहै निषाद निषाद ।
सूरवीर विक्रांत जो, भट, जोध, जोधार ॥३३॥

सारथी नाम:

प्राजिता यंता नियंता, क्षत्ता सारथि होइ ।
दक्षस्थ संवेष्टृ सो रथ कुटुंबिन होइ ।।३४

बपतर नाम:

कवच अंग भृत् कंकट: जगर तनुत्र सनाह ।
तनुत्राण दंसन वर्म धार त्राण कंचुकाह ।।३५।।

तनु तैं उतारे ताका बपतर को नाम:

आमुक्त: प्रतिमुक्त, पुनि पिनद्ध अपिनद्ध देय ।।

संनद्ध नाम:

वर्मित दंशित संज पुनि ऊढकंटक लेय ।।३६।।

सेना का नाम:

पादाजय, गुपदाति, पत्ति, पग पदातिक जान ।
पत्तिक समूह भुरै तहाँ पादात सु बखान ।।३७।।
सस्त्राजीव: युधिक: काण्डपृष्ठा सत्त
कृतहस्त सु प्रयोग पुनि विशिख पुंख वत्त ।।३८।।

धनुर्द्धर नाम:

धनुष्मान् धन्वी बहुरि निषंगी सुधानुष्क ।
काण्डवान, कांडीर पुनि बान हस्त नहिमुष्क ।।३९।।
अग्रेसर, पुरस्सर: पुरोगम सु पुरोग: ।
प्रष्टामंदगामी बहुरि मंथर कहे सु लोग ।।४०।।
वेगी प्रजवी जवन जन त्वरित तरस्वी व्याधु ।।

जीत वाला का नाम :

जेता, जिष्नु, सु जित्वर सो जुगीनरण साधु ।।४१।।

सेना नाम :

सेना ध्वजनी वाहिनी पृतना चमू अनीक:
अनीकिनी र, वरूथिनी चक्र सैन्य बल ठीक ।।४२।।
बल विन्या सु सुव्यूह कहि व्यूढारचना जानि ।
साम दान दंड भेद ए चारौं जुधे मैं आनि ।।४३।।
एक हस्ती रथ दोइ है तीनि सु पंच पदाति ।
पत्यंगै त्रिगुणी करै क्रम तैं अधिक विष्याति ।।४४
सेना मुप औ वाहिनी पृतना चमू बखान ।
अनीकिनी दशानीकिनी, अक्षोहिनी प्रवान ।।४५।।

अन्यमते :

अयुत, नाग, रथ त्रिगुण, लप: जोधु अश्व दस लक्ष ।
पटत्रिंसत लप पै गजह अक्षोहिणी प्रत्यक्ष ।।४६।।

श्री लक्ष्मी संपत्ति आपत् विपद विपत्ति ।

सस्त्र नाम :

अस्त्र सस्त्र प्रहरण सोई सपदि आयुध नाम सुसत्ति ॥४७

धनुष वाजिह् नाम :

धन्व चापु धनु धरासन इष्वास: कोदड ।
कार्मुक मौर्वीसिजनी ज्या प्रत्यंचि गुण मड ॥४८

तीर नाम :

वाण, प्रपक्त: कलब:, शर, पग, मार्गण, इषु कर्ण ।
खात्री कांड छु_रप्रिय आसग तोमर हर्ष ॥४९॥
पत्री रोप अजह्यग, विषिप सिलीमुष आहि ।
प्रक्ष्वेडन नाराच सो कहे लोहसर ताहि ॥५०॥
शराभ्यास उपासन पक्ष वाज पुंपक्ष ।

प्रहृत वाण सो निरस्त :

(विप वाण नाम) लिप्तक, दिग्ध, विषाक्त ॥५१

तरकस नाम :

उपासंग तूणीर पुनि तूणी तूण बपाण ।
कहै निषग सुई पषि भाषा तरकस जाण ॥५२॥

खंड्ग नाम :

रिष्ट कुपेथ, कृपाण असि, मंडलाग्र करवाल ।
नि:स्त्रिंश: कौक्षेयक: चन्द्रहास तरवाल ॥५३
षड्गादिक की मुष्टिकी, सर कहत सब कोइ ।
ताहि निबधन मेंखला [डाल नाम] फलक चर्म फल सोई ॥

मोगरा नाम:

मुग्दर धन द्रुघम [गोफीयो नाम] भिड पाल सुग मन्य ।

छोटी तरवार नाम:

ईली, है, करवालिका परिघ: परिघातन: ॥५४॥

फरस नाम:

परस्वध: सुधिति: परसु कहै कुठार सु ताहि ।

छुरिका नाम:

छस्त्री असिपुत्री, बहुरि असि धेनुका सु आहि ॥५५॥

बरछी नाम:

प्रास कुंत शस्य सकु पुनि सर्वला तोमर हुंत ।
कोटि अभिपाली बहुरि कोण नाम समहंत ॥५६॥

नृप सांवत नौमी महा पूजै अश्व हथ्यार ।
नीराजन विधि बिबिधि करि कहै सु लोहा भ्यहार ।।५७।

प्रस्थान नाम:

जात्रा, व्रज्या, गमन, गम अभिनिर्जान सु आहि ।
आसार, प्रसरणं, प्रचक्रं चलितार्थक पुनि चाहि ।।५८।।
अरिसेना अभिगमन जो सो अभिषेकन होइ ।
भीत रहित रन में धसै कहै अभिक्रम सोइ ।।५९।।
वोधकरा वैतालिका मधुका मागध जानि ।
वंदिनःस्तुति पाठकाः सूरन करत वपानि ।।६०।।

धूलि नाम:

रेणु धूलि रज सर्करा पेह पांश्रु जो रेतु ।

धुजा नाम:

वैजयंतु केतन ध्वजा वहुरि पताका केतु ।।६१।।
समुत्यिंज पिंजल वहुरि भृश आकुल कहु जानि ।
वीरा संसन युद्ध भूः जो अति भय की दानि ।।६२

रिणोही नाम:

अहंपूर्व अहंपूर्विका आहो पुरिषको सोई
अहम हसिका जु परसपर अहंकार जो होइ ।।६३

बल नाम:

सौर्य सुष्म वल द्रविण तरः सहस्थाम सो प्राण ।
विक्रम कहि अति शक्तिताः सक्ति पराक्रम प्राण ।।६४।।

संग्राम नाम:

संगर समर अनीक, रण विग्रह कलि समुदाय ।
समित युद्ध संयत समित् अव्यय कलह कहाय ।।६५
आस्कंदन प्रविदारण सांपराय संप्रहार ।
आजोधन मृध आहव, अभ्या मर्दनु चार ।।६६।।
प्रविदारण संयुग प्रधन जन्यः आजिक दन्य
संस्फोट, समाघात, पुनि संख्य अनीक सु अन्य ।।६७।।
अभिसंपात अभ्यागम बाहु युद्ध सुनि जुद्ध ।
रण संकुल तुमलं सबद छ्वेड सिघख बुद्ध ।।६८।।
करीनाद घटना घटा वृंहत गर्जित जान ।
क्रंदन रव जो धानि कौ विस्फारो घनु स्वान ।।६९

हठ वा पीडा छल नाम :

बलात्कार प्रसभ प्रसह्य हठ स्षलितं छल आहि ।
उत्पात उपसर्गं पुनि और अजन्य सुचाहि ।।७०

पीड़न पुनि अथमर्षकहि । मूर्छा कस्मल मोह ।
अस्या सावन जानियो, भय्यव स्कवन कोह ॥७१
पटह अक्खर कौ कहै और विणय षम षान ।
वैर सु, द्विषप्रतीकार है वैर निर्जातम मान ॥७२॥

हारा का नाम :

अद्राव: उद्राव पुनि संद्राव: संवाव:
उपक्रमो उपजान है अव विद्रव के नाव ॥७३
रणे भग सुपराजय, पराजित: पराभूत ।
नष्टति वोहित कहत है जात रहत जो पूत ॥७४

मारण का नाम :

सज्ञपन: निर्गंथन: निस्तर हणन क्रथन्न:
उज्जासन आलिज पुनि उन्मायन प्रमथन्न: ॥७५॥
निर्वापन: निहनन क्षणन परिवर्जन वध होइ ।
विशसन प्रतिघातन विसर पिंज अपासन सोइ ॥७६॥
प्रमापण: सुनि कारण बहुरि विस्तारण आहि ।
परासन जु निहंसन उन्थासन महि चाहि ॥७७॥
निवासन जु प्रवासन ए मारण के नाम ।
काल पाय त्यामें जु तनु सोई मरण अभिराम ॥७८॥

मरण नाम:

काल धर्म पुनि पञ्चता निधन अंत अत्यय नाश ।
दिष्टांतः प्रलय त्यय. मृत्यु पञ्चत्व परास ॥७९॥
प्रेत प्राप्त पञ्चत्व मृत प्रमीत संस्थित बान ।
परेत बहुरौ कुणप शव मृत्युक नाम बखान ॥८०॥
क्रिया मुक्त बिनु चौसतनु कहि कबध सुचाहि ।
पितृवर्ण श्मसान है चिति चिता चित्याहि ॥८१॥
बंदि उपग्रह प्रग्रह कारावंदी पान ।
असु प्राण पुनि जीव कहि असु धारण जु प्रधान ॥८२
जीवित काल सु आयु कहि जीवनौषध जीवात ।
यथा शक्ति कब नूर मनि क्षत्रीय वर्ग प्रकास ॥८३॥

इति क्षत्रिय वर्ग समाप्तः

वैश्य नाम:

भूमि स्पृक विश वैश्य सो उरज उरव्य बखान ।
साही सौं पुनि आर्य कहि नूर सुघट अभिधान ॥८४॥

वृत्ति नाम:

वार्त्ता वृत्ति सु जीविका जीवन वर्त्तन होइ ।
आजीवा आजीव पुनि नूर कहत जग सोइ ॥८५॥

वैश्य की वृत्ति नाम:

पासुपाल्य वाणिज्य कृपि सेवा च्यारों वृत ।
कृपि कृत शिल उच्छ ग्रनृत ।।८६।।

पेती नाम :

जाचित ग्रोर ग्रजाचित मृतक ग्रमृत सुवपान
वनिक भाव सति ग्रनृत पुनि भापे नूर सुजान ।।८७।।

उधार नाम:		मागें पाईये ताकी नाम:

उद्वाह ऋण कहत हैं पर्युदंचन सोइ ।
मागें सो जो पाई यें जानि तक सो होइ ।।८८

व्याज नाम:

वृद्धि जीविका नाम तिह कहे कुसाद सु व्याज ।
उतमर्ण जो देत है ले ग्रधमर्ण निलाज ।।८९।।

व्याज पाइ ताको नाम:

वार्द्धुपिक वार्द्धुपि वहुरि वृद्धोजीव सुजान ।
कुसीदक तासों कहे व्याज पातु जु वपान ।।९०

पेती सेती जीवै ताको नाम:

पेती सेती जीविका सोई करै सदीव ।
कृपीवलः कृर्पक सोई कृपिकः क्षेत्राजीव ।।९१।।

वीज गेरो होइ जिह पेत में ताको नाम:

उप्तकृष्ट वीजा कृत, वीज परयो जिह पेत ।

हल चल्या जिह पेत में ताकी नाम:

सीत्यकृष्ट निहल्य सो फाडक ग्रनहेत ।।

पेत नाम:

पेत, वप्र, केदार, सो कैदार्य केदारि ।
हार, क्षेत्र, सो कहत नूर नाम सु विचारि ।।९२।।

ढेला का नाम:

लोष्ट, निलोष्ट सु नाम ए ढेलाके जानि ।
[मंज ढेला फोरे सो ताके नाम] ।।९३।।
कोटिस, भेदन लोष्ट की कहे नूर ग्रभिराम ।

कुदाली वह पुरपा नाम:

जासो पर्णे पनित्र सो, ग्रवदारन पुनि सोइ ।
दात पात्र जु लवित्र कहि, नूर नाम तिह दोइ ।।९४

षलिहान नाम:

पल पलि वाली पलक पुन पल वालक षरहान ।
हलनिरीप पुन कुटकसो, तीन कहे ग्रभिधान ।।९५।

हल नाम:

सीरफाल गोदारन, लांगल कृषिक कहंत ।

जूवा कील नाम:

जूवाकील, जुगकीलक, समी नाम सलहंत ।।

हल कीलोक नाम:

ईष: हलके दंड की लीक सु सीता होइ ।।९६।।

मेढ़ि नाम:

मेधि पुनि पल दारु है, पलु पसुबंधन सोइ ।।

हरिनधान नाम जवस नाम लालधान नाम ।। तीन वहुका नाम:

हरित धान सो तोक्य कहि जवस कहै सित सूक ।।
पाटल ग्रसुव्रीहि कहि लाल धान सो लूक ।।९७।।

कोदव नाम:

कोरदूष मत कोद्रव भाषा कोदू होइ ।

मोठ नाम:

मांगल्यक्य सु मोठ है मूर बखानें कोइ ।।९८।।

मसूर नाम:

मकुष्टक सुमकुष्टक भाम मसूर प्रवान ।

सरसों नाम

सर्षप कहै कर्वक तुम बन मूंग बखान ।।९९
सिद्धार्थ: सरसो धवल: १

गोहू नाम :

सूमन कहत गोधूम:, कुल्माप यावक वहुर
मु कुलत्थ नखवादहि सूम ।।९९।।

चना नाम:

चनक कहौ हरि मंथ सो [तिल नाम] तिल पिच्च पिल पेज ।

ग्रलसी नाम:

उमा क्षमा ग्रलसी सुनो नूर सुराई सेज ।।

राई नाम:

क्षुताभिजननि सु आसुरी छवराधिका कहंत ।
कहै कृष्णका नाम तिह भाषा राई हुंत ।।९९

कंगुनी नाम:

कंगु प्रियंगु सु कांगुनी [मंग नाम] मातुलानी भंग भाष ।।

धान नोक के नाम:

है सस्य धूक किसारु ।।१००

सस्यमंजरी नाम गुछ नाम पषार नाम:

सस्य मंजरी मंजरी स्थंव गुच्छ सो होइ ।।
नाम पलाल पपारि सो नूर कहत सब लोइ ।।१

धान्य नाम धान्य भेद नाम:

स्तंव करि जो धान्य है ताकौ व्रीहि विचार
नाडी नाल सु कांड कहि धान गांठि उचार ।।२

धान्य त्वचा नाम भूसी नामानि कन धान नाम:

धान तुचास्तु सभिपो भुस को बुस अभिधान ।
जो विनु फल को धान्य ह्वै ताहिक डंगर जान ।।३

पैना का नाम: अति पैना का नाम:

प्रदन तोत्र तोदन कहै ए पैने के नाम ।
है अति तीक्षन नोक हौ सूक कहौ गुन ग्राम ।।४।।

स्याम धाँन नाम:

सो स तीनक: पंडक सोहरेण सु कलाप।

रिद्ध वा पूत नाम:

धान लून्यो परहान मैं ताकौं कहियैं रिद्ध ।
जौ दै कै उत्तकीयो सोई पूत प्रसिद्ध ।।५।।

रसोई का नाम:

पक्वस्थान महानस: कहै रसवती ताहि ।।

रसोई कौ अधिकारी नाम:

ताहि कहत अध्यक्ष पुनि पौरोगव सो आहि ।।६

रसोईया नाम:

सूपकार आरीलिक: यूपिक अदनिक जान ।
सूद, आधसिक वल्लव, कादंविक सु वपान ।।७।।

चूल्हा नाम:

चुल्हि, अंतिका, जानियो अधिक्षपनी अस्मंत ।
उद्धांत तिह नाम ए नूर कहत सवसंत ।।८।।

अगीठी नाम:

हसनी, अंगारधानिका, अंगरस कटी सोइ ।
हसंती सुता सौ कहै अंगेठी पुनि होइ ।।९।।

भाड नाम:

भ्राष्ट्र कंदुसो श्वेदिनी अंवरीष सो जातु ।।
लघु घट कौ जो कीजियै मणिक अलिजा आन ।।१०।।

करवा नाम:

गलंतिका सो कर्करी आल कहिए ताहि ।

हांडी नाम:

कुंडो, स्थाली, पिठर, सो उषा, सु, हांडी चाहि ॥६॥

कलस नाम:

घट, कुट, नि प्, एकलस, हिकदै सूर सुप्यारौ नाम :

दिया नाम:

वर्द्धमान, सु, सरावक जो दीया यह नाम ॥

कुप्पी नाम:

कुतू कुतप सो जानियो अल्पस्नेह को पात्र ।
पीवन को जो पात्र है कंसकहै गुण गात्र ॥११

वासण नाम:

भाजन आवापन सोई भांडा पात्र अमत्र ।

कलाई नाम:

कथवी[1] सो विषमाज्य कहि सार्वी नाम सुमत्र ॥१२

चाटू नाम:

काष्ट हस्त दंडू उह दारु हस्तक सोइ ।

साक था नाली नाम: हरितक, कहिये साक को शिग्र नालिका होइ ॥१३

सामग्री नाम:

कंटब कसंब उपस्कर बेसवार को नाम ।
कवि सामग्री सो कहै हरिद्रादि गुनग्राम ॥१४

घटाई नाम मिरच नाम:

तिंतरी कथाक्षा म्लसो चूक्र पटाई आहि ।
वेल्लजउ पज मरिच पुनि कोल कृष्न सो चाहि ॥१५॥
ताहि धर्म पत्तन कहै (जीरा नाम) जीरक आरन जानि ।
नूर अजाजी कहत है जीरा नाम प्रधान ॥१६॥

काला जीरा सूंठि आदा नाम:

कृष्ण कृष्न जीरक सोई आद्रक है शृंग बेर ।
नागर सूंठि महौषधी विस्वा जानहु फेर ॥१७॥

मेथी नाम:

सुपवी, पृथ्वी, कारवी, उपकुंचिका सुमाहि ॥
कहै सूर उपकासि पुनि मेथी जानो वाहि ॥१८

धनीया नाम:

वितुन्नक: धान्यक सोई कस्तुंभर तिह भाष ।
छत्रा पांचो नामए माया धनिया भाष ॥१६॥

---

१. मूल में यह भी है और छ के ऊपर 'ड' और लिखा हुआ है ।

कांजी नाम:

आरनाल सौ बीर सो कुलज सोई कलमाष ।
धान्या, म्लकांतिक सुनो, अवंति सोम गुण लाष ॥२०

हींगु नाम:

हींगु जतुक, बाल्हीक पुन रामठ कहिए ताहि ।
सहस्त्रबेधी नूर कहि हिंगु पत्री और चाहि ॥२१।

हींगु के पत्र नाम:

पत्री पृथ्वी कारवी कारवी पृथु सो होइ ।
बाष्पिका तिह जानियो, हिंगु दृक्षी है सोइ ॥२२॥

हलद नाम:

निसा हरिद्रा कांचनी बर बर्नंनी बषानि ।
पिंडा सोधा ता सोई पीता नूर सुजान ॥२३

सींधालून नाम:

मानिमंथ सिव सीत सो द्वे सैंधव के नाम :
रोमक, षारी लोन सो (बिडलून नाम) बस्तक बिट बिड काम ।

सौंचल नाम:

सौबर्चल मेचक तिलक अक्षरुचक जु कहंत ।

मिश्री वा षांड नाम:

सिता शर्करा मिश्री सो षंड नाम सलहंत ॥२५

षांड नाम:

फाणित मत्स्यंडी सोई कहै षंड अभिधान ।
सकल षंड गुण आदि दै ईक्षु बिकार सु जान ॥२६॥

संस्कार युक्त बस्तु नाम:

प्रणीत उपसंपन्न सो कहौ संस्कृत ताहि ।

सोधी वस्तु नाम:

संसृष्ट सोधित सोई सोधी वस्तु सु चाहि ॥२७

चिकनी वस्तु नाम:

चिक्कण, मसृण, स्निग्ध सोइ (वासी नाम) भावित वासित होइ ॥

पूरी नाम:

पौलि अभरूषा पुरी कची अपक्वह सोइ ॥

धानकी षील नाम:

लाजा, अक्षत सौ कहै (वहुरी नाम) वहुरी सो धानाजु ।

चिडवा नाम:

पृथुक सोई पिचिपित्र पुनि चिरवा कौ इह साजु ॥२९॥

रोटी नाम:

पिष्टक पूप अपूप पुन, तीन्यो रोटी नाम :

दधि सीधो मस्तु नाम:

जो दधि सोध्यो होइ कछु, करम कहौ अभिराम ॥३०॥

भात नाम:

भक्त सदी दिव अन्न सो, भिस्सा ओदम अध ।

वासन में जो लगि रहै भात ताकी नाम:

कहौ दग्धिका भिस्सपा, वासन लपट्यो अध ॥३१

मांड नाम:

सर्वर साम्र, सुमड अव मणि मासरा होइ ।

रावड़ी नाम वायूस नाम:

माषा, जूस, सुउदिनका, कहै विलेपी ताहि ।

तरला, आमा जवागू: मापा रवरी आहि ॥३२

गव्य नाम:

दूध दही घृत आदि दै, गोतैं उपजै सोइ ।

गव्य नाम तासौ कहै नूर पुराने लोइ ॥३३॥

गोबर वा करस नाम:

गोविट गोमय कहत है ह्वै गोवर के नाम ।

सूके कौ अरु करस को है करीप गुन ग्राम ॥३४

दूध नाम:

क्षीर दुग्ध पय सौ कहै (घीव नाम) घृत हवि सर्पि सु आज्य ।

नूणी सो नवनीत कहि सो नवउ धृत साज ॥३५

गाढ़ो दही पतलो दही नाम:

आज्य कहै दध्यादि सब पुनि पायस्य अपाम ।

हो इन गाढ़ी जो दही, द्रप्स कहै मति मान ॥३६

दूध में जो घीव नाम:

गाइ दुहत जो दूध मै प्रगट होत है घीव ।[1]

हुर्यग्वीन, सुनाम तिह भाषत बुध जन जीव ॥३७

मथी दह नाम:

कालसेय, सु, अरिष्ट पुनि गोरस कहिए आहि ।

मथी मथानी में दही घीव न काढ्यौ जाहि ॥३८॥

चौथाई जल सहित दधि तक्र कहावे सोइ

आधौ जल दधि में मिले उहै उदस्वित होइ ॥३९॥

---

१. मूल में ,ध' है पर होना 'घ' चाहिये ।

निर्जल दधि सौ नूर भनि मथि त कहे कविराज ।
जानह दूध नवीन जो नाम पीयूष सुसाज ।।४०

तुल्यपान नामः

पीवे साथि सपीति सो सब्वि सु भोजन साथि ।
भूप वुभुक्षा क्षुत उहै, ग्रास कवल मुष हाथि ।।४१
फैला जूठ वपानिये (प्यास नाम) प्यास नाम है तर्ष ।
तृपा पिपासा उदन्या, तृट तृश्ना अनहर्ष ।।४२

भोजन नामः

जेमन, जग्धि सु भोजन लेह विघस आहारु
नूर जगत की देषिये है तातै आधारु ।।४३।।

तृप्ति नामः

सौहित्य, तर्पण, तृप्तिः, (कही यथेप्सित नाम) काम प्रकाम निकाम ।
काम प्रकाम निकाम सो पर्याप्तः अभिराम ।।४४।।

गोप नामः

गो संख्य गोधुक उहै वल्लव गोप गोपाल
नूर कहै आभीर घर पेले कृश्न कृपाल ।।४५।।

गाय समूह नामः

गो समूह गोधन कहै वहुरी गोकुल होइ ।
धेनुक धेन समूह सुनि वत्सक वत्स सु लोइ ।।४६।।

बैल नामः

गो उछा वृषभ वृष वली बर्द अनुड्वान ।
सौरभेय सो भद्र पुनि रिषभ बैल अभिधान ।।४७।।

बृद्ध बैल नामः

महोक्षः वृद्धक्ष पुनि कहै जरह व ताहि ।।

बक्षा की नामः

जातोक्ष शकृत्करिः तर्नक लैरू आहि
व्यधिया सौ आर्षभ्य कहि ।।४८

(कंधवह बैल नाम)

वह गोपति सुइ ठूर भार निवाहै कंध ।।
सौ ताके नाम सुनूर गल कंवल सो (मा) स्ना ।।४९।।

नांथे बैल की नामः

नास्नित नस्योत प्रष्टवान युग पार्श्वक ।
नाथी बैल जु होत ।।५०।।

जुवा वालो बैल नामः

साटक सो प्रासग्य युग्य जुवानि माहि कष ।।
सौरिक हालिक नाम तिह् बहि वृषभ, हलबष ।।५१

सब बोझ लै चलै बैल ताकौ नामः

धूर्य धुरीम धूर्वह्ः धौरेयः तिह जान ।
सर्व धुरंधर बैल को शृंग विषाण प्रवान ।।५२।।

गाइ नामः

उस्रा माता शृगिनी सौरभेयी माहेय ।

उत्तम गाइ नामः

नूर अर्जु'नी राहिनी अघ्न्या नाम है ज्ञेय ।।५३।।

विध्या गाइ तुई गाइ नामः

बध्या गाइ कहि बसा, भव ताका तुई जानि ।

सधिनी नामः

लग्यो वृषभ सो संधिनी सुषी सुकरा मानि ।।५४।।

बहुत वत्सा जिह् गाइ के होइ ताकौ नामः

वत्स घनें जिह गाइ कै सो पेष्टुका होइ ।
जो ब्याई बहु दिन की है बष्कयनी सोइ ।।५५

धनु नाम सुव्रता नामः

थोरे दिन ब्याये भये धेनु कहावै पूर ।
जो दुहतै सुघ देव है तहि सुव्रता नूर ।।५६।।

बरस २ मै व्याइ ताकौ नामः

समांसमीना होइ जो गाइ ब्याइ प्रति वर्ष ।

थन नामः

ऊधस्य आपीन पुनि थन के नाम सुकर्ष ।।५७।।

खूंटा नामः

पूटो, शिवकः, कीलक, पसुकी रज्जु सुदाम
संदान सो दावनी पसुकी रसरी नाम ।।५८।।

रैई वाझेरणा का नामः

कूटर वक्र विष्कंभ सो मथ मथान वैशाप ।
कहि भर्गरी मंथनी नूर सु मटकी भाप ।।५९।।

ऊंट नामः

उष्ट्र क्रमेल मय कहि संधग्रीव महांग ।
करभ सु बाल ऊंट को देषि लेहु तिह स्वांग ।।६०

बकरी वा बकरा नाम:

बकरी, छागी सो अजान । छाग अक्ष अज होइ ।
स्तंब गलक सो जानियो भापा बोक सु लोइ ।।६१।।

मेढा नाम:

मेप मेढ़ू एडक व्रपय उरण सो उर्णायु ।

गदहा नाम:

पर रासभ बालेय सो चक्री वंत कहायु ।।६२।।

वाणिया का नाम:

परापजीव: वनविक: क्रय-बिक्रयक होइ ।
सार्थबाह वैदेहक, नैगम वाणिज, सोइ ।।६३।।
विक्रेता विक्रयक सो क्रायक क्रयक सु आहि ।
आपनिक वनिया उहै, भापा नूर सुचाहि ।।६४।।

मोल की वस्तु कौ नाम:

मूल्य अनामक नामए वस्तु वेचनी होइ ।
नाम मूलधन कौ इहै नीवी परिपण सोइ ।।६५।।

नफा का नाम:

नाम नफा के नूर कहि भाल अधिक फल जान ।

गाहक कौ आदर करै ताकौ नाम:

सत्याकृति सत्यापण: सत्यंकार बषान ।।६६

थौणी नाम:

न्यास नियम नैमेय सो, उपनिधि है परिदान ।
प्रतिदातु परवर्त्त पुनि नाम धरोहरि जान ।।६७।।

वेचण वा साषी का नाम:

बिक्रय विपण सु वेचिवौ [बेची वस्तु कौ नाम]
क्रेय पराप पण तव्य :

साषी प्रति भूलग्नक: [जमान नाम] :: अनुबंधक सो भव्य ।।६८।।

मासा का नाम:

गुंजा पांच प्रमान कौ माप कहै कविराज ।
सोरह मासा कौ सोई कर्ष अछ सो साज ।।६९।।

पल नाम:

चारि कर्प कौ एक पल सौ पल कौ तुल जान ।
बीस तुला कौ भार इक समझौ नूर सुजान ।।७०।।

विस्त नाम कुरु बिस्त नाम:

सोना कर्ष प्रमान कौ कहि सुबर्ण पुनि विस्त ।
पल सौनासौ कहत है नूर होइ कुरु विस्त ।।७१।।

प्रस्थादिक मान नाम:

चारि कुडव सो प्रस्थ कहि आढक प्रस्थ जु चारि ।
चतुराढक सो द्रोण है सोलह द्रोण सुचारि ७२।।

हस्तादिक मान नाम:

चौविस अंगुलि मान की हस्तक याहि सोइ ।
च्यारिहस्त को दंड इक कहत नूर सब कोइ ।।१७३।।
दोहह जासु दंड को मान करै है कोस ।
दोइ कोस गोरुत सोई यहै गव्यूत कहोस ।।१७४।।
गव्या पुनि गव्यूति दोऊ च्यारि कोस को नाम:
ताही सों जोजन कहै जे पंडित अभिराम ।।७५।।

चौथाई को नाम बाटे को नाम:

चौथाई सो पाद कहि बटक अंस अरु भाग
नूर कहै नवपंड सों है पउभाग सु लाग ।।७६।।

द्रव्य नाम:

द्रवण वित्त वसु अर्थ धन स्वाप तेय सु हिरण्य ।
रैंद्रव्य सो नूर भनि है जिन पैं ते धन्य ।।७७।।

पंना नाम:

अस्म गर्भ गारुत्मत मरकत कहिये सोइ ।।

लाल मणि नाम:

पद्मराग सोणित रतन लोहितक पुनि होइ ।।७८।।

मूंगा नाम

मूगा सौ विद्रुम कहै उहै प्रवाल सु आहि ।

रत्न नाम:

मणि रत्न ए नाम दोइ मुक्तादिक सब चाहि ।।७९।।

सोना नाम:

कांचन कंचन कर्बुर कार्त्तस्वर सो स्वर्ण ।
हाटक हेम हिरण्य सु कर्बुर रुक्म स्वबर्ण ।।८०।।
जातरूप चामीकरः गांगेय तपनीय ।।
सात कुंभ अष्टापद जांबू नद जाम्बीय ।।८१।।

सोना का आभूषन नाम:

श्रृंगी भूषन, कनको, कनक कहत पुनि नूर ।

रूपा का नाम:

रजत रूप्य दुर्वर्ण सो स्वेत बहुरि पज्जूर ।।८२।।

पीतरि नाम:

आरकूट अरु रीति सो पीतर नाम प्रधान ।

ताम्रक नाम:

ताम्र नाम पंडित सुनौ नाम प्रकास प्रवान ।।
ध्यष्ट बरिष्ट म्लेछ मुष, सुल्व उदंबर जान ।।८३।।

लोह नाम:

शस्त्रक, पिंड सुतीक्ष्ण पुनि, अस्म सार कहि नूर ।
कालायस अयस मयल सो सिंहान मंडूर ।।८४।।

कांच नाम पारा नाम:

काच क्षार दोइ नाम है पारद सोर सराज
सूत चपल रस जानियो, शिब बीरज सुषि साज ।।८५

गंधक नाम :

गंधक सो गंधिक सुनौ सौंगंधिक पुनि होइ ।
सो गेरू गैरेय पुनि अर्थ्य नाम तिह सोइ ।।८६।।

अभ्रक नाम :

गलव सुमाहिषश्रृंग कहि, गिरिज अमल तिह जान ।।
अभ्रक नाम सु जानियो, कहत नूर मति मान ।।८६।।

रसौति नाम :

तार्क्ष, शैलरस गर्भ सो सिषि ग्रीव सौ बीर ।
क्वाथोद्भव: वितुन्नक: कपोतांजन बीर ।।८७।।
रसांजन: श्रोतोंजन: तुछांजन सो आहि ।
मयूरक: सो कर्परी नूर दार्विका चाहि ।।८८।।

हरिपाल नाम :

रीति पुष्प पुष्पक सोई पीतन पिंजर ताल ।
पौष्कक कुसमांजन उहै, ताल कहौ हरिताल ।।८९।।

सिलाजतु नाम :

अस्मसार सौं सिलाजतु गिरिज कहत है ताहि ।

सिंदूर नाम :

पिंडीर: सिंदूर सो नाग संभव चाहि ।।९०।।

सीसा नाम रांग नाम :

सीसा सो जो गेष्ट कहि सीसक वप्र सुनाग ।
वंग रंग तुलत्रपु, पिच्चट पिचल वड भाग ।।९१।।

कुसुंभा नाम । मधु नाम :

वन्हि सिप: सुमहारजत नाम कसूभा जानि ।
मधु सौ क्षौद्र वपानहीं माक्षिक भूर वपानि ।।९२।।

मैणनाम :

मधूलिष्ट सिक्थक सोई दोइ मोम के नाम ।

मैनसिल नाम :

नागजिह्विका मनसिला नेदम गुप्ता अभिराम ॥९३॥

त्रिकुटा नाम । त्रिफला नाम :

त्रिकटु, भूपूषण व्योष सो, त्रिकुटा कहिये ताहि ।
त्रिफला बहुरि फलत्रिक वैस्य वर्ग में चाहि ॥९४

दोहा :

वैस्य वर्ग पूरन कियो नूर अमर अनुसार ।
सूद्र वर्ग अब वर्न हुं पंडित लेहु सुधार ॥
इति वैश्य वर्गः संपूर्णः
अथ सूद्र वर्ग वर्नंनं ॥

सूद्र नामः

सूद्र अपत्यज वृषल पुनि, अवर वर्ण सो जान ।
भाषा नाम प्रकास में भाषत नूर प्रवान ॥९६॥

संकीर्ण नाम :

आदि करन अंबष्ट है चांडाल पर्यंत
इन्हैं सूद्र सुभ जानियो ॥९७॥ संकीरन सो संत

करण नाम :

सूद्री, प्रिय अर वैस्य पिय इन्ह तें सुभ जु होइ ।
करण कहावे नाम तिह नूर सुनो नर कोइ ॥९८॥

अंबष्ट नाम :

वैस्य जाति है तीय की है पिय ब्राह्मन ताहि ।
जो बहुभव में उप्पजें, कहि अंबष्ट सुताहि ॥९९॥

उग्र नाम :

सूद्र जाति है तीय की पति है छत्रीय कोइ ।
उग्र नाम तासों कहै जो बहुवन के होइ ॥१०००॥

मागध नाम :

क्षत्राणी को वैस्य पिय तिन कों पुत्र बखानि ।
मागध तासों कहत है नूर सुकवि जगि जानि ॥१॥

माहिष्य नाम :

वेस्यातीय क्षत्री सुपिय, जो दोऊ कौं पूत ।
तिह माहिष्य सु जानियो जो छल रूप संजूत ॥२॥

क्षता नाम :

पुरुष सूद्र वेस्या प्रिया क्षता तिन को जात ।
क्षत्रीय पिय तिय ब्राह्मनी सूत नाम अवदात ॥३॥

वैदेहिक नाम :

वैस्य और ब्राह्मनीय की, वैदेहिक उपजंत ।

रथकार नाम :

करिनी पति माष्यहि जो रथकार सलहंत ।।४।।

चंडाल नाम :

पुरुषं सूद्र बभनी प्रिया, उपजै दहुतै सोइ ।
तिह चंडाल वषानियै नूर कहत सुन लोइ ।।५

कारीगर नाम :

सिल्पी कारु सुनाम द्वे, कारीगर के जान ।

सिल्पी समूह नाम :

शिल्पी गण सौ नूर कहि श्रेणी करत बषान ।।६।।

जुलाहा नाम :

तंतुवायु सुकविद है, दोइ जुलाहा के नाम

बुणावण हारा का नाम :

तुंत्रवाय सो शौचिक पटहि बुनावत काम ।।७

चित्राम कै वासतै जो भीति कौं लीपै ताकौ नाम :

है पल गंड सु लेपक लिपै भित्त संभाल ।

कुम्हार नाम :

दंडभृत चक्री नूर कहि कुंभकार सु कुलाल ।।८।।

चितेरा नाम :

चित्रकार रंगा जीव(चमार नाम)पादुका कृत चर्मकार ।

सिकलीगर नाम :

भ्रमाशक्त सस्त्र मार्ज असि धावकःशाणा जीव बिचार ।।९।।

सुनार नाम :

स्वर्णकार नाडिंधम कहै कलाद सुताहि ।
रुक्मकार पुनि मुष्टि सो, नाम सुनार सुभ्राहि[1] ।।१०

लुहार नाम :

है दोइ नाम लुहार के लोहकार व्योकार ।

ठठेरा नाम :

तांम्रकूटकः नूर कहि शौल्विक बहुरि उचार ।।११।।

षाती नाम :

बर्द्धकि त्वष्टा तक्ष सो काष्टतट रथकार ।

धोबी नाम :

रजक निर्नजक धुज सोई, धोबी नाम उचार ।।१२

माली व कलाल नाम :

दाम नाम जुत मालिक है सो मालाकार
मंडहारकः सौड़कौ जांनौ ताहि कलार ।।१३

---

१ बाजू के हासिये पर "पश्यतोहरः" नाम निर्दिष्ट है ।

नाई नाम : मुंता घसाई नापित, विद्याकीर्ति क्षुरि मुंडि ।
पटीक नाम : भ्रवाजीव आवाल सो है जाके घरि कुंडि ॥१४॥
प्रपच नाम : माया को परपच कहि नूर सवरी जान ।
परपंची नाम : पर पंचो पायक बुहै मायाकार सुजान ॥१५॥
नाचन वाला का नाम :
संसालो संश्रूष सो, भरत सु आया जीव ।
कुसासो नाचत फिरत, बनिता लै संग पीव ॥१६॥
नट नाम : नट कु सीलवः चरण सो तीनि नाम है तास ।
पखावजी नाम : मौरजिकः मार्दंगिकः पखाजी सु प्रकास ॥१७॥
तालधारी नाम:पाणिवाद पाणिघ उहै, ताल धार है सोइ
वीनकार नाम : वीनकार सु वैनिकः
वेणु सवारी तह को नाम : वेनुध्म वैणविक होइ ॥१८॥
चिड़ी मार नाम :
शाकुनिकः जीवांतिकः चिरींमार कहि ताहि ।
वागुरिया नाम:वागुरिक. सो जालिकः जो वागुरिया आहि ॥१६॥
चित्र लेषनी नाम :
चित्रलेषनी तूलिका बहुरि कूचिका होइ ।
उनका सेवक का नाम :
वैतानिक भृति भुत भृतकः कर्मकार है सोइ ॥२०॥
कावड़ि लै चलै ताके नाम :
वार्त्ता वह वैवधिक सो यो लै कावरि कंध ।
सिकार मारि करि षाइ तिसका नाम :
वैतंसिक कौटिक सोई मारि षात करि बंध ॥२१॥
नीच नाम :
अपसदः जाल्म बिहीन सो इतर प्रथग्जन सोइ ।
प्राकृत पांमर बिवर्ण नीच नाम तिह होइ ॥२२॥
दास नाम :
परचारक परिचारत सो, भृत्य दास दासेय ।
किंकर प्रेष्य भुजष्य पुनि, चेटक नाम भनेय ॥२३॥
परस्कंद सु पराचित है नियोज्य, दासेर ।
गोप्यक बहुरि परंचिन नाम गुलाम सुफेर ॥२४॥
आलकसी के नाम :
मंद तुंद सीतक अलस है अनुल्य आलस्य ॥
परमृज नूर बषान ही जो है आलस अस्य ॥२५॥

चतुर नाम :

चतुर उप्त पटु पेशलः सू स्थानी जो दक्ष :
नूर नाम षट चतुर के है जाकी बुधि दक्ष : २६

सूद्र भेद नामः

प्लव मातंग जनंगम दिवाकीर्त्ति चंडाल ।
बुष्कस सु पच निषाद सुनि सवर सु अवर कलाल ।।२७।।
अंतेबासि किरात पुनि बहुरि पुलिंद बषान ।
नीच जाति को भेद यह कहत नूर जग जान ।।२८।।

व्याध का नामः

बधिक व्याध लुब्धक मृगपु कहो मृग बधा जीव ।

कुत्ता का नामः

सारमेय, कौलेय, सो, मृदंगसक श्वा होइ ।।
सुनषकः भषक कुर्कुर उहै सारदूल पुर सोइ ।।२९।।

रोगी कुत्ता वा सिकारी वा कुत्ता नामः

रोगी कूकर काट नो, ताहि अलर्क बषान ।
बिस्व कहुजु सिकार को सरमा सुनी सुम्रान ।।३०।।

तरुण पसु नाम : सूकर नामः

बर्व्वर जो पसु तरुण है सूकर बिटचर ग्राम

सिकार नामः

आछोदन मृगया मृगव्य आषेटक के नाम : ३१

चोर नामः

तस्कर दस्यु सुमोषक एकागरिक स्तेन ।
परास्कंदि प्रतिरोधि सो मलिलुचः चौरेन ।।३२।।

चोरी का वा चोरी का धन का नामः

चौर्य चौरिका स्तैन्य पुनि जो धन चोरयो होइ ।
लो प्रस्तेय नूर कहि जानत है नर कोइ ।।३३

मृग वा पक्षी जासें बाँधियें ताको बीतंसक है नामः

मृग पक्षी जा सौं बंधैं उपकारण बीतंस ।

रसडी नामः

बटी बराट क रज्जु गुण ताही कहै सुवस ।।३४।।

रहट नामः

घटी यंत्र उघ्घाटन है सोई जल जंत्र ।
सलिलोद्वाहन नूर भनि भाषा रहट सुमंत्र ।।३५।।

राच्छ वासूत नाम:

वाय दड वेमा सोई वस्त्र मूमन की दड ।
सुत्र तंसु सो नाम द्वै नूर जगत की मड ॥३६॥

वुणिकरि लपेटिये तुरि तह की नाम:

वुणि करि वस्त्र लपेटिये, याणि व्यूति तिह जानि ।

नालिको नाम:

पांचालिका सु पुत्रिका भापा नालि बखानि ॥३७॥

मंजूसा नाम:

मजूपा पेटा पिटक पेटक नूर कहंत ।
सद्रुप सो जानियो भाषा नाम महत ॥३८॥

वहगो नाम:

वहंगिका वहगी सोइ, भार यष्टिका सोइ ।

छींका नाम:

छीका के द्वै नाम है सिक्य काच सो होइ ॥३९॥

वरत्त चर्म की पनही नाम:

नभ्री वध्री वरत्रापादू पादुका ग्राहि ।
पदायिता पुनि अनुपदी कहै उपानत ताहि ॥४०॥

चाबुक वा साण नाम:

कसा साकनी चाबुकी साण निकप कप होइ ।
परशु पाम ब्रश्चन कई [तई नाम] स्पिका तुसिका सोइ ॥४१॥

मूंसि नाम:

कहै तेजसा वर्तिनी मूषा जानहु ताहि ।

भाथड़ी नाम:

भाथी भस्मा सो कहै चर्म प्रवेसी काहि ॥

करोत नाम:

ककच सोई कर पत्र है फांट करत जो वोह ।

वरमा नाम:

वेधनीका आस्फोटनी वेधत वरमा सोइ ॥४३

रांपी आरी नाम:

कहै कृपानी कर्त्तरी नाम कतरनी सोइ ।
आरी सो दारा बहुरि चर्म वेधिनी होइ ॥४४॥

कुहाडा वा वसोला नाम:

वृक्षभेदी वृक्षादन : जासौ काटत वृक्ष: ।
जो पापाण जुदारक टंक कहत प्रतक्ष ॥४५॥

उपमा नाम:

प्रतिमान उपमान सो प्रति निधि प्रतिमा आहि ।
प्रतिबिंब प्रति जातना प्रतिछा यासो चाहि ।।४६।।
नीकास संकास निभ साधारण सम तुल्य ।
सदृक् निकृति प्रतिकार सो नूर होत जो कुल्य ।।४७।।

सेवा नाम:

पण निर्वेस भिधास वह भरण मूल्य मरराय ।
कर्मण्यां भृत्या भृतय: भर्म वेतन कहाय ।।४८

मदिरा नाम:

सुरा इरा वरणात्मा परिस्तुता मधु जानि ।
हलप्रिया हाला सोई गंधोत्तमा वपानि ।।४६
प्रसंना सु कादंबरी ऐरा ताह कहंत ।
नूर हार हूरा, उहै आसव नाम लहंत ।।५०।।

गजक नाम:

मद्य पिवत ही पात जो ताहि कहत अवदंश ।

जा घर में मदिरा पीवै ताको नाम:

जहां बैठि मदिरा पीवै सुंडा नाम प्रसंस ।।५१।।

महुवा को मद नाम:

मधु क्रम मधुवारा उहै महुवा को मधु होइ ।
माधवक: मद्याशव: मधुमाद्दी कसु लोइ ।।५२।।

सेंधी मधु नाम:

सेंधी मदिरा मोदक सीधु जगल मैरेय ।
मतिवारे वातै कहै आपा नं जानेय ।।५३

उन्मद नाम:

किन नग्नहू अभिषव: सुरा मंड संधान ।
कारोत्तम सो नूर भनि सांधि अन्न मद जान ।।५४।।

प्याला नाम:

पान पात्र को चषक काहि [तृप्ते वस्तु नाम] अनुतर्पन जु अघात ।

जुवारी नाम:

अक्ष वेदी अक्ष धूर्त सो कितव द्यूत करि पात ।।५५।।

जूवा के नाम:

कैतव पण सो द्यूत है कैतवती कहि ताहि ।

पासा का नाम:

अक्ष पत्र पासक ग्लह: नूर देवना आहि ।।५६

सारि नाम पूजो सारि नाम:

अष्टापद पुनि सारि पकी सारि
सो नूर कहि सो परिणाय विचारि ॥५७॥

इति सूद्र वर्गः दोहाः

सूद्र वर्ग पूरन भयो कहे सूद्र के कर्म ।
नाम विशेष सु नूर भनि कांड तीसरे मर्म ॥५८॥

इति श्री मत्सकल अभिधान रत्न भूषन भूषित मियां नूर कृत भाषा नाम प्रकास नाम माला द्वितीय कांड सपूर्णः २

दोहा·

कांड तीसरे को अबहि बर्नत नूर उधार ।
सब्दविशेष समुद्र को जातें लहिए पार ॥१॥
न्यारे न्यारे सब्द सब काहू मिलत न कोइ ।
अर्थ मिले मिलि जात ज्यों मर्मवान् नर होइ ॥२॥

धर्मातिमा नामः

पुन्यवान धन्य सुकृती धर्मात्मा के नाम ।

बडी इछा होइ जाकी ताको नामः

महासय सु महेछ पुनि बड इछा को धाम ॥३॥
सदा दया जाके हिये सो सहृदय हृदयालु ।
बड उद्यमी महोद्यमः महोत्साह सु बिसालु ॥४॥

प्रवीण नामः

कृतु मुख निपन अभिज्ञ सो कृती कुसल निस्नात ।
वैज्ञानिक सिछित सोई विज्ञ प्रवीण विख्यात ॥५॥

पूजा योग्य नामः

पूज्य प्रतीक्ष्य सुनाम है पूजा योग्य जु होइ ॥

बडा दाता को नामः

दान सौंड सुब दान्य ज्यो स्थूल लक्ष है सोइ ॥६

बड़ी आर्वल जाकी ताको नामः

आयुष्मान् जैवात्रिकः जाको पूरन आयु ।

शास्त्र कहे ताके नाम·

अतर्बाणि सु शास्त्रवित कहि शास्त्र समाम्नायु ॥७

वरदाता व उत्कंठित नामः

बरद सोई समर्द्धक जो नर को दातार ।
उन्मन उत्कंठित सोई उत्क सु नूर उचार ॥८॥

षुसी नामः

हृष्यमान् विकुर्वाण सो हर्षमान नर कोइ ।

दुर्षीमन कौ नामः

अंतर्मन दुर्मन बिमन जो दुष्पित मन होइ ॥९॥
चतुर नाम कवि नूर कहै दक्षन सरल उदार ।
है नर दाता भोक्ता सुकल कहौ उच्चार ॥१०

तत्पर का नामः

सो उत्सुक उद्यक्त पुनि विष्टार्थक कहि ताहि ।
प्रत आसक्त सु नूर कहि तत्पर नर कौ चाहि ॥११।

प्रतीत का नामः

आष्यात विश्रुत पृथित वित्ता सोई विज्ञात ।
है प्रतीत नर की जगत सो प्रतीत जनष्यात ॥१२

गुन की प्रतीति ताकौ नामः

जाके गुन कौ जगत मैं है सव कै परतीत ।
कृत लक्षन सो नूर कहि आहि तलनसो मीत ॥१३॥

प्रभु नामः

स्वामी ईश्वर ईशिता ईश आढ्य पति सोइ ।
प्रभु अधिप क अधि भू वनी नेतापारवृढ होइ ॥१४॥

कुटंब कौ पाले ताकौ नामः

अभ्यागारि कहै सोई ताहि उपाधि कहंत ।
जो पालै परवार कौं नूर नाम सलहंत ॥१५
श्रेष्ट रूप संयुक्त जो सो संहनन वपान ।

संपंन नर नाम ।। सत्त्रकरि संपत्ति करि सपंन्न होइ ताका नामः

ताहि कार्य कर्त्ता कहै है निधार्य अभिधान ॥१६

पिता बराबर नर होइ ताकौ नामः

मनोज वस सो जानियो पिता बरावर होइ ।

कूकुद नामः

अलंकार जुत कन्यका देत सु कूकुद सोइ ॥७

लक्ष्मीवंत नर कौ नामः

श्रीमान श्रील: लक्ष्मण लक्ष्मीवान
लक्ष्मी जाकै है वहुत है ताकै बिश्राम ॥८

दयाबंत के नामः

सूनृत बत्सल कारुणिक स्निग्ध कृपाल दयाल ।

स्वच्छंद नामः

स्वच्छंदः निरवग्रह स्वरी स्वतंत्र निभाल ॥९॥

पराधीन नामः

पराधीन परतंत्र सो नाथवान परवान ।
निघ्न अधीन सुगृह्यक आयत नाम सुजान ॥१०

मूर्ख नाम:

पशपू बहु कर नूर कहि दीर्घ सूत्र प्रख्य खंव ।
असमीक्ष कारी जाल्म: जो है मूरख मव ।।११।।

कुंड नाम:

करें काम में काहली कुट कहत है ताहि ।

काम विषें तत्पर रहै ताकी नाम:

ताहि अलंकर्मीण कहि कर्मठ सो ग्राहि ।

अपने काम कौं तत्पर ताको नाम:

कर्मशीला कर्मठ सोई कर्मसूर संकर्म :
कर्मन्य भुक् कर्मकर कर्मकार तिह वर्म ।।१३।।

मांस भोजी का नाम:

आमिष्याशी शौष्कुल: सदा मांस जो खात ।

भूखा के नाम:

क्षुधित विलुत जिघित्सु रसनायत विष्यात ।

अपनो ई पेट भरें ताको नाम:

पर पिंडा पचम्भर अद्मर कहिये ताहि ।।
है परान्न भक्षक सोई कुक्षंभरि सो आहि ।।१५।।
आद्यून: औदरिक सो प्रारंभ भरि पुनि सोइ ।
सोदर पूरक नूर कहि जाके अधिक न होइ ।।१६।।

गीधा नर को नाम माता का नाम:

गर्धण गृध्र सु नाम दुवे जो गीधो नर हुंत ।
जीव शौंड उत्कट दोऊ संग्रामत्त कहत ।।१७।।

लोभी का नाम:

लोलुप लोलुभ लुब्ध पुनि अभिलाषक के नाम ।

मतवाला का नाम:

सौ उन्माद उन्मदिष्नु जो मतिवारो ग्राम ।।१८।।

विनय संयुक्त ताको नाम: विनय रहित ताको नाम

विनय ग्राही विनेय: शुद्ध विनय संयुक्त ।
समुद्धत: अविनीत पुन विनय रहित सो उक्त ।।१९।।

कामना सहित को नाम:

काममिता, कामन, कमन कामित अभिक सु मीक ।
कमितानुक पुनि कम्र सो नूर नाम ए ठीक ।।२०।।

पराये वस्य-हुओ रहै ताके नाम । अपना वचन को पालै ताको नाम:

निभृत प्रणेय विनीत वस्य प्रस्नित अहरि अवस्य ।
जो पालै निज बोल को आश्रय नाम सुवस्य ।।२१।।

ढेठे के नाम चतुर नाम:

धृष्टः धृश्नु विपात पुनि जो ढेठो नर होइ ।
प्रतिभान्वितः प्रगल्भ सो नूर चतुर है सोइ ।।२२

अढीठ नाम:

सो अधृष्ट सालीन सो जो ढीठो नर नाहि ।
वस्मिय सहित विलक्ष है नूर कहत जगमाहि ।।२३।।

कायर नाम:

भीरुक भीलुक भीरु पुनि कातर त्रस्त प्रसंस ।
वात कह्यौ चाहै जुसो आसंसित आसंसु ।।२४

मारन हारा का नाम: स्तुति करन हारा का नाम:

मारनहारो घातक हिंस्रः उहै सरारु ।
स्तुति कर्त्ता सौ नूर कहि, अभिवादक वंदारु ।।२५।।
भूमि परयो चाहै जु नर सो पातक पतयालु ।
उत्पतिता उपपतिश्नु उठयो चहै संभालु ।।२६।।

तिसीक्षन का नाम:

भविता भूश्नु भविश्नु वर्तन है वर्त्तिश्नु ।

निरादर करयो चाहै ताको नाम:

चाहै कर्‌यो अनादरहि छिप्नु सु निराकरिश्नु ।।२७।।

ज्ञाता का नाम: चिकणा का नाम:

विदुर विंदु ज्ञाता स्निग्धः सांद्रि सु मेदुर होइ ।

बिगस्या का नाम:

विकस्वर जानौ विकासी नूर नाम है सोइ ।।२८।।

पसरया का नाम:

विस्मर विसत्वर विसारि, उहै प्नसारि सु आहि ।

क्रोधी नाम:

कोपी क्रोघन अमर्षण चंड कोप बहुताहि ।

सहनसील नाम:

सहन, सहिष्नु तितिक्ष पुनि क्षंता क्षमी वषान ।
क्षमिता तासौ नूर कहि जो सहि रहै निदान ।।३०
जागरूक जागर्तिता जागन हारो कोइ ।
प्रवलायित जो नीदवसि घूर्निक कहियै सोइ ।।३१।।

सोवनहारा का नाम:

स्वप्न कशयित सयालु सो निद्राण निद्रालु ।

मूर्ख नाम:

पलपू बहु कर नूर कहि दीर्घ सूत्र मन्द छंद ।
असमीक्ष कारी आलम: जो है मूरप मव ।।११।।

कुंठ नाम:

करै काम मैं काहली कुंट कहत है ताहि ।

काम विषै तत्पर रहै ताकौ नाम:

ताहि अलंकर्मीण कहि कर्मस सो आहि ।

अपने काम कौं तत्पर ताकौ नाम:

कर्मसीला कर्मठ सोई कर्मसूर संकर्म :
कर्मन्य भुक् कर्मकर कर्मकार तिह धर्म ।।१३।।

मांस भोजी का नाम:

आमिष्याषी धौवृस: सदा मांस जो पात ।

भूषा के नाम:

क्षुधित बिलुत जिघित्सु रसनायत विष्यात ।

अपनौ ई पेट भरै ताकौ नाम:

पर पिंडा वमस्मर अप्मर कहिये ताहि ।।
है परान्न भक्षक सोई कुक्षंभरि सो आहि ।।१५।।
आद्यून: औदरिक सो आत्मं भरि पुनि सोइ ।
सोवर पूरक नूर कहि जाकै अधिक न होइ ।।१६।।

गीधा नर कौ नाम मांता का नाम:

गर्धन गृध्र धु नाम द्वै जो गीधो नर हुंठ ।
जीव सौंड उत्कट बोऊ संज्ञामत्त कहुंत ।।१७।।

लोभी का नाम:

लोलूप लोलुभ लुब्ध पुनि अभिलायक के भाम ।

मतवाला का नाम:

सो उन्माद उन्मदिष्नु जो मतिवारो ग्राम ।।१८।।

विनय संयुक्त ताकौ नाम: विनय रहित ताकौ नाम

विनय ग्राही विनेय: जुहै विनय संयुक्त ।
समुद्धत: अविनीत पुन विनय रहित सो उक्त ।।१९।।

कामना सहित कौ नाम:

कामयिता, कामन, कमन कामित अभिक सु मीक ।
कमितानुक पुनि कम्र सो नूर नाम ए ठीक ।।२०।।

पराये वस्य-हुम्रो रहै ताके नाम । अपना वचन कौ पालै ताकौ नाम:

निभृत प्रणेय विनीत वस्य प्रस्नित बहुरि अवस्य ।
जो पालै निज बोल कौ आयव नाम सुतस्य ।।२१।।

ढेठे के नाम चतुर नाम:

धृष्टः धृश्नु विपात पुनि जो ढेठो नर होइ ।
प्रतिभान्वितः प्रगल्भ सो नूर चतुर है सोइ ।।२२

अढीठ नाम:

सो अधृष्ट सालोन सो जो ढीठो नर नाहि ।
वस्मिय सहित विलक्ष है नूर कहत जगमाहि ।।२३।।

कायर नाम:

भीरुक भीलुक भीरु पुनि कातर अस्त प्रसंस ।
वात कह्यो चाहे जुसो आसंसित आसंसु ।।२४

मारन हारा का नाम: स्तुति करन हारा का नाम:

मारनहारो घातक हिंस्रः उहै सराह ।
स्तुति कर्त्ता सो नूर कहि, अभिवादक वंदारु ।।२५।।
भूमि पर्यो चाहै जु नर सो पातक पतयालु ।
उत्पतिता उपपतिश्नु उठ्यो चहै संभालु ।।२६।।

तिसीक्षन का नाम:

भविता भूश्नु भविश्नु वर्तन है वर्त्तिश्नु ।

निरादर कर्यो चाहै ताको नाम:

चाहे कर्यो अनादरहि छिप्नु सु निराकरिश्नु ।।२७।।

ज्ञाता का नाम: चिकणा का नाम:

विदुर विंदु ज्ञाता स्निग्धः सांद्रि सु मेदुर होइ ।

बिगस्या का नाम:

विकस्वर जानो विकासी नूर नाम है सोइ ।।२८।।

पसर्या का नाम:

विस्मर विसत्वर विसारि, उहै प्नसारि सु आहि ।

क्रोधी नाम:

कोपी क्रोधन अमर्पण चंड कोप वहुताहि ।

सहनसील नाम:

सहन, सहिष्नु तितिक्ष पुनि क्षंता क्षमी वपान ।
क्षमिता तासौ नूर कहि जो सहि रहै निदान ।।३०
जागरूक जागर्तिता जागन हारो कोइ ।
प्रवलायित जो नींदवसि घूंनिक कहिये सोइ ।।३१।।

सोवनहारा का नाम:

स्वप्न कशयित सयालु सो निद्राण निद्रालु ।

पीठि फेरै ताको नाम:

मुष फेरे सुपरान्मुष पराधीन सो भाषु ।।३२।।

नीचो मुष करि रहै ताको नाम:

अधोमुष सु आवांमुष: जिहि नीचौ मुष होइ ।
नूर कहै सु जरूर विनु ताहि न देषौ कोइ ।।३३

अति बक्ता का नाम :

वावदूक वद बदावद वाग्मी वक्ता आहि ।
पटु सो वाचो युक्ति जो वाग्पति अति बक्ताहि ।।३४।।

कुत्सित बोलै ताको नाम:

वाचाट, वाचाल, सो गहुर्येक आत्मक होइ ।

दुर्मुष का नाम:

अबद्ध मुष बहुरो मुष जो मुष दुर्मुषं होइ ।।३

मीठी बात नाम प्रगट न बोलै ताको नाम:

प्रियवद सुम्बलुष: जाकी मीठी बात ।
लोहल अस्फुट वाकसो नैक न समझो जात ।।३६

कडुबो बोलै ताको नाम:

कटु बक्ता सु कदुवद: गर्ह्यवादी है सोइ ।

कुवचन बाला को नाम: अज्ञान नाम:

कुचर कुवादी कुवचनी जड अज्ञ, ग्यान न होइ ।।

जाको स्वर नीको नाही ताको नाम:

अस्वर और असौम्य स्वर जिहि स्वरनी नाहि ।

नादकरण वामका नाम:

नादी कर शब्द नक्षम नादी वादी आहि ।।३८।।

वात कहै न सुणै न आणै ताको नाम:

कहनी आव न आवई सुनी न आवै बात
नेड मूक सो जानियो नूर कहत विख्यात ।। ३९ ।।

चुप्प रहै ताको नाम:

सूष्नी शीस: तूष्णीक: चुप को रहै जु कोइ ।

नांगा कर नाम:

नग्न अवास दिगवर नूर मुनीष्वर सोइ ।। ४०

काढि दीजिये ताको नाम:

नि: नकाषित: अपध्वस्त पुनि अपकृष्ट सो जांनि ।
धिक्कृत जो धिक्कारि कै काढि दियो सु बषानि ।। ४१

गुमांनी को नाम:

मार्त गर्व्व अभिभूत सो गर्व गहे जो होइ ।

साथी नाम:

साधित दर्पित नाम तिहि साथि, रहै जो कोइ ।। ४२

आग्या दीवा मने कीवो तिस को नाम:

निरस्त प्रत्यादिष्ट सो आग्या दीनी ताहि ।
प्रत्याष्यात निराकृत मने कर्‌यो जो चाहि ।। ४३ ।।

जो ठगाइ आयौ होइ ताको नाम:

विप्रलंभ सो वंचित: प्रहुरि विप्रक्तत जान ।

मार्‌यो होइ तिसको नाम:

हत प्रतिहत प्रतिवद्ध पुनि मनोहत सु वषान । ४४

बांध्या का नाम:

प्रतिक्षिप्त अधिक्षिप्त पुनि कीलित संपत वद्ध ।

विपती जी को नाम:

आपन्न आपत्प्राप्त सो विपत्ती जीव निपद्ध ।। ४५ ।।

भय सेती भाग्यो होइ ताको नाम:

कांदशी क सु भयद्रुत: भय तैं भागैं कोइ ।

जो स्थिर नाहीं ताको नाम:

जो स्थिरनांही नूर कहि सक शुक जानहु सोइ ।। ४६

दु:ष्यित का नाम:

व्यसनार्त्त उपरक्त सो दुषित नर के नाम:

व्याकुल बा बिहूल नाम:

व्याकुल कहै विहस्त सो बिहूल विल्कव काम । ४७

दुष्ट बुद्धि बाला को नाम:

विवश अरिष्ट सु दुष्टधी दुष्ट बुद्धि जिह बुद्ध ।

संनद्ध नाम:

पहरी होइ सनाह जिन आततायी संनद्ध ।। ४८ ।।

द्वेषी नाम:

द्वेषी जानहु अक्षिगत जो नर मारन जोग्य ।
शीर्ष छेद्य सो जानीयो बद्ध कहत सब लोग ।। ४९

चपल नाम सठ नाम दुष्ट नाम धूर्त नाम:

चपल चिकुर जानियो अनृज सठ हि बषानि ।
दुष्ट सु खलु अरु पिसुन है, धूर्त्त सु बंचक जानि ।।५०

घातक नाम:

क्रूर नृसंस सु घातक जानहु ताको पाप ।।

मूर्ष नाम:

यथा जात बैंधेय सो बालिस अज्ञ अघाय ।।५१।

कृपण नामः

किपच मनमित मितिपच कृपण मिति पच कृपण कदर्य सु क्षुद्र

दरिद्री नामः

दुर्गत दीन दरिद्र निस्व दुर्विध मापत्र रुद्र ॥५२

पर दोष देखे ताको नामः

पर दोषहि देख रहै पुरोगामी[1] सो होइ।
दोषै कटुक कहत है नूर सु कविजन होइ ॥५३

चुगल नाम सस्त्र सो छाय रह्यो ह्वाइ ताको नामः

कर्ण जप सूचक चुगल क्षारित जानहु ताहि।
मासारि सो नूर कहि, दस्त्रे रहैं बहु क्षाहि ॥५४

भिखारी नामः

याचक मार्गण याचनक वनीयक सो आहि।
भिक्षुक सो अर्थी कहै नूर सुकविजन चाहि ॥५५

स्वेदतें उपजै अंडो तें उपजै अंकुरे तें उपजै तोन वहके नामः

स्वेदज, कृमि, दसादि, दै, अंडज, पग सर्प्पादि।
उद्भिज उद्भिद अद्भुत जानहु तरु गुल्मादि ॥५६॥
नूर जरायुज जगत में है नर और गवादि।
दिव्य रूप उत्पन्न हैं जानहु सो देवादि ॥५७॥

इति विशेष्य निघ्न वर्गः

सुंदर नामः

मंजुल सुषम सु मंजु सो रम्य मनोहर चारु।
सोभन साधु मनोज्ञ सुनि कांत रुचिर सु विचारु ॥५८॥

आसेचक नामः

आ सेचक जिह देखि कै दृष्टि अघिनहि होइ।

मनोवांछित नामः

प्रिय वल्लभ रु अभीष्ट सो इप्सित वांछित सोइ ॥५९॥

निशंका नामः

रेफ आप्य कुत्सित अधम अवम कुपूय निकृष्टः
अहूर्य अतुक सो खेट है सो अवद्य प्रति कृपि ॥६०

म्लान नाम-मल दूषित नामः

मलिन मलीमस कहत है ये मलीन के नाम।
मल दूषित कचर सोई नूर कहत गुन धाम ॥६१

१. 'गा' के ऊपर मूल में 'भा' लिखा हुआ है। और 'मी' के ऊपर 'णी' लिखा हुआ है। इस प्रकार पुरोभागी हुआ।

पवित्र नाम: पूतं पवित्र सु मेध्य कहि [सोधित नाम]
अनवस्कर सो मृष्ट ।
निः सोधित सोधि सोई है निनिक्त सुसृष्ट ।।६२

सून्य का नाम:
तुच्छ फल्गरिक्त कशिवक, सून्यक सोई असार ।

प्रधान पुरुष नाम:
प्रमुक प्रवंक प्रधान सो वर्य वरेण्य उचार ।।६३
अग्र प्राग्र हर गुख्य सो उत्तम अग्रीय सोइ ।
अननुत्तग सो नूर कहि जो प्रधान नर होइ ।।६४।।

श्रेष्ट नाम : शोभन नाम:
पुष्कल अरु श्रेगान कहि द्वे श्रेष्ट के नाम ।
अति सोभन सो सत्तग नूर कहत गुन ग्राम ।।६५।।

प्रसस्त वाचक नाग:
व्याघ्र सिंघ पुगंव रिषभ शार्दूलगज नाम ।
उत्तर पद दये होत है श्रेष्ट अर्थ वड़ भाग ।।६६

अप्रधान नामः दीर्घ नाम:
उपसर्जन जु अप्राग्य् ए अप्रधान के नाम ।
आयत जानहु दीर्घ सो नूर कहत गुन ग्राम । ६७।।

स्थूल नाम:
महत वृहत पीवर पृथुल पीन विसंकट होइ ।
पीवरपोघ्नीन, उर विपुल स्थूल विसालंसु लेइ ।।६८।।

अल्प नाम:
सूक्ष्म तनु कृश क्षुल्ल सो स्तोक दभ्र जो अल्प
ताहि श्लक्षण कहतै नूर सकल गुण कल्प ।।६९

मात्रा का नाम:
अक्षर एक कहैं सुने जितनौ वीतत काल ।
मात्रा त्रुटिता सो कहै नूर सभाल सभाल ।।७०।।

अति सूक्ष्म नाम:
अणु कण पुनि लव लेश सोहे सूक्ष्म अनु सिष्टः
कणीय सो अल्पीय सो अणीय सो अल्पिष्ट ।।७१।।

बहुत नाम:
प्रचुर प्राज्य वहु वहुल पुरु भूरि भू य भूयिष्ट ।
पुरुहुस्मिहरः मदभ्र प्रभूत सो सुनि इष्ट ।।७२।।

संख्या सो जो अधिक होइ ताको नाम। गणि वे योग्य होइ ताको नाम:

जो संख्या सत सो परे ताहि पर शत नाम।
सो गणनीय गणेय जो गणन जोग्य अभिराम ॥७३॥

गण्यो होइ ताको नाम : सघन नाम:

नाम गणित संख्यात सो नाम गणायो जाहि।
सघन निरंतर सांद्र सो नूर कहत सब कोई ॥७४॥

सम्पूर्ण नाम:

स्वकल समस्त समग्र सो विश्व निखिल निःशेष।
कृत्स्न संपूण सर्व नूर अपर्व अशेष ॥७५॥

निकट नाम:

सविध सदेस सवेस सो निकट सनीड समीप।
सन्नि-कृष्ट आसन्न जो नूर कहत गुन दीप ॥७६॥
समर्जाव उपकंठ है अंतिक अभिक अभ्यर्ण ॥
अभ्याशा सोई सुनो मिलित होत तिह वर्ण ॥७७

सीध्या का नाम:

अव्यवहित अपर्वांतर संसिक्त हो होइ।

अति निकट नाम:

अतिकठम, नेदिष्ठ सो अति समीप रहै सोइ ॥७८॥

दूर नाम:

दूरि दवीय दविष्ट सो नेदिष्ट पु कहंत।
विप्रकृष्ट सो जानियो जोतिति दूर रहंत ॥७९॥

वाटला का नाम:

वर्तुल निस्तल वृत्त है वटलो जानहु ताहि।

ऊंचा का नाम:

तुंग उतंग उच्च सो उच्छ्रित प्रांशु बपान।
उन्नत ऊंचे सों कहै जानहु नूर सुजान ॥८०॥

नीचा वावन का नाम:

नीच, न्यग्र, ह्रस्व खर्व सो अवनत वावन आहि।
अवानतः सो जानियो वावन अंगुर चाहि ॥८१॥

वक्र नाम:

भुग्न वक्र वेलित कुटिल वृजन जिह्म नत आन।
आकुंचित आविद्ध सो मूर्ति अराल बपान ॥८२॥

ऊंचो होइ अरु न रहै ताको नाम:

उन्नतान, त, बंधुर: उचौ नै रहै कोइ ।

सूधा का नाम:

सूधौ प्रगुण अजिह्य जु सरल नाम तिह होइ ।।८३

टेढा का नाम:

टेढो आकुल अप्रगुण टेढा के द्वै नाम

नित्य नाम:

नित्य सनातन सदातन सास्वत ध्रुव को धाम ।।८४।।

ठहराय रहै ताको नाम:

स्थिर तर स्नुस्थे यान सो जोनी कै ठहराय ।

एक रूप सौ सदा ठहराइ ताकौ नाम:

काल व्यापी कूटस्थ सो, एक रूप न पराइ ।।८५

स्थावर नाम जंगम नाम:

कहै जंगमेतर सोई जाको स्थावर नाम ।
जंगम त्रसचर चराचर इंगिचरिश्नु सु ग्राम ।।८६।

चंचल नाम:

चंचल चलन चलाचल कंपन कंप सु ताल ।
तरल परिप्लव नूर कहि पारिप्लव सुनि भाल ।।८७।।

अधिक नाम : दृढ नाम:

अतिरिक्त समधिक सोइ अधिक नाम है दोइ ।
दृढ संधि हि संहत कहैं, जानि लेहु सब कोइ ।।८८।।

कर्कस नाम:

कर्कश क्रूर कठोर दृढ, निष्ठुर कठिन सु जान ।

मूर्ति नाम:

मूर्त्ति मूर्त्ति मत मूर्त्ति के द्वैही नाम वषान ।

पुरान का नाम:

प्रतन प्रत्न जु पुरातन चिरंतन: सु तुरान ।

नवीन नाम:

अभिनव नूतन नूत नव प्रत्यग्र सु वपान ।।९०

कोमल का नाम:

कोमल मृदु सुकुमार सो । मृदुल कहत पुनि ताहि

पीछै लाग्यौ फिरै ताकौ नाम:

अनुपद अनुग अन्वक्ष सो अन्वग जानहु ताहि ।

प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष नामः

ऐंद्रियक सो नूर कहि आनि लेहु प्रत्यक्ष ।
है जु प्रतींद्रिय जो कछू, सो जानहु अप्रत्यक्ष ॥९२॥

एकाग्र नामः

एकस एकाग्र सो है अनन्य वृत्ति सोइ ।
एकतान एकायन एकायन मत होइ ॥९३

आदि वा अंत नामः

प्रथम पूर्व पौरस्त्य सो आदि नाम सरहंत ।
पश्चिम चरम जघन्य सो अंत्य अन्त कहंत ॥९४

निष्फल नाम सामान्य नामः

मोघनिरर्थक निःफल साधारण सामान्य ।

प्रगट नामः

स्फुट उल्बन प्रव्यक्त सो नूर स्पष्ट सु जान्य ॥९५

विपरीत नामः

सो प्रसेव्य प्रतिकूल सो:

दक्षन अंग का नामः

सोइ नाम विपरीति ।
अपसव्यहु सु अपष्टु पुनि दक्षिन अंग की रीति ॥९६॥
बाम अंग सो सव्य है देवक्षण अपसव्य ।

संकट नामः

संबाधकः संकट सोई आपत नूर सुकव्य ॥९७॥

संकडाई की नामः

संकीर्णः संकुल सोई आकीर्ण तिह चाहि ।

मुंडित नामः

मुंडित परिवापित उहै:

बहुत कठिन समझो न जाइ ताको नामः

कलिल गहन सो चाहि ॥९८॥

गाँठि नाम विस्तार नामः

गाँठि ग्रंथि ग्रंथित सोई, विस्तृत तत विस्तार ।
विस्तृत व्यास सु विग्रह विस्तर नूर उघार ॥९९॥

प्राप्त नामः

प्राप्ति तासो कहत है प्रणिहित कहिये सोइ ।

विस्मित नाम नूल्यौ

विस्मित नाम नूल्यौः

विस्मित सो अंतर्गतः अंतर्गती होइ ॥१००॥

कंपित नाम:

कंपित प्रेंपित वेल्लित: चलित धूत आधूत ।

युक्त को नाम:

संजोजित सु उपाहित युक्त वस्तु जो पूत ॥१॥

जो पायो होइ ताको नाम:

समासाद्य सुतनीन सो स्पंनगम्य जो प्राप्य ।

आप में परस्पर जोड़ करयो ताको नाम:

संगूढ:—संकलित सो करयो जोड़ मिल आप्य ।

निंद्य नाम:

निंद्य: ख्यात व गीत सो गरहण जानहु ताहि ।

वहु विधि जाणै ताको नाम:

नाम रूप पृथग्विध विवध सु वहु विध आहि ॥३

चूर्ण कियो ताको नाम:

अवध्वस्त अवचूर्णित अवगीर्ण अधिकृत ।

अनायास कियो ताको नाम:

अनायास कृत फांट सो नूर कहत गुन वृत्त ।

मूंद्या का नाम वांध्या का नाम:

मुद्रित संदित मूर्णसित मूदे के अभिधान ।

संदानित वांध्यो सोई नूर कहत सु विधान ॥५

पाक होइ घृत दूव मैं नूर कहत सृत ताहि ।

गुणित वस्तु नाम:

गुणित कहे वस्तु जो सोई आहित आहि ॥

नैक भेद उच्चावच सुद्रच नीच अभिधान ।

अकेला को नाम:

एकाकी एकक एका एक ही नाम प्रवान ॥

अवलंवित नाम जो हुई न जाइ ताको नाम:

अवलंवित उचंड है जो अविलंवित होइ ।

अस्पृक असह्य अरुंतुद:, छुयो जात नहि सोइ ॥८

भिन अर्थ नाम:

एक एक तर सो सुनो पुनि अन्येतर जांनि ।

भिन्नार्थक सो नूर कहि भिन अर्थ सु वषानि ॥९॥

अप्रयोजक नाम:

जो कछु कामिन आवई कहिअ प्रयोजक ताहि ।

सो अवाध सुनिरर्थक कहा लाभ जग वाहि ॥१०

मोटा का नाम : छिप्पा* का नाम:

उपचित मोटे स्पौक है, रपत गुंठित जो गुप्त ।

प्रव नाम:

भववरन, द्रुत नूर कहि भागत कृपन सुसुप्त ।।११

जूवा सिपायो ताको नाम:

घूत सिपायो होइ थिहि सो कृत कारित जानि ।

सूंघ्या का नाम:

घ्रात घ्राण सूंघ्यो सु जो (लीप्पा कानाम):

विग्ध लिप्त सु बपानि ।।१२।।

रूंध्या का नाम:

आवृत वलयित, रुद्ध सो है वेष्टित संवीत ।

तेज कर्‌यो ताको नामः

तेजित निशित क्ष्णुत सो तेज करत जो भीत ।।१३

द्रीण ह्रात लज्जित सोई [पाक नाम] पाक:पक्व बपानि ।।

युक्त सेती कर्‌यो ताको नामः

उपाहित संजोजित युक्त करयो जो काम ।।१४

प्रभा रहित नामः

रोक विगत नि:प्रभ सुनो प्रभा रहित जो नाम:

विलीन नामः

द्रुत विद्रुत सो जानियो है विलीन रस माहि ।।

छेद्या का नाम:

दारित भेदित भिन्न सो कहे विदार्‌यौ ताहि ।।१५।।

सिद्ध वस्तु नामः

नि:पन्नः निर्वृत्त सो सिद्ध वस्तु जो कोइ ।

उपासित नाम:

वरवसित उपचरित सोई करै उपासना सोइ ।।१६।।

राख्या का नाम:

गाम्प मात गोपित गुप्त प्रमित किये जो गोप ।

तज्यो होइ ताको नामः

त्यक्त हीन घूत विधुत उत्सृष्ट करि कोप ।।१७।।

उक्त नामः

आख्यात अभिहित उदित जल्पित लपित सु उक्त ।।

भाषत जानहु नूर कहि जे है ज्ञान संयुक्त ।।१८।।

*मूल में छिप्पा के ऊपर 'गूढ़' और लिखा हुआ है ।

जान्यो होइ ताकौ नाम:

वुद्ध वुधित प्रति पन्न सो मनित विदित कहि नूर ।
अवगत अव वासित सोई, जान्यो ह्वै जिन नूर ॥१८।

काटे के नाम:

छिन्न छित्त कृत कृत सो लूत दात दिति सोइ ।
काटे कौ यह नाम है नूर समझि लै कोइ ॥१६॥

अंगीकार नाम:

प्रतिज्ञात उररीकृत आश्रित उरी कृत जान ।
अंकीकार करयो जु की ताके नाम वपान ॥२०॥

सुणै ताको नाम:

संश्रुत उपश्रुत उपगत, विदित समाहित आहि ।
सुनी वात संकीर्ण सो, नूर कहत सव ताहि ॥२१॥

स्तुति करी होइ जाकी तकौ नाम:

वनित पनित पणायित ईडित शस्त वपानि ।
अपगीर्ण सु अभिष्ट सो तेडित नूर वपानि ॥२२

सुनो होय स्तुति योग्य ता के नाम: अनादर वारे कौ नाम:

अवज्ञात अवमानित अवगणित पुनि सोइ ।
परिभूत मवमत वहुर अनादर जुत होइ ॥२३॥

पीस्या का नाम:

प्रेष्ट क्षोदिष्ट वहुरि जोपिष्टः तिहि नाम :

वड़े के नाम:

कहै वरिष्ट वहिष्ट सो जो वरिष्ट गुण ग्राम । २४

भक्षित नाम:

भक्षित चर्वित लिप्त सो ग्रस्त ग्लस्त जो भुक्त ।
अशित आत्त प्सात सो जग्ध पादित युक्त ।२५
प्रभ्यव द्रुत प्रत्यवसित जों षायो तिहि सोइ ।
नूर नाममाला विषै जानि लेहु सब कोइ ॥२६

छिप्रादि नाम:

क्षिप्र क्षुद्र पृथ पीवर भीप्सित सो सुनि लेहु ।
नूर अर्थ पावन विषै सिघ्र अरथ कहि देहु ॥२७॥

साधिष्टादि नाम:

वाढ व्यापत बामन जु वृंदारक साधिष्ट ।
बहु गुरु पुनि वंदिष्ट सुनि है गरिष्ट द्राघिष्ट ॥२८॥
श्रेष्ट हू सिष्ट हि कहत है ए ग्यारह नाम :
भाषत अतिशय अर्थ कौ समझि नूर मति धाम ॥२९॥

जो संपूर्णताको पहुंचे ताको नाम:

जो पहुच्यो सपूर्ण करि सो पारायण होइ ।
सग वचन साकल्य सो सुपरायन है सोइ ॥३०॥

सून्य नाम:

है अपृच्छया स्वैरिता स्वेच्छाचारी जान ।
भास्या बहुरि विलक्षण शून्या सून्य प्रवान ॥३१
नाम जु उत्तम कर्म को कर्म वृत्त अवदात ।
करे पु उत्तम कर्म को, नूर सु उत्तम गात ॥३२॥

टोना का नाम:

संवनन, टोना सोई वसकृया सा होइ ।
मूल कर्म कामन बहुरि नूर कहत सब कोइ ॥३३

कामना निमित्त दान दे ताको नाम:

काम्य दान सो जानियो कहै प्रचारल ताहि

चुननाका नाम:

चुननो सोई विपूनन विधूवन सो आहि ।

बर्‌यो नाम:

बरवृत बरिवस्तु जो शुस्स कहै पण चाहि ॥३४॥

तर्प्पण नाम:

तर्प्पण प्रानन अव न सो [सींचन नाम] सेचन सीचन स्मृति ।

मांगिवे को नाम:

भिक्षा जञ्चा अर्थना उहै अर्थना हुति ॥३५॥

रक्षा करिवे को नाम:

परिमाण पर्ज्जाप्ति है ताके है है नाम ।
भिस्र भिदर स्फुटन पुनि [वेदना नाम] संवेद जुग धाम ॥३६

कोसिवे को नाम:

आक्रोशन अभिष्वग सो [गहिवे को नाम] ग्रहे सु कहि ग्रह ग्राह ॥

मूर्छा नाम:

अभिव्याहा सो मूर्छना नूर सुबुधि प्रवाह ॥३७॥

भाजन नाम:

अप्रछन सभाजन आरंभन है सोइ ।
कहै होम की वस्तु सो हुय हुत, जो होइ ॥३८

प्रात नाम:

प्लोप ऊप है जानियो प्रात समै को नाम ।

गुरु परंपरा नाम:

सप्रदाय आम्नाय सो गुरु परपरा धाम ॥३९॥

न्याय नाम: सिद्धि नाम:

न्याय, नयः, ख्याति, प्रथा (पीठि नाम) पृष्टि पृष्ट सो पीठ

यथार्थ ज्ञान नाम: प्रमिति प्रभा सुयथार्थ है नूर कहत मति ईठ ।।४०

प्रसूत नाम षेदनाम

प्रसव प्रसूति सुजानियो, क्लम थुक्लम सुपेद
श्लेप संधि सो कहत है जान नूर ए भेद ।।४२

चेष्टा नाम:

चेष्टा इंगि, सु इंगित नूर कहत आकार ।
वंचन को प्रश्रत सुनो नाम प्रकास उचार ।।४२

उद्वेग के नाम:

उड्रम कहि उद्वेग सो मुप्ट वंध संग्राह ।
है विरोव सो निग्रह (डिभ नाम) डमर सुविप्लव ग्राह ।।४३।।

जासूस नाम:

उपत प्रास्प्रष्ट सोहै स्पर्श पुनि चारु ।
कहिवे के द्वे नाम है निगद निगाद विचारु ।।४४

अनुग्रह नाम:

अभ्यपत्ति सो अनुग्रह (पाका का नाम) है परिनाम विकार ।

तिरस्कार के नाम: द्वै वि प्रकार सुनिकार ।।४५।।

छीजिवे को नाम:

छीजन के अभिधान ये अपवय अरु अपकार ।

लेणका नाम: लेवे कू यो कहत है अभिग्रहण अभिहार ।।४६
समाहार सु समुच्चय संचय कीयो जु होइ ।।
अनुकार अनुहार सो जो उनहारै होइ* ।।४७

लीवै को नाम:

अपादान जो लीजिए वहुरो प्रत्याहार ।

काहू वस्तु निमित्त नियम करै ताकी नाम:

अभिग्रह अभियोग जो करै नियम वृत धार ।।४८

विहार नाम

कहे विहार परिक्रम (वाह्य संका नाम) अभ्यवकर्षण होइ.
सो निहार तुम जानियो वाह्य संका होइ ।।४९

प्रवास नाम:

घर तै बाहर गमन कै नाम प्रवास उचार ।

प्रवाह नाम:

उहै प्रवाह प्रवृत्ति सो नूर सु जगत विचार ।।५०

---

*मूल में इसके स्थान पर 'सोई' लिखा हुआ है ।

संजम सो संजाम यम मूर कहत है नाम ।
व्यायाम जो जाम है विश्रम सोई विश्राम ॥५१

जीव बध कौ नाम:

जीववध हिंसा कर्म बहुरि कह्यौ अभिचार ।

विघ्न नाम:

अंतराय प्रत्यूह पुनि विघ्न नाम उच्चार ॥५२

नजीक घर होइ ताको नाम:

अंतिकाश्रय उपघ्न जा घर होइ नजीक ।

उपभोग नाम:

उपभोग सु निर्वेस सो, भोग नाम है ठीक ॥५३

सर्व कार्ज कौ नाम:

परिक्रया (या) परिसर्प सो सकल काज कौ नाम ।

संक्षेप नाम:

संक्षेपन, समसन सुनो जो संक्षेप प्रनाम ॥५४

हीया की बात कौ नाम:

अभिप्राय आशय बिधुर अविस्लोप कहि ताहि ।
जो हिरदै की बात है नूर कहत है ताहि ॥५५
परीसार परिसर्प्प सो जो पैठे पर ठौर ।

स्थिति नाम:

जानहु आस्या आसना, आपत थिति सिर मौर ॥५६
नाम सम्ब विस्तार कौ विस्तर आपत नूर ।
मर्दन कौ संवहन कह जे पूरन मति पूर ॥५७
कहै विनाश अदर्शन है विनास अभिधान ।

पहिचानि नाम:

पहिचानहि परचय कहै सोई संस्तव जान ॥५८
नाम पसरिबेके सुनो प्रसर बिसर्जन सोइ ।

वहुत बर्के ताके नाम:

सुनि प्रयाम नीवाक पुनि बहुत बर्के है सोइ ॥५९

निकट नाम:

संनिध संनिकर्षण निकट नाम ए सोइ ।

अवसर नाम:

प्रसर प्रणय प्रस्ताव सो अवसर जानहु सोइ ॥६०

उद्यम नाम:

प्रक्रम बहुरि उपक्रम उद्यम जानहु ताहि ।

और कनै ले ताकौ नाम:

उद्घात लै और पह अभ्यादान सु आहि ।।६१

आरंभ नाम : उराहनौ नाम:

आरंभ संभ्रम त्वरा पुनि उराहनो आहि ।
उपालंभ अनुभव सोई जो उराहनो चाहि ।।६२

गढ़ै सै संचरै ताकौ नाम:

संक्रम संचर नाम द्वै करै दुर्ग संचार ।

प्रयोगार्थ नाम:

प्रयोगार्थं प्रत्युत्कर्म प्रयोगार्थं उचार ।।६३

बियोग नाम:

विप्रलंभ सु वियोग कहि विछुरि जात जो कोइ ।

निकासिवे कौ नाम:

निःक्रम सोई निकासिवौ धी शक्तिः पुनि होइ ।।६४

बहुत कारन कौ नाम:

अतिसर्जन सु विलंब है बहुत करत जो वार ।

बिस्वास नाम:

प्रतिख्याति विश्राव पुनि जो विश्वास आगार ।।६५

अटक का नाम:

प्रतिष्टंभ प्रतिबंध सो जो नर अटिक्यो होइ ।

किसी कै अर्थ जागै ताकौ नाम:

प्रति जागर पुनि अवक्षा परहित जागै सोइ ।।६६

फिरि जुबाब दे ताकौ नाम:

समालंभ सु विलेव सुनि फिरि जुवाव जो देत ।।

पंडित पढै ताकौ नाम:

पाठ निपाठनि पठ बहुरि जो पंडित पढ़ि लेत ।।६७

क्लेश नाम:

आदीन वा श्रम बहुरि द्वै कलेस के नाम ।

मिलाप का नाम:

संगम कहै मिलाप सो नूर जुहै जुगु धाम ।।६८

मांगिवे कौ नाम:

मार्गण मृगण सुमाँगिबौ अन्वीक्षण मृग आहि ।
विचयन नूर वर्षाँनही निज बुधि वल अवगाहि ।।६९

आलिंगन नाम:

परिष्वंग परिरंभ सो उपगूहन संश्लेष ।।
एक एक सौ जो मिलै नूर मिलन सो देष ।।७०

देखिबे को नाम:

बरसन आलोकन उहै, इक्षण पुनि आध्यान ।
निर्बर्णन सो नूर कहि जो देखत करि ध्यान ॥७१

अनादर का नाम:

प्रत्यादेश निराकृति निरसन प्रत्याख्यान ।

शयन नाम:

उपशाय सु विशाय पुन सूते नरहि बखान ॥७२

बदला का नाम:

मन विपर्यय: प्रतिक्रम उपात्ययः पर्जाय ।
विपर्जा सु प्रतिपात पुनि व्यत्सा पलटत काय ॥७३

सिक्षा का नाम:

सिक्षा परिसासन सोई (प्रेषण नाम) दे जु पठायो कोइ ।
प्रेषण ताको कहत है नूर सु कवि मन मोइ ॥७४

प्रश्न पिछोरन को नाम:

करे प्रश्न को उछिपन उत्कारः सुनिकार ।

पूर्व पक्ष नाम:

पक्षाप: उद्गार सो उद्गाह जु निगार ॥७५

बात करत चुपको होइ रहै ताको नाम:

विरति विरत्यय मरण पुनि आरत्य उपराम ।
बात कहत चुप ह्वै रहै नूर कहत तिह नाम ॥७६

लार वा थूक नाम:

निष्ठ्यूति: निष्टीवन: निष्टीव सो जाल ।

अंत नाम:

तीनि नाम है अंत के सांति बहुरि अवसान ॥७७

दोहा:

और नाम सुनि अमर में है आदेस विसेष ।
भयो संपूरन नूर कृत जो कछु लिष्यो सुलेष ॥७८
बहुत न कहिये जगत में गहिये मन विश्राम ।
नूर कथन तितनो भलो जितनो वासो काम ॥७९
जैसो आन्यो बुद्धि बल नूर बर्णायो सोइ ।
पंडित ह्वै सुधारियो पंडित दोस न कोइ ॥८०
पुनि पुनि मुक्ता नाम सब रचो जु दाम सुढार ।
नूर धर्म बहु अर्थ को करें सु कंठ उदार ॥८१
तीनि कांड है अमर के या के तीन प्रकासु ।
कोस उहै मालाय है नूर प्रगट कर आसु ॥८२

उत्तम उत्तम नाम ले मिले सुमन उल्हास ।
नूर कहे जग में रहे ज्यों परमारथ वास ।।८३

इति श्री श्रीमत्सकल अभिधान रत्न भूषन भूषित अमर भाषा मियां नूर कृत नाम प्रकास नाममाला तृतीयःप्रकासः संपूर्णः ।। ३ ।।

दोहाः

अमर कोप के भाय सों कीने नाम प्रकास ।
अनेकार्थ के अर्थ लै कहों अनेक उलास ।।१
शुद्ध वरन बहु अर्थजुत मुकता सवद सुढार ।।
कंठ करहु गुनवंत नर नूर अपूरव हार ।।२

अथ हरि शब्द:

इंद्र विष्नु सूरज मरुत, सिंघ भेक हय जानि ।
कायर कपि जम चंद्रमा शुक्र किरिनि अहिमानि ।।३
सुवरन रंग हरि जानि यैं मन सुमति लेहु अवधारि ।।४

अथ गो शष्द: ।।

वचन भूमि दिग दृष्टि सर किरनि स्वर्ग जल सोइ ।
गाइ वज्र सुप सत्य गो मातरि अग्नि सो होइ ।।५

शिव शब्दः

रुद्र शुभ्र, पशु काल पुनि शिव कल्यान वपानि ।
गौरी स्यारी शिवा भनि शिवा सुहरडै जानि ।।६

मधुशब्दः

सहत सुरा अरु पुहपरस चैत मास रितुराज ।
नूर कहत मधु दैंत्य इक, ताहि वध्यो व्रजराज ।।७

क्षुद्र शब्द:

वारवधू, मधु मक्षिका कंटकारिका जानि ।
क्षुद्रा नटी सु नूर कहि क्षुद्र तुछ पहिचानि ।।८

'वाहु' शब्द

वाहु प्रवाह वषानिये घन अरु जुग्म प्रमान ।
वाह सो मान विशेष है नूर सुजानहु जान ।।९

हार शब्द:

ईट को संचय, रजत, पुनि मान बिसेष न षेत ।
मुक्ता माला नूर भनि हार शब्द कहि देत ।।१०

भाव शब्द:

आतमा सत्ता शंभु मन भाव पदारथ जानि ।
भाव के पूजक लोक में हाव भाव पहिचानि ।।११

देषिवे को नाम:

दरसन आलोकन उहै, इक्षण पुनि आध्यान ।
निर्वर्णन सो नूर कहि जो देषत करि ग्यान ॥७१

अनादर का नाम:

प्रत्यादेश निराकृति निरसन प्रत्याख्यान ।

शयन नाम:

उपशाय सु विशाय पुन सूते नरहि बषान ॥७२

अवला का नाम:

अन विपर्यय: अतिक्रम उपात्यय: पर्जाय ।
बिपर्जा सु अतिपात पुनि व्यस्ता पलटल काय ॥७३

सिक्षा का नाम:

सिक्षा परिसासन सोई (प्रेषण नाम) दै जु पठायो कोइ ।
प्रेषण ताकी कहत है नूर सु कवि अन सोइ ॥७४

मंन्न पिछोरन को नाम:

करै अन्न को उछिषम उत्कार: सुनिकार ।

पूर्व पक्ष नाम:

पक्षाभ: उवृमार सो उवग्राह सु निगार ॥७५

बात करत चुपको होइ रहै ताकी नाम:

विरति विरत्यय गरम पुनि आरत्य उपराम ।
बात कहत चुप ह्वै रहै नूर कहत तिह नाम ॥७६

लार वा थूक नाम:

निष्ठ्यूति: निष्टीवन: निष्टीव सो थाम ।

अंत नाम:

तीनि नाम है अंत के सांति बहुरि अवसान ॥७७

दोहा:

और नाम सुनि अमर में है प्रादेस विक्षेप ।
भयो संपूरन नूर कृत जो कछु लिप्यो सुछेप ॥७८
बहुत न कहिये जगत में गहिये मन विश्राम ।
नूर कथन तितनो भलौ जितनो आवो काम ॥७९
जैसो जान्यो बुद्धि बस नूर बषान्यो सोइ ।
पंडित ह्वै सुसवारियो पंडित दोस न कोइ ॥८०
चुनि चुनि मुक्ता नाम सब रचो जु दाम सुढार ।
नूर धर्म बहु धर्म को करै सु कंठ उदार ॥८१
तीनि कांड है अमर के या के तीन प्रकास ।
कोस उहै भाषाय है नूर प्रगट कर जासु ॥८२

उत्तम उत्तम नाम लै मिलै सुगन उल्हास ।
नूर कहै जग मैं रहै ज्यो परमारथ वास ॥८३

इति श्री श्रीमत्सकल अभिधान रत्न भूषन भूषित अमर भाषा मियां नूर कृत नाम प्रकास नाममाला तृतीयःप्रकासः संपूर्णः ॥ ३ ॥

दोहाः

अमर कोष के भाव सों कीनै नाम प्रकास ।
अनेकार्थ के अर्थ लै कहौं अनेक उलास ॥१
शुद्ध वरन बहु अर्थजुत मुकता सबद सुधार ॥
कंठ करहु गुनवंत नर नूर अपूरब हार ॥२

अथ हरि शब्दः

इंद्र विष्नु सूरज मरुत, सिंघ भेक हय जानि ।
कायर कपि जम चंद्रमा शुक किरिनि अहिभानि ॥३
सुवरन रंग हरि जानि यै भन सुमति लेहु अवधारि ॥४

अथ गो शब्दः ॥

वचन भूमि दिग दृष्टि सर किरनि स्वर्ग जल सोइ ।
गाइ वज्र सुग सत्य गो मातरि भनि सो होइ ॥५

शिव शब्दः

रुद्र शुभ्र, पशु काल पुनि शिव कल्यान वखानि ।
गौरी स्यारी शिवा भनि शिवा सुहरइ जानि ॥६

मधुशब्दः

सहत सुरा अरु पुहपरस चैत मास रितुराज ।
नूर कहत मधु दैत्य इक, ताहि वध्यो व्रजराज ॥७

क्षुद्र शब्दः

वारवधू, मधु मक्षिका कंटकारिका जानि ।
क्षुद्रा नटी सु नूर कहि क्षुद्र तुछ पहिचानि ॥८

'वाहु' शब्द

वाहु प्रवाह वखानिये घन अरु जुग्म प्रमान ।
वाह सो मान विशेष है नूर सुजानहु जान ॥९

हार शब्दः

ईट को संचय, रजत, पुनि मान विसेष न पेत ।
मुक्ता माला नूर भनि हार शब्द कहि देत ॥१०

भाव शब्दः

आतमा सत्ता शंभु मन भाव पदारथ जानि ।
भाव के पूजक लोक में हाव भाव पहिचानि ॥११

कुथशब्द (प्राप्त[1])

कुथ स्नायी विप्रकुथ वर्म कीट कहि सोइ।
कुथ सो कवल हस्ति पर कुंथा सो कथा होइ ॥१२

कुतपा शब्द:

वर्म काल तिल छाग पुनि कवल सलिल प्रकास।
पञ्च पात्र दुहिता तनय कुतपा नाम प्रकास ॥१३

भग शब्द:

अंबु स्त्री थप वाक भू माता प्रइ विभाग।
थो महिमा यश काति पुनि नूर बसति सौभाग ॥१४
भग पुनि कहिये जोति सों प्रकट जगत में जानि
पंद्रह ठौर लगै अरथ भग यह शब्द बपानि ॥१५

हस शब्द:

तपसीराजा जीव पुनि धर्म तुरगम जानि।
सुक्लपक्ष, भौ विलेप पुनि, नूर सुहंस बपानि ॥१६

रस शब्द:

पारद विष जल हर्ष पुनि रस सिंगार को आदि।
नूर कहत षट रस प्रगट जिह्वा जानति भाति ॥१७

कीलाल शब्द:

क्षीर पुहुप रस तोय मद रुधिर माव पूत होइ ॥
नूर कहत कीलाल पुनि सात अर्थ में सोइ ॥१८

देव शब्द:

राजा बादर देवता मर्ता भौ व्यवहार ॥
नूरप बालक कुपिनर देव शब्द अवधार ॥१९

पुष्कर शब्द:

बाजन मुप उर वारि पुनि काम कमल को जानि।
कुंजर सु डि को अग्र थल स्वर्ग द्वीप मन मानि ॥२०
पुष्कर तीरथ नाम सो पुष्कर सबद सुजानि।
आठनाम ए कोप मत नूर सो कहे बपानि ॥२१

पललशब्द:

तिलपीठी मल मास पुनि कोमल पायर सोइ।
मृतक सेवार अनित्य वस पंडित पलल सु होइ ॥२२

ललामशब्द:

ध्वजा पुछ हय जानिये अरु प्रकास को फूल।
चूरी भौ मुनर्वसनर भौ परवत को मूल ॥२३

---

१. यह शब्द हाशिये में लिखा है।

विप अरु धाम सु नूर कहि इतने होंहि ललाम ।
अनेकार्थ ध्वनिमंजरी छपनक कहे ए नाम २४।

वसु शब्दः

सूरज देव धरा अगिनि रतन द्रव्य पहिचानि ।
आठों वसु वसु जानिए, नूर सो कहत वपानि ।।२५

वर्ण शब्दः

गाइ वजावत साथ एक, तासों वर्ण वपानि ।
अछर वर्ण स्वेतादि पुनि चारि वर्ण पहिचान ।।२६

अर्जुन शब्दः

सुकल व्रन अरजुन कहत अरजुन पंडव जानि ।
अरजुन है तिन जाति पुनि कुनिक कुभ द्रुम मानि ।।२७

वलि शब्दः

वलि त्रिवली कों जानिए अरु वूढ़े के गात ।
वलि पूजा उपहार है वलि दान वधिपात ।।२८

पट्ट शब्दः

पट्ट सिघासन सों कहत हैं पट्ट कपाट वपानि ।
पट्ट सिघासन सों कहत भूप अंक को जानि ।।२९
घाउ वाधिवे को वसन पट्ट कहावत सोइ ।
नूर कहत सुनि कोप मत छमियहु पंडित लोइ ।।३०

अंतर शब्दः

रध्र वस्त्र व्यवधान पुनि अंतरातमा सोइ ।
वहिर्योग अवकाश पुनि व्यसन सु अंतर होइ ।।३१

अरिष्ट शब्दः

कहत अरिष्ट सो ग्रेह सो पुनि अपभासुर नाम ।
कौआ जीव अरिष्ट है छेम अरिष्ट प्रमान ।।३२

मंडल शब्दः

भूमि भाग मंडल कहै सूरज मंडल भाषि ।
मंडल है उनचासदिन अरु समूह अभिलाषि ।।३३
मंडल गोल सुजानिए नूर कहत मतिमान ।
पंच अर्थ मंडल प्रगट जानो कोस प्रमान ।।३४

कंवल शब्दः

कंवल कंवल जानिए कंबल इंद्री होइ ।
गोचारन सों कहत है कंवल सों बल जोइ ।।३५

कुंतल शब्दः

कुंतल केस औ देस इक और महाउत जानि ।
कुंतल वढ़ई सोक है नूर कोस मति मानि ।।३६

मणि शब्द:

मणि कहियति है कूप मुख हीरादिक मनि होइ ।
लिंग को अग्रिम भाग मणि राजा मणि कहि सोइ ॥३७
सर्पन के सिर होति है ताहू को मनि जानि ।
मणि के अर्थ भए प्रगट नूर सो कहै बखानि ॥३८

तंत्र शब्द:

तंत्र कहत हैं शास्त्र सों अरु कुल तंत्र कहाय ।
सिद्ध मंत्र औषध क्रिया सुष बल सत्र बनाय ॥३९
पवन को साधन तंत्र है नूर कहत उर धारि ।
कीनो सुमति विचारि के लीजो सुमति विचारि ॥४०

नेत्र शब्द:

नेत्र कहत है नयन सों । अरु पुनि वस्त्र बिसेष ।
परिवर्तक गुण नेत्र है कस्तूरिया मृग लेष ॥४१

धातु शब्द:

बात आदि दे प्रकृति है ता कह धातु कहंत ।
धातु क्रिया बखानिए देह सार सुलहंत ॥४२
धातु राग तासों कहै उपजत पर्वत माहि ।
गेरू आदिक जानिए नूर कहत है ताहि ॥४३

सुधा शब्द:

सुधा अमृत पंडित सुधा सुधा सुभोजन एक ।
आमलकी रु हरीतकी पुन वधू सु विवेक ॥४४
देवराज की क्रिया तें पायो धन जो होइ ।
सुधा कहत हैं ताहि सों नूर कोस मत सोइ ॥४५

कांड शब्द:

कांड बान सों कहत है तुला दंड को जानि ।
कांड समूह सुकास बल तरवारि कांड बखानि ॥४६

वेला शब्द:

वेला कहत कछार सो वेला काल विसेषि ।
नौकातर जल पुनि उठै । अंगुलि रेषा लेषि ॥४७

काल शब्द:

उत्सव समय प्रकोष्ट पुनि । कियो मुहुरत जौन ।
काल सबद ए धारि है नूर कहत सुनि तौन ॥४८

भ्रून शब्द:

भ्रूण विप्र अरु गर्भ पुनि अग्रज भ्रून बखानि ।
बालक भ्रूण औ विकल नर भ्रूण बेरानो जानि ॥४९

अहि शब्द:

राहु भुजंगम सूर अहि औ पैंडोई जान ।
अहि नामा इक दैत्य है जानतु नूर सुजान ॥५०

व्याल शब्द:

व्याल जानिए सर्प कों रोझादिक है व्याल ।
कुटिककरी, सो, व्याल कहि और व्याल है वाल ॥५१
और प्रमादी नरन सों व्याल कहत गुन धाम ।
नूर कहे ए कोपमत पांच व्याल के नाम ॥५२

इंद्र नाम:

इंन्द्र इन्द्र को जानिए श्रेष्ठ इन्द्र पुनि होइ ।
पंच इंद्री कौ इंद्री कहै नूर कहत वुध लोइ ॥५३

धेनु शब्द:

गाइ दुधारी धेनु कहि, औगज गामिनि नारि ।
छोटी असि सों धेनु कहि धेनु सुवृत्ति विचारि ॥५३

वृष शब्द:

वृप जो कहिए धर्म सो वहुरि श्रेष्ठ वृप सोइ ।
वृष पुनि जानो वृपभ को मूपक काम सो होइ ॥५४
अंड और वल जानि ए सात भांति वृप मानि ।
नूर कहे एकोप मत लीजो वुध जन जानि ॥५५

योग शब्द:

जुगुति विशेप सो योग भनि जोग संजोग वषानि ।
जोग आगामिक लाभ है जोग सूंयोनि सुजानि ॥५६

शलि शब्द:

शलि मूपक शलि गर्भ पुनि भृंग, गदा शलि होइ ।
सर्प विपैकों शलि कहै शलि कलि जुग पुनि सोइ ॥५७

सीता शब्द:

सोता लक्ष्मी उमा सीता सीता है अधिदेव ।
सीता तनया जनक की पुनि मंदाकिनी भेव ॥५८

नाभि शब्द:

वड़ो होइ परिवार में ताकों नाभि वपानि ।
पहिआ वीच की कुंडली नाभि सो नाभी जानि ॥५९
छत्री आदि सो नाभि भनि चारि भांति यह होइ ।
सुन्यो जो छपनक[1] कवि कह्यो नूर कहत अव सोइ ॥६०

गोत्र शब्द:

गोत्र कहत है गोत सो सोइ जानु पहार ।
गोत्रप्रवर सों जानिए, गोत्रा भूमि प्रकार ॥६१

---

१. इसका मूल रूप क्षपणक है । इस शब्द से किसी जैन कोप की ओर संकेत किया जान पड़ता है ।

घन शब्द:

घन सोहै को मोगरा और मेघ घन होइ ।
सिंघ मित्य चिक्कन सहित कोस ताल घन सोइ ॥

शुक्र शब्द:

सुक्र अग्नि को जानिए सुक्र सो तारक होइ ।
सुक्र सो तेजविसेष है सूर कहत सुनि सोइ ॥६३
जेठ मास कों सुक्र भनि देह बीज सोइ जानि ।
शुक्र नैन को रोग है दैत्य पुरोहित मानि ॥६४

राम शब्द:

दसरथ नंदन राम है परसराम पुनि राम ।
पसु विसेष इक राम है और राम बलराम ॥६५
राम सो सेत असेत है, रामा जानो वाम ।
अनेकार्थ मैं देपि कै सूर कहै ए नाम ॥६६

द्रोण शब्द

द्रोण अचल इक विदित है द्रोण काक को नाम ।
कौरव को गुरु द्रोण है द्रोण तोल कछु जान ॥६६

जिन शब्द:

वीतराग जिन जानिए नारायन जिन होइ ।
जिन कंदर्प्प बषानिए अरु सामान्य बस सोइ ॥६७

जयंती शब्द : चौपाई:

नगरी एक जयंती होइ । गवरईया के बच्चा सोइ ।
औषधि भेद जयंती जानि । इंद्र को पूत जयंत बषानि ॥६८

रोहित शब्द:

इंद्र धनुष लोहित बहुरि लोहित मृग की जाति ।
लोहित रोहू मत्स पुनि रंग भगोहों भांति ॥७०

धात्री शब्द:

धात्री कहत बसुंधरा धात्री हरे होइ ।
धात्री जानो आवल धाय धात्री सोइ ॥७१

प्रवाल शब्द:

वीना दंड प्रवाल है नव पल्लव जिय जानि ।
पुनि प्रवाल विद्रुम कहै हस्तो मत्त बषानि ॥७२

कोण शब्द:

कोण रुधिर को जानिए भैसा कोण कहंत ।
गनती कोटि सों कोंण कहि पर को कोंप सहंत ॥७३

वीनादिक जे साज हैं तेऊ कोण उदोत ।
नूर कहै ए कोष मत सुनत श्रवण सुप होत ।।७४

ताल शब्द:

ताल मूल है गान कौ ताल वृछ जग जानि ।
ताल तलाव[1] पताल धुनि करतल ताल बषानि ।।७५

काष्टा शब्द:

पृथ्वी निशा दिशा काष्टा काष्टा काल विसेषि ।
ए सब काष्टा नूर कहि काष्टा काठ कों लेषि ।।७६

पलाश शब्द:

ढाक पलास बपानिए पुनि राकस कों जानि ।
हरित वरण पालास है फासी कों पहिचानि । ७७

सत्र शब्द

धन गृह और पवित्रता सत्र आयुध को नाम ।
निद्रा जुत सो सत्र कहि सत्र तेज को धाम ।।७८
वन कहियत है सत्र सों दान सत्र पुनि होइ ।
सत्र शब्द: ए नूर भनि समुझि लेहु सब कोइ ।।७९

कल्प शब्द:

कला कुसल सो कल्प कहि काया कल्प वषानि ।
मदिरा कल्प कहावइ केश कल्प पहिचानि ।।८०
बहुत वरष वीतैं जबै तासों कल्प कहाय ।
अनेकार्थं मत जानियो कहै सो नूर सुनाय ।।८१

विष्टर शब्द:

विष्टर त्रिण पूला कह्यो विष्टर आसन जानि
विष्टर कोऊ बृछ है विष्टर यज्ञ वषानि ।।८२

समिति शब्द:

सभा समिति संगर समिति समय समिति पुनि होइ ।
नारिन में आगे चलै समिति कहावै सोइ ।।८३

शित शब्द:

वृद्ध होइ शित रजत शित रजत सेत रंग जानि ।
शित कहिए पुनि बान सो दैत्य गुरू शित मानि ।।८४

चित्रक शब्द:

चित्रक सर्प की जाति इक चित्रक तिलक कहंत ।
चीता चित्रक जानिये औषधी नाम लहंत ।।८५
चित्रक भूरप राज को कहत सयाने लोइ ।
नूर कहै ए प्रगट करि और न चित्रक होइ ।।८६

---

१. मूल में 'व' कटा हुआ है ।

वल शब्दः

कुवरित सुना ग्रौपधी सत्यरत्न वल जानि।
वल कहिए वलभद्र सों वल सो दैत्य वखानि ॥८७॥
वला आनि वसुंधरा, वला सु लक्ष्मी होइ।
कोप शब्द वल समुझि कै नूर कह्यो यह सोइ ॥८८॥

परिग्रह शब्दः

त्रिय संगी कुच होइ जो, ताहि परिग्रह जानि।
सेना पीठि से जानिए, अरु बंधन को मानि ॥८९॥
पिरत पकरिए अथ विघा उहौ परिग्रह होइ।
इस्त्री आदि व्यवहार यह नूर परिग्रह सोइ ॥९०॥

कर्दव शब्दः

कहत कर्दंब कुमातु सों ग्रौर निर्गुन नर होइ।
सरि सौ जासु कर्दंब को कदम वृक्ष पुनि सोइ ॥९१॥

प्रियक शब्दः

देह वीज सो प्रियक कहि, हाथी प्रियक वखानि।
प्रीतम सों पुनि प्रियक कहि प्रियक सो चोला जानि ॥९२॥
जाके इच्छा मुकुति की सोऊ प्रियक कहाय।
प्रियक शब्द के नाम ए, कहे सु नूर वनाय ॥९३॥

अक्ष शब्दः

अक्ष बहेरा सों कहैं ग्रौर अक्ष है याँपि।
अक्ष कहत रुद्राक्ष सों पासा अक्ष सुभापि।
अक्ष सो रावण पुत्र है अक्ष सो गहिरो जानि।
अक्ष शब्द के भेद ए कहे सो नूर वखानि ॥९५॥

चक्र शब्दः

चक्रवाक सों चक्र कहि पहिया चक्र वखानि,
देस चक्र सों जानिए चाक चक्र को मानि ॥९६॥
चक्र हथ्यार सो कृष्न को जानत है सब कोइ।
जो कछु वस्तु फिरै जगत चक्र नूर पुनि सोइ ॥९७॥

खर शब्दः

सरमर्यत खर जानिए व्यवहार पटु सोइ।
खर कहियत है पुरुष सो पर रासभ पुनि होइ ॥९९॥

कृपिशब्दः

कृपि कोउ इक गोत है, कृपि खेती कों जानि।
सोइ काल पावक सोइ, सोइ अगिन मणि जानि[1] ॥१००

१. मल में "चातृ" है।

भूत शब्द:

भूत कहत संतान सों पंच भूत पुनि होइ।
समय वितीत सो भूत कहि प्रेत भूत है सोइ ॥१०१
भूत सो प्राणी मात्र है औ जमराज बखान
भूत शब्द कीने प्रगट नूर सुजानहु जान ॥१०२

अष्टापद शब्द:

अष्टापद टीडी कही अष्टापद है मीन
अष्टापद फल भेद है, कीट भेद पुनि चीन ॥१०३

बालक शब्द:

बालक हैं आकास चर बालक बालक जाति।
बालक बाव सुगंध पुनि जटा जूट पहिचानि ॥१०४

जाति शब्द:

जाति जाति सब जगत में और चमेली जानि।
गोत्रादि जन्म सोइ जाति है लता जाति पहिचानि ॥१०५

फणा शब्द:

१ फना बैल की सींग है अहि फन फना बखानि
२ फना जटा सों कहत हैं तृष्णा फना [illegible]।
फना सवारी कुंडली जानहि पंडित [illegible]।
नूर कहे ये प्रगट करि पढ़त सुनत [illegible] ॥१०६

तिलक शब्द:

वृक्षभेद को तिलक कहे माथे तिलक जो होइ।
सब में होइ प्रधान सो तिलक कहत है सोइ ॥१०७

चित्रक शब्द:

[illegible]
[illegible] ॥१०८

गन्धर्व शब्द:

[illegible]
[illegible] ॥१०९

शृंग शब्द:

[illegible]
[illegible]

सारंग शब्द:

[illegible]
[illegible]

वृषभ मापु सोरह सबद ए सारंग कहंव
नूर कहे ए कोप मत सो बुधिवंत लहंत ॥११३

कांतार शब्द :

कांतार बन आनिए बहुरि इंद्र उर धारि ।
कांतार कवारा जानिए सोई कातास विचारि ॥११४

करण शब्द :

कारण करण बपानिए इंद्री करण सुजानि ।
जाति भेद पुनि करन है, क्षेत्र करन मन मानि ॥११५
वध आदिक जे कर्न है सिथि पथा में सोइ ।
करन कहत हैं ताहि सों तीसव रस में होइ ॥११६
करन कथा भारथ सुन्यो सोऊ करनहिं जानि ।
भौर करन ए कान है नूर सो कहे बपानि ॥११७

श्यामा शब्द :

स्यामा कहिए राति सों स्यामा होइ निसोत ।
स्यामा सांवा जानिए बहुरि विषाय होत ॥११८
स्यामा नारि कहावइ नव जोवना जो होइ ।
स्यामा स्याम घन जानिए नूर कहे ए सोइ ॥११९

सुमा शब्द :

सुमा, सुधा, सुमा, सोभा सुमा, सु हरई होइ ।
सुभा जो कहिए भाइ सों सुभ कल्यान पुनि होइ ॥१२०

गुरु शब्द :

गुरुः पिता गुरु श्रेष्ट पुनि बहुत गुरु गुरु होइ ।
गुरु सुर गुरु सों कहते है सिष्य करे गुरु सोइ ॥१२१

माधव शब्द :

माधव भंवर बपानिए माधव है वैसाष ।
माधव मदिरा जानिए माधव माधव भाष ॥१२२

वाल्हिका शब्द :

हिंगु होइ वाल्हीक पुनि भाइ घोरे की जाति ।
देस कोऊ वाल्हीक है पुण्य जानु इहि भांति ॥१२३

पुंडरीक शब्द :

व्याघ्र, सरोरुह स्वेत रंग पुंडरीक ए जानि ।
बहुरि कमंडल सों कहै नूर कोष मत मानि ॥१२४

राजिव शब्द :

सलिल सरोरुह मीन ससि, मुक्ता राजिव होइ ।
पंच ठौर राजिव प्रगट, नूर कहे ए सोइ ॥१२५

इति मोमां नूर विरचिते नाम प्रकाशे अनेकार्थ प्रकारे दसोऽधिकारो धर्म्मः

तल्प शब्द :

सेज तल्प दारा तल्प और अटारी जानि ।
तल्प शब्द ए जानिए नूर सु कहै बषानि ।।१२५

वप्र शब्द :

पिता वप्र तट वप्र पुनि । आगन वप्र सुजान ।
वप्र शब्द के अर्थ भनि नूर सो कोष प्रमान ।।१२७

मोचा शब्द :

मोचा सेवर वृछ है कदली मोचा होइ ।
मोचा शब्द वषानि कै नूर कहे हैं सोइ ।।१२८

कक्षा शब्द :

घर के आंगन सों कहैं, कक्षा शब्द वपानि ।
गज बंधन की रज्जु सों कक्षा किंकिनि जानि ।१२९
कक्षा कहत कछार सो, काछ सो कछा होइ ।
कछा देस कछा कहें कहे नूर सुनि सोइ ।।१३०

पुलाक शब्द :

है पुलाक संछेप सो भात सीथ सो होइ ।
तुछ धान्य पुलाक है नूर कोष मत सोइ ।।१३१

पक्ष शब्द :

एक मास को पक्ष द्वै । अरु पछी के पक्ष ।
पक्ष मांस अरु गरुड पुनि और पठंधा पक्ष ।।१३२

शुचि शब्द :

सुचि असाढ़ को मास है निर्मल और पवित्र ।
सुचि कहिए पुनि अग्नि सो नूर कहत सुनि मित्र ।।१३३

घनाघन शब्द :

इंद्र घनाघन जानिए मेघ जे वरषन हार ।
मत्त नाग पुनि नूर भनि जानहु एहि व्यवहार ।।१३४

अभिख्य शब्द :

कीर्ति कांति अरु नाम सों, शब्द अभिख्य वषानि ।
नूर कहे ए कोष मत सुमति लेहु जिय जानि ।।१३५

करीर शब्द :

कहत करीर करील सों, वांस के अंकुर जानि ।
पुनि अंकुर वट वृछ के नूर कहत वषानि ।।१३६

रंभा शब्द :

रंभा होइ देवंगना अरु केला को वृक्ष ।
गुप्त कोष में धरे हैं कीने नूर समछ ।।१३७

क्षेत्र शब्द :

क्षेत्र कहत है पेत सो और काठ सों जानि ।
क्षेत्र भूमि कह देह पुनि क्षेत्र प्रयाग बपानि ॥१३८

निर्व्यूह शब्द :

गयो होय दुख जाहि को सो निर्व्यूह लहंत ।
द्वार अग्र की भूमि अरु सो निर्व्यूह कहंत ॥१३९

संवर शब्द :

मृग पर्वत संवर सुनो अरु गड संवर होइ ।
संवर जानो सूम सों नूर कहे मुनि सोइ ॥१४०

कल्प वाक शब्द :

न्याय बरावरि विधि विर्षे चित्त वड पुनि सोइ ।
नूर कहे ए शब्द जे कल्प वाक सब होइ ॥१४१

आत्मा शब्द :

ब्रह्म आत्मा यत्न पुनि देह वाक मन होइ ।
बहुरि आत्मा धृति विर्षे नूर कहे मुनि सोइ ॥१४२

कुशल शब्द :

सकल कला सीख्यो जो नर पुन्य औ क्षेम बपानि ।
इन सब्दन कों कुसल भनि नूर कहे मन मानि ॥१४३

प्रत्यय शब्द :

सपथ छिद्र विस्वास में प्रत्यय शब्द प्रमान ।
सत्य हेतु व्याकर्न में, प्रत्यय जानहु जान ॥१४४

अत्यय शब्द :

दोषा अनुप आगम बहुरि, दश शब्द ए चारि ।
अत्यय कहिए ए सकल नूर सो लेहु बिचारि ॥१४५

धाम शब्द :

धाम प्रताप बपानिये धाम तेज को नाम ।
नूर कहे ए कोप मत घर सों कहिए धाम ॥१४६

स्व शब्द

स्व आपनि सो जानिए स्व पुनि आत्मा होइ ।
स्व कहिए धन सों बहुरि नूर सयाने सोइ ॥१४७

चूड़ा शब्द

चूड़ा माथे केस है करफे चूड़ा जानि ।
धन माया उत्कट बहुरि चूड़ा कर्म बपानि ॥१४८

मात्र शब्द परिछेद प्रमान में मात्र शब्द जो होइ ।
इडा शब्द: भूमि वाक नाड़ी बरए इडा कहावे सोइ ॥१४९॥

सत् शब्द

साधु विषें सत्ता विषें श्रेष्ट विषें पुनि जानि ।
स्तुत करिवे के जोग्य जो सत् यह शब्द बपानि ॥१५०

ककुत शब्द

सवर्ते होइ प्रधान जो राज चिन्ह अनुमान ।
ककुत शब्द ए जानिए नूर सो कहे वषान ॥१५१

निष्क शब्द

निष्क्व कहत हैं मोहर सों निष्क रजत पुनि सोइ ।
निष्क कहावै मांस पुनि भूषन कहिए होइ ॥१५२

अंक शब्द

युद्ध वसै जाके हिए । अंक कहावै गोद ।
अंक चिन्ह पुनि आंक सो नूर लपेतें मोद ॥१५३

कबंध शब्द

विनु मस्तक की देह कों औ जलफेंन कहंत ।
दून सों कहैं कवंध रव वुध जन भेद लहंत ॥१५४

वर शब्द:

वर कहियतु है मेरु सो वृक्ष भेद वर होइ ।
वर जानहु पुनि श्रेष्ठ सो अग्नि धनुष पुनि सोइ ॥१५५

वर्त्म शब्द　वर्त्म वरौनी सोक है मारग वर्त्म वषानि ।
वर्ष्म शब्द　वर्ष्म आयु प्रमाण है वर्ष्म देह कों जानि ॥१५६
दायाद शब्द　भाई सो दायाद भनि सोई पुत्र प्रमान
विग्रह शब्द　युद्ध भेद विग्रह कहै विग्रह देह सुजान ॥१५७

प्रकोष्ट शब्द

कहुनी पहुंचा वीच अंग तासों कहें प्रकोष्ट ।
नूर प्रकोष्ट सो जानिए जासों कहैं वरोंठ ॥१५८

वितान शब्द:

शून्य वितान कहावइ शमिआना सु वितान ।
नूर कह्यो सुनि कोष मत जानि लेहु नर जान ॥१५९

वधू शब्द

वधू कहावैं नारि सव इस्त्री वधू विचारि ।
पुत्र वधू सो वधू है कहत नूर अवधारि ॥१६०

कशिपु शब्द:　कशिपु राक्षस होइ पुनि कशिपु पामरी जानि ।
आडंवर शब्द:　आडंवर हस्ती वचन औ मृदंग घुनि मानि ॥१६१
कपर्दक शब्द:　कौडी जानु कपर्दकों शिव को जटा कपर्द ॥
तूवर शब्द:　तूवर मुंडिलौ वैल औ विनु डाढ़ी को मर्द ॥१६२

क्षेत्र शब्द :

क्षेत्र कहत हैं खेत सो और काठ सों जानि ।
क्षेत्र बुद्धि कह देह पुनि क्षेत्र प्रयाग बखानि ।।१३८

निर्व्यूह शब्द :

गयो होय दुख जाहि को सो निर्व्यूह सहंत ।
द्वार अग्र की भूमि अरु सो निर्व्यूह कहंत ।।१३९

सवर शब्द :

मृग पर्वत सवर सुनो अरु गढ़ सवर होइ ।
सवर जानो सूम सों नूर कहे सुनि सोइ ।।१४०

कल्प वाक शब्द

न्याय बराबरि विधि विर्षे चित्त वक पुनि सोइ ।
नूर कहे ए शब्द जे कल्प वाक सब होइ ।।१४१

आत्मा शब्द :

ब्रह्म आत्मा यत्न पुनि देह वाक मन होइ ।
बहुरि आत्मा धृति विर्षे नूर कहे सुनि सोइ ।।१४२

कुशल शब्द :

सकल कला सीख्यो जो नर पुन्य औ छेम बखानि ।
इन सब्दन कों कुसल भनि नूर कहे मन मानि ।।१४३

प्रत्यय शब्द :

सपथ छिद्र विस्वास में प्रत्यय सब्द प्रमान ।
सत्य हेतु व्याकर्न में, प्रत्यय जानहु जान ।।१४४

अत्यय शब्द :

दोषा अनुष आगम बहुरि, वध शब्द ए चारि ।
अत्यय कहिए ए सकल नूर सो लेहु विचारि ।।१४५

धाम शब्द :

धाम प्रताप बखानिये धाम तेज को नाम ।
नूर कहे ए कोप मत घर सों कहिए धाम ।।१४६

स्व शब्द

स्व आपनि सो जानिए स्व पुनि आत्मा होइ ।
स्व कहिए धन सों बहुरि नूर सयाने सोइ ।।१४७

चूड़ा शब्द

चूड़ा बांधे केस हैं फरके चूड़ा जानि ।
धन माया उत्कट बहुरि चूड़ा कर्म बखानि ।।१४८

मात्र शब्द परिछेद प्रमान में मात्र शब्द जो होइ ।

इड़ा शब्दः भूमि वाक नाड़ी बरप इड़ा कहावे सोइ ।।१४९।।

सत् शब्द

साधु विषें सत्ता विषें श्रेष्ट विषें पुनि जानि ।
स्तुत करिवे के जोग्य जो सत् यह शब्द वषानि ॥१५०

ककुत शब्द

सवतें होइ प्रधान जो राज चिन्ह अनुमान ।
ककुत शब्द ए जानिए नूर सो कहे वपान ॥१५१

निष्क शब्द

निष्क्व कहत हैं मोहर सों निष्क रजत पुनि सोइ ।
निष्क कहावे गांस पुनि भूषन कहिए होइ ॥१५२

अंक शब्द

युद्ध वसै जाके हिए । अंक कहावै गोद ।
अंक चिन्ह पुनि आंक सो नूर लपेटें मोद ॥१५३

कवंध शब्द

विनु मस्तक की देह कों औ जलफेंन कहंत ।
दून सों कहैं कवंध रव वुध जन भेद लहंत ॥१५४

वर शब्दः

वर कहियतु है मेरु सो वृक्ष भेद वर होइ ।
वर जानहु पुनि श्रेष्ठ सो अग्नि धनुप पुनि सोइ ॥१५५

वर्त्म शब्द वर्त्म वरौनी सोक है मारग वर्त्म वपानि ।
वर्ष्म शब्द वर्ष्म आयु प्रमाण है वर्ष्म देह कों जानि ॥१५६
दायाद शब्द भाई सो दायाद भनि सोई पुत्र प्रमान
विग्रह शब्द युद्ध भेद विग्रह कहे विग्रह देह सुजान ॥१५७
प्रकोष्ट शब्द

कहुनी पहुंचा वीच अंग तासों कहें प्रकोष्ट ।
नूर प्रकोष्ट सो जानिए जासों कहैं वरोंठ ॥१५८

वितान शब्दः

शून्य वितान कहावइ शमिआना सु वितान ।
नूर कह्यो सुनि कोप मत जानि लेहु नर जान ॥१५९

वधू शब्द

वधू कहावैं नारि सव इस्त्री वधू विचारि ।
पुत्र वधू सो वधू है कहत नूर अवधारि ॥१६०

कशिपु शब्दः कशिपु राक्षस होइ पुनि कशिपु पामरी जानि ।
आडंवर शब्दः आडंवर हस्ती वचन औ मृदंग धुनि मानि ॥१६१
कपर्दक शब्दः कौडी जानु कपर्दकों शिव को जटा कपर्द ॥
तूवर शब्दः तूवर मुंडिलौ वैल औ विनु डाढ़ी को मर्द ॥१६२

नृशंसा शब्द: छोह नृशंसा भावनी भति सब पापी सोइ ।
शारदा शब्द: सरत्काल सारद समुझि भौर विचछन कोइ ।।१६३
उपव्हर शब्द: उपव्हर संकेत थल भो परोस को नाम।
निदाघ शब्द: रितु ग्रीषम प्रस्वेद पुनि द्वै निदाघ के नाम ।।१६४
कश्मलवा केतु शब्द:

कश्मल कहत पिशाच सों कश्मल तेज बखानि ।
केतु एक ग्रह जानिए केतु ध्वजा पहिचानि ।।१६५

रीढा वा वर्द्धन शब्द:

रीढा गति को जानिए भौर अवज्ञा सोइ ।
वर्द्धन बढिवे सों कहत वर्द्धन कारन होइ ।।१६६

नाग वाकी नाश शब्द:

नाग वृक्ष को भेद ए सर्प सु कुंजर नाम ।
कीनाश, यम क्रोध पुनि दोऊ जानहु बडभाग ।।१६७

कुलवा पूग शब्द:

कुल संघात भो गोत्र पुनि कुल करीर शुभ होइ ।
पूगीफल सों पूग भनि पूग कदंबक सोइ ।।१६८

सुमन शब्द:

सुमनस देव बखानिए सुमनस फूल सुजान ।
सुमनस सज्जन जानिए, नूर कोप परवान ।।१६९

कुसुम शब्द: कुसुम पुष्प जानहु प्रगट स्त्री रज कुसुम कहंत ।
धव शब्द: धव पति धव द्रुम मर्त्य पुनि धव संज्ञा स लहंत ।।१७०
त्र्यंबक शब्द: त्र्यंबक डमरूर जानिए । त्र्यंबक जानु महेस ।
पुन्य शब्द: सुकृत कर्म सों पुन्य है पुन्य पवित्र सुवेस ।।१७१
शिफा शब्द

शिफा वृक्षकी जटा भनि शाखा शिफा बखानि ।
शिफा-सो कंद विशेष है शिफा विजय जिय जानि ।।१७२

कसेरुक शब्द:

कसेरुक कसेरू कहै । सोई पीठी की रीर ।
नूर कह्यो जो कछु सुनो शब्द समुद्र गंभीर ।।१७३

पल शब्द:

पल कहियत है नीच सों पल पलिहान बखानि ।
पल कहिए पुनि चुगल सो पल कूटक कों जानि ।।१७४

शाखा शब्द

इच्छा, शाखा, जानिए, शाखा शिखा सुहोइ ।
शाखा साखा जानिए यह शाखा कहि सोइ ।।१७५

माल्य शब्दः

माल्य माला जानिए सो पुनि मस्तक होइ ।
नूर कहे ए प्रगट करि माल्य माल कहि सोइ ।।१७६

राडा तथा आली शब्दः

राढा देस विशेष है राढ़ा कहिए कांति ।
आली जानों सहचरी आली होइ सो पांति ।।१७७

पल शब्दः

पल जमास पल तौल है पल मूरष कों जानि ।
पल सो पलक गति जानिए सोई तराजू मानि ।१७८

दल शब्दः

दल आधे को नाव है वृक्ष पत्र दल जानि ।
दल सेना को भेद है नूर सुहै विचारि ।।१७९

आजि शब्दः आजि नाम संग्राम को अग्नि भूमि सम होइ ।
संगर शब्दः संगर है संग्राम पुनि और प्रतिज्ञा सोइ ।।१८०
पुरुहूत शब्दः पुरुहूत सव्द उलूक है सोई इंद्र सुजान ।
मृत्यु शब्दः यम अजगरे वरछी मरण, मृत्यु शब्द पहिचानि ।।१८१
शंपा शब्दः विजुली वज्र सु शंप घुनि शंपा शब्क प्रमान ।
मन्यु शब्दः यज्ञ क्रोध अरु दीनता मन्यु शब्द अनुमान ।।१८२

अभ्रशब्दः

ऊपर अभ्र कहावइ अभ्र मेघ पुनि सोइ ।
अभ्रक अभ्र वपानिए अभ्र सु चूरन होइ ।।१८३

प्राध्व शब्दः

प्राध्व शब्द वंधन विपय। प्राध्व विनीतता होइ ।
नूर कहत पंडित विषे प्राध्व आख्यो सोइ ।।१८४

हरिण शब्दः हरिण पांडुर रंग है। हरिण सो सारंग होइ ।
करट शब्दः कातर सों कहिए करट करट प्रतिध्वानि होइ ।।१८५
कर्क रेदु शब्दः कर्करेदु कहि ग्रीध्र सों पुनि क्रोधी नर सोइ ।
तुषार शब्दः लघु पाषान तुषार है सीत तुषार सो होइ ।१८६
अमृत शब्दः अमृत सलिल पुनि सुधामृत जो देवन मथि लीन ।
कुंत्या शब्दः कुंत्या भूमि वषानिए कुंत्य वरछा चीन ।।१८७

दुरोदर शब्द

पासा चतुर जो होइ नर और धूर्त्त कों जानि ।
ज्वारी सों कहिए बहुरि दुरोदर जिय आनि ।१८८

ज्योति शब्दः

ज्योति दीप्ति अरु दृष्टि पुनि, नपत ज्योति पहचानि ।
जाकी जोति प्रकाश जग नूर सो कहत बपानि ॥१८९

मंद शब्दः

रोगी भी घटि भाग्य जो मंद विलंबित जानु ।
मंद सनीचर सों कहै मंद कुंद पहिचानु ॥१९०

प्रमाण शब्दः

शास्त्र प्रमाण बपानिए हेतु प्रमान सो होइ ।
स्थिति को कहत प्रमान सो, अरु कोविद पुनि सोइ ॥१९१

विष शब्दः जल सों विष कहिए प्रगट विष जो सार्प मुप होइ ।

वाज शब्दः वाज मन्त्र अरु गरुड़ पुनि वाज अमृत कहि सोइ ॥१९२

व्रज शब्दः

व्रज मारग वृज गोप पुनि वृज कहिए पुनि वृंद ।
मथुरा मंडल प्रगट वृज जहाँ वसे व्रजचंद ॥१९३

वीर्य शब्दः

वीरज, बल, सों कहत हैं वीरज देह को सार ।
वीर्य फलादिक बीज है नूर प्रगट संसार ॥१९४

मघा शब्दः मघा नाम नक्षत्र इक कुंद कली पुनि सोइ ।

शय्या शब्दः सय्या पुस्तक संचयन सोवत सय्या सोइ ॥१९५

तरस शब्दः तरस मासु कों जानिए बलकों तरस कहंत ।

वारुनी शब्दः पश्चिम दिग है वारुणी वारुनी सुरा लहंत ।१९६

मंदुरा शब्दः मंदुरा कहि घोर सार सो अरु मंदरा मवास ।

सूनृत शब्दः सूनृत सीधित सों कहै साधु बोलै सु प्रकास ।१९७

कीकश शब्दः

कीकस बानर होइ पुनि कीकस भिक्षुक जानि ।
बहुरि अस्थि सों कहत हैं कीकस नूर बपानि ॥१९८

रोमंथ शब्दः रोमंथ पशु मार्ग है कीडी कोस सो होइ ।

रजनी शब्दः रजनी राति कहावइ रजनी हरदी सोइ ।१९९

परिघ शब्दः

परिघह घ्यार को भेद है परिघ जोग एक माहि ।
परिघ लोह कोदंड है नूर कहत मय ताहि ॥२००

धरा शब्दः

धरा जानि वसुंधरा धारा धरा बपानि ।
धरा कहिए धृति बहुरि पर पर्वत सो जानि ॥२०१

कंद शब्दः

भूमि विषें फल कंद है कंद शर्करा आहि।

कर शब्द　कर है किरिणि सु हस्त कर कर जगति को चाहि ।।२०२

दुन्दुभि शब्दः

दोइ सो दुंदुंभि जानिए, दुंदुंभि राकस होइ।
वसुदेव दुंदुभि है प्रगट दुंदुभि बाजत सोइ ।।२०३।।

उद्यान शब्दः

वन उद्यान कहावइ गमन कहै उद्यान।

वर्द्धनी शब्दः　वर्द्धनी चरपी प्रगट सोई वुहारी जान ।।२०४

रुधिर शब्दः

रुधिर सु कुंकुम सों कहत, लोहू रुधिर सो होइ।

नन्दन शब्द　नंदन सु जन सु पुत्र पुनि, स्वर्ग वाटिका सोइ।

मानस शब्दः　मानस कहिए चित्त सों मानसरोवर सोइ।

धावन शब्दः　धावन सों धन जानिए धावन तुरत सु होइ ।२०५

स्यन्दन शब्द　स्यंदन दुम वच्चा सोइ स्यंदन रथ पुनि होइ।

तुरायण शब्दः

तुरायण कहैं असंग सों कृपा हीन पुनि सोइ ।२०६

पारायण शब्दः　पारायण रिपु थान है औ तत्पर को जानि।
बिना अर्थ पढ़ियै कछू सो पारायण मांनि ।।२०७

वंश शब्द

हस्त पीठि सों वंश भनि औ कुलवंश बषानि।
नूर कहे ए प्रगट करि वांस वंश पहिचानि ।।२०८

शिषंड शब्दः

मोर शिषंडी जानिए जटा जूट पुनि सोइ।

पिप्पल शब्दः　पिप्पल पीपल जानिए अरु जल पिप्पल होइ ।२०९

पात्र शब्दः

दानं पात्र द्विज आदि दै वासन पात्र कहंत।
पात्र कहत पुनि देह सों पातुर प्रगट लहंत ।।२१०

पत्र शब्द

पंष पत्र ओरु पात पुनि कागद पत्र प्रमान।
पत्र उपानह सों कहैं जानहु चतुर सुजान ।।२११

करेश शब्दः

कोश षजाना जानिए औ परिवार वषानि।
उदर कोश कों कोश भनि शब्द कोश पहिचानि ।।२१२

द्विज राज शब्द:

हंस होइ द्विजराज पुनि सोइ अग्नि जिय जानि ।
होइ गरुड द्विजराज पुनि सोई चन्द्र बखानि ॥२१३॥

करवीर शब्द:

करवीर कहत हैं चवर सों और अंगूठा जानि ।
करवीर शब्द कनइल अंगट नूर कहत जिय मानि ॥२१४

वारि शब्द:

कुंवर बांधें जेहि ठौर सोयस वारि बखानि ।
जल सों वारि सबै कहै मूर सो जानहु जानि ॥२१५

भूरि शब्द:

भूरि कहत है बहुत सों, भूरि कांचन होइ ।

सूव शब्द:

सूव रसोई जे करें सूव कुटुंबी सोइ ॥२१६

भषक शब्द:

दुर्जन भषक बखानि भषक जराकस जानि ।

सूर शब्द:

सूर सु सूरज है प्रगट, सूर सारथी मानि ।२१७

भंग शब्द:

भंग मागिवे सो कहैं लहरी भंग सो होइ ।
धान्य भेद सों भंग है, और टूटिवो सोइ ॥२१८॥

तीक्ष्ण शब्द:

पैने सो तीक्ष्ण कहैं तीक्ष्ण तीव्र सु होइ ।

मारगन शब्द:

मार्गन याचक कों कहैं और षिलीमुष सोइ ॥२१९

षिलीमुष शब्द:

भवर षिलीमुख जानिए, बान षिलीमुष मानि

भूकुंडी शब्द:

भूकुंडी कहत किसान सों भूकुंडी सुवर जानि ॥२२०

रुक्म शब्द:

रुक्म जो कहिए हेम सों रूपा रुक्म विचारि ।

उत्पल शब्द:

उत्पल कुसपी जानिए, उत्पल कमल सुधारि ॥२२१

भासुरा शब्द:

दीपक श्रो चलनी दोऊ होहि भा सुरा स्यान ।

कलधौत शब्दः

सोना रूपा दुहूं को करि, कलधौत वषान ।२२२

प्रधान शब्दः

प्रकृति प्रधान कहावइ उत्तम कहै प्रधान ।

अरविंद शब्दः

चक्रवाक अरविंद है सोई कमल बषान ।।२२३

शृगाल शब्दः

स्यार शृगाल बषानियै अरु कातर जो कहाय ।
दानव होइ शृगाल पुनि नूर सु कहै बनाय ।।२२४

मरुत शब्दः

मरुत देवता सों कहें, मरुत सु वायु प्रकार ।

कुंडल शब्दः

कुंडल मंडल जानिए कुंडल कर्ण शृंगार ।।२२५

प्रतिबंध शब्दः

प्रतिबंध कहें कुल रीति सों सेना की ततवीर ।
प्रतिबंध जानहु प्रगट नूर कहे मति धीर ।।२२६

वर्त्ति शब्दः

वर्त्ति शब्द वाती प्रगट, चितवनि वर्त्ति वषानि ।

कलिंग शब्दः

देस एक कलिंग है और धुआरा जानि ।।२२७

गमुंद शब्दः

गमुंद शैल सु जानिए गमुंद सूरज होइ ।
गमुंद है त्रिण जाति इक जानहु बुधि जन लोइ ।।२२८

बाल्मीक शब्दः

वाल्मीक रिषि जानिए बचन चतुर पुनि सोइ ।

सामज शब्दः

सामज कहिए समय सो, सामज कुंजर सोइ ।।२२६

बाजिका शब्दः

पक्षि भद है बाजिका नीली मापी सोइ ।

लक्ष्मण शब्दः

राम बंधु लक्ष्मन प्रगट लक्ष्मण सारस होइ ।।२३०

लक्ष्म शब्दः

लक्ष्म चिन्ह सों कहत, लक्ष्म कंद की जाति ।

पय शब्दः

छीर सलिल सों पय सवद, कहे नूर द्वै भाति ।।२३

कज शब्दः

कज केस भरु कंज निधि कज अमृत को जानि ।
कज कमल जग विदित है कहै सो नूर बषानि ॥२३२

इति मियाँ नूर विरचिते नाम प्रकाशे अनेकार्थ प्रकरणे अर्द्ध श्लोकाधिकार वर्ग्गः

राजा शब्दः

राजा राधा जानिए राजा है द्विज राज ।

मित्र शब्दः

मित्र सो सूरज जानिए मित्र सो मित्र समाज ॥२३३

दर वा श्रीकंठ शब्द·

दर कहिए पुनि छिद्र सों, दर पुनि भय कों जानि ।
स्थावर है श्रीकंठ पुनि शिव श्रीकंठ बषानि ॥२३४

गोविन्द वा तेज शब्दः

हरि गोविन्द बषानिये गाइ गोविन्द सों होइ ।
तेज तेज सों कहत हैं तेज बीठ पुनि सोइ ॥२३५

सिन्धु शब्द तथा शाला शब्दः

सिन्धु नदी का नाम है सिन्धु सों सागर होइ ।
शाला अरु पटशाल, पुनि शाल सो आलय सोइ ॥२३६

तृष्णा वा शष्य शब्दः

तृष्णा कहिए प्यास है तृष्णा लोभ सुजानि ।
शष्य शष्य बीज जानिए तृण अरु केश बषानि ॥२३७

वाडव वा निस्त्रिंश शब्द·

वाडव कहिए विप्र सो, वाडव अग्नि सा होइ ।
निस्त्रिंश होइ तरवार पुनि निस्त्रिंश पापी सोइ ॥२३८

वेग वा इला शब्दः

उचे सो रु प्रवाह सों वेग शब्द अवधारि ॥
मतगाइ अरु भूमि कों इला सुलेहु विचारि ॥२३९

वन वा पीलू शब्द·

वन कानन पुनि सलिल पुनि नूर कहत मति मान ।
वृक्ष जाति कुंजर प्रगट, पीलू शब्द प्रमान ॥२४०

संज्ञा शब्द.

संज्ञा कहिए चित्त सों संज्ञा नाम कहंत ।

भानु शब्दः

भानु पहार बषानिए दिनकर भानु लहंत ॥२४१

करभ शब्दः

मूकर करभ रु उष्ट्र पुनि करभ देह को अंग ।

हाव शब्दः

हाव मदन सों कहत हैं हाव सों बिभ्रम संग ॥२४२

जीमूत वा चिकुर शब्दः

बादर अो पर्वत बिषें कहि जीमूत सो दोई ।
चिकुर केस सों कहत हैं अरु बंधन पुनि सोइ ॥२४३

वृत्त वा उदार शब्दः

वृत्त नाग इक दैत्य है वृत्त सो वैरि विचारि ।
उदार बड़े सों कहत हैं और दंत उरधारि ॥२४४

पंगु वा अंबर शब्दः

पंगु पंज सों कहत है पंगु अगुण पुनि होइ ।
अंबर कहत अकास सों, अंबर कपरा सोइ ॥२४५

ध्वांक्ष शब्दः

कौवा बगला प्रतिध्वनि ध्वांक्ष शब्द जिअ जानि ।

निग्रोध शब्दः

निग्रोध धनुप वट वृक्ष पुनि नूर सु कहे वपानि ॥२४६

नग शब्दः

नग पर्वत नग होइ द्रुम नूर कहे द्वय भांति ।

छिति शब्दः

छिति पृथिवी छिति छय कहत, शब्द कोस की कांति ॥२४७

कंठ शब्दः

कंठ गरेकों कहत हैं जल सों कंठ वपाने ।

प्रहि शब्दः

प्रहि जानि ए कूप कों, प्रहि पुनि वान सु जानि ॥२४८

कोल शब्दः

कोल जो जाति विसेप है, कोल सो सूकर होइ ।

श्रम शब्दः

श्रम कहिए प्रस्वेदसों श्रम जो परिश्रम सोइ ॥२४९

कलि शब्दः

कलि जानो पुनि कलह सों कलि जानो पुनि काल ।
नूर कह्यो जो प्रगट करि जानों यह कलि काल ॥२५०

क्षय शब्दः

क्षयं कहियतु है ग्रेहसों क्षय सो हास वपानि ।
नूर कह्यो यह कोप मत क्षय सो विपर्यय जानि ॥२५१

शशा वा कीटि शब्दः

शशा सुवर्ण सु जानिए, शशा चंद्र पुनि होइ ।
कीटि लोह को चूर्ण है, सकर कीटि कहि ॥

वर्हि शब्दः
वर्हि वर्म पुनि वर्हि जल ए दोऊ वर्हि बपानि ।

हेतु शब्दः
हेतु निमित्त कहावइ हेतु हृदय सों जानि ।२५३

वज्र शब्दः
हीरा वज्र बपानिए वज्र ईस को नाम ।
वज्र इंद्र आयुध प्रगट, नूर कहे ए नाम ।।२५४।।

बीर शब्दः
बीर बांधव जानिए बीर सु विक्रम धीर ।
बीर जानि रस भेद है, सूर बीर रण धीर ।।२५५

कौशिक शब्द
कौशिक माई सों कहें कौशिक उलू होइ ।
परसराम कौशिक, सुनौ जग प्रसिद्ध है सोइ ।।२५६

शिषिनि शब्दः
शिषिण मयूर कहावइ शिषिनि अग्नि कों जानि ।।

धीर शब्दः धीर सात्विक जानिए धीर होइ मति मानि ।।२५७

क्रोड शब्दः क्रोड अंकभरि सेन कों क्रोड बराह जो होइ ।

द्रुम शब्दः द्रुम कहियत है वृक्ष सों द्रुम पर्वत कहि सोइ ।।२५८

ध्रुव शब्दः ध्रुव कहिए नक्षत्र सों ध्रुव निश्चय पुनि सोइ
कहैं रसाल सु ऊप रस आंब रसाल सु होइ ।

पूर शब्दः पूर कहत संभार सों पूरण पूर सुजानि ।।२५९

सूर शब्दः राजा सूर बपानिए सूर सो सूरज मानि ।।

सुकर शब्दः कोमल सुकर कहावइ सुकर सुकाम्य प्रमान ।।२६०

पतंग शब्दः कहि पतंग टीडी प्रगट सूर्य पतंग सुजान ।

अर्क शब्दः अर्क स्फटिक बपानिए, अर्क सूर्य मन आनि ।।
अर्क आक कों कहत हैं नूर सुमति मति मानि ।।२६१

मधुर शब्दः मधुर मिठाई जानिए मधुर प्रिय को मानि ।

शंभु शब्दः शंभू ब्रह्मा जानिए, शंभू शिव उर आनि ।।२६२

हायन शब्दः हायन कहिये तेज सों, हायन वर्ष सुजान ।।

पयोधर शब्दः कहत पयोधर कुचन सों मेघ पयोधर जान ।।२६३

वन्हि शब्दः वन्हि जानिए सूर्य सों, वन्हि अग्नि पुनि होइ ।

अध्यक्ष शब्दः अध्यक्ष समर्थ बपानिए अधिकारी पुनि सोइ ।।२६४

प्लवग शब्दः प्लवग कहत है भेंक सों प्लवग सों बादर आनि ।

भीरु शब्दः मूषक मोर बराह सों, भीरु सो कहत बपानि ।।२६५

दृष्टि शब्द: दृष्टि आंखि कों कहत हैं दृष्टि बुद्धि पहिचानि ।
चीवर शब्द: चीवर वस्त्र विशेष है चीवर बक्कल जानि ॥२६६॥
कर्ण शब्द:
पारथ अरि सों कर्ण कहि और कान सों कर्ण ।
सुनु शब्द:
सूनु सुकहिए पुत्र सों सूनु बंधु सो वर्ण ॥२६७॥
कुस्थान शब्द:
कुस्थान नगर कों कहत हैं कुस्थान गरल पुनि होइ ।
अवट शब्द:
अवट कूप को जानिए गर्त अवट पुनि सोइ ॥२६८॥
स्थूना वा विप्र शब्द:
स्थुना जानि महेश कों स्थूना ब्रह्मा होइ ।
गुनाहगार[३] जहां मारिए स्थूना ठौर है सोइ ।
देवदत्त कों विप्र कहि विप्र ब्राह्मण सोइ ।२६९॥
व्यलीक शब्द:
अप्रिय और असत्य को जानु व्यलीक प्रमान ।
वच शब्द:
वच कहिए जो वचन सों वच बानी अनुमान ॥२७०॥
अनेकार्थ सुनि यथा मति कह्यो सु नूर विचारि ।
चूक होइ सो माफ करि लीजो सुमति सुधारि ॥२७१॥
इति मियां नूर विरचिते नाम प्रकाशे अनेकार्थ प्रकरणे
चतुर्थ वरणाधिकारे चतुर्थः प्रकाशः समाप्तः ॥
अथ एकाक्षर शब्दाः कथ्यंते ॥
शब्द समुद्र अगाध अति अर्थ रत्न भरि पूर
तामें ढूढत हाथ में आयो जो कछु नूर ॥१॥
सोइ माला प्रति वर्ण की, रची सुमति अनुसार ।
कंठ करें गुनवंतनर सोभा बढ़ै अपार ।२
प्रथमहि कृष्ण अकार है पुनि ब्रह्मा आकार
जानहु काम इकार कों दीरघ श्री ईकार ॥३
उ ईश्वर पहिचानिए ऊ रक्षक अनुमानि ।
ऋ सुरमातु वखानिए ॠ दानव की जानि ॥४
ऌ देवकन्या प्रगट और वराही होइ ।
विष्नु अर्थ ए कार है ऐ शिव कहियत सोइ ॥५
ओ वेधा सु अनंत औ पर ब्रह्म अं जानि ।
अः शंकर कों मानिए नूर सो कहै बखानि ॥६

३. यह पंक्ति हाशिये पर अन्याक्षरों में लिखी है ।

क का रः

मस्तक विस जल काय नृप। ब्रह्मा मारुत काम ।
कंचन जिम सिपि ग्रगिन भनि ए ककार के नाम ।७

कू शब्दः

कू कहियत है भूमि सौं, कू निन्दा कों जानि ।
कूवितर्क प्रक्षेप पुनि कूपुनि प्रश्न बपानि ।।८

ख कारः

स्वर्ग व्योम नृप सुन्य रवि समीचीन सुख होइ ।
एते अर्थ खकार के नूर कहे सुनि सोइ ।।९

गकारः

गायन गीत गंधर्व में होइ गकार प्रमान ।
गौ विनायक सौं कहे जानहु जान सुजान ।।१०

गोशब्दः

बचन भूमि दिगदृष्टि शर किरिणि स्वर्ग जल सोइ ।
गाइ बज्र सुप सत्य पुनि मातरि अग्नि सु होइ ।।११

घ कार चौपाईः

गरकी घांटी होइ घ कार। सोइ किंकिनी लेहु विचार ।
वंधन औ पुनि ताहि बखान। नूर कहत है कोष प्रमान ।।१२

ङ कारः

भैरव होइ ङकार रव विषय ङ कार बखानि ।
पुनि इच्छा सोई प्रगट कहत ङ कार प्रमानि ।१३

च कारः

चन्द्र चकार चकार पुनि चौर चकार सु होइ ।
नूर कहे सुनि कोष मत, जानो बुध कवि सोइ ।।१४

छ कारः

सूरज औ निर्मल शवद दोऊ होंहि छकार ।
छेदक सोई जानिए, कहे सो तीनि प्रकार ।।१५

ज कार

जीतम वाले सों कहें, बुधजन शब्द जकार ।

जू शब्दः

पवन गगन जू शब्द पुनि जमन पिशाच जू कार ।।१६

झ कारः

नष्ट होइ जो वस्तु कछु ग्रोर नाश जो होइ ।
वायु गाद यो घोर पुनि, कहि झकार पुनि सोइ ।१७